खोरठा वृहत् प्रकीर्ण साहित्य



डॉ. कुमुद कला मेहता
श्याम सुन्दर महतो 'श्याम'



1

खोरठा
वृहत् प्रकीर्ण साहित्य

2

3

खोरठा
वृहत् प्रकीर्ण साहित्य

डॉ. कुमुद कला मेहता
श्याम सुन्दर महतो 'श्याम'

झारखण्ड झरोखा, राँची

5

ISBN : 978-93-85595-12-7

प्रथम संस्करण : 2015

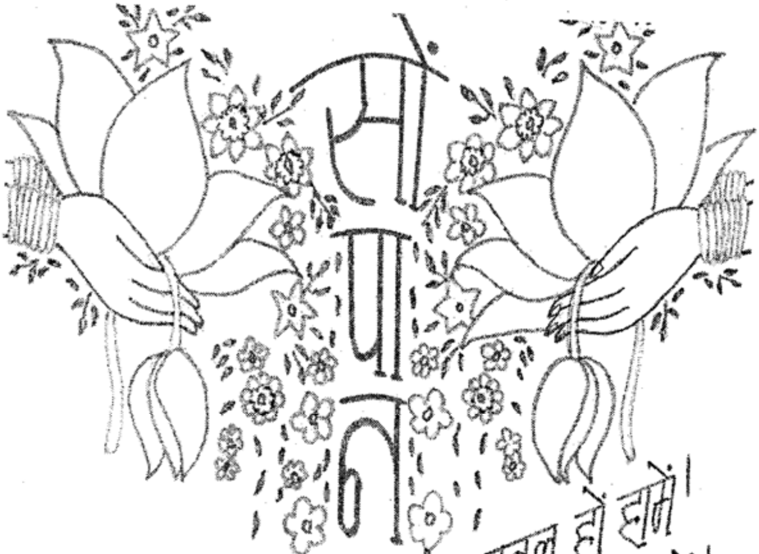
प्रकाशक : झारखण्ड झरोखा
दुकान न.- डी. जी. 03
न्यू बिल्डिंग, न्यू मार्केट,
रातू रोड, राँची, (झारखण्ड), पिन न. 834001
मो. 09973112040, 09471160792

वितरक : क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी
28, शॉपिंग सेन्टर, कर्मपूरा, न्यू दिल्ली–110 015
दूरभाष : (O) 25465978, 65903449 (R) : 28542847
E-mail : classicalpc@gmail.com

अजिल्द :
सजिल्द :

KHORTHA SANSKRITIK SHABDAWALI AUR PRAKIRN SAHITYA

Dr. Kumud Kala Mehta
Shyam Sundar Mehta 'Shyam'



माएक भाषा समटे खातिर, जुटल हों हामें।
गातेक रकत-मास मात्र, आवे तोर कामें।
जीओ-मोरों खइट करब, भाषाक भँडार पूरा।
रहे मुँड़े बापेक जस, माएक चरन धूरा।

प्राक्कथन

जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय राँची की स्थापना तत्कालीन आयुक्त दक्षिणी छोटानागपुर प्रमंडल एवं कुलपति, राँची विश्वविद्यालय, राँची के डॉ. कुमार सुरेश सिंह ने 19 नवम्बर 1981 को की थी। इसके पीछे एक बड़ा कारण था – झारखंड विद्यालय छोड़ने (ड्राप आउट) में देश भर में सबसे आगे था। इसका कारण था झारखंड के बहुजातीय भाषा-संस्कृति के बच्चों को प्राथमिक स्तर पर मातृभाषाओं के माध्यम से पढ़ाई का न हो पाना।

झारखण्डी बच्चों के घर की भाषा मुण्डारी, संताली, हो, खड़िया, कुडुख़, खोरठा, पँचपरगनिया, कुरमाली एवं नागपुरी है। विद्यालयों की, शिक्षकों की पाठ्य पुस्तकों की भाषा हिन्दी या अंगरेजी रही है। परिणामतः बच्चों को पढ़ाई बोझ प्रतीत होती है। बच्चे विद्यालय बीच में ही छोड़ देते हैं।

विद्यालय छोड़ने की समस्या को दूर करने के लिए मातृभाषा के शिक्षक तैयार करने हेतु जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग राँची विश्वविद्यालय, राँची खोला गया। यहाँ से निकलने वाले विद्यार्थी अपने-अपने मातृभाषा क्षेत्रों में वहाँ के बच्चों को मातृभाषा से राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा अन्तर्राष्ट्रीय भाषा अंगरेजी की ओर क्रमशः ले जाएँगे। पूरे देश में यही त्रिभाषा सूत्र लागू है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए झारखण्ड के 9 प्रमुख भाषाओं में पाठ्य एवं सहयोगी पुस्तकें विद्वान लेखकों द्वारा लिखी जा रही हैं। इससे झारखण्ड की समुन्नता संस्कृति एवं परिवेश का ज्ञान हो सके।

प्रस्तुत पुस्तक झारखंड के उत्तरी भू-भाग के एक विस्तृत भू-भाग में बोली जाने वाली खोरठा भाषा में तैयार की गई है। खोरठा नागपुरी आदि की तरह एक स्वतंत्र मधुर भाषा है। इसका साहित्य एवं संस्कृति सम्पन्न है। भाषा की समृद्धि का पता उसके शब्दों की संख्या और उसके अर्थ-सामर्थ्य पर चलता है। खोरठा भाषा इस माने में धनी है। डॉ. कुमुद कला मेहता तथा श्याम सुंदर महतो ने बड़े परिश्रम एवं लगन से खोरठा की शब्द शक्ति को उजागर किया है। खोरठा की लोकोक्तियाँ मुहावरे, पहेलियाँ, विभिन्न शब्दों के अर्थ और स्वरूप को पूरी निष्ठा से संग्रहित किया है। खोरठा जगत में यह पुस्तक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। मैं दोनों लेखकों को हृदय से बधाई देती हूँ।

डॉ. नीरा यादव
माननीय मंत्री झारखण्ड
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, झारखण्ड सरकार, राँची

दो शब्द

झारखण्ड एक बहु भाषी तथा बहु सांस्कृतिक राज्य है। यहाँ आग्नेय, द्रविड़ एवं आर्य भाषा परिवार के लोग इतिहास के अज्ञात काल से समरसतापूर्ण, सामाजिक व्यवस्था के अनुरूप रहते आ रहे हैं। दक्षिणी झारखण्ड में जहाँ नागपुरी मातृभाषा एवं संपर्क भाषा है तो उत्तरी झारखण्ड में खोरठा का बोलबाला है। खोरठा भाषा संस्कृति की एक लम्बी और समृद्ध परम्परा है। हर समाज एवं प्रदेश की अपनी-अपनी भाषा-संस्कृति होती है। यही इनकी पहचान भी है।

भाषा की शब्द सम्पदा उसकी सांस्कृतिक विकास की कहानी कहती है। खोरठा भाषा के बहुमूल्य मुहावरे, कहावतें, पहेलियाँ, अनेकार्थक, विपरीतार्थक, श्रुतिसमभिन्नार्थक, अनेक शब्दों के बदले एक शब्द, युग्म शब्द, पर्यायवाची शब्द आदि भाषा विकास की दिशा में महती भूमिका निभायी है।

इस पुस्तक को डॉ. कुमुद कला मेहता और श्याम सुंदर महतो 'श्याम' ने पूरे मनोयोग एवं परिश्रम से तैयार किया है। इस पुस्तक से खोरठा भाषा की संस्कृति, उसकी गरिमा और उसकी सम्पन्नता का पता चलता है। हर शब्द में शक्ति होती है। ये शब्द प्रसंग विशेष में अपने मूल अर्थ में परिवर्त्तन भी ला देते हैं। इतना ही नहीं कुछ शब्दों में अर्थ के चमत्कार भी दिखाई देते हैं। विशेष कर मुहावरों, कहावतों तथा पहेलियों में।

खोरठा आहना (मुहावरे) कहावतें, बुझवइल (पहेली) विलोम शब्द, सहिया शब्द, दोहरी तेहरी शब्दार्थ, ढेइर शब्द कर एक शब्द आदि पर सरल, सहज, सुंदर एवं मधुर संकलन है। इसके द्वारा खोरठा भाषियों एवं प्रेमियों को एक अनुपम उपहार मिला है। यह खोरठा भाषा-संस्कृति का अनुपम खजाना है।

प्रस्तुत पुस्तक के सुंदर लेखन के लिए डॉ. मेहता एवं श्याम जी को ढेर सारी बधाई। इनका यह खोरठा प्रेम औरों के लिए प्रेरक बनेगा। ऐसा संग्रह अन्य झारखण्डी भाषाओं में भी तैयार होना चाहिए।

प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय
कुलपति
राँची विश्वविद्यालय, राँची

खोरठा की शब्द सम्पदा

जहाँ मानव हैं वहाँ समाज है। जहाँ समाज है वहाँ भाषा है। जहाँ भाषा है वहाँ संस्कृति है। जहाँ संस्कृति है वहाँ जीने की कला है।

झारखण्ड एक बहुभाषी प्रदेश है। हर भाषा की अपनी शब्द सम्पदा होती है। यह शब्द सम्पदा उस भाषा-भाषियों व प्रदेश की समुन्नत समरस संस्कृति का आईना है। झारखण्डी समाज एक नाचता गाता बजाता समाज रहा है। नाचता गाता बजाता समाज वही होता है जो खुशहाल हो अभाव न हो, समाज में आपसी प्रेम सहयोग और एकता हो। झारखण्ड उसका एक सुंदर उदाहरण है। इसका अतीत बतलाता है कि आंगन के बिना घर सूना और अखरा के बिना गाँव सूना। अखरा इनकी सांस्कृतिक विरासत का पोषक केन्द्र है।

जहाँ का बोलना ही गीत, चलना ही नृत्य और वृक्ष और खरपट ही मांदर है। भाषा! ऐसी जिसमें मधुरता है। मधुरता के कारण ही बोली भाषा संगीत सा मृदु प्रतीत होती है। यहाँ की बोली में बाँसुरी की मीठी तान है मांदर की मधुर ताल है। झारखंड के 18 भाषाओं में 9 प्रमुख हैं। खोरठा, पंचपरगनिया, कुरमाली, कुडुख, खड़िया, हो, संताली, मुण्डारी और नागपुरी। इसके अतिरिक्त, असुरी, बिरहोरी, भूमिज, महतो आदि हैं पर ये अब समाप्ति की ओर हैं। हर भाषा अपने समाज की अमूल्य सम्पत्ति होती है। इस भाषा में, उस समाज के जीने की कला, उनका आदर्श, उनका उचित अनुचित ज्ञान, उनके जीवन मूल्य की पूंजी होती है। हर भाषा के एकेक शब्द में उसकी सामाजिक समरसता के भाव छिपे होते हैं। उससे उसकी गौरवपूर्ण संस्कृति उद्भाषित होती है। इसे संजोये रखने का मतलब सामाजिक अस्मिता को बचाए रखना है। संसार में कई छोटी-छोटी भाषाएँ मर रही हैं। भाषा का मरना उसकी संस्कृति की मृत्यु सामाजिक आदर्शों का मिट जाना हैं इसे बचाए रखने के लिए पूरे विश्व में प्रयास चल रहे हैं परंतु वैश्वीकरण और बाजारीकरण की आपा-धापी में निज भाषा त्याग कर हम अंगेरेजी शिक्षा-संस्कृति में डूबते जाा रहे हैं। हर भाषा का अपना लोक और शिष्ट साहित्य होता है। इनमें जीवन के समरसता के

सूत्र भरे पड़े हैं। हमारी सहिया मदइत की संस्कृति नष्ट हो रही है।

कोई भी देश अपनी भाषा से ही तुलना कर सकता है। पराए धन से कोई सम्पन्न नहीं हो सकता। अपनी माँ, माँ होती है उसका प्यार, उसका दुलार, उसका स्नेह, उसकी छत्र-छाया, उसका आशीष दूसरे की माँ से मिल सकता है क्या? कदापि नहीं। भारत के प्रथम प्रधान मंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने 13 सितम्बर 1949 को संविधान सभा में कहा था- 'कोई भी देश किसी भी विदेशी भाषा से विकास नहीं कर सकता। कोई भी विदेशी भाषा किसी देश की आम जनता की आत्माभिव्यक्ति की भाषा नहीं हो सकती है।' लेकिन हम इस देश को विदेशी भाषा से विकास कराने के लिए एड़ी चोटी एक किए हुए हैं। हर भारतीय की इच्छा इसे अपनाने को लगी हुई है। क्या यह कभी संभव हो सकेगा? कदापि नहीं। प्रजातंत्र में बहुमत की चलती है पर इस देश में 4 प्रतिशत अंग्रेजी जाननेवाले इंडियन 96 प्रतिशत भारतीयों पर पिछले 66 वर्षो से शासन कर रहे हैं अंगरेजी के बल पर। क्या यही प्रजातंत्र है?

झारखण्ड में अभी भी 66 वर्षों की आजादी के बाद 46 प्रतिशत लोग अनपढ़ गँवार हैं। देश के महानगरों, नगरों, शहरो में सबसे अधिक रेजा, कुली, मजदूर, आया, नौकर चाकर या छोटे काम करने वाले झारखण्ड के हैं। कारण क्या है उन्हें शिक्षा उनकी मातृभाषा में नहीं मिलती है। शिक्षक हैं तो विद्यालय नहीं, विद्यालय है तो शिक्षकों का अभाव, शैक्षणिक सुविधाओं की घोर कमी। पेयजल, शौचालय, खेल के मैदान व सामग्री प्रयोगशाला, पुस्तकालय, सांस्कृतिक हॉल आदि की नितांत कमी है। डॉ. राम दयाल मुण्डा एक गीत सुनाया करते थे- "कैसे चली राइज हो राजा? स्कूल तो बनाए देली, मास्टर तो हइए नखे? छउवा कइसे पढ़ी हो राजा?....।"

जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग राँची वि. वि. खोलने का ऐतिहासिक निर्णय 12 मई 1980 को छोटानागपुर के दामाद कहे जाने वाले डॉ. कुमार सुरेश सिंह (द. छोटानागपुर प्रमंडल के कमिश्नर सह कुलपति राँची वि. वि) ने लिया। इस विभाग के अध्यक्ष के लिए डॉ. रामदयाल मुण्डा अमेरिका से बुलाये गए और उन्होंने 16 जून 1981 को योगदान दिया। डॉ. केशरी इनके पूर्व 6 अगस्त 1980 को विभाग का कार्य संभाल-लिए थे। तब विभाग में 7 भाषाओं को ही स्थान मिला, मुण्डारी,

नागपुरी, कुड़ुख़, कुरमाली, संताली, खड़िया एवं हो को। खोरठा और पंचपरगनिया की पढ़ाई के लिए जन दबाव पड़ा तब विभाग में नौ भाषाओं की पढ़ाई आरंभ हुई। लेकिन दुर्भाग्य रहा कि खोरठा और पंचपरगनिया प्राध्यापकों की नियुक्ति आज तक नहीं हो सकी। खोरठा में मेघनाथ ओहदार और पंचपरगनिया में प्रो. परमानन्द महतो अवैतनिक रूप भाषा-साहित्य एवं संस्कृति के प्रेमवश पढ़ाते आ रहे हैं। इन्हें विश्वद्यालय ने कभी शिक्षक नहीं माना। जब कि इन्हीं दोनों से वि. वि. परीक्षा के लिए प्रश्नपत्र तैयार कराए जाते रहे एवं परीक्षा की कॉपियाँ भी इन्हीं के द्वारा जाँची जाती रही हैं। इन्हीं के आधार पर विद्यार्थियों को खोरठा और पंचपरगनिया की एम. ए. की डिग्री मिलती रही। शोध कार्य पीएच. डी. की उपाधि मिलती रही। पर आज तक खोरठा और पंचपरगनिया प्राध्यापकों की नियुक्ति 1981 से अब तक नहीं की गई। विद्यार्थी इन भाषाओं में ऐसे ही पढ़ाई पढ़ रहे हैं।

1993 के बाद डॉ. केशरी की सेवा निवृत्ति के उपरान्त, डॉ. रामदयाल मुण्डा, डॉ. एच.एन. सिंह (कुरमाली) डॉ. रोज केरकेट्टा (खड़िया) डॉ. बी. पी. नाग (मुण्डारी) आदि सेवा निवृत्त हो गए। पिछले 21 वर्षों से खोरठा, पंचपरगनिया, हो, खड़िया, कुरमाली, मुण्डारी के शिक्षक पद क्रमशः रिक्त होते रहे पर इनमें से एक भी क्षिक्षक अभी तक नहीं लिए गए। 2008 में जे.पी.एस.सी. द्वारा नियुक्ति में बाकी सभी विषयों में नियुक्ति हो गई पर जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा की नियुक्ति लटकाए, उलझाए, दबाए ही रखी गयी है।

जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग में शिक्षकों के घोर अभाव के बाद भी विद्यार्थियों की पढ़ाई में, उनके हौसले में, कोई कमी नहीं आई। बिना शिक्षक और पाठ्य पुस्तकों व संदर्भ पुस्तकों के वे पढ़ते रहे एकलव्य की तरह बिना गुरु द्रोणाचार्य की अनुपस्थिति में। खोरठा तथा अन्य झारखंडी भाषाओं की पुस्तकों के लेखन, संपादन एवं प्रकाशन में शिक्षक, लेखक कवि, संस्कृति कर्मी आगे आए। और अपने घर का मोरा बेच लोग किताबें लिख रहे हैं, तैयार कर रहे हैं और प्रकाशित कर रहे हैं।

खोरठा के दो अन्नय प्रेमी डॉ. कुमुद कला मेहता और श्याम सुंदर महतो

'श्याम' ने अपने स्तर पर अपने खर्च पर पुस्तकें लिख तथा छपवा रहे हैं इसी का प्रमाण है यह पुस्तक। खोरठा के लोक साहित्य के प्रकीर्ण साहित्य के अन्तर्गत मुहावरे, कहावतें, बुझौवल एवं रचना-व्याकरण के कुछ महत्वपूर्ण शब्द सम्पदा, अनेकार्थक शब्द, विपरीतार्थक शब्द, जुड़वें शब्द, सहिया शब्द, अनेक शब्दों के बदले एक शब्द आदि पर महत्वपूर्ण कार्य किया है। इस पुस्तक से खोरठा के अध्येताओं, शोधकर्त्ताओं विद्यार्थियों एवं प्रेमियों को विशेष लाभ होगा। इनकी यह पुस्तक लोकप्रिय होगी और इससे प्रेरणा लेकर और लोग भी ऐसे महत्वपूर्ण कार्य को आगे बढ़ाएँगे।

इनकी ये पुस्तक दीप स्तंभ का कार्य करेगी। इस सुन्दर रचना-लेखन के लिए बहुत बहुत साधुवाद!

26.5.2014

गिरिधारी राम गौंझू 'गिरिराज'
पूर्व विभागाध्यक्ष
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

हामनी बाटे ले दु टुम

भासा, सोब सइभता-संसकीरतिक जननी लागी आर सबद ओकर मरद।

सिरिसटीं सबद के सोत अनगनती हे। सबदेक माञ्-पिता परकीरति ही। मानुसें सिरजन के सकती हे। नित नावा खोजेक आर नतुन रचेक परबिरती हे। सबदें आर साहितें संसारेक बुइध समटेक आर रचेक खेमोता हे। समइ सिरें मानुसेक पइतगर पुरखा करोड़ों सबद खोइज चुकल हथ, आर साँथाइ-साँथाइ, सोंइच-सोंइच सात हजार सें बेसी भासा-संसकीरति सिरइज चुकल हथ। बादेक मातबर गुलें जर-जजाइत के जालें फँइस, सबद-साहित सिरजेक तिहा तइज देल हथ। मनुसता छोइड़, टाका-टाका भइज रहल हथ। ई धनगर गुलाक मतें मानुसें मनुसता नाञ्, टाका बढ़वेक दरकार हे। टाका बिनु बेटा भी बेकार हे, सबद साहित साँकार हे। भोगी टाकाक भूखल हे। सबद-साहित भुइल बिसइर, टकें पागल हे। धरतीं खाली टाकाक खेल हे। ई टाकाक फेर-बेपारें, मुलुकेक सतकरा नब्बे टाका, हजार तलेबरेक हाथें डिंगाइ गेल हइ। मनुसता थिराइ गेल ही। सबद-साहित पिसाइ गेल हे। टाका टानेक संसकीरतिं, गरीब फकुवाइ गेल हथ, भसें भकुवाइ गेल हथ। टके तलेबर आर मानल मातबर गुलें गरीब के सबद साहित सें दहिनाइ, बोका बनाइ, गाधा रकम खटव-हथ। गरू-डांगर रकम हाँक-हथ। मरद के बरद बनाइ कोल्हू पेर-हथ। जाइत-धरमेक छुरी बाँइध मुरगा रकम लड़व-हथ। कुकुर रकम जुठा खिव-हथ। गोड़-धोवल पानी पिव-हथ। बिना खटले ढेकइर खा-हथ। पद पइसा परतिसठा सोब पाव-हथ।

एहे धनी समाज टाका टाने खातिर धरतिक नरटी धरल हे, पेट फारल हे, खुइन गारल हे। धरती परकीरती आर परियाबरन के तिनबेनवा करल हे। अँतरी दुहरल हे, चेठा चिपरल हे, खेत खरिहानें खटनिहार के भासा-संसकीरति के काहिल करल हे। गरीबेक हक हँसतल हे। ढिढ़ा भोइर ढकरल हे। छगइर जिगहा जबरजस गुलें मनुसाली भुइल-बिसइर गेल हथ। पुरखाक परबिरती सें पिछइर गेल हथ। सइभताक करता-धरता गुलें कालीदास रकम जे डारीं बइसल हथ, ओकरे काइट रहल हथ। टाकाक लोभ-लोलोसें लालन-पालन करे ओली धरतिक लोहा सोना हीरा लुइट-लाइट रहल हथ। ई रतनेक सिंगार सें मानुसेक चेहरा चकचकाइ गेल हे। मगुर दुरदसाक दरद सें धरती अकबकाइ रहल ही। एक बाटे धनगर के धोकरी भोइर रहल हे, दोसरा बाटें धरतीं साढ़े तीन हजार भासा-संसकीरति मोइर रहल हथ, बहुत मोइर के माटिक तरें हथ, बहुत सोसानेक डहरें हथ। हेला सें धरतिक कुबइत कबइर रहल

हे। साँस सेंसइर रहल हे। बेथा-बिकोली से धरती कुँहइर रहल ही। हिया हहइर रहल हे। तलेबर टाका बोटइर रहल हथ। बेचारी धरती पोसे-पालेक खेमोता सें पछइर रहल ही। हाही-दाँदी से पसु-पँइखी निंघइर रहल हथ। एखन धनगरइन के धोकरीं अठेल संपइत हे। मसीनी ताकइत हे। हिमालइ उखारेक हिकमइत हे। मगुर मानुसेक मुँहे मुसकान नाञ, मास्क हे। पिएक पानी बोतलें बिका हे। नींद हेराइ गेल हे। सोब खावा बिसाइ गेल हे। पसु-पँइखीक, घार घइट रहल हे। गरीब, परकीरति पूजा भुइल, बिसाहा मानुसेक फेरें राम-राम रइट रहल हे। एक माञ्-माटी के मानुस देसें, जाइतें, धरमें बँटाइ लइड़ रहल हथ। मानुसें मनुसता उपजुवेक सबद साहित सइड़ गेल हे। भासा साहित संसकीरतिक संखिया बाढ़ेक बदल घइट रहल हे। साछात देखे पइलों कि तलेबर गुलें कामेक नावें कटुवा नाञ् लार-हथ। मगुर सबद-साहित के मारल भुचुंग काना गँवइ-गँवार गुलाक हाड़ तोइर खटवे ले बेस कइर जान-हथ। सुधखोर, किरी दइ कोरी टान,-हथ। डिंगर खूब खटाइ के नून चटाइ दे हथ। कारन कि अछर सबद साहित के अभावें खटवइया समाज के अकिल ओल-थोथाइ गेल हे। भाइग-भगतिक भरमें भकुवाइ गेल हे। हेडंर-हेटंग होइ के हाताइ गेल हे। ठोंनगिक ठाटें तिरमिराइ गेल हे। कामें देही थकल हे। भूखें अँतरी सटल हे। मुँहे फेफरी फुटल हे - हालइत गरू-गायो से बेसी गेल गुजरल हे। नि पढुवाक देहीं काम करल के घाम हे, पेटें भूख हे, आर आँखी लोर हे, फाटल पिंधना झोलोंग-झोपोर हे, काहे कि गँवार, तलियाइल-तलेबर के नोकोर हे।

हामनीक हिया ई सउसन के सहे नाञ् पारल। जियँत जीव सुगमें रहे भी नाञ् पारल। सइले हाड़-हिलाइ के, देहिक मास गलाइ के, जीओं-मोरो खइट के, गीदर बुढ़ा जुआन जनि-मरद से सइट-बइठ के, कालेक खोहें गाड़ाइल चाँताइल चिपाइल, छिरियाइल, छितराइल आर अरगुझाइल आठ विधा के 12206 सबद के टोइ-टमइड़ के संगाठेक चेस्टा करल हों। सोब के सरियाइ, गोछियाइ, ओरियाइ के धुँधुर से फरीछ करल हों। सोब सबद के ठाढ़ कइर किताप रूपें डँडवल हों। अइसने सोब खटनिहार के सबद-साहित के ठाढ़ करलें सउसन अनियाइ के संसारे पइरबरतन अइतइ। गउर करा कि जखन पुरखा ई बिराट संखियाक सबदवइन के सिरजल हला, तखन निसचित रूपें खूब रसल-बसल हला, खूब पढ़ल-लिखल हला, धने-जने भोरल-पूरल हला, सिछाक सोब बिधा के सुनल-सिखल हला, समाजें मानल-गनल हला, तभीं तो एते एते सबद-साहित सिरजे पारल हला। जेटा हड़पा-ढिपाढानें ढहइ गेल आर पाँच हजार बछर सिछा रोकल बादो, एते सिराइल

हेराइल बादो, सबद संखिया गुला देइख चकरी घूम लागे हे।

ऊ जुग के सुग-बुग टा आने हतइ जरूर ऊ जुग के सबदवइन के संगे ऊ जुग के समाज अइतइ, समानता के राज अइतइ, रीझ-रंग के रीत-रेवाज अइतइ, आर मानुसें मनुसाली मेजाज अइतइ। नावा रंग अइतइ, उमंग अइतइ आर रीझें राँगल राइत आर हुबें भोरल दिन हतइ, सुखें सोभिन रहतइ।

सोबसे पहिले हामनी राँची विश्वविद्यालएक बेबस्था के धइनबाद देबइ जे विश्वविद्यालएं जनजातीय भासा विभाग खोइल के खोरठा के थान देला आर ई बखत के मानिन कुलपति डॉ. रमेश कुमार पाण्डेय के हिया-खलास धइनबाद देवइखें जे ई किताप के पसिंद करला आर आसिस देला। हामनी मानिन कुलसचिव डॉ. अमर कुमार चौधरी के बिसेस धइनबाद देबइखें जे कितापेक परकासने दिल खोइल के मदइत करला।

हामनी बरतमान जनजातीय विभागाध्यक्ष मानिन डॉ. के.सी. टुडू के धइनबाद देबइखें जिनखर भासा परेम सें परेरना पाइ के लिखे में समरथ भेलों आर पूर्व विभागाध्यक्ष मानिन गिरिधारी राम गौंझू 'गिरिराज' जी के जे कितापेक महत के इंजोर करला। खोरठा जगत के जानल-मानल मोहड़ा माइन-गइन डॉ. बी. एन. ओहदार, डॉ. विनोद कुमार, प्रो. दिनेश दिनमणि, प्रा. शशि कुमारी आर पढ़वइया अर्चना कुमारी के भी धइनबाद देबइखें जेखिन अइसन किताप जोरे में परेरना के काम करल हथ।

हामनी, पढ़वइया मानिन भागीरथ महतो, अभिजीत कुमार, रमेश महतो, टेकलाल महतो, सुमिता कुमारी, बासुदेव महतो, सैयद सईद अहमद, मो. नसीम अख़्तर के भी धइनबाद देबइखें जखनि सबदेक टाबाने बेस मदइत करल हथ।

किताप पुरवल बादो हामर पास आँखा हल तो पाँखा नाञ्, बुइध हल तो भोरोसा नाञ्। सइले हाम हिया-खलास धइनबाद देबइखें 'झारखण्ड झरोखा' के जे एकर परकासनेक डहर के फइल-फरीछ करला।

सेसें हामनी पढ़वइया से भूल-चुक खातिर माफी आर उचित सलाह खातिर टकटकी लगवल हों, जइसें अइगला परकासन आरो जगजगिया आर बेस हवे। जोदि पढ़वइया ई किताप से थोरको फइदा उठवे पारता तो हामनी परिसरम के सारथक बुझब।

कुमुद कला मेहता
श्याम सुन्दर महतो 'श्याम'

विषय सूची

ढेइर सबद के एक सबद

"गुइल गोहाइरें हवे चाहीं देसें रोकथाम।
ढेइर काथा काहा नाञ् कम से चलावा काम।
ढेइर सबद के बदल करलों एक के सरंजाम।
बेसी बात बेस नाञ् जाना, कहे सुन्दर श्याम।"

सबद सोब भासा के पुंजी हे। साहित सिरजन के कुंजी हे। रचना चाहे बकिता के दिढ़ राखे ओला गुजी हे। पुरना परिया मतलब आर्जेतर जुगें, पुरखा परकीरतिक साड़ा गुला के अनइत अधियन कइर रकम-रकम, बरन-बरन, चिकन-निमन, मनेक मतन, सोझ-सपाट सरल सहज सबद के सिरजन करल हला। जइसन बइरसा सें, "टप, टपटप"। निन्हिं बुँद सें, टिपटिप। ढेइर बइरसा सें, 'झरझर'। काठें काठ बजरल सें "खट, खटखट"। लोहें, लोहा बजरल सें, "टन, टन-टन"। कम हवा सें 'सुलसुल'। ढेइर हवा सें 'सर-सर'। आँधी सें, 'हर-हर' साड़ा सुनला। पात उड़ल तो 'फरफर'। झूरी टुटल तो 'पट-पट'। डाइर टुटल तों 'रच-रच'। भात डबकल तो 'खद-खद'। घी डबकल तों 'कर-कर', घटरा पाकल तो 'गर-गर'। ई साड़ा गुला के सुइन-समइट के, मुँहें रइट के, बोली बनइला कि पानी टप-टपाइ लागल। ढेमना खट-खटाइ के चेनी चइढ़ गेल। लुरका केंवाइर खट-खटाइ रहल हे। सबद के झार भेल। बरन-बरन के बेबहार भेल। दोसर-तेसर भासा से भी जोर-नार भेल, आर खोरठा बरियार भेली। अरथ सहज हल, कोनो लट-पट नाञ हल। कोनो सबदें सउसनेक लछन नाञ् हल। वासनाक परपन नाञ् हल। सरल सहज आर सरस अरथ ओला सबद सुख-शांति दिए में समरथ हल। कोनो सबद के अरथ में सउसन के सवारथ नाञ हल। मानुस-मानुस में परेम सरधा अपनउति खातिर, आपुस-कुटुम, सहिया-गोतिया, हित-मितर, फूल-परान, गोला-मीरा आजा -दादा, बाप-पितिया, जेठा-काका, माञ्-मोंसी, पहुना-परकार, पानी-पिर्हा, चिलुम-तमखुर, रसिक-रइसका, करम-करमइति, सोहराइ-सरहूल, बँउड़ी-टुसु जइसन गुरवा आर मीठा-मीठा सबद हल। बिना भेदभाव के सोब मानुसें-मानुसें नाता मंजूर हल। गिदर जुआन, बुढ़ा, जनि-मरद के संगे एगो नाता जरूर हल। आपन सिरजल सबद सें सिछित सियान होइ के समाज साँत-सलसँत सुन्दर साफ-सुथर सइभगर रूपें सजल हल। परफुल परकीरति सोबले बोड़ बरदान हली। उरीद, मूंग, कुरथी, बजरा, जोंढरा, गोंदली, मड़ुआ,

धान हल। भोरल-पुरल खेत-खरिहान हल। जिएक जोरगर जोगान हल। कामेक 'मदइत' में सहिया-गोतिया फूल-परान हला। सोब सबद सोहान हल। रीझ-रंग खातिर, अखरें बाज-बजना, पिरित-निरित, झुमइर-चाँचइर के गान हल। मानुस-मानुस समान हल। सोब के ठोर-ठेकान हल, बेस बुइध गियान हल, जिनगी ओसान हल।

खोरठें बइगियानिक सबद नाञ्, मगुर सुध पराकिरतिक सबद हे। जे लाखों लाख गीतें-रीतें काइबें कहनीं आहना-पटतइरें बुझवइलें नुकाइल हे। एकर सें खोरठा बरियार हतइ। गोटे मानुस समाजेक उबगार हतइ।

बहुत पसरल बिचार के समटे खातिर ढेइर सबद के बदल एक सबद के दरकार हवे हे। एकर से बहुत बोड बरनन भी कम सबद में समटाइ जा हे। ई कितापें ढेइर सबदेक एक सबद के लगभग 2600 सबद देल गेल हइ।

जइसें -

जकर कुकुर जइसन मुँह हइ	-	कुकुर मुँहा
जे कुरता बहुत सकत हवे हे	-	कसकस
अइसन साग जकर एके गो आँइख हे	-	काना साग
जखन आल गिदर के ऊपर कइर के कोरा लेल जाहे	-	ठढ़कोरा

ढेइर सबद के एक सबद

अ

1. जकर नाँव नाञ लेल गेल हइ - **अमुक, फलना**
2. तिरिथें चढ़वल जाइ ओला दर-दरइब। - **अइटका**
3. माटी काटेक धसान। - **अड़खा**
4. जेटा आँखीं देखल ताजातजी बात हे। - **अबगा**
5. जेटा अउकात के वाहिर बदमासी करल जा हइ। - **अइगटंगी**
6. जेटा तुरते भेल हइ। - **अबगे**
7. जकर हुकुम से कोनो सभा चलोहइ। - **अधियछ**
8. जे कागज में लिखित नेहोर करल जा हइ। - **अरजी**
9. झारखंडेक बेस पकवान। - **अइरसा**
10. चउकठ के हेठें जे काठ टा लागे हइ। - **अइड़कट्ठा**
11. पसंगी में जोरे ओला काठ। - **अलाठी**
12. बहुत मजगूत जकराँ केव हरवे नाञ पारे। - **अजगढ़**
13. बहुत-बहुत अतियाचार - **अखरखँड**
14. जेटा केउ बुझे नाञ पारे। - **अड़गुड़**
15. एक कुटा लाल चार। - **अँकड़ा**
16. साँढ़ जकराँ भाँथि नाञ करल गेल हइ। - **अरना**
17. बहुत तारीफ करे लायक। - **अलबत**
18. धोखा सें घात करा। - **अपघात**
19. सवेरे अँधरे पराते। - **अनगुते**
20. धान काटे मइड़े ओला महिना। - **अघन**
21. जकराँ गनल नाञ जाइ पारे। - **अनगइन**
22. जेटा दिसा हीन हवे हे - **अनठेकान**
23. मामूली मानुस के कहल जाहे - **अदना**
24. भविस के जाने ओला - **अगमजानी**
25. आधाआधी मोरल मानुस - **अधमोरना**
26. चाक नींधा में रोइक राखे ओला खुँटी - **अलइनी**

27. जेटा केउ बुझे नाञ पारे - **अजगइबी**
28. जेटा केउ नापे नाञ पारे - **अगम**
29. बापेक माञ के - **आजी**
30. सुरूज डुबेक बेरा - **अड़बेरिया**
31. मोटा काठ के चीरे-फारे ओला - **अरकसिया**
32. इधाइर-उधाइर छिरियाछाट आर वाझल - **अलंजर**
33. एखन के पहइर - **अबधइर**
34. गेट वंद करे ओला बाँस चाहे रोला - **अड़खइर**
35. जकराँ केव नाञ चिन्हे पारे - **अनचिन्हार**
36. जहाँ-तहाँ सोब जोघो पसरल - **अंधपथार**
37. ककरो बेस नाञ लागे ओला - **अनकुर**
38. जे काम पूरा नाञ भेल हे - **अधपुर**
39. सही समइ पार भइ चुकल हे - **अबेर**
40. आइग के लहकल लाल गोला - **अंगरा**
41. दुइयो तर-हाथेक जोड़ - **अँइजरा**
42. आठ दिने हवे ओला - **अठवारा**
43. गुम-सुम होइ के बइठ जावा - **अड़गइर**
44. एखन एखन भेल हे - **अबधइर**
45. बइरसा बंद होवा - **अगइर**
46. एकदम फुरसइत में रहेक - **अजवाइर**
47. हल्ला-गुल्ला से भोरल - **अंदोर**
48. काम जेटा आधा कइरके छोड़ल गेल हइ - **अधबिंदरा**
49. बिना जानले सुनले - **अनठेहरी**
50. ढेइर कोठरी ओला ऊँचा घार - **अटारी**
51. आसार महिने फोरे ओला एगो लत - **असारी**
52. कुछ नाञ् जाने ओला - **अनारी**
53. आधा सिर में दरद होवा - **अधकपारी**
54. जे काम आधा भइ गेल हे - **अधकल**
55. काड़ा-महिस आवाज करे - **अंडराइ**

56. नखड़ा करल हे - अगधाइल
57. डहर माइड़ के बइठल - अड़ाइल
58. चाइरो वाटे सें बाझ लागल - अरगुझाइल
59. पोहनाक खभइर लइके आगुवे जाइ ओला - अगुवा
60. जकरा सिझवल नाञ गेल हइ - अरवा
61. सगरखिन आफइत करे ओला - अइगटंगवा
62. नाप-जोंख सें बेसी सकत - अकस
63. सीम-रकम बोनेक फोर जे बहुत कडुँवा हे - अलकुसी
64. जे पचास से बेसी उमइर के हे - अधबहसु
65. जकर लालच नाञ सँभरे हे - अधजिवाहा, अधर- जिवाहा
66. जेटा अनुमान सें बेसी हे - अनखाही
67. जेटा-टेढ़ा तिरछा हे - अड़गाही
68. जकर पेट भोइर गेल हे - अघाइल
69. जे हक्का-बक्का भइ गेल हे - अंझमंझाइल
70. जेटा बहुत मातरा में हवे हे - अलइर, गादा
71. मने मन आपन के बोड़ बुझेक काम - आदराइ
72. जाइन-बुझ के अरूचि देखवे ओला - अगधाइल
73. माछ-माँस के लेट-घेट होआ - अँसियाइल
74. मन मसोइस के राहा - अँठुवाइ
75. दुर्लभ टा पाइल वुझे - आदिक
76. जकर जइर मजबूत नाञ हे - अलगा
77. बापेक माञ् - आजी
78. पिटल धानेक पोआँर बोझा - आउड़ी
79. बे ओजह बदमासी करा - आइगमुता
80. जेटा आपने से भइ जा हे - आपरूपी
81. आपन-आपन सवारथ के काम करा - आपा-परिया
82. ससुर के बाप - आजा ससुर
83. हार जोतेक घुरान - आँतर

84. गरू गाड़िक चाकेक स्पोक - आरा
85. कुटुमेक कथा बतरा - आपुसाली
86. अइसन ललचाहा जे कभुँ देखल नाञ हे - आदेखलाहा

इ, उ

87. जकर बाँटा बखरा नाञ भेल हे - इजमाल
88. जानवर के दोड़ाइ के भगवा - इड़काइ
89. बिना सिर-पइर के काम - उट पटांग
90. बदमास जे कुछ नाञ बुझे हे - उज्जट
91. लीवर सिसटमें जोर लगवा - उनारेक
92. जे बहुत गंदा रहे हे - उलुंग भुसिया
93. गइर कानूनी असमाजिक काम - उतपाइत
94. काम सुरू करेक परकिरिया - उता-सुता
95. बिहा में हरदी-तेलेक लेप - उबटन
96. नुखता चीनी करेक - उलखन
97. बेबस्था पइरवरतन खातिर करांति - उलगुलान
98. पानी में कभी उठना कभी डूबना - उबुडुबु
99. गाड़िक पाछु वार्टे बेसी भारी होवा - उलार
100. जे थारी माँझें बेसी अलगल हे - उथरा
101. जे जनी बिना बिहइले आइ गेल ही - उढ़री
102. जकर स्वाद खतम भइ गेल हे - उसटल
103. जे घमंड से चूर हे - उनरल
104. जेटा साफ सुथरा करल हे - उसारल
105. जे पानी मे छपुइल रहल हे - उपलाइल
106. जेटा छाइप देल गेल हइ - उरखाइल
107. गरू गाड़िक चाका में मजबुती खातिर लागल लोहा - उला
108. सोंच के लंबा निसास - उदनिकास
109. जे दोसर जोघो से आइ के बइसल हे - उपनिवेसी, दिकु

110. भूंजा के पहिला परकिरिया - **उलाइ**
111. गोबर माटी से निपल जोघो के बेड़ाइ देवा - **उटकाइ**
112. आपन से मोरेक डहरे जावा - **उफराइ**
113. आपन अउकात देखवे खातिर मलके - **उलराइ**
114. नींद आवेक लछन - **उँधीयाइ**
115. जे खरीद टा हप्तवारी चाहें महिनवारी हिसाबे हे - **उठउना**
116. जे माइर के देहि दाग हइ जाहे - **उथइल जावा**

ए

117. जेटा सोझ से वहइक एके धाइर चले खोजे - **एकधइरका**
118. जे धान एक बइर कुटल गेल हइ - **एक हरिया, एककुटु**
119. बइरसा जेटा एक बइर बरइस के फुराइ जाहे - **एक आछार**
120. एक बइर तनि मनि बइरसा - **एक झुरझुरी**
121. जे एके तह लुगा पिधंल हइ - **एक छिनवा**
122. एक बात पर अड़ल रहे ओला - **एकधराहा**
123. एके अंडकोस बाढ़ेक बीमारी के - **एक सिराहा**
124. एके बाटें ढलान ओला धार - **एक चलिया**
125. एके बाटें सोब भार होइ जावा - **एक तरफा**
126. सगरखिन एके बाते के रट लगवे ओला - **एक रोढ़िया**
127. एके हाँड़ी चढ़े ओला चुल्हा - **एक अँछिया**
128. सनिचर के बाद जोन दिन आवे हे - **एतवार**
129. गाय बियाइल बाद कि हेर-ही - **एवाँर**
130. तुरते एखने भेल काम के कहल जाहे - **एहेमतर**
131. आवड़ी कइसन बाँधल जाहे - **एक गोछिया**
132. एके वरी चुकता करेक कि सबद हइ - **एक मुसुत**
133. अंगठा आर तरजनिक दूरी के कि कहल जाहे - **एक ढेंगुर**
134. खोरठा में बीस संखिया के कहल जाहे - **एक कोरी**
135. एक कोरी के बाद कोन गनती आवे हे - **एकइस**
136. चाइर कोरी के बाद कि हवे हे - **एकासी**

137. एड़ी से धकलेक चाहें मारेक काम - **एड़ियाइ**
138. सात–आठ फुट खड़ा पानी के कते कहल जाहे - **एक पुरसा**
139. एक तर हाथेक पानी के कहल जाहे - **एक चुरूवा**
140. एक बुँद पानी के कहल जाहे - **एक टिपका**
141. चाइर आना के कि कहल जा हे - **एक सिकी**
142. जे बाँध एके बाटें से टेकल रहे हे - **एक अरिया**
143. जे सामान के एके आदमी बेवहार करे हे - **एक हथु**
144. जोढ़राक पहिल कोड़ के कहल जाहे - **एकहरि**

ओ

145. एगो दरवान कि काम करे हे - **ओगरेक**
146. कँकवा कि काम करे हे - **ओंचरेक**
147. आधा भिजल आधा सूखल के - **ओदा–सूखा**
148. कोना में जुआँइठ कइसन रहे हे - **ओंढगल**
149. पिटल धानके पोआँर के कि कहल जाहे - **ओड़ी**
150. प्रतियोगिता के खोरठा में कि कहल जाहे - **ओदा–बादी**
151. पिंधान के संगिया सबद बतावा - **ओढ़ान**
152. जाड़ें लोक कइसन रहे हे - **ओइढ़–बेइढ़**
153. रोग भगवे खातिर कि खाइ चाही - **ओसोद**
154. खपरा फेरेक काम के कि कहल जाहे - **ओइरना**
155. भारी चीज के कि कहल जा हे - **ओजनगर**
156. फुलवल आर पोंगाइल बुट मुंग कुरथी के कि कहल जाहे - **ओंकरी**
157. काम करेक हुकुम के कि कहल जा हे - **ओरहन**
158. गोहाइर के संगिया सबद कि हे - **ओहाइर**
159. धेयान दइ के सुन - **ओनाव**
160. बोले में जकर राव वाझे हे - **ओल थोथाइ**
161. जे कोर्ट में मोकोरदमा के बहस करे हे - **ओकिल**
162. छुदर मानुस के कि कहल जाहे - **ओछाहा**

163. उलटी करेक परकिरिया के कि कहल जाहे - ओकाइ
164. ढेइर अकबकइले मानुस कि हइ जाहे - ओंझाइ
165. हियाँ से हुआँ तक - ओर मुड़ा
166. बिना काम का - ओरियो
167. तथा कथित चाँलाक के की कहल जाहे - ओगार
168. खोरठा में चौड़ाइ के कहल जाहे - ओंसार
169. बिना भाँथि करल भेड़ा के कहल जाहे - ओढ़ाइर
170. एक से बेसी लोकें जे परतिजोगिता हवे हे - ओदाबादी
171. सूखल मगुर तनि मनी पानीक लस रहे हे - ओदा सुखा

क

172. कान फुँइक के झगरा लड़वे ओला - कनफुसका
173. जोर लगाइ के पकरा - कटकटाइ
174. खूव कइस के बाँधा - कसकसाइ
175. मन मसोइस के रहइ जावा - कसमसाइ
176. धीव गरम करेक परकिरिया - करकराइ
177. कान के मइल के कि कहल जा हे - कनोगा
178. कामें झंझट होवा - कचकची
179. जकर सें केंवाइर झुलवल जा हे - कबजा
180. भुंजल वाद सकत होइ जावा - कटकट
181. डहर बदइल के पार हइ जावा - करकाइट
182. कोनो सकत चीज चाँड़े-चाँड़े दातें तोरा - कटाकइट
183. कसइला जे जीभ के अँइठे हे - कसकुट
184. कोनो चीज अफरात हे[illegible]ा - कचरकूट
185. बहुत बेसी करिया लोक - करिहट्ठा
186. कमार सब के कुल्ही - कमरपट्टी
187. जकर में काजर राखल जाहे - कजरोठी
188. कानेक गोड़ा के कि कहल जा हे - कनफटी
189. जे मोटा काठ कोठा बनवेक काम आवे हे - कँइड़ी

190. जे सबद सुने में बेस नाञ् बुझाइ - कटु
191. रूपया-पइसा के कि कहल जाहे - कचा-कउड़ी
192. जे कनियाँइ बिना बरियात के आनल गेल हइ - कढु
193. काठेक डुभी - कठोती
194. 'करम' करे ओली बेटी छउवा - करमइती
195. कोनो गोंठ के खुसिक साड़ा - कदकदी
196. जखन साँकार-पातार के डिंग हवे हे - कचाइंध
197. जेटा वहुत ठंढा लागे हे - कनकन
198. कामे नाकर-नुकुर के भाव - कनमन
199. तनि कुन पानी छिट-छाइट के नहान - कउवानहान
200. जेटा बहुत कम हे - कटिकुन
201. अभियास सें कोनो काम साधा - कसनी
202. बहुत काल्हा हवा - कनकनी
203. नरम किसिम के धान - करइनी
204. हाइन हवे ओला आनंद - कबकबी
205. परकीरति के एगो महान परब - करमा
206. वीर विरसाक माएक नाम - करमी
207. बाँस के कनखी के कि कहल जा हे - कनइ
208. गीत-नाद सुने ओला रसिक - कनरसिया
209. कामे गोला के सहयोग करे ओला - कमियाँ
210. जकराँ समटे में कड़-कड़ के आवाज हवे हे - कड़कड़िया
211. जेटा ताजा आर एकदम ठीक हवे - करकरिया
212. जकर से देही कडुँवाइ लागे - कलकलिया, अलकुसी
213. तोर-तरिका के काम - कइदगर
214. बहुत हल्ला-गुल्ला के कि कहल जा हे - कनफोरवा गोहाइर
215. बहुत माइर के कि कहल जा हे - कचरकुटा माइर
216. आदमी के बीच बातचीत - कथा-बतरा

217. जकर से चुइल झारल जा हे -- **कंकचा, कँकरी**
218. भाटिन दह कोन नदी में हइ - **कतरी**
219. जहाँ कमार लोहाक काम करे हे - **कमरसाल**
220. जेटा दाइल-तरकारी चलवेक कामे आवे हे - **करछुल**
221. बेदना सें जे हक्का-बक्का हे - **कठुवाइल**
222. छोटे गाछ के कि कहल जा हे - **कइड़ला**
223. बाँस जे एखन खिचा हे - **कइरला**
224. मउज-मस्ती लुटेक सरगरमी - **कदकदी**
225. आबट वाछाक घेंघाचक बोझा - **कँधइली**
226. एकदम चुपचाप रहेक - **कलेंबलें**
227. दुपहइर के खावा-दावा - **कलवा**
228. कान फूँके ओला - **कनफुँकवा**
229. कान फोरे ओला - **कन फोरवा**
230. काठ के डुभी - **कठउता**
231. कुरता-टाइट होवा - **कसकस**
232. जकर सोवाद कसइला हे - **कटकुस**
233. काने पिधें ओला गहना - **कनपासा, कनबाली, कनउसी**
234. आँट बोली के कहल जाहे - **कठफार**
235. सइरसा से निकले ओला तेल - **करू तेल, करूवा तेल**
236. मनेक भीतर के गुबार - **कसकसी**
237. लाजे जकर मुँह करिया भइ गेल हइ - **कलमुँहा**
238. जहाँ हाँसी-खुसी के मउज मस्ती हे - **कहकही**
239. बोड़ खँइचला जकर मे एक काठ धान अँटे हे - **कटाही**
240. बोड़ कराही जकर में कतारिक रस डबकवल जाहे - **कराह**
241. जे कामे नाकर-नुकुर करे - **कनमनाइ**
242. जुआनी से जकर देहि हिले-डुले हे - **कसमसाइ**
243. जे बेटी छउवाक बिहा हवे हे - **कनियाइ**

244. घीवेक कराही आगी देले - **करकराइ**
245. बापेक छोट भाइ के कि कहल जाहे - **काका**
246. आसिन के बाद कोन महिना आवे हे - **कातिक**
247. जे बिहा बोर घारे कनियाइ आइन के हवे - **काइढ़**
248. अइसन साग जकर एके गो आँइख हे - **कानासाग**
249. तीता झार, जे दवाइ के काम आवे हे - **कालमेघ**
250. पइसा के खोरठा में कि कहल जा हे - **काचा**
251. एगो अइसन माछी जे एक आँइख के हे - **कानामाछी**
252. चौकठ के ऊपरें कि देल जा हे - **कादापाटा**
253. बोनेक लोक चुल्हें कि जोरो-हथ - **काठी-झूरी**
254. खेतें धान रोपे खातिर जाबड़ के बाद कि कर-हथ - **कादा**
255. सुने खातिर कोन अंग के बेबहार हवे हे - **कान**
256. रेजा के परती निधि सबद कि हे - **कामिन**
257. एक आँइख ओला के कि कहल जा हे - **काना**
258. काने कान सुनाइल बात के कि कहल जा हे - **कानाकानी**
259. मोकोरदमा में कोन चीज सोबले बोड़ हे - **कानून**
260. कविता के खोरठा में कि कहल जा हे - **काइब**
261. आँखी कि लगवल जा हे - **काजर**
262. करिया-सादा रंगके गरू के कि कहल जा हे - **काबर**
263. सादा के विलोम सबद कि हवे हे - **कार**
264. अंध-विश्वास के खोरठा कि हवे हे - **कानापतियार**
265. खेते माटी टनवे खातिर रक्सा से बोड़ कि हवे हे - **कार्हा**
266. 'लाचार' के कि कहल जा हे - **काहिल**
267. बाइद-बहियार के बीच कइसन खेत हवे हे - **कानारी**
268. कोन फसल गिरले दोबर हवे हे - **कातारी**
269. आइज के बाद कि हवे हे - **काइल**
270. कोन तियन तीता हवे हे - **कारला**
271. मानुस कि खाहथ जकर कोनो सोवाद नाञ् - **किरिया**
272. पानी गिरलें माटिक अंगना कइसन हवे हे - **किचकिच**

273. गुड़ा से गात भोथाइ गेलें कइसन बुझा हे - **किटकिट**
274. तकदीर के खोरठा में कि कहल जा हे - **किसमइत**
275. कबड्डी खेल में कि कहल जा हे - **कितकित**
276. खोरठा में लगस्तर खेत के कि कहल जाहे - **किताककिता**
277. आँइख के मइल के कि कहल जा हे - **किची**
278. सिंदूर राखेक डिबिया के कि कहल जा हे - **किया**
279. धीरे-धीरे कर्जा चुकवेक कि कहल जा हे - **किसती**
280. बेस काम के कि कहल जा हे - **किरती**
281. खेती करे ओला के कि कहल जाहे - **किसान**
282. पयाज रोपे खातिर खेतें कि बनवल जा हे - **कियारी**
283. पइसा के खोरठा में कि कहल जा हे - **किरी**
284. ढेइर खाइ ओला के कि कहल जाहे - **कुकुरपेटा**
285. कुचे ओला सिटका के कि कहल जा हे - **कुचनाठी**
286. गंजिक ऊपरें कि पिधंल जा हे - **कुरता**
287. रोपाक बाद टाँड़ी कि बुनल जा हे - **कुरथी**
288. टाँइड़ेक खरिहान ओगरे खातिर कि वनवल जा हे - **कुँबा**
289. उराँव भासाक नाँव बतावा - **कुडुक**
290. मधुमासें कोइल आमेक डारीं - **कुहके**
291. गोड़-मुड़ सटाइक सुतेक कहल जाहे - **कुरूमुटु**
292. लाठे कि बाँइध के पानी उठवल जा हे - **कुँड़ी**
293. जहाँ कोनो सुविस्ता नाञ - **कुजुइत**
294. जोर-नार खातिर कि खोजल जा हे - **कुटुम**
295. ओल के सोवाद लागइ - **कुलकुलिया**
296. जे काठ सोझ नाञ हे - **कुबर**
297. जे बरग हाँड़ी खपरा गरहेक काम करे हे - **कुम्हार**
298. कुल के गउरब नासे ओला के कि कहल जा हे - **कुलांगार**
299. जे ओसान से चुर-चुर होइ जा हे - **कुरमुर**
300. कुटुम के संग खान-पान करेक काम के कि कहल जा हे- **कुटमारी**
301. जखन भावें भोइर के खुसी हवे - **कुरचे**

302. कार देहि ओला मरद के कि कहल जा हे? - **कुइला**
303. जबें सगर घरी झगरा-झंझट हवइते रहे हे - **कुलकुली**
304. हाथ नाञ् सुझे ओला आँधार - **कुहरकुस**
305. हिएँ भोरल भाव के - **कुसकुसी**
306. जकर कुकुर जइसन मुँह हइ - **कुकुरमुहाँ**
307. काठेक छोट-छोट चइला के कि कहल जाहे? - **कुचरी**
308. खराप चाइल के कि कहल जाहे? - **कुटचाइल**
309. बराबइर झगरा करे ओला मानुस के कि कहल जाहे? - **कुरचाहा**
310. गाँवेक गली-कुचा के कि कहल जा हे - **कुल्हि**
311. जे धान कुटे खातिर देल जा हइ - **कुटा**
312. दुइयो पसाड़ी घार, माझेक डहर टा - **कुल्हि**
313. बालटी डोरा लइ के जहाँ से पानी आनल जा हे - **कुआँ**
314. आँइख फाइर के देखा - **कुँधराइ**
315. छोटे-छोटे डिंग के कि कहल जाहे - **कुधा**
316. जे धान खटाली रूपें देल जाहे - **कुरइ**
317. जखन मानुस जाड़े, गोड़े-हाथ समइट सुसवाइ - **कुकुवाइ**
318. मछरी पकरेक कामे लागल बरग के कि कहल जा हे? - **केंट**
319. केंक... केंक करे ओला चरँइ के कि कहल जा हे ? - **केरकेटा**
320. गावें खाटिक बिछोना के कि कहल जा हे? - **केंथा, नेंदरा**
321. हाथेक माँझेक जोड़ के कि कहल जा हे? - **केहुनी**
322. दोरोजाक पल्ला गुला के कि कहल जा हे? - **केंवाइर**
323. जकर से गुर-चीनी बने हे ऊ खेती के कि कहल जा हे?- **केतारी**
324. जे एके बइर फोरे हे, ऊ गाछ के कि कहल जा हे? - **कँइरा**
325. भइरता खातिर पकवल आलु मइसल जाहे - **केचइत**
326. चुइल काटेक अउजार - **कँइचि**
327. जकर पात से बिडि बने हे - **केंद**
328. माएँ गिदर के कहाँ बइसवो ही? - **कोरें**
329. कोरें, ऊपर मुड़ कइर बइसवल के कि कहल जा हे - **ठढ़कोरा**
330. जे बोले नाञ पारे ऊ आदमी के कि कहल जा हे - **कोंका**

331. पाँच घार बनाइ एक टेगें खेले ओला खेल के कि कहल जा हे ?- **कोइथ**
332. साग सबजिक बगान के कि कहल जा हे? - **कोचा**
333. धोती पिधें में अँगरी से कि बनवल जा हे? - **कोंची**
334. जनिक झगरा के कि कहल जा हे? - **कोवा काठी**
335. महुआक फोर के कि कहल जा हे? - **कोचरा**
336. एगो कहबी में कोन अनाज के नाम हे जकराँ दइ के पढ़लें बिदिया नाञ हे? - **कोदो**
337. गिदर के काँधे बइसवेक बात के कि कहल जा हे? - **कोरकोंधी**
338. दु बाटे सें दु देवाल जहाँ मिले हे ओकराँ कि कहल जा हे - **कोना**
339. सोबले बोड़ सिम (तरकारी) के नाम की? - **कोकसिमा**
340. सोहराइ में गोहाइलें की पूजा हवे हे? - **कोरइया**
341. बोड़ बिलाइर के कि कहल जा हे? - **कोटाइर, उद् बिलाइर**
342. बिहाक बाद बोर कनियाँइ जे कोठरीं जा हथ ओकर नाम- **कोहबर**
343. कोन जोघो में खोरठा छेतर के कार्यालय हल? - **कोठार**
344. खोरठा में 20 संखिया के कि कहल जा हे ? - **कोरी**
345. डेराइ के बहाना बाजी करे ओला के कि कहल जाहे? - **कोकलाहा**
346. गुर राखे ओला हाँडी के कि कहल जाहे? - **कोही**
347. काम चोर लोक के कि कहल जा हे? - **कोर्री**
348. खोरठा में दूरी के नाप कि हे? - **कोस**
349. खेतें आइर धरेक काम के कि कहल जा हे? - **कोड़ी-कोदाइर**

ख

350. खपराक घार के कहल जाहे? - **खपरेल**
351. भूँजा भूँझे ओला आधा हाँड़ी के की कहल जाहे - **खपरी**
352. खपरी में तातल भूँजा के कथीं से लारल जा हे? - **खइरका, भुँजनाठी**
353. जकर आगुक दाँत टुटल हे, ओकराँ कि कहल जाहे? - **खरगा**
354. टुटल खपरा के कि कहल जाहे? - **खपटी**

355. उसर जमीन के कि कहल जा हे? - **खरनठ, खरना**
356. खोरठा में बीस पइला नाप के कि कहल जा हे? - **खँडी**
357. बइरसा से फुटल आइर के कि कहल जा हे? - **खँडो**
358. जे रोटी बिना तेलें खाली पानी से बनवल जाहे। - **खपइरपोडो, पइन रइसका**
359. खोरठा में नोकसान के पर्यायवाची सबद बतावा? - **खयानत, खति**
360. जे बाँस खिंच के फाटक लगवल जाहे। - **खरकन**
361. जे धान कुरइ दिएक कामें आवे हे। - **खदिहन**
362. जे आदमी बहुत बदमासी करे हे। - **खपतान**
363. ढोढ़ाक थूक के कहल जाहे। - खँखार
364. पूरा पोड़ल के कहल जाहे। - **खाँख**
365. अधबइसु मानुस के कहल जाहे - **खमसल**
366. खोरठा में ईमानदार आदमी के कहल जाहे? - **खरखरिया, हियाखलास**
367. फार बेसी खड़ा भेलें कि कहल जाहे? - **खर**
368. जे जोघो बराबइर नाञ हे - **खदखुदरा**
369. जे वस्तु चिकन गुलगुल नाञ हे - **खरखस**
370. जे जीव के बारो गो टेंग हवे हे - **खँखरा**
371. धान, जकर भीतर चार नाञ बनल हे - **खँखरी**
372. जे धाने दोसर धान मेंझाइ गेल हे - **खभरा**
373. जे हाँड़ी में भूजा-भुंजल जा हे - **खपरी**
374. भाँथि करल बोदा के कि कहल जा हे? - **खसी**
375. छोट खाटी के कि कहल जा हे? - **खइटली**
376. बाँसेक बोड़ टोकरी के कि कहल जा हे? - **खँइचला**
377. जे बानि लुगा-लाता काँचेक कामें आवे हे। - **खार**
378. जे खाली कल्पना के बात करे हे। - **खाम खयाली**
379. जेटा जोवाइल नाञ हे। - **खिचा**
380. जकर में संदेह हे - **खिटखुट**
381. जे बहुत ही पतला हे - **खिखनी**

382. जे जमीन परती रहे हे - **खिल**
383. छोट खाँट डहर के कि कहल जा हे? - **खुसकी**
384. झगरा करेक उपाइ के कि कहल जा हे? - **खुनुस**
385. धोती में डोरा बाँइध के बनवल थोली के - **खुति**
386. गरू-गाड़ी में सामान रोके ले कि लगवल जाहे? - **खुटरी**
387. जेटा सोभेक सामने साफ-साफ हइ - **खुलल्मखुला**
388. मानुसेक साहस के कि कहल जा हे? - **खेमोता**
389. किसान कि काम करऽ हथ? - **खेती**
390. सुखल टेटाइल जनि के कि कहल जा हे? - **खेंखरी**
391. गरू-डाँगर, छगरी-पठरू के हाँकेक काम? - **खेदाखेदी**
392. ट्रिप के खोरठा में कि कहल जा हे? - **खेप**
393. खोटइक-खोटइक सामान दिए ओला कंजुस के कि कहल जाहे? - **खोटका**
394. भइर अंजुरी सामान के कि कहल जा हे? - **खोमचा**
395. नेवता दे निहार नापित के कि देल जाहे? - **खोंची**
396. अँचरा पसारलें जे जोघो बने हे ओकराँ कि कहल जा हे?-**खोंइछा**
397. जकर दाँत टुइट गेल हे ओकराँ कि कहल जा हे? - **खोंढ़ा**
398. चरँइ के घार के कि कहल जा हे? - **खोंधा**
399. जनि चुइल सें कि बनवऽ हथ ? - **खोपा**
400. तेल-कुँड़ साबुन नहाइ बिना जेकर देहि रूखड़ हे - **खोराहा**
401. बुढ़ा गाछेक फेड़ें फाँक के कि कहल जा हे? - **खोंढ़ोर**
402. मउका पइले बेहिसाब खावान के कि कहे हे? - **खोखोबोरो**
403. कतारिक रस चिपरल बाद सिठा टा के कि कहे हे? - **खोहा**
404. जिनगी जिएक जे खरचा देल जाहे ओरा कि कहे हे?- **खोरपोस**
405. जे सोब कामें सिकाइत खोजते रहे हे? - **खोंचाहा**
406. आलोचना के खोरठे कहल जाहे - **खोदा-खोदी, ओतन गोतन**
407. खाएक खरचा के कहल जाहे? - **खोराकी**
408. गंदा आदमी के कहल जाहे? - **खोराहा**

ग

409. एगो बहादुरी के खेल, जेटा सिराइ रहल हे - गधका
410. गंध के नाम सें कोन साग परसिध हे? - गंधारी साग
411. मसकिल के परयाइबाची सबद बतावा? - गजगज
412. नितरइ के परयाइ बाची सबद बतावा? - गझा हे
413. गिदर जे चाका के गड़कवऽ हथ - गड़गडी
414. असुविधा के परयाइवाची सबद बतावा ? - गरजुइत
415. बात-चीत के कहल जाहे - गप सड़क्का
416. सरकारी जमीन के कहल जाहे - गइर मजरूआ
417. जेटा देवी-देवता ठिन मान-मनोती करल जाहे - गछति
418. जे बात पर गउरब बुझल जाहे - गरबेक बात
419. औसतन के खोरठा में कि कहल जाहे? - गड़परता
420. धीरे-धीरे के खोरठा में कि कहल जाहे? - गतें-गतें
421. बहुत हुब-हुलास के विसेसन कि देल जाइ पारे? - गरदा-गरदी
422. बहुत खुसी के एक सबद में कि कहल जाहे? - गदगदी
423. गरू गाड़ी हाँके ओला के कि कहल जाहे? - गइड़वान
424. जल्दी-जल्दी खाइ के कि कहल जाहे? - गबगब
425. खोरठा में अलंकार के कि कहल जाहे? - गहना गुरिया
426. कियारी के खोरठा में कि कहल जाहे? - गँड़ारी
427. गपसपेक के साड़ा के कि कहल जाहे? - गलबली
428. खरी-खोटी सुनवेक किरिया - गरगरवे
429. घमंड में अकड़ल के कि कहल जाहे? - गरबें टिड्डुवाइल
430. गोबर जइसन रंग के कहल जाहे? - गबसा
431. भरपूर के खोरठा में कि कहल जाहे? - गादा
432. पेड़-पौधा के खोरठा में कि कहल जाहे? - गाछ-बिरिछ
433. जहाँ सोब चीज अछल-गदल खरच हवे हे? - गादागादी
434. घारेक भितरी दुरी के कि कहल जा हे? - गाभा
435. बहुत झाड़ी के बेढंगा रूप के कि कहल जाहे? - गाजार
436. खोरठा में गाली-गलोज, डांट-डपट के कि कहल जाहे?- गारा-गारी

437. खोरठा में गपसप के कि कहल जाहे? - **गालमारे**
438. खोरठा में गपसप के फुसफुसाहट के कि कहल जाहे?- **गांदर-गुंदुर**
439. यदा-कदा के खोरठा में कि कहल जाहे? - **गाहे-बगाहे**
440. गीतेक ध्वनि के खोरठा में कि कहल जाहे? - **गीत- नाद**
441. खोरठा में संतान के कि कहल जाहे? - **गिदर**
442. खोरठा में ज्ञान के कि कहल जाहे? - **गिआन**
443. खोरठा में मछरी पकरेक हाथ जाल के कि कहल जाहे?- **गिरगिरा**
444. 'बचपना' के कि कहल जा हे? - **गिदराली**
445. पसीना से भिंजल देहि कइसन बुझा हे? - **गिसगिस**
446. एकदम छोट गाढ़ा के कि कहल जा हे? - **गुचि**
447. घोरान के खुंटि के कि कहल जाहे? - **गुजि**
448. खुब पिटेक किरिया विसेसन कि हवे हे? - **गुलगुलाइ**
449. 'गुरूवाली' के खोरठा - **गुरूवइटी**
450. संदेह जेटा पेटें रहइ जा हे - **गुटगुटी**
451. 'गुड़ मुड़ाकर रहना' के कि कहल जा हे? - **गुलु-पुटु**
452. 'चूर के कि कहल जा हे? - **गुँड़ा**
453. बुकनी अनाज के कि कहल जाहे? - **गुड़ि**
454. 'सिमट कर गोल होना' के कि कहल जाहे? - **गुडमुडु- गुलुमुटु**
455. हाथ से लड़ाइ के कि कहल जाहे? - **गुता-गुति**
456. कोनो वस्तु के लाभ-हानि के कि कहल जाहे? - **गुन-सोवाद**
457. कोनो वस्तु कोमल नरम के कि कहल जाहे? - **गुलगुल**
458. चुपचाप होइ के रहइ जावा के कि कहल जाहे? - **गुम बाँइध**
459. पेटें साजिस के छटपटी के कि कहल जाहे? - **गुबगुबी**
460. चुपचाप के खोरठा में के कि कहल जाहे? - **गुम सुम**
461. हक्का-वक्का के कि कहल जाहे? - **गुडुम**
462. खाना वदोस जाति के कि कहल जाहे? - **गुलगुलिया**
463. 'झारखंडी घर' जकर में चाइरो वाटें ढलान रहे हे - **गुडिघर**
464. कोनो बंधना के खुब कसेक के कि कहल जाहे? - **गुडइर, गुरइर**
465. कोनो बस्तु के मांसल भाग के कि कहल जाहे? - **गुदा**

466. पेटेक भीतर गुस्सा के कहल जाहे? - **गुब गुबी**
467. खोरठा में खूब गरमी के कि कहल जाहे? - **गुमाइर**
468. खोरठा में हल्ला-गुल्ला के कि कहल जाहे? - **गुइल-गोहाइर**
469. पथरीला माटी के कि कहल जाहे? - **गुरगुरी माटी**
470. वस्तु जे गरमी से खराप भेल हे - **गुम साइल, गुमल**
471. जे वेसी चुप रहे हे - **गुमन मुहाँ**
472. गुस्सा जे भितरे-भितर बुदबुदा हे - **गुटगुटि**
473. नाटा मानुस के कहल जाहे - **गुडरा**
474. जे मानुस के ऊँचाई बहुत कम हे - **गेड़ा, गेड़-मेठा**
475. जे मानुस के नाक से तोतरा बोले हे - **गेंगा, गेंगना घेंघना**
476. खोरठा में खाटिक विछोना के कि कहल जा हे? - **गेंदरा, लेंदरा, काँथा, नेंदरा**
477. बरसाती कीड़ा जकर अनगइन गोड़ हवे हे - **गेंड़ गेवारी**
478. चरँइ जे घारें दुआरे खोधा करे हे - **गेरवा**
479. 'चरवाहा' के खोरठा में कि कहल जा हे? - **गोरखिया**
480. पुआल आँटी के खोरठा में कि कहल जा हे? - **गोछा**
481. अंगना ढुकेक साँकट डहर के कि कहल जाहे? - **गोझी**
482. अदल-बदल विहा के कि कहल जाहे? - **गोलोट**
483. 'दाना' के खोरठा में कि कहल जाहे? - **गोटा**
484. जोघो, जहाँ गाँवेक गाय-गरू के जुमवल जा हे - **गोंठ**
485. गाँवेक लोक के हँकवे जुमवे ओला - **गोड़ाइत**
486. खेल के संगी के कि कहल जा हे? - **गोधा**
487. विहाक वाद पहिल लिआन के कि कहल जा हे? - **गोना, दोंगा**
488. आपन वंस के मानुस के कि कहल जाहे? - **गोतिया**
489. गोहाइल पुजा में जे विसेस रूप के खुंटी बनवल जा हे- **गोरइया, कोरइया**
490. जकर नाम से कोनो वंस चले हे - **गोतर**
491. भाइ के बहु गुला कहल जाहथ - **गोतनी**
492. बोझा जे काड़ा गरू से घिंसाइर के आनल जा हे - **गोहोर**
493. गोहमा रंग के साफ मानुस के कि कहल जा हे? - **गोरनार**

494. हल्ला-गुल्ला के कि कहल जाहे? - **गोहाइर**
495. विछा सें छोट कीड़ा जकर ढेइर टेंग हवे हे? - **गोजोर**
496. गर्भवती भेले जनि के कि कहल जा हे? - **गोड़ भारी**
497. कोनो खरापी से जे फल समइ से पहिले पाइक जाहे - **गोरवाइल**
498. ढेइर सिझल से जकर सोवाद खराप हइ जा हे - **गोगदाहा**
499. जे सामान बेस कइर थाक लगाइ के राखल गेल हइ - **गोइछवल**
500. जे कपड़ा चाइरों वाटे से सिकुइड़ गेल हइ - **गोगंचल, घोंगचल**
501. साग, जकर पाता गोल-गोल हवे हे - **गोल गोलवा**
502. ऊ अनाज जकराँ एकदम गरीब सब खा हथ - **गोड़ा, गोंदली**

घ

503. गोटे घारेक लोक के कि कहल जाहे? - **घरगुसटी**
504. घार वांटें चले के कि कहल जाहे? - **घर-मोहड़ी**
505. घार-गृहस्थी के कि कहल जाहे? - **घर करना**
506. जे गइर, घरेक लोक रकम रहे हे - **घर गहिया**
507. सोसराइर में रहे ओला जावाँइ के - **घर जँवइया**
508. घरें रहे ओला छिपकली - **घर अगोरिया**
509. सगर खिन घरें रहे ओला मानुस के - **घर घुसरा**
510. घर-पइरवार के सरकारी लेखा जोखा के - **घर सुमारी**
511. ककरो घरें रसल-बसल लोक के - **घर भतुवा**
512. घर विगाइर के भिनु करवे ओली जनि के - **घर-फोरी**
513. घर चलवे ओली जनि के कहल जा हइ - **घरनी**
514. खोरठा में घड़ा के कहल जाहे? - **घइला**
515. सबके घर बाटें डहरेक परकिरिया के - **घराघरी**
516. झारखंडी पहिचान के पकवान - **घटरा**
517. हाँड़ी जकर में पिएक पानी राखल जाहे - **घइला**
518. वस्तुक ऊ भाग जेटा एक बइर में तइयार हव हइ - **घानी**
519. कामें जे पानी टा देहि से बोहऽ हइ - **घाम**
520. गाछ काटे में जे भागे टांगाक चोट मारल जा हे - **घाही**

521. काम करते-करते कामेक जोघो में जे गाँइठ बइन जाहे - **घाठा**
522. जे मानुस लोक के ठाके में माहिर बइन जा हे - **घाखुर**
523. जखन लोक आपन-आपन घार जाय लाग-हथ - **घारा-घारी**
524. हथोड़ा के परयाइवाची सबद बतावा - **घाना**
525. गंदा रहे ओला बेकति कि कहल जा हे? - **घिसट, घिनाहा घिसटाहा**
526. जकर से थुथु ओकाइ आवे हे ओकराँ कि कहल जाहे?- **घिनघिन**
527. भुएँ टाइन आनेक किरिया कि हवे हे? - **घिसराइ**
528. जनि मुड़ ढापे खातिर कि ले हथ? - **घुघा**
529. जनम के बाद आल गिदर के कोन दवाइ देल जाहे? - **घुटी**
530. टिल्हा जइसन ऊँचा जोघो कि कहल जाहे? - **घुटु**
531. जहाँ डहर घुइर-घाइर के जाहे - **घुराँठ**
532. मोटा छेनी जकर ऊपर घाना वजारल जाहे - **घुठा**
533. गर्दन के दुगो खोरठा सबद बतावा? - **घेंचा, नरटी**
534. नाक के बोले ओला के कि कहल जाहे? - **घेंधना**
535. झारखंडी छेतर के एगो वोड़ घेर के हालुक बजना - **घेरा**
536. चिहँइर पात के बनल झारखंडी बरसाती - **घोंघ**
537. मट्ठा के खोरठा में कि कहल जा हे? - **घोर**
538. काँटाक घेरान के खोरठा में कि कहल जा हे? - **घोरना**
539. जनमल आल के कुसराइन कोन दवाइ देही - **घोंटि**
540. पँइखी के डिम सेवेक ग्रकिरिया के कि कह-हथ? - **घोरनी**

च

541. एके ठिन ढेइर खेत के समूह के कि कह-हथ? - **चक**
542. गरू गाड़िक छावनी के कि कह हथ? - **चटका**
543. कोनो चिज के सुरक्षित करेक चिन्हा के कि कह-हथ? - **चनका**
544. चप्पल के खोरठा में कि कहल जाहे? - **चटकी**
545. चुइल टानेक दरद के कि कहल जाहे? - **चरचराइ**
546. 'पक्षी' के खोरठा में के कि कहल जाहे? - **चरँइ**

547. 'चट्टान' के खोरठा कि रूपे लेल हइ? - **चटाइन**
548. 'भगाना' किरिया के खोरठा कि हइ? - **चहट**
549. बहुत जल्दी बाजी करेक खोरठा कि हवे हे? - **चपट चाँड़**
550. चाइर बोड़ गाछ के जोघो के कि कहल जाहे? - **चइर फेड़ी**
551. घनघोर रउद के कि कहल जाहे? - **चड़चड़िया रउद**
552. बजारू जिनिस के खोरठा में कि कहल जा हे? - **चलानी**
553. जोते में गिला खेति कि कहल जा हे? - **चपचप**
554. मास आर-चार गुड़ी मेंझाइ के बनवल पकवान - **चरपा**
555. बहुत आश्चर्य लागल के खोरठा में कि कहऽ हथ? - **चकरी घुम**
556. 'चुगली' के खोरठा में कि कहल जाहे? - **चबइ**
557. देवी-देवता ठिन मुड़ घुनेक काना पतियारी के कि कहऽ हथ? - **चटिया**
558. खुब चहट रहेक चेहरा के कि कहल जा हे? - **चनफन**
559. नकासी ओला चाँदिक बनल हाइर के कि कहल जाहे?- **चँदरहाइर**
560. सिकाइत करा के कहल जाहे? - चबइ, चुगली
561. जकर मुड़िक चुइल छोइल देल गेल हे? - **चडरा**
562. टांगा से फारल लकड़ी के कि कहल जाहे? - **चइला**
563. 'बदमासी' के खोरठा में कि कहल जाहे? - **चरपटालि**
564. 'पालथी माइर के' खोरठा में कि कहल जाहे? - **चतनियाँ माइर के**
565. ऊ बरद जकर मुड़े टिका रकम दाग हवे हे? - **चँदाहा, टिकला**
566. पोआँर के गोल ऊँचा तह के कहल जा हे? - **चाकी**
567. माड़-भात के आरो कि कहल जा हे? - **चार सिझा भात**
568. जल्दी बाजी के खोरठा में कि कहल जा हे? - **चाँड-चपट**
569. कुआँ-डाड़ी सुखेक कि कहल जा हे? - **चाट परल**
570. तिकड़म के खोरठा में कि कहल जा हे? - **चाटी**
571. महुआ भुँजे में कोन किरिया लागे हे? - **चाइड़**
572. चाँदिक कंगन के कि कहल जा हे? - **चाँद खाढु**
573. खुब रउद के विसेसन बतावा? - **चाम सुखा रउद**
574. 'चौड़ा' के खोरठा बतावा? - **चाकर**

575. सुरूज डुबेक समइ के कि कहल जा हे? - चाके बेरा
576. खेती के खोरठा में कि कहल जाहे? - चास
577. एक जोघो सें दोसर जोघो लेगेक किरिया के कि कहल जाहे? - चालल
578. जखन सुरूज डुबेक जोघो में आइ जा हे? - चाके बइसल
579. 'चमगादड़' खोरठा में कि कहल जाहे? - चाम बादोली
580. बाँउड़ी परब के पहिला दिन के कि कहल जा हे? - चारधोवा
581. खेती-बारी के खोरठा में कि कहल जा हे? - चास-बास
582. खेतीहर के खोरठा में कि कहल जा हे? - चासी
583. खेतीहर किसान के कि कहल जा हे? - चासा-चासी
584. 'साष्टांग' गोड़े गिरेक के खोरठा में कि कहल जाहे? - चितपातांग
585. मांस के गिदराली भासा में कि कहल जा हे? - चिचि
586. बहुत बोड़ कंजूस के कि कहल जा हे? - चिमंट चिपास
587. चिंटि काटेक खोरठा में कि कहल जा हे? - चिंगटा, चिगट
588. गोंद के खोरठा में कि कहल जा हे? - चिट
589. चिमटा के खोरठा में कि कहल जा हे? - चिंहटा
590. चुगली के खोरठा में कि कहल जा हे? - चिंगा काठी
591. 'सामान' के खोरठा में कि कहल जा हे? - चिज-बसुत
592. मांस खाइ के पिगांठी सबद कि हे? - चिराचोंथा
593. घुन लगना के खोरठा में कि कहल जा हे? - चिन जावा
594. कान ऐठंना के खोरठा में कि कहल जा हे? - कान चिचरा
595. सोब सबद में 'च' लगाइ बोलेक परकिरिया के कि कहल जाहे? - चिकारी
596. 'गिड़गिड़ाना' के खोरठा में कि कहल जा हे? - चिरोरी
597. बहुत मइल के खोरठा में कि कहल जा हे? - चिरकुठ मइल
598. 'शाश्वत' के खोरठा में कि कहल जा हे? - चिरोक्काल
599. कंजूस के खोरठा में कि कहल जा हे? - चिपास
600. चिकन-चिकन बात करे ओला के कि कहल जा हे? - चिकनमुहाँ
601. तेंतइर बिया के खोरठा में कि कहल जा हे? - चियाँ

602. मुफुत में चुटकी भइर सामान दिएक कि कहल जा हे?- **चुनका**
603. स्तन के करिया भाग के कहल जाहे? - **चुचका**
604. सरइ पात में लेपटल पिनी तमखुर के बिड़ी? - **चुटि**
605. तरगोड़ के भोरें वइसेक के कि कहल जा हे? - **चुकुमुकु**
606. विहा में जे वोर-कनियांइ घरें राशि देल जाहे? - **चुमान**
607. पानी बेसन पुआल मिलवल डांगर के सानी - **चुभि**
608. चिहँइर पातेक बनल देहाती बरसाती - **चुकरू, घोंघ**
609. नदी-नाला के नजिक खोदल कांचा कुआँ - **चुआँ**
610. जे गिदर बहुत चंचल हे - **चुहुल**
611. सफेद रंग के खोरठा में कि कहल जाहे? - **चेरक, सादा**
612. जकर चुइल छोइल देल गेल हइ? - **चेडरा**
613. गिदर के परयाइ वाची सबद लिखा? - **चैंगा**
614. खट्टा के खोरठा में कि कहल जा हे? - **चैंका**
615. हल्ला-गुल्ला' के खोरठा में किरिया हे? - **चैंचाइ**
616. डांगर चरेक जोघो के कहल जाहे? - **चैंराँठ**
617. ताकत खेमोता के एगो परयाइबाची सबद - **चेठा**
618. सिढ़ी के खोरठा में कि कहल जा हे? - **चेनी**
619. शक्तिहीन के खोरठा में कि कहल जा हे? - **चेठाहारा, नीमर**
620. घाँस समेत माटिक बोड़ टुकरा के - **चेरा**
621. फाटल चिटल पुरान कपड़ा के कहल जाहे? - **चैंथरा**
622. 'छिलका' के खोरठा में कि कहल जाहे? - **चोका**
623. 'छिलका' जकर से डोरा बने हे कहल जाहे? - **चोप**
624. छुरी बँइठिक तेज धार के कि कहल जा हे? - **चोंख**
625. गाछके छोट डाइर के कि कहल जा हे? - **चोंग**
626. 'मोह' के खोरठा कि हवे हे? - **चोज**
627. चोर सोभाभ ओला बेकति के कि कहल जा हे? - **चोरकट**
628. धोती पिंधे में पेछुवा टा के कि कहल जा हे? - **चोंइठ**
629. आघात लागल के कि कहल जा हे? - **चोटघाट**
630. एगो घास जकर फुल लुगा में लाइग जाहे? - **चोरचोटा, चोरोटा**

चोर कांटा

631. ताड़ाताड़ी काम के कहल जाहे - **चोटें चार**
632. सँताइ के तबाह करल के कि कहल जा हे? - **चोदो चोवाड़ी**
633. गाय-भैंस के एक बइर सहरेक मतरा के कहल जाहे? - **चोता**
634. चाइर खाना डिजाइन के दरवाजा के कहल जाहे? - **चोबंदी**
635. लड़डु खातिर जे दाना छाँकल जाहे ओकरा कि कहल जाहे? - **चोना**
636. सोब पानी उबइछ के उठाइ लेवा टा कि कहल जाहे? - **चोंगइर**
637. विहाक चाइर दिनबाद नहाइ के नेग? - **चोठाइर**
638. एकदम जल्दी हवेक मोहवरा कि हवे हे? - **चोटेंचार**
639. लुट-पाट करा' के कि कहल जाहे? - **चोंथाचिरा**
640. कोनो तरल से सराबोर करेक कि. वि. कि हवे हे? - **चोरोबोरो**
641. तह ऊपर तह सजवल के कि कहल जा हे? - **चोपतल**
642. घाव बेस भइ गेल के कि कहल जा हे? - **चोंखाइल**
643. चकाचौंध में पड़ल के कि कहल जा हे? - **चोंधियाइल**
644. 10×10 फीट=100 माटी काटे ओला माटी के कह-हथ?-**चोका**

छ

645. गुँड़ी कुटे में मोटा-पतला के कइसे बेगर करल जाहे? - **छनइक**
646. तनि कुन बइरसा के कि कहल जा हे? - **छगइर भिड़का, छिन बइरसा**
647. नाखुस होइ के भागेक किरिया के कि कहल जा हे? - **छमइक**
648. 'तकलीफ' के खोरठा कि हवे हे? - **छइठ**
649. 'गायब' के खोरठा कि हवे हे? - **छपित**
650. बाल-बच्चा के खोरठा कि हवे हे? - **छउवा-पुता**
651. छौंक-लगाना के खोरठा कि हवे हे? - **छनकवा**
652. नरता नहान के कहल जाहे? - **छठी-छिला**
653. 'कपट' के खोरठा कि हवे हे? - **छइब**
654. छोट हाँड़ी के खोरठा कि हवे हे? - **छभनि, छाभा**

655. हियाँ, ईरानी भिखमंगा के कि कहल जा हलइ? - **छरहड़िया**
656. बकरी के खोरठा में कि कहल जा हइ? - **छगरी**
657. काठ फारे खातिर तीन काठ से बनवल फरमा के कि कहइथ? - **छगइर-गोड़िया**
658. रागें बड़बड़इते भागेक किरिया विसेसन कि हइ? - **छनछनइले**
659. बहुत बेसी बोलेक किरिया कि हवे हे? - **छबछबाइ**
660. खुब बेस देही-गात ओला कि कहल जा हे? - **छरछरिया**
661. ओकाइ चाहें बोमी करेक खोरठा में कि कहल जा हे? - **छाँट**
662. छाइन में बाहरी देवाल से बाद के जोघो के कि कहल जाहे?- **छाँछा**
663. 'कभु-कभुँ' के परयाइबाची सबद बतावा? - **छाड़-बेड़**
664. बाँस-खुंटा, पात-पोंआर सें बनवल पंडाल के कि कहऽ हथ? - **छमड़ा**
665. खाएक समइ एगो भिनु पाता में खाना राखा? - **छाँदा**
666. 'परछाई' के खोरठा में कि कहल जा हे? - **छाँहइर, छाँहुर, छँहइरा**
667. खुब बिनती नेहोर करेक किरिया? - **छावाइंध**
668. जखन केकरो बेबस कइर देल जा हइ? - **छाँइध-बाँइध**
669. रोला-बाँस खपरा से बनल छप्पर के कहहथ? - **छाइन**
670. दोसा रकम गुड़ी घोइर बनवल रोटी? - **छिलका**
671. नइजगा निम पातेक भुजिया? - **छिछकी, नीम छिछकी**
672. कोनो खवइया वसुत खाइते-खाइते तिरपित होवा - **छिंकाछिंकी**
673. कोनो चोरी चाहे हेराइल वसुत के संधान पावा - **छिपाट**
674. एकदम ठेठ के कि कहल जाहे? - **छिछक ठेठ**
675. जखन कोनो खेती काटे में एकाइ पइड़ जाहे - **छिंड़ा**
676. जखन, कोनो चिज बिगइड़ के इधाइर-उधाइर होवा - **छितिछिन**
677. चाइरो बाटे सें दुसान के सबद हे - **छिछि-छिया**
678. डोरा-बरहि के कोनो छोर के कहल जाहे - **छिप**
679. खाँड़ा मइधें छोट थारी के कहल जाहे - **छिपि, छिपनी**
680. गड़बड़ जनि के कहल जाहे - **छिनाइर, छिनरी**

681. जहाँ-तहाँ बइरसा के कहल जाहे	-	छिनबइरसा
682. मोरखी मे दस दिन के समइ के कहल जाहे	-	छुतका
683. बिना रोक-टोक के घुरे ओला के कहल जाहे	-	छुटा
684. जे वसुत छुत से नकारा होइ जा हे	-	छुतहर
685. एकदम छोट रूप के कहल जाहे	-	छुटुमुटु
686. कम ऊँचाइ के घार चाहें दुवाइर के कहल जाहे	-	छेपक, छेपो
687. विहाक पहइला नेग के कहल जाहे	-	छेंका
688. बेरबाद भेल के कहल जाहे	-	छुतहर छेकछुन
689. एकदम थेथर बेकति के खोरठा में कहल जाहे	-	छेछर
690. आजादिक पहिले पुरान पइसा के चउथा भाग हल	-	छेदाम
691. छितराइल गाछ के कहल जाहे	-	छेछका
692. जंगल में जानबर के वनवल डहर के कहल जाहे	-	छेर, छेइर
693. मोरल जानवर के चमड़ी के कहल जाहे	-	छेरी
694. सतियानास भेल के कहल जाहे	-	छेकछातुर
695. टइंगलाक माइर के कहल जाहे	-	छेव, घाही
696. चुर-चुर कइर देवा के कहल जाहे	-	छेछकाइ
697. घारें छोट बहु के कहल जाहे	-	छोटकी
698. पोतन दिएक किरिया के कहल जाहे	-	छोंछ
699. धोतिक पेछुवा के कहल जाहे	-	छोंइठ
700. छोट वसुत के कहल जाहे	-	छोट-खाँट
701. कोनो सुराग पावा के कहल जाहे	-	छोर-छिपाट
702. जुवान वेटा छउवा के कहल जाहे	-	छोड़, छोंड़ा
703. छोट के बहुवचन में कहल जाहे	-	छोटकइन
704. चिहँइर पात के बनल छातानुमा कंटोप	-	छोपि
705. खाइ-पिए में एकदम लोभी बेकति	-	छोछर
706. कतारी रस के डबकल फेन	-	छोवा
707. जमीन से एकदम पोइंछ के उठवा	-	छोंछइर

ज

708. पानी रिसे ओला सोवा के - **जरक**
709. मानुस जातिक स्त्रीलिंग रूप - **जनि**
710. कोनो जुटवेक परकिरिया - **जर-जोगाड़**
711. धन-दोलइत के परयायवाची रूप कि हे - **जर-जजाइत**
712. असल विचार के एक सबद में कि कहल जाहे? - **जइरबात**
713. नास के समय के कि कहल जाहे? - **जइ नासति**
714. 'थोड़ा सा' के खोरठा में कि कहल जा हे? - **जरिसुन, तनिकुन**
715. 'झनगा-झनगी' के परयाइबाची सबद कहा - **जने-जने**
716. जोते मे जोदि जमीन बेसी गिला रहे तो कि कहा हे? - **जब-जब,चप-चप**
717. लोहाक काँटी के खोरठा में कि कहल जा हे? - **जलइ**
718. जे जोघो में हमेशा पानी जमल रहे हे? - **जल जलिया**
719. 'बुखार' के खोरठा में कि कहल जा हे? - **जर**
720. जड़ी आर ओकर झार के कि कहल जा हे? - **जइर-मोवाइर**
721. कइली-सिनगी बिरांगनाक इयाइद में 12 बछरें कि खेलल जाहे - **जनि-सिकार**
722. जे मरद के चाइल-ढाइल जनि रकम हे - **जइन मेहरा**
723. आदि-निवासिक आस्था स्थल के कि कहल जा हे - **जहइरा**
724. 'जबर्दस्ती' के खोरठा सबद बतावा? - **जबरी**
725. पड़ोसी के खोरठा सबद बतावा? - **जवारी**
726. बोखार-जइसन महसूस होवे ओला अवस्था - **जरजरवल**
727. 'जंगला' के परयायबाची सबद बतावा? - **जलना**
728. जबर्दस्त के खोरठा सबद बतावा? - **जबरजस**
729. पति के बोड़ बहिन के कि कहल जा हे? - **जइरसास**
730. जाल रचे ओला के कि कहल जा हे? - **जलियाहा**
731. जकर मुँह पोइड़ गेल हइ - **जरमुहाँ, पोड़ल मुहाँ**
732. गाड़िक चाका चले में सकत भेले कहल जाहे - **जाँक**
733. जखना बात सही पावल जाहे तो कहल जाहे - **जाइज**

734. जनिक कुरति के कहल जाहे - जाकिट
735. धान खेत के तिसरा जोत के बाद जखन रकसा परे हे- जाबड़
736. जखन बेदबादी के समइ सुरू होइ जा हे - जाइक गोड़ा
737. 'सरोता' के खोरठा में कि कहल जा हे? - जाँति
738. एकदम हइरान हवेक अवस्था के कि कहल जा हे? - जानपानी
739. 'जान-पहचान' के खोरठा में कि कहल जा हे? - जानाप-चिन्हाप
740. पोइड़ के राख भेल टा कि कहल जा हे? - जार- खार
741. मानिन वेकति के कि कहल जा हे? - जानल-मानल
742. सोब संतान के कि कहल जा हे? - जाइल जनमल
743. झंझट-कलकल के तिसरा सबद बतावा? - जाला
744. फुल झरल फोर के कि कहल जा हे? - जिलि
745. तन मन धन से लाइग जावा - जिरि-जिदी
746. अड़ा-अड़ी करेक अबस्था - जिदा-जिदि
747. बेरबाद नोकसान के बाद तेसरा सबद बतावा - जिआन
748. जलेबी के खोरठा में कि कहल जा हे - जिलपि
749. 'साज-सामान' के खोरठा में कि कहल जा हे? - जिनिस-पतर
750. बोकारो जिला के सबले ऊँचा पहार - लुगु-जिनगा
751. 'जिम्मेदार' के खोरठा में कि कहल जा हे? - जिमादार
752. 'हजम किया' के खोरठा में कि कहल जा हे? - जिरवल
753. आराम करेक बेस खोरठा कि हइ? - जिराइ जुड़ाइ
754. ठंढा करेक, पर किरिया के कहल जा हइ - जुड़ाव
755. सुविधा पावल के कहल जाहे - जुइत-जोगाड़
756. 'जुआ' के खोरठा में कि कहल जाहे - जुआँइठ
757. 'अतिशीघ्र' के खोरठा में कहल जाहे - जुन जुनात
758. 'उपाय' के खोरठा में कहल जाहे - जुगुत
759. सुबिधा जनक' के खोरठा में कहल जाहे - जुइतगर
760. गोंठ होइ के चलेक खोरठा हइ - जुइम-जोइर
761. जुझे ओला लड़ाकू के कहल जाहे - जुझाइर
762. 'उपयुक्त' के खोरठा में कहल जाहे - जुकुर

763. कतारी-रस डबकावे ओला ढांगा चुल्हा के कि कहल जाहे? - **जुइल**
764. 'एकत्र समुदाय' के कहल जा हे - **जुमल-जुटल**
765. बोड़ माञ् के कहल जा हइ - **जेठी, गुँगु माञ् जेठी माञ्**
766. 'जो लोग' के खोरठा मे कहल जाहे - **जेखिन**
767. 'जिस जगह' के खोरठा मे कहल जाहे - **जेठिन**
768. 'जिस तरह' के खोरठा मे कहल जाहे - **जे लेखें, जे रंग**
769. 'जिस प्रकार' के खोरठा मे कहल जाहे - **जे रंग, जे तइर**
770. पानिक जे जीव खुइन चुसेक काम करे हे - **जोंक**
771. जे अनाज के गरीब, घाठा, लपसी आर भुंइज खाहथ - **जोंढरा**
772. 'अवसर' के खोरठा में कि कहल जा हे? - **जोंखा**
773. कोनो बसुत बेस मउका खातिर सहेज के राखा - **जोगा**
774. झारखंडी विहाक एगो नेग बतावा - **जोग छेंछा**
775. जोगाड़ जुटवे ओला के कि कहल जाहे - **जोगाड़ी**
776. किसानेक जमीन के मातरा के कि कहल जाहे? - **जोत**
777. जुआँठ में गरू जोरेक डोरा के कि कहल जाहे? - **जोति**
778. गरू बाँधेक डोरा के कि कहल जाहे? - **जोरन**
779. दलदली खेत के कि कहल जाहे - **जोभि**
780. 'अत्याचार' के खोरठा मे कि कहल जाहे - **जोर-जुलुम**
781. निठल्ला जे काम-धाम नाञ करे, कि कहल जाहे? - **जोम**
782. छोट नदी के खोरठा में कि कहल जाहे? - **जोरिया**
783. 'सिकुड़ना' के खोरठा बतावा? - **जोंगइर**
784. 'उपाय' के खोरठा बतावा? - **जोगाड़-जंतर**
785. रिस्ता जोरेक बेस सबद बतावा? - **जोरनार-जोरानारा**
786. एक उमइर के बेकति के कि कहल जाहे? - **जोरापारी**
787. जोगाड़ करल सामान के कि कहल जाहे? - **जोहवल**
788. 'जोड' के खोरठा में कहल जाहे - **जोरनी**
789. दही जमवे खातिर देल जाहे - **जोरन**

झ

790. कोनो कामे बहुत बाधा विपइत भेले कि कहऽ हथ?	-	झकझक
791. बहुत दुबर-पातर भइ गेले देहि के कि कहल जाहे?	-	झटकल
792. चउकठ के परयाइवाची सबद कि हवे हे?	-	झनका
793. एक-एक बेकति के एक सबद कि हवे हे?	-	झनगा-झनगी
794. साँइ-साँइ करे ओला अँधरिया राइत के कहल जाहे?	-	झमझम राइत
795. फेंकेक किरिया कि हवे हे?	-	झबद
796. ढक्कन के खोरठा में कि कहल जाहे?	-	झपनी, झपना, ढकना
797. झड़ी के खोरठा में कि कहल जाहे?	-	झइर
798. अंधरे विहान के खोरठा में कि कहल जाहे?	-	झलफले, अनगुते
799. हवा-पानी के झोंका के कहल जाहे?	-	झँटास
800. बहुत झगरा करे ओला मानुस	-	झगर कुटा
801. ऊ जनि जे बहुत संग झगरा करऽ ही?	-	झगराही
802. जे वसुत बहुत चमके हे	-	झकझकाइ
803. झंखार डाइर जे लत चढ़वेक काम आवे	-	झाँख
804. गरम दिने दुपहरिया में तातल हवा वोहे हे	-	झाँइझ
805. सोहराइ में सभिने छाइन के भी करऽ हथ	-	झाँटा-झाँटी
806. कुँआ में डुबल सामान के उठावे ओला हे	-	झागर
807. 'व्याकुल' के खोरठा में कि कहल जाहे?	-	झाझाइल
808. 'कलह' के खोरठा में कि कहल जाहे?	-	झाँव-झाँव
809. जे काठ कोचा वारी में काम ओवे हे	-	झाँख-झँखरी
810. पानिक जीव जकर खोली से गाँवें चमचा के काम हवेहे	-	झिनुक
811. जखन आनंद में सराबोइर होइ के जोर से झुमइर नाचे लागे हे	-	झिंकाझोइर
812. छोटे-छोटे बुंद से पानी बइरसा के कहल जाहे	-	झिमिर-झिमिर
813. छेहाती कुकुर के दल	-	झिंझिकुकुर
814. सुनसान राइतें गुन-गुन गावे ओला एगो कीड़ा	-	झिंगुर
815. एके करवट रहले, हाथें गोड़े, जे थकान भोरे हे	-	झिनझिनी

816. झारखंड के सोवले बोड़ नामी नाच - **झुमइर**
817. जे सुखल काठ जलावन के काम आवे हे - **झुरी-झाँटी**
818. फेंकेक किरिया के कि कहल जा हे? - **झबदे**
819. डोरा ढिल भेलें कहल जाहे - **झोलोंग**
820. चुइल के गोछ कहल जाहे - **झोंटा**
821. कोनो बसुत के गोछ - **झोंप, झोंपा**
822. जखन खाटी ढिला हइ जा हे - **झोलोर, झोलोंग**
823. जे कुरता बहुते झाइल हे - **झोंलगझोपोर**
824. जखन बसुत के गोछ बनाइ बाँइध देल जाहे - **झोंतइर**
825. अनगइन लोक सें बोन झोइर के सिकार करा - **झोरा**

ट

826. कोनो बसुत तुरते लिल गेलें कि कहल जाहे? - **टक सें**
827. एक दम ताजा बसुत के कि कहल जाहे? - **टटका**
828. ककरो टसके कहलें के, कि कहल जाहे? - **टसक, घसक**
829. साफ-सुथर सुखल जोघो के कि कहल जाहे? - **टनक**
830. ककरो भागे कहले कि कहल जाहे? - **टरक**
831. बिना मिटिक मारले देखते रहेक कि कहल जाहे? - **टकटकी**
832. ओंठ से ओंठ मिललें प्रेम रस कि हइ जाहे? - **टसइक**
833. ताजा-ताजी के खोरठा में कि कहल जाहे? - **टटका-टटकी**
834. कोनो सोझ गड़ाइल खुंटा टेढ़ा भेलें कि कहल जाहे? - **टगल**
835. अँधारें कोनो बसुत के हाथ से खोजेक कि कहल जाहे?- **टमड़**
836. कोनो बसुत के बाँस-रोला से दाबेककि कहल जाहे? - **टाड़ान-चाँता**
837. टाँइड़ में उपजे ओला खेती के कि कहल जाहे? - **टँइड़ खेती**
838. बहुत सकत टानल तार, डोरा चाहे बरही के कि कहल जाहे? - **टनटन**
839. बहुत बोले ओली के कि कहल जाहे? - **टभटभिया**
840. बाँध कुँए लबालब पानी भोरल के कि कहल जाहे? - **टलमल**
841. बहुत सोझ जिनिस के कोन नियर सोझ कहल जाहे? - **टकुआ नियर**

842. अनाप-सनाप टेढा-मेढ़ा बात के कि कहल जाहे? - टरबर
843. पानी जमा भेल के कि कहल जाहे? - टघरल
844. ठिक-ठाक भइ गेल कि कहल जाहे? - टनकल
845. भुख-पियास से मारल बेकति के कि कहल जाहे? - टउवाइल
846. लबालब पाकल रसदार फल के कि कहल जाहे? - टभटभाइल
847. जहाँ बहुत दबाव देल गेल हइ - टड़ान चाँता
848. रोग-पिरा सें दुरूस्त भेल बेकति - टनटनाइल
849. 'ताजापन' के खोरठा में कि कहल जाहे? - टहटही
850. कोनो भागल बेकति के कि कहल जाहे? - टरकल
851. रस टिपकेक किरिया विसेसन कि हवे हे? - टसटस
852. बेकार बोलेक किरिया कि लागइ? - टरटराइ
853. जादुगिरिक काम के कि कहल जाहे? - टाटक
854. कोनो कामे झक-झक भेले कि कहल जाहे? - टानाझिंका
855. घर-बाहर आवाजाहिक दोरोजा गुलाक कि कहल जाहे?- टाटि-फरकी
856. बोड़ टँइगला के कि कहल जाहे? - टांगा
857. बाँस-काठ चाहे झाँटी से बनल दोरोजा के कि कहल जाहे? - टाटि
858. भार टांगे ओला मोटा बाँस चाहे काठ के कि कहल जाहे? - टाड़ा
859. टोटका करेक किरिया के कि कहल जाहे? - टाक-टोटम
860. कुरथी सुरगुंजा उपजे ओला मइदान के कि कहल जाहे? - टाइड़-टिकुर
861. थकल-मांदल के कि कहल जाहे? - टाटाइल
862. कोनो सेवा में बाझल के कि कहल जाहे? - टाँड़ाइल
863. लबदे जुकुर दु हाथ के टुकरा के कि कहल जाहे? - टाल्हा, ठुठना
864. एक बुंद के मातरा के कि कहल जाहे ? - टिपका
865. चित काबरा के परयाइ बाचि सबद कि हवे हे? - टिका-फोका
866. छिपकली के खोरठा में कि कहल जाहे? - टिकटिकि
867. दो पहर दिन के खोरठा में कि कहल जाहे? - टिंगा-पहर

868. जकर में एके दिने लगन बिहा होइ जाहे कहल जाहे? - **टिप लगन**
869. दियाँक बनवल ढिप के कि कहल जाहे? - **टिल्हा**
870. किप, फनेल के खोरठा मे कि कहल जाहे? - **टिप**
871. अंगठा निसान के कि कहल जाहे? - **टिपा**
872. जहाँ बहुत तड़क-भड़क हे, के कि कहल जाहे? - **टिम-टाम**
873. सुगाक निचला किसिम के कि कहल जाहे? - **टिया**
874. खोंखइर के चाहे रगइड़ के उठवेक के कि कहल जाहे?- **टिटाइर**
875. छोट-छोट बुँद के बइरसा के कि कहल जाहे? - **टिपिर-टिपिर**
876. माटिक ढिप रकम के छेतर के कि कहल जाहे? - **टिकुर**
877. जकर कद-काठि टेढ़ा हइ, चाहें टेढा बोले हे - **टिरा**
878. रगवे खातिर जे पिंगाठि सबद के बेवहार हवे हे - **टिटकारी**
879. डांगर जकर माथा में टिका के दाग हे - **टिकला**
880. 'स्टेशन' के खोरठा में कहल जाहे? - **टिसन**
881. टिकट के खोरठा में कहल जाहे? - **टिकिस**
882. बढ़िक काम करेक टेबुल के कहल जाहे? - **टिहा**
883. टेंग ऊपर कइर सुते ओला चरँइ के कहल जाहे? - **टिटहि**
884. बेकार ढेइर गोहाइर करलें कहल जाहे - **टिटियाइ, टिरटिराइ**
885. पाकल फोड़ाक दरद के कहल जाहे? - **टिसटिसाइ**
886. भुंजा खाइ खातिर बाँसेक बनल खाँडा - **टुपा, टुपला**
887. गरू गाड़िक अइगला भाग के कहल जाहे? - **टुँइड़, टुँड़ी**
888. नाटा मानुस के कहल जाहे? - **टुना, टुनी**
889. देहि में गहना-गुरिया पिधेक जोघो - **टुम**
890. छोट-छोट किसिम के आम फोरे ओला गाछ - **टुरटुरिया आम**
891. गिदर, जे माञ्-बाप से विहिन हे - **टुअर, टुरा**
892. असहाय गिदर के ताकेक किरिया विसेसन - **टुकुर-टुकुर**
893. छोट पहरी के कहल जाहे - **टुंगरी**
894. छोट-छोट पहरिक समूह कि कहल जाहे? - **टुंगरा-टुंगरी**
895. छोट गिदर जखन हाथ गोड़ से चले - **टुघरे**
896. छोट-छोट फोरे ओला आम - **टुरटुरिया**

897. टोना-टोना करल कि कहल जाहे	-	**टुकरल**
898. कोनो बसुत पुरा-पुरि भोरल	-	**टुले टुल, टुलुटुलु**
899. कोनो बनस्पति के फुनगे ओला कोमल भाग के	-	**टुसा**
900. जे बोतल सें आल गिदर टुध पिअ-हथ	-	**टुआ**
901. कोनो रोग-पिरा सें छुटकारा पाइ के सुधरल पर	-	**टुन टुनाइ , टन टनाइल**
902. नाटी जनि के कहल जाहे	-	**टुमकी**
903. कहुँ कोनो रोकेक परकिरिया के	-	**टेक-टाक, रोक -थाम**
904. पंछिक, पाँइख ओला भाग के कहल जाहे	-	**टेनखा**
905. राजाक सिंगार रकम पाँइख ओला पाँखि	-	**टेसो राजा**
906. गाँवेक नाटा बुढ़ा के कि कहल जाहे?	-	**टेपा खुढ़ा**
907. टेढ़ा देखे ओला मानुस के कहल जाहे	-	**टेरा काना**
908. नाटा मानुस कि कहल जाहे	-	**टेपा, टेना, टेपरा**
909. छोट-छोट नंगटे हेंडरे गिदर के कहल जाहे	-	**टेपरा-टेपरी**
910. 'अमरूद' के खोरठा में कहल जाहे	-	**टेमरस**
911. टेढ़ा-मेढ़ा देहि ओला के कहल जाहे	-	**टेटाहा**
912. कोनो बारता के एगो अंस के कि कहल जाहे?	-	**टोक**
913. कोना जादु-टोना चाहे विधि के कि कहल जाहे	-	**टोटका**
914. कबुतर राखे खातिर जे हाँड़ी टाँगल जाहे	-	**टोंग**
915. गड्ढ़ा जकर में पानी जमल रहे हे	-	**टोभा, डोभा**
916. बोड़ टुपा कि कहल जाहे	-	**टोकि, पछिया**
917. एगो बोनेक फल जे बहुत चेका लागे हे	-	**टोक टोयाँ**
918. टोकना किरिया के संगिया रूप	-	**टोकार**
919. छोट खेत के खोरठा में कहल जाहे	-	**टोपरा**
920. नकासीदार खपरा कि कहल जाहे	-	**टोंटिया**
921. मुँहे जीभेक सहारा से आवाज	-	**टोकाइर**

ठ

922. जखन आल गिदर के ऊपर मुड़ कइर कोरा लेल जा हे- **ढढ़कोरा**
923. कमजोर भेल सरिर कि कहल जाहे? - **ठसकल**
924. जखन बसुत के कमजोर कहल जाहे - **ठस**
925. जे गाछ के डाइर थोरे ओजन से टुइट जाहे - **ठसाहा**
926. जेटा ठुइस-ठुइस के भरल हइ - **ठसमठस**
927. ठगी करे ओला मानुस - **ठकाहा, ठकाही**
928. खोरठा में पूर्ण-विराम के कहल जाहे - **ठँढुआ**
929. छप्पर के ऊपर जे बाँस के परत बिछवल जाहे - **ठठनी**
930. बहाना-नखड़ा पसारेक परकिरिया - **ठक ठेन**
931. जखन मानुस खुइल के हाँसे हे - **ठठाइ**
932. सिधा डाड़ाएक कि कहल जाहे? - **ठाढ़**
933. सिधा खुँटा के कि कहल जाहे? - **ठाढ़ी**
934. 'फुटानी' के कि कहल जाहे? - **ठान**
935. नाम-पता के खोरठा कि कहल जाहे? - **ठाँव-ठेकान**
936. 'संबल' के खोरठा कि कहल जाहे? - **ठार**
937. खपराक घारे खपराक पहिले कि बनवल जा हे? - **ठाठरा**
938. खोरठा में दोपहर के कि कहल जाहे? - **ठाढ़बेरा**
939. 'मदइत में' के खोरठा में कि कहल जाहे? - **ठारें**
940. 'अवहेलना' की गयी के खोरठा अनुवाद - **ठकारल गेल**
941. तनिकुन जोघो निपेक कि कहल जाहे? - **ठाँव देवा**
942. बेस रउद के कि कहल जाहे? - **ठिकरोद**
943. छोट हाँड़ी के कि कहल जाहे? - **ठिलिया**
944. जाड़ें सिकुड़ल के कि कहल जाहे? - **ठिठरल**
945. 'मजाक' के खोरठा में कि कहल जाहे? - **ठिठोली**
946. निरास बेकति के खोरठा में कि कहल जाहे? - **ठिसवाइल**
947. जखन गिदर रूइस के तनि-तनि काँदे हे - **ठुनके**
948. चोर गुरूक घेचें दुहाथेक कचरा बाँधल के कि कहऽ हथ? - **ठुरूंग**

949. बिना फुल-पातेक गाछ के कि कहल जाहे? - ठुठा
950. पइना से तनि मोट, दु हाथ टुकरा के कि कहल जाहे? - ठुठना
951. बढ़नि खियाइ के छोट भेलें कि कहल जाहे? - टुठकु
952. सिसि-बोतल के ढक्कन के कि कहल जाहे? - ठुली, ठेपी
953. जाड़े कॉंइप रहल बेकति के कि कहल जाहे? - ठुल ठुला हे
954. माटि पिटे ओला एक हाथेक डंटा - ठुठ मुंगरी
955. काठेक घंटा जे चोर गरूक घेचें पिंधवल जाहे - ठेरका
956. 'अवरोध' के खोरठा में कि कहल जाहे? - ठेघा, ठेघन
957. 'लापरवाही' के खोरठा में कि कहल जाहे? - ठेला -गोंजा
958. जे बेकति ठाठ-बाट से हीन हे - ठेठा
959. धोती चाहे लुगा जे पिधे में बहुत छोट हवे हे - ठेठी
960. अगुंठा देखवेक कि कहल जा हे? - ठेपो
961. 'ठनका' के खोरठा में कि कहल जाहे? - ठेर
962. गर्जन के खोरठा में कि कहल जाहे? - ठेर ठेरी
963. 'सटल' के खोरठा में कि कहल जाहे? - ठेकल
964. 'नखड़ा' के खोरठा में कि कहल जाहे? - ठेनमेस
965. जे जोघो में बेकति के हमेसा ठोकर लागे हे? - ठेसाहा
966. नगद सामान किने के कि कहल जाहे? - ठोहका
967. एके पातें टिप रकम डुभि - ठोनगि
968. लकड़ी के बनल निसान साधेक तीर - ठोंठी
969. 'पता ठिकाना' के खोरठा में कि कहल जाहे? - ठोर-ठेकान
970. लकड़ी जकर से कोनो छेदा बंद करल जा हे - ठोना
971. 'बूँद के खोरठा में कि कहल जाहे? - ठोप
972. 'उलाहना' के खोरठा में कि कहल जाहे? - ठोकर
973. 'आश्रय' के खोरठा में कि कहल जाहे? - ठोर
974. बुँद-बुँद पानी चुवेक टा कि कहल जा हे? - ठोपाइ
975. चोंच मारेक खोरठा बतावा - ठोंठइ
976. नगद समान लिएक परिकरिया - ठोहका

ड

977. 'खाने की तीव्र आतुरता' देखवे खातिर कि सबद हइ?- **डकडका हे**
978. 'डरपोक' के खोरठा में कि कहल जाहे? - **डरूक**
979. जकर सें खेतें पानीं झिटल जा हे? - **डबका**
980. एकदम छोट-छोट माछ, जे पानी में गोटें चलऽ हथ? - **डँड़का**
981. 'भयानक' के खोरठा में कि कहल जाहे? - **डरडरान**
982. बहुत डेराइ ओला बेकति के कि कहल जाहे? - **डर पोकना**
983. बहुत डेराइ ओला जनि के कि कहल जाहे? - **डर पोकिया/ पोकनी**
984. तागा के गोछ जे गिदर के डँड़े बाँधल जा हइ - **डँडइर**
985. दंश मारे ओला जीव के कि कहल जाहे? - **डँसाहा**
986. जे लत-पात जलदि जलदि बाढ़े हे - **डगडगाइ**
987. 'लुढ़क देना' के खोरठा कि हवे हे? - **डगराइ**
988. जबरजस्तीक बात खोरठा कि हवे हे - **डँग ढेढ़वा बात**
989. 6-6 फुट पहरिया बाँसेक मुरखल सेंकल तेल, पिवल टोना - **डांग**
990. जे बसुत सकत, कड़ा लागे हे - **डाँट**
991. 'कमर' के खोरठा में कि कहल जा हे? - **डाँडा**
992. 'जरिबाना' के परयायबाची सबद बतावा? - **डाँड़**
993. लाठ में उपर हेंठ ओला लंबा काठ कि कहल जाहे? - **डाँडी**
994. सोत के घार्टी 5'-6' फीट कोइड़-बाँइध के पिएक पानिक जोघो - **डाड़ी**
995. दूधेक खखोरन के कि कहल जाहे? - **डाढ़ि**
996. गाँवे तथा कथित मंतर मारे ओली जनि - **डाइन**
997. बोड़ करछुल के कि कहल जाहे? - **डाबु**
998. गाछेक चोंग गुला के कि कहल जाहे? - **डाइर**
999. बहुत बोड़ खेत के कि कहल जाहे? - **डाबइर, हिर**
1000. पथल चाहे माटिक गोली फेंक के मारे ओला डोरी - **डाँडा-डोइर, गुलेल**
1001. गोटा हरदी के कि कहल जाहे? - **डारा**

1002. 'चुक' के खोरठा में कि कहल जाहे? - डिग
1003. कोनो बसुत के ढेर के कि कहल जाहे? - डिंग
1004. मुड़ेक भोरे गोटे देहि के पलइट देवा - डिगबाजी
1005. जे जोघो में घार अंगना रसल-बसल हे - डिडा
1006. छोट गिदर खातिर ठाढ़ हवेक बोली - डिड़ि
1007. दाना के खोरठा में कि कहल जाहे? - डिंडि
1008. 'अंडा' के खोरठा में कि कहल जाहे? - डिम
1009. 'बुलाना' के खोरठा में कि कहल जाहे? - डिकइर, डिकरे
1010. 'बदमास' के खोरठा में कि कहल जाहे? - डिंगर
1011. जे कोनो कामें चुइक जाहे - डिगल
1012. 'बदमासी' के खोरठा में कहल जाहे? - डिगराली
1013. 'गिड़गिडाना' के खोरठा मे कहल जाहे? - डिड़ियाइ
1014. पोचल कुदरूम से सोन उचारल बाद सुखल डाँटी के - डुँडकू, सन-कपाटि
1015. जे गाछें कोनो पात-पाल्हा नाञ हे - डुड़ा
1016. जे जोघो में आदमी डुबे जुकुर पानी हइ - डुबान
1017. जखन गिदर हाँथ-गोड़ के सहारे चले हे - डुंगरे
1018. पइला से बोड़ चउड़ा मुँह के बरतन - डुभा
1019. छगरी-पठरू डिकरेक बोलि - डुर्र
1020. जखन आकास बदरी सें भइर जाहे - डुबडुबाइल
1021. 'कदम' के खोरठा में कि कहल जाहे? - डेग
1022. जखन एके गाड़ी बदइल के आवे हे - डेढ़िया
1023. जे फल पाके रकम हे, कि कहल जाहे? - डेंभा
1024. डेइग के ई पार ऊ पार हवे ओला डहर - डेगा-फाँदा
1025. अस्थायी रहेक जोघो कि कहल जाहे? - डेरा-डाँड़ी
1026. बासेक बनल धान राखेक बहुत बोड़ ढाकी - डेमनी
1027. पेट भोरल बाद घेंचाक ऊपर से आवे ओला आवाज - डेकार
1028. मुँह के पुरा फारल रूप - डोका
1029. बहुत लंबा मानुस के कि कहल जाहे? - डोड़गा

1030. कोनो गाछ के छोट तोरल डाइर के कि कहल जाहे? - **डोहंगा, डोहंगी डोहरा**
1031. कतारिक गोटा डाँड़ी के कि कहल जाहे? - **डोगा**
1032. झुमइर के ऐगो बेस ताल के नाम बतावा? - **डोमकच**
1033. पिपरी से बोड़ करिया पोकाकि कहल जाहे? - **डोड़ा**
1034. लोहाक समान जकर मे केंवार झुलवल जाहे - **डोमनी**
1035. गाढ़ा जकर में 2-3 फुट पानी भोरल रहे हे - **डोभा, डोभी**
1036. रस्सी जकर से पानी झाँकल जाहे - **डोइर, डोरा**
1037. बालटी जकर से पानी झाँकल जाहे - **डोल**
1038. कोचरा के दाना जकर से तेल चिपल जाहे - **डोरहा**
1039. एगो झारखंडी गीत जकर मे बाजा के दरकार नाञ हे - **डोहा**
1040. डोरा बाँइध के लइ जाइ के कि कहल जाहे? - **डोरियाइ**
1041. एगो जंगली फल जे डुमइर के संगिया लागे - **डोह**
1042. पानी जमा भेल के कि कहल जाहे? - **डोबरल**

ढ

1043. पानी पिए में कइसन साड़ा पावल जा हइ? - **ढक, ढक ढक**
1044. बिना काम के घुरेक कि कहल जाहे? - **ढनके, ढपचे**
1045. 'नखड़ा' के खोरठा में कि कहल जाहे? - **ढढ़नच**
1046. पानी पिएक पिंगाठी कि कहल जाहे? - **ढकचे**
1047. 'ठगबाज' के खोरठा में कि कहल जाहे? - **ढँठ**
1048. माटी के ऊ बरतन जकर से झाँपले खपइर पोड़ो पाके हे - **ढकनी, सोरा**
1049. 'आकार' के खोरठा में कि कहल जाहे? - **ढब**
1050. पुरा पेट भोरल बाद घेंचा सें कि साड़ा आवे हे? - **ढकार**
1051. ठगे ओला के कि कहल जाहे? - **ढग निहार**
1052. एक निसार्से पानी पिएक कि कहल जाहे? - **ढक ढकाइ**
1053. बिना काम के घुइर बुले हे कि कहल जाहे? - **ढनढनाइ**
1054. 'अस्ति-पंजर' के कि कहल जाहे? - **ढढरि**

1055. झारखंडेक ऐगो नामी बाजाक नाम बतावा?	- ढाँक
1056. जकर देहि बहुत लंबा हे	- ढांगा, ढांगी, लभछोर
1057. सागेक तना के कि कहल जाहे?	- ढाँठा, ढाँठी
1058. बियाइल छगरी के कि कहल जाहे?	- ढाइढ़
1059. कमर-साल से कइसन साड़ा आवे हे?	- ढाइढप
1060. चिरकुटिक ढेंकी से कइसन साड़ा आवे हे?	- ढपा ढप
1061. झारखंडी घारे बारंडा के कि कहल जाहे?	- ढाबा
1062. पुरा चार सिझल बाद भात के कि करल जाहे?	- ढारल, ढारा ढारी
1063. धान राखे खातिर डेमनी से बोड़ खाँचा के कहल जाहे?	- ढाकी
1064. पिंगाठी में पेट के कि कहल जाहे?	- ढिढ़ा
1065. जे बहुत खाना खा हे?	- ढिढरपेटा
1066. सर्वनास करेक खोरठें कि कहल जाहे?	- ढिपाढान
1067. 'टीला' के खोरठा में कि कहल जाहे?	- ढिप
1068. जखन अजमावे खातिर कुछ कहल जाइ	- ढिठ फारसी
1069. 'टक्कर' के खोरठा में कि कहल जाहे?	- ढिसिम
1070. पेट के पिंगाठी में कहल जाहे	- ढिढ़ा
1071. रोग के कारन जकर पेट बाइढ़ गेल हइ	- ढिढ निपरा
1072. 'काम में लापरवाही' के कि कहल जाहे?	- ढिल-ढेकुल
1073. मुड़ेक किड़ा के कि कहल जाहे?	- लीखा, ढिला
1074. नीचे लुढ़केक कि कहल जाहे?	- ढुलकल
1075. जे टक्कर खाइ के गिरे हे ओकराँ कि कहल जाहे?	- ढुसमल
1076. गाय-गरू से गिरवल के कि कहल जाहे?	- ढुँसरल
1077. जे निसा से तिरमिराइ के गिरल के कि कहल जाहे?	- ढुइल गिरल
1078. दुगो डांगर लड़े में कि करऽ हथ?	- ढुँसा ढुँसी
1079. मोटा काठ जखन नाञ पोंड़े हे	- ढुढसाइ
1080. सुखल माटिक टुकरा के कि कहल जाहे?	- ढेंका
1081. गाँवे जकर से धान कुटल जाहे?	- ढेंकी

1082. सोबले छोट चरँइ के नाम बतावा? - **ढेबचु**
1083. अजगर के खोरठा में कि कहल जाहे? - **ढेकिसाँप**
1084. लघइर गाय के कि कहल जाहे? - **ढेनु गाय**
1085. अंगठा आर तरजनिक दुरी के कि कहल जाहे? - **ढेंगुर**
1086. कामें दोसर-तेसर के नाम घरेक कि कहल जाहे? - **ढेंसवल**
1087. 'बहाना' के खोरठा में कि कहल जाहे? - **ढेंस**
1088. पेट भोइर खावा के कहल जाहे - **ढेंकइर**
1089. झारखंडे जहाँ-तहाँ उगे ओला झाड़ीदार लकड़ी के नाम- **ढेला**
1090. जमा करल समान के कि कहल जाहे? - **ढेरि**
1091. पानिक 'लहर' के खोरठा में कि कहल जाहे? - **ढेव**
1092. 'बदसूरत' के खोरठा में कि कहल जाहे? - **ढेबरा**
1093. डाँगेक माइर के खोरठा में कि कहल जाहे? - **ढेढावा**
1094. एक बइर में मुँहे जते पानी लेल जाहे ओकरा कि कह हथ? - **ढोंक**
1095. मुँहेक पानी के कि कहल जाहे? - **ढोंका ढोकी**
1096. घेचा के पिंगाठी में कि कहल जाहे? - **ढोंढ़ा**
1097. नाभी के खोरठा में कि कहल जाहे - **ढोंढ़ी**
1098. पुरान गाछे फेड़ेक खोल के कि कहल जाहे? - **ढोंढर, खोढ़र**
1099. बहुत ज्यादा खाइ ओला के कि कहल जाहे - **ढोक साहा**
1100. ढोक साहाक खान नाञ पोचले कि हवे हे - **ढोढा-छेरा**
1101. झारखंडेक नामी बाजाक नाम बतावा? - **ढोल-मांदइर**

त

1102. एक दम सकत टानल तार के कि कहल जाहे? - **तनतन**
1103. 'तारा' के खोरठा में कि कहल जाहे? - **तरिंगन**
1104. तरगोडेक घावें भेलवा गरम कइर लोक दे हथ - **तताइर**
1105. चुटि-फिकाक भितर कि देल जा हइ? - **तमखुर**
1106. धने मोटाइल लोग गुला के कि कहल जाहे? - **तलियायाइल, तलेवर**

1107. जल्दी बाजी के खोरठा में कि कहल जाहे - ततवाहि
1108. रागें भोरल लोक के कि कहल जाहे - तमतमाइल, तमकल
1109. सेवा-सुसार के कि कहल जाहे? - ततविर
1110. चिकन चेहरा के कि कहल जाहे? - तरतरिया
1111. 'गुस्सा' चेहरा के कि कहल जाहे? - तमतमी
1112. 'निबटारा' के कि कहल जाहे? - तइ तपाटा
1113. दु आदमिक बिच हुजइत भेले कि कहल जाहे? - तकझक
1114. खुब चटकिला रंग के कि कहल जाहे? - तकतकिया
1115. 'देख-रेख' चाहे देख-भाल कि कहल जाहे? - तदारक, तिहा
1116. 'ठाट-बाट' के खोरठा में कि कहल जाहे? - तमक-झमक
1117. एकदम छोट के कि कहल जाहे? - तनिमुटुक, तनिबुडुक
1118. 'गर्म करेक' खोरठा में कि कहल जाहे? - ततवेक
1119. 'तुरत' चाहें 'जल्दी' के कि कहल जाहे? - ततके
1120. बहुत सबेरे के कि कहल जाहे? - तड़के
1121. 'फर्क' बोध करवे खातिर खोरठा में कोन सबद हे? - तलबिच, तफात
1122. 'त्याग' कइर देल के खोरठा में कोन सबद हे? - तइज
1123. 'जल्दी-जल्दी मार' के खोरठा में कोन सबद हे? - तड़ातइड
1124. एड़ी से चउवा के निचला भाग के कि कहल जाहे? - तरगोड़
1125. 'जल्दीबाजी' के खोरठा में कि कहल जाहे? - तड़बड़ी
1126. 'रहस्य' के खोरठा में कि कहल जाहे? - तँत, तइथ
1127. कलाइ के चउड़ा भाग के कि कहल जाहे? - तरहाथ
1128. ''इतना पर भी' के खोरठा में कि कहल जाहे? - तथुँ
1129. 'उसी ओर' के खोरठा में कि कहल जाहे? - तँधि
1130. ''उसी तरह के'' खोरठा में कि कहल जाहे? - तइसने
1131. अकइड़ के खोरठा में कि कहल जाहे? - तइन
1132. उस दिन के खोरठा में कि कहल जाहे? - तहिना, तहिया
1133. उतना के खोरठा में कि कहल जाहे? - ततना

1134. 'उसके बाद भी के खोरठा में कि कहल जाहे? - **तभुँ**
1135. गुस्सा से भरा चेहरा के खोरठा में कि कहल जाहे? - **तमतमि**
1136. 'उसवार' के खोरठा में कि कहल जाहे? - **तबरि**
1137. 'उसका भी' के खोरठा में कि कहल जाहे? - **तकरो**
1138. बेस मउका के कि कहल जा हे? - **ताक**
1139. ठहइर के देखेक परकिरिया - **ताका ताकी**
1140. एकदम तैयार के कि कहल जा हे? - **ताञ्, ताँइत**
1141. जल्दी-जल्दी करेक कि कहल जा हे? - **ताड़ाताड़ि**
1142. 'बहुत तड़क-भड़क' के कि कहल जा हे? - **ताम-झाम**
1143. दु दल चाहें दु बेकति में तनाव होवा? - **तानतानी**
1144. छोट गिदर के चलवेक सिखवेक बोली - **ताय-ताय**
1145. भेलवा गरम कइर तर गोड़ दागेक परकिरिया - **ताताइर**
1146. ककरो आवाज के मोताबिक होवा - **तालेक ऊपर**
1147. खरिहाने धान नापेक परकिरिया - **तारा**
1148. जहाँ बेकति एक ऊपर एक झाँप दइ रहल हे - **तारा-उपरी**
1149. जखन मानुस कामेक गरमी से परिसान हे - **तातल-मातल**
1150. फाटल लुगें जे पेंदा साटल जा हे - **तालि**
1151. अविलम्ब के खोरठा में कि कहल जा हे? - **ताताताहि**
1152. 'गर्म करके' के खोरठा अनुबाद - **ताताइ**
1153. खींचातानी' का खोरठा अनुबाद बतावा - **तिराझिंका**
1154. 'संठी' के खोरठा में कि कहल जाहे? - **तितकी**
1155. कोनो बसुत के सोवादें तितापन बुझले? - **तितकुठ**
1156. झारखंड के एगो मटमइला पालतु चरँइ? - **तितिर**
1157. जंगल के एगो नामी जड़ी जे धात रोगें काम आवे हे - **तिखुर**
1158. 'संतुस्ट' होइ जावा के खोरठा में कि कहल जाहे? - **तिरपित**
1159. मिलाने टेढ़ रहलें कहल जाहे - **तिरपट**
1160. डाँट-डपाट के कहल जाहे - **तीन खेदा**
1161. 'तरकारी' के खोरठा में कि कहल जा हे? - **तियन, तिनइ**
1162. 'छिन्न-भिन्न' के खोरठा में कि कहल जा हे? - **तितिर-बितिर**

1163. तिल के लड्डु के कि कहल जा हे? - **तिलोरी**
1164. 'लड़खड़ाया' हुआ के कि कहल जा हे? - **तिरमिराइल**
1165. नष्ट-भ्रष्ट' के कि कहल जा हे? - **तिनबेनवाँ**
1166. सबद के सेंसेक अछर के मेल कि कहल जा हे? - **तुक**
1167. मरम्मत करेक खोरठा कि हवे हे? - **तुनेक**
1168. 'जल्दीबाजी' के खोरठा में कि कहल जा हे? - **तुरता-तुरति**
1169. मोरखी में तीन नहाइ के कहल जाहे - **तेलखरा**
1170. माँदइर के एगो बोल बतावा? - **तुग-तांग**
1171. खाइ के पिगांठी सबद बतावा? - **तुब, ढोकस**
1172. बिहाक बाद तिसरा लियान के कि कहल जा हे? - **तेंगा**
1173. 'बेरबाद' के परयायबाची सबद लिखा - **तेन बेन**
1174. आदमिक देहिक ऊपरी चमड़ा कि कहल जा हे? - **तेलचाम**
1175. तेंतइर के बिया के कि कहल जा हे? - **तेंतइर चियाँ**
1176. साँवला देहि के कि कहल जा हे? - **तेल-साँवर**
1177. सेवा टहल के खोरठा में कि कहल जा हे? - **तेंताइर तेंतार**
1178. 'तेज तर्रार' के खोरठा में कि कहल जा हे, - **तेंताल**
1179. गरू गाड़ी के उदल जकर में टिकल रहे हे - **तेंतला**
1180. 'नाप-तौल' के खोरठा में कि कहल जा हे? - **तोला-जोंखा**
1181. 'उठावा' के खोरठा में कि कहल जा हे? - **तोलोंग**
1182. 'तुम' के खोरठा में कि कहल जा हे? - **तोंञ्**
1183. जकर बोली ठीक सें नाञ फुरछा हे? - **तोतराइल**

थ

1184. काम करले मानुस जाहे - **थइक**
1185. थइक गेलें मानुस जाहे - **थसइक**
1186. गिदर के सुतवे खातिर माञ् देहि ओकर गातें - **थपकी**
1187. दुइयो हाथ से बाजे हे - **थपड़ी**
1188. सोब गिदर आपन-आपन जोघो में - **थसका चाहें थचका**

1189. खोरठा जाने खातिर हामर बातें - **थनवा**
1190. आइज, खेलें थनु आर धनु हथ - **थकल**
1191. के देलइ हइ थनु के - **थसाइर**
1192. जे हइ ओकरा यहाँ - **थसारल**
1193. ऊ खइतइ आइज - **थपड़**
1194. ओकराँ उठवे हतइ थनुक - **थरिया**
1195. सुइन के बेचारा धनु काँपे हे - **थरथर**
1196. फुइल गेल हइ ओकर - **थथुना**
1197. मेइट गेल हइ सोब - **थकानी**
1198. गोटे गाते आइ गेल हइ - **थरथरी**
1199. हाथ-गोड़ लागल हइ - **थरथराइ**
1200. सुइन के थसरल थनु हे - **थलकुल**
1201. गिदर दइ रहल हथ ओकर गाते - **थपथपि**
1202. धनु सोभेक थरिया देल हे - **थकियाइ**
1203. हुआँ सोब दिन खातिर झगरा गेल हे - **थल थइम**
1204. आव कधियो केव नाञ हवे हे - **थसम थासा**
1205. केव नाञ रहे हे - **थकल माँदल**
1206. सोभिन मास्टर के धइनवाद देला थपड़ी - **थपथपाइ**
1207. जखन कोनो बसुत के एक पर एक सजाइ के राखल जाहे- **थाक**
1208. 'धरोहर' के खोरठा में कि कहल जाहे? - **थाति**
1209. भादर परते माँदइर में पड़े हे - **थाप**
1210. ठहरेक लेल कि कहल जाहे? - **थाम-थुम**
1211. जखन कोनो काम से सानति मिल जा हे - **थाह- थलकुल**
1212. एक बछरेक गिदर जखन चले ले सिखे हे, कहल जाहे- **थापाइ-थुपुइ**
1213. ककरो मना करे खातिर कि कहल जाहे? - **थाम्हा**
1214. ककरो डाँड़ाइ खातिर कहल जाहे - **थिर-थुम**
1215. पानी एकदम थिर रहले कहल जाहे - **थिराइल**
1216. थिराइल पानी साफ रहले कहल जाहे - **थिनाइल**
1217. नहान-धोवान के अभावें मुँड़े बइस जाहे - **थिहा**

1218. जखन समाजे ककरों निंदा फजीहत हवे हे तो कहल जाहे -**थुथु थइया**
1219. मुँहे कुचेक टा कहल जाहे - **थुरा**
1220. जे जनिक मुँह टेढ़ हे ऊ कहल जाहि - **थुथरि**
1221. जे जनि सगर घरि चुप रहइ ही, कहल जाहि - **थुमरि**
1222. जे जनि सगर घरि घिसट रहइ ही कहल जाहि - **थुभरि**
1223. जखन गाले कुचाकुचि करल जा हे - **थुराथुरि**
1224. मोटा भद्दा देहि के कहल जाहे - **थुल थुल**
1225. जे जनिक मुँह टेढ रहे हे, कहल जाहि - **थुथुर मुँही**
1226. छोट छपरि के कहल जाहे - **थेचका**
1227. जकराँ बार-बार कहलें भी कोनो काम नाञ सुने हे - **थेथर**
1228. 'बर्बाद करो' के खोरठा हवे हे - **थेचार**
1229. जखन बेकति चोतराक भोरें बइस जाहे - **थेसइर**
1230. जखन कोनो खाँड़ा जुठ-कुँठ से गंदा कइर देल जाहे - **थेभरा**
1231. चेपट नाटा के कहल जाहे - **थेचका**
1232. जखन कोनो खाँड़ा के गंदा से भोइर देल जाहे - **थेबथेबाइ**
1233. जखन कोनो बसुत के ढेइर लगाइ देल जाहे - **थोक**
1234. जखन कोनो बसुत के कम मातरा के बोध हवे हे - **थोरके, थोड़-बहुत**
1235. निपट काना, जकराँ कोनो समझ नाञ आवे - **थोथम थोथ**
1236. जेटा खाली मुँहेक बकबकी में हे - **थोथि**
1237. मुँह के पिंगाठी में कहल जा हे - **थोथना**
1238. जहाँ माटिक लेप चढ़वल जा हे - **थोपाथोपि**
1239. छत पिटाइ के एगो ओजार - **थोपि**
1240. झुठा बेकति के कहल जाहे - **थोथोर**
1241. जखन गंदा करेक हुकुम देल जाहे - **थोभोर**
1242. भोंथर भेल के कहल जाहे - **थोथरल**
1243. 'जेब' कि कहल जाहे? - **थोलि**
1244. थपड़ मारेक कहल जाहे - **थोपियाइ**

द

1245. जहाँ अउकात ताम-झाम देखवेक नजारा हे - **दमक-चमक**
1246. जहाँ हुब-हुलइर हरस हुलास के चमक हे - **दगदगिया**
1247. जहाँ भभक्काल इंजोर के समा हे - **दपदपि**
1248. जखन आइग के हदक बहुत ऊँचा उठे हे - **दंगदंग**
1249. नेसनाबुत करल कि कहल जाहे? - **दहंजल**
1250. ककरो जजाइत पर अधिकार कइर लेवा - **दखल-कब्जा**
1251. जखन कोनो काम ताड़ा-ताड़ी में हवे हे - **दउड़ा-दउड़ी**
1252. पुरान पइसाक छोट भाग कि कहल जाहे - **दमड़ि**
1253. तबाह करेक हुकुम के कि कहल जाहे - **दहंजा**
1254. इंजोर चमचमी दरसवेक सबद हे - **दपदपी**
1255. कोनो निरमान के गोड़ी कोड़ाइ कि कहल जाहे - **दर-कोड़ा**
1256. दखल कब्जा, मार-काट के कि कहल जाहे? - **दंगा-फसाद**
1257. बेरबादी, नोकसान से जे दुःख उपजे हे - **दरद-बेथा**
1258. कमजोरी के कारन जे भार सहे लायक नाञ् हे - **दरमादि**
1259. कहीं गाँवेक कुसराइन के कि कहल जाहे? - **दगरिन**
1260. तिरिसकार उपेछा दरसबे खातिर सबद आवे हे - **दहिनाइ**
1261. तेजी देखवेक सबद हे - **दनदनी**
1262. रूपया पइसा दरसवेक सबद हे - **दर-दरइब**
1263. रोब-दाब देखवेक सबद हे - **दबदबि**
1264. कमजोर नरम-निमर कि कहल जाहे? - **दबु**
1265. जे बसुत चममच चमकीला हे - **दगदगिया**
1266. जेटा बलगर आर ताकत ओला हे - **दमगर**
1267. तेजी आर जल्दी बाजी देखबे खातिर - **दनर-दनर**
1268. वह लड़का जे दोसरा बिहा कइर रहल हे - **दजबोर**
1269. जखन बहुत घुरा-घुरी करल जाहे - **दनाइर**
1270. पानिक अभावें फाटल माटी के कहल जाहे - **दराइर**
1271. बाँस के बनल बोड़ डालि के कहल जाहे - **दउरा**
1272. बहुत घुरे-घारे ओली जनि कहल जाही - **दनरी**

1273. लपसी में एक चुटकी चार मेसबल जाहे, कहल जाहे - **दँतरी**
1274. औषधि बोधवे खातिर कहल जाहे - **दवाइ-दारू**
1275. तेजी से चाइल दरसवेक लेल कहल जाहे - **दनदानाइल**
1276. जखन बिना सोचले समझले चलल जाहे - **दहाँइदिस**
1277. जखन कोनो चिज बहुत तेजी सें चले हे - **दरदराइ**
1278. जे बाछाक काँधे जुआँइठ नाञ पोरल हे - **दामड़ा बाछा**
1279. 'दर भाव' के खोरठा में कहल जाहे - **दाम-दोड़ी**
1280. कच्चू आलू के बेमारी के कहल जाहे - **दाँतार**
1281. डाँगर के नावा दाँत जनमले कहल जाहे - **दाँतल**
1282. दामड़ा बाछाक साधल बाद कहल जाहे - **दामल**
1283. आपन हक दरसबे खातिर धरल जाहे - **दाबि**
1284. खोसामदिक रिस्ता दरसवे ओला सबद - **दादा-भइया**
1285. जकर पर हानि-लाभ सब निरभर करे हे - **दारोमदार**
1286. जब भीड़ के माइर से कादो कीचड़ होइ जा हे - **दाहलाइ**
1287. कोनो थानके पुरूब-पछिम के परिचइ - **दिक**
1288. जकर सें झंझट-कलकल के बोध हवे हे - **दिकदिक**
1289. देवाल में आलमारी रकम खुला जोघो - **दिरखा**
1290. जहाँ नेसनाबुत हवेक नउबत हे - **दिकइत**
1291. गुस्सा में भोरल आदमी के कहल जाहे - **दिति आइल**
1292. कसम-किरिया के बोधवे ओला - **दिब**
1293. मउका-ताक के दरसवे ओला सबद - **दिन-सँवइ**
1294. कमजोर बइन के नुकाइ के भाव - **दुबका-दुबकी**
1295. चरक माटी जकर सें देवाल के पोताइ हवे हे - **दुधि-माटि**
1296. जे गिदर के माएक दूध नसीब नाञ् भेल हे - **दुधकटु**
1297. जंगल के लतरी, जे घोरना बाँधेक कामें आवे हे - **दुधिलत**
1298. जकर मति खराप भइ गेल हइ - **दुरमति**
1299. आपन पियारी धनि के संबोधन - **दुति**
1300. बिहाक एगो बड़का नेग - **दुवाइर खुंदा**
1301. देहिक दु जोघो के गहना - **दुटुम**

1302. जकर दुगो मुँह हे - **दुमुहियाँ**
1303. दुध दिए ओली लघइर गाइ - **दुधइर**
1304. जे निमर आर दुरबल हे - **दुबर-पातर**
1305. एक दउड़ में जतना रस्ता तइ हवे पारे - **एक दुलदुलि**
1306. एक बइर बिहा भेल बोर के कहल जाहे - **दोजबोर**
1307. एके काम टा दुबारा करलें कहऽ हथ - **दोहइर कामा**
1308. दोहरी कइर लुगा पिंधा - **दुछिनवाँ**
1309. दुध पिए ओला गिदर - **दुधमुहाँ**
1310. डाँइट फटकार के भगवा - **दुरदुराइ**
1311. दिए आर पावे के हिंसाब - **देना-पोना**
1312. जकर से अधिकता के बोध हवे हे - **देदार**
1313. कखनु-कखनु होवे ओला - **देर कुबेर, देर सबेर**
1314. जहाँ देइख के नकल करेक भाव हइ - **देखा-सिखा**
1315. पुरखा सब के सम्मान जनक परिवहन - **दोलि-पालकी**
1316. पानी बोहेक काँचा डहर दरसावे ओला - **दोंग-चोंग**
1317. बिहाक बाद पहिल लिआन - **दोंगा**
1318. झारखंडी दसा के परतिक - **दोतइन बेंचा**
1319. दोहन परकिरिया के परतिक - **दोमाइठ**
1320. मधियम बेपार के परतिक - **दोकान दोड़ी**
1321. लेल चीज के नकाइर देवा - **दोइद**
1322. जहाँ असमंजस के बात हइ - **दोगधा**
1323. जखन एके बात के दोहरवल जाहे - **दोहारि**
1324. दउरा के छोट रूप - **दोरि**
1325. जब राइग के डाट-डपट करे - **दोंदरे**
1326. जे देहि के डिल-डोल दु सरिर के बराबइर हइ - **दोहरि बाँधन के**
1327. कोनो बसुत के मोइड़ देवा - **दोबराइ**

ध

1328. कोनो चीज देइख के चकरीघुम होवा - **धक**
1329. जखन नार्के कोनो सुगंध आभास आवे हे - **धमक**
1330. पूरा जवान के कहल जाहे - **धड़िंगा जुआन**
1331. जखन भय के बोध हवे हे - **धकपकी**
1332. जखन संदेह के बोध हवे हे - **धकचकी**
1333. जखन दबाब दिएक बोधा हवे हे - **धमक–चमक**
1334. जखन कोनो धसना से माटि गिर जाहे - **धँसकल**
1335. जखन ककरो अउकात नापेक बात हवे - **धन–दोलइत**
1336. जखन जबरजस्ती आर दबाब दिएक बात आवे हे - **धइर–बाँइध**
1337. कइ रकम के विसंगति - **धरछन**
1338. जहाँ अनचाहा दबाब देल जाहे - **धमकउनी**
1339. लाइत मुक्का से पिटेक साड़ा - **धमाधम**
1340. बिटा गुड़ेक आवाज - **धड़ाम–धुडुम**
1341. कोनो डर से चाँड़ें–माड़ें काम फुरवेक बोध - **धकर–पकर**
1342. कादो आर पिछर के जोघो - **धधर–पिधर**
1343. कोनो आसंका से फुरति करेक - **धरफरि**
1344. जे धनेक निसा में चूर हे - **धने माताइल**
1345. जहाँ काम तेजी से हइ रहल हे - **धक–धकाइ**
1346. जहाँ बहुत सुगंधि फइल रहल हे - **धमधमाइ**
1347. बिना रोक–टोक के लोग जाइ रहल हथ - **धड़ धड़ाइ**
1348. जखन भारी चोट से छेतर काँइप उठे हे - **धमसाइ**
1349. जखन रागे ककरो गरगरबे हे - **धरधरबे**
1350. जखन कोनो दुर्घटना से चाँड़ा–चाँड़ी दउड़ल हे - **धरफरइले**
1351. जखन आइग पूरा हदइक उठल हे - **धधकल**
1352. धान रोपे ओलि जनि - **धन रोपनि**
1353. नेदरा टिपे में पहिले चाइरो धाइर टिपेक काम - **धाइर मारेक**
1354. मइड़ल बाद धान डिंग के सूप से पाहि में छितराइ धुँकेक काम - **धान–धुँका**

1355. खरिहाने धानेक बिंड़ा के तहिवल रूप	-	**धानेक चाकी**
1356. जकर से दबदबा देखवेक बोध हवे हे	-	**धाक**
1357. डेइक के पार हवेक परकिरिया	-	**धाइंग**
1358. माँदइर थापेक साड़ा	-	**धांग-धिंग**
1359. झंडा-पताका के परयायबाचि सबद	-	**धाजा**
1360. दगरिन, कुसराइन के परयायबाचि सबद	-	**धाय-माञ्**
1361. दबंग के परयायबाचि सबद	-	**धाखड़**
1362. काँचा घारे छाइन के सँभाइर के राखे ओला	-	**धारइन**
1363. गोड़ थामे खातिर बनवल ढिप	-	**धाप**
1364. जोर दइके अधिकार के जतावा	-	**धापि**
1365. जोर से बोड़ चिज गिरेक साड़ा	-	**धाड़ाम, धुडुम**
1366. धान आर ऊ समइ के दोसर अनाज	-	**धान धुर**
1367. बेस कइर नाञ् सुझेक भाव	-	**धाँधर-धुँधुर**
1368. जकर से आइग के झरक के बोध हवे हे	-	**धाह**
1369. जकर में बदमासी करेक भाव हे	-	**धाधाइ**
1370. निंदा आर घृनाक परतिक सबद	-	**धिक**
1371. माँदइर में थाप के साड़ा	-	**धिग-धांग**
1372. एक संगे लड़का-लड़की	-	**धिया-पुता**
1373. आराम से कोनो काम करेक बोध	-	**धिरे-सुस्ते**
1374. जखन गरम रहेक बोध करल जाहे	-	**धिपल**
1375. बेटि के बोध करावे ओला सबद हे	-	**धिया**
1376. सुस्त चाहे नरम के बोधवे खातिर	-	**धिम**
1377. 'सबुर' के बोध करवे खातिर सबद हे	-	**धिर**
1378. धानेक गरदा उड़वे खातिर सुप सें	-	**धुँइक-धाँइक**
1379. चारेक गुँड़ि सें बनल रोटी	-	**धुसका**
1380. आतिसबाजी, बम, गोलाक साड़ा	-	**धुम-धड़ाका**
1381. हियाक ढुकल डर	-	**धुकधुकि**
1382. आइग के नाञ् हदकल सें, हवे हे	-	**धुंगा**
1383. जे मानुस के धोखा देहे	-	**धुरूत बाज**

1384. जे निसा पिके सराबोर हे - **धुत**
1385. कोनो चिज पकइले, जखन धुंगा से कार हइ जाहे - **धुआँ-राता**
1386. जंगली कोइर के झार जकर गाछ नाञ हवे हे - **धुंध कोइर**
1387. धुआँराता भेल चीज के सोवादेक नाम - **धुवाँइध**
1388. धुनियाँक जंतर सें साफ-सुथर करल - **धुनल**
1389. सुगन्धित धुआँ दिए ओला एगो पदारथ - **धुमना**
1390. जखन कोनो खड़ जंतर के तोइप राखेक कोसिस हवे हे - **धुरे तोइप**
1391. जमीन नापेक देसी इकाइ - **धुर**
1392. आसंका आर डर से भोरल हिया - **धुकुर-पुकुर**
1393. ढेकिक मुँड़ें लागल सामा देल काठ - **धुसइर**
1394. धुँके खातिर जे आदमि रहे हे - **धुँक निहार**
1395. धुरा माटि गरदा से भोरल - **धुरूंग धुसुर**
1396. बुड़बक खातिर पिंगाठि बोल - **धुधरा**
1397. उत्तर दिसाक तारा जे सब दिन से आपन जोघो मे थिर हे - **धुरूब तारा**
1398. मानुस गाड़ी गोहोर चलल से कुल्हि मे जे गरदा हवे हे- **धुरा**
1399. गरू गाड़िक निंघा - **धुरि**
1400. धुरा-गरदा से भोरल - **धुरूक धुस**
1401. धुरा जइसन बनाइ के - **धुरियाइ**
1402. धुनियाँ से रूआ साफ कइर के - **धुनवाइ**
1403. जखन बुरबकालि के बोध करवल जाहे - **धेंधा-लेका**
1404. अनपढ़ बुरबक जे कोनो बुझे नाञ् पारे - **धेंधा**
1405. इटा नाञ् भेलें कोनो काम नाञ हवे हे - **धेयान**
1406. अंगरेज के चलवल पइसाक आधा - **धेला**
1407. कोनो काम के लइछ - **धेव**
1408. गरमिक दुपहरिया में जे तातल हवा चले हे - **धोंक**
1409. कोनो परब-तिहार चाहें मोरखी बेरखी में लुगा-लाता धोवा हे - **धोवा-काँचा**

1410. कोनो परब-तिहार जाहे मोरखी वेरखी घारेक सफाइ हवे हे - **धोवा-पोंछा**
1411. खाँड़ा-भाड़ा के साफ-सफाइ - **धोवा-माँजा**
1412. अपढ़ बेकुप जे कुछ बुझे नाञ पारे - **धोंधा**
1413. गरदा-धुरा के धोवल पानी - **धोवन-धावन**
1414. निपट काना मानुस जकराँ कुछ नाञ बुझा हे - **धोधोर धोना**
1415. बइसाख जेठ में वोहे ओला धिपल हवा - **धोंकाइर**
1416. जे मानुस के कोनो ढंग नाञ - **धोधरा**
1417. जे काठ के बेढंगा काइट-कुइट के भद्दा बनवल गेल हे- **धोधरल**
1418. जकराँ धोइ धाइ के साफ करल गेल हइ - **धोवल-पोंछल**
1419. अनपढ़ बेकति के कहल जाहे - **धोधवा**
1420. जकरा छेइछ-कुइट के कुरूप कइर देल गेल हइ - **धोधराइ**

न

1421. जेटा बहुत पासें हइ - **नजिक**
1422. बिहोती खातिर माञ-बापेक घार - **नहइरा**
1423. नाके पिधें खातिर एगो बुंदा रकम गहना - **नकफुटकि**
1424. फुनगि में नउतन फुटल पतइ - **नइजगा**
1425. आवारा के कहल जाहे - **नडूर**
1426. कुम्हारेक बनवल माटिक बिगुल - **नरसिंघा**
1427. जकर नाक कटल हइ - **नकटा**
1428. नाकेक सुखल मइल - **नकटि**
1429. जे गिदर बेसुरा काँदे हे - **नरटे**
1430. जे लुगा-लाता नाञ पिंधे हे - **नंगटा**
1431. टेहुना के मोटका हाड़ - **नरहड़ा**
1432. झारखंडी गउरब के बतवे ओला बाजा - **नगाड़ा**
1433. जे जनि धन-संपइत से हिन ही - **नढ़ि**
1434. जे जनिक नाक टेढ़-मेढ हइ - **नकढेढि**
1435. जे जनि बहुत रगाही ही - **नकचढ़ि**

1436. जनम के छो दिन बाद नहाइ के नेग - नरता
1437. किनल बाद तुरत दाम दिएक परकिरिया - नगदा-नगदि
1438. कोनो रसम-रेवाज चाहे नेगे नहाइ-धोवेक परकिरिया - नहान-धोवान
1439. जेटा कधियो बेवहार नाञ करल गेल हइ - नतुन
1440. जे खाड़ा से कोनो खास मातरा देल जाहे - नपना
1441. जे जनि नाचेक काम करऽ ही - नचनि
1442. जे जनि नाटक करेक काम करऽ ही - नटनि
1443. जकर से नउवा नोख काटे हे - नरहइनि
1444. जे गरीब आर कमजोर हे - नरमनिमर
1445. जखन बरद जुआँठे हार टाँइग के लेगऽ हथ - नधाइर
1446. चरपट डिंगर बेकति - नडुर
1447. बिना मतलब के बड़बडि - नरनरि
1448. जे जनि बहुत बदमास ही - नटरि
1449. जे जनि दरिदर कंगाल ही - नढ़रि, जनि
1450. जेटा जिनगिक गउरब लागइ - नइतिक मुइल
1451. जे काम देइख के मानुस खुस होइ जा हे - नजइर जुडुवा
1452. गंदा रहे ओला बेकति - नरकटाहा
1453. जखन बिना मतलब के हरकइत हवे हे - नदनदाइ
1454. जखन केव हिंकवा तक भोइर खाहे - नरनराइ
1455. कहुँ पोंहचेक एकदम नजिक होइ जावा - नाकानाकि
1456. कोनो बसुत के नापे-तोलेक हुकुम देवा - नापाजोंखा
1457. कामेक जोघो में नाञ जावा - नागा
1458. नाके सिंघन होवा - नाकें नेटा
1459. कामें कोनो संदेह होवा - नाके नकटि
1460. जाइत कुटुम आपुस पर - नाता-गोता
1461. बेटिक जनमल धिया-पुता - नाति-पुति
1462. रकम-रकम के खड़जंतर में फँसा - नाना-फाँदे
1463. जुआँइठ बाँधल गोरू से गोहोर टनवा - नाधा-बाँधा
1464. जे डहर हेठ बाटे जा हे - नाभान, हेंठ गड़गड़िया

1465. जकराँ कधियो बेवहार नाञ करल गेल हइ - **नावा-नतुन**
1466. माएक बाप - **नाना**
1467. जहाँ ककरो नेसनाबुत करल गेल हइ - **नाना-थाना**
1468. जुआँठ कसेक चमड़ाक डोरा - **नारन**
1469. जखन कोनो काम खातिर नाञ् कहइ देल जाहे - **नाकाइर**
1470. जखन लाचार होइ के कोनो काम करल जाहे - **नाइर-पाइर**
1471. जखन डांगर खुर सें माटि कोइड़ देल हे - **नाखाइर**
1472. जखन हर कृत में नाञ् झलके हे - **नाञ्-नुकुर**
1473. जखन खालि नाञ-नाञ के लछन रहे हे - **नाकर-नुकुर**
1474. जेटा एकदम सुध हे - **निक, निठ**
1475. निम के नतुन पतइ के भुंजिया - **निम छिछकी**
1476. बहाना करेक परबिरति - **निंग**
1477. गरू गाडिक धुरि जकर में चाक घुरे हे - **निंघा**
1478. सोब तरह सें छोड़ल - **निंगछल**
1479. जकर में झूठ नाञ हे - **निस्टो, सच**
1480. जे खाना जुठा नाञ करल गेल हइ - **निरठ**
1481. एकदम सुध ठेठ के कहल जा हे - **निछक ठेठ**
1482. जेटा पुरापुरी सच हे - **निठा**
1483. जखन खेतिक घास कुबारल जाहे - **निकवे**
1484. जखन सोभा बाइढ़ जा हे - **निखरे**
1485. जखन एकदम खतम होइ जा हे - **निंघरे**
1486. जखन घमंड आइ जा हे - **नितरे**
1487. जखन झुइक जाहे - **निहरे**
1488. जखन चलवे हे - **निभवे**
1489. जखन सिकायत करे हे - **निंदवे**
1490. जकर पाता नाञ् पावल जा हे - **निपाता**
1491. गोटे घारेक बछरवारि सफाइ के काम - **निपा-पोता**
1492. कोनो काम के निमराझार - **निंघरोति**
1493. सही काम के कहल जाहे - **निमन**

1494. झारखंडी कलंडरे गरम महीना - निरन
1495. जे एकदम रोग रहित हे - निमन-गुमन
1496. बाधा रहित बइरसा के कहल जाहे - निझूम बइरसा
1497. कहुँ ऊपर चढ़े खातिर जकर बेबवहार हवे हे - निसइन
1498. जकर उमइर 16-17 बछर हइ - निम जुआन
1499. जे पुरा पुरि अनपढ़ हे - निपट काना
1500. जे आधानिंदेक हालइत में हे - निंदमासने
1501. जब साड़ा बिहिन सानति हे - निझुम
1502. जकर पास कोइ काम नाञ हे - निकमियाँ
1503. बात करे में जकर मुँह नाञ् खुले हे - निमुहियाँ
1504. जे निरबल कमजोर हे - निमर, निमरगर
1505. जेटा एकदम खतम भइ गेल हइ - निमराझार
1506. जे चिंता रहित हे - निफिकिर
1507. जकर में तनिको दया नाञ हे - निठुर
1508. भूत भगवेक काना पतियारी - निंगछा छोरी
1509. रहइतो पर बहाना करा - निनियाइ
1510. डोरा के गोइछवल गाँइठ - नुड़ि
1511. कोनो भुरे चाहे फाँके हाथ मुँड़ दिएक - नुड़
1512. कोनो सवारथ साधे खातिर काहा - नुनुबाछा
1513. गिदर के खोजा-छिपा खेल - नुकनुकानी
1514. गिदर के एगो खेल - नुनछोरी
1515. जे नुन चाटे हे - नुनचटवा
1516. जकर से उबगार के बोध हवे हे - नेकि
1517. सामाजिक रसम-रेवाज - नेग
1518. माथा में बोझा ढोवेक कामे आवे हे - नेठो
1519. विलकुल, एकदम के अरथें आवे हे - नेहाइत
1520. परिसान आर तबाह के अरथे हे - नेसनाबुत
1521. अनुनय-विनय के साथ आग्रह - नेहोर-विनति
1522. खाटिक विछोना हे - नेंदरा-कैंथा

1523. समाजिक विध-विधान - **नेग नियम**
1524. कोनो सोवाद के पहिला परिछन - **नेवाइन**
1525. खाटि घोरेक फिता - **नेवाइर**
1526. जकर मे बहु पेंच हे - **नेठो नियर**
1527. पुरबा पुरूसेक चलवल नियम - **नेगाचार**
1528. जकर मे आगरह बिनति के भाव - **नेहोर**
1529. जे एक गोडेक भोरें डेढ़ियाइ चले - **नेंगाइ**
1530. छोट चुरि रकम नाकेक गहना - **नोथ**
1531. जे अपढ़ बुड़बक हे - **नोधा**
1532. जहाँ सामान घइट पोइच के हानि के बोध हवे हे - **नोकसान**
1533. जखन नोख से चाम उचइर के खुइन आइ जाहे - **नोखराइल**
1534. जखन देहिक चाम चिराइ के दाग बइन जाहे - **नोचराइल**
1535. मोरखी-बेरखी में दसदिनके रित-रेवाज हे - **नोख-खँखरी**
1536. जेटा-टेढ़ा भइ गेल हे - **नोवल**
1537. नोख से देहि में चिराइल - **नोखरल**

प

1538. जे नेग-नियम गुला पुरबा पुरूस के चलवल लागइ - **परथा**
1539. पुरना जमानाक समय - **परिया**
1540. काँख के हेंठेक भाग - **पइनखोख**
1541. जे दोसर के अजरल खा हे - **परखउका**
1542. जकर आदइत होइ जा हे - **पइरकल**
1543. पतरी चाटे ओला के कहल जाहे - पतइर चटवा
1544. पानी से बनल रोटी (खपइर पोडो) - **पइन रइसका**
1545. सुरूज के सातो रंग के छहइंरा - **पइन सोखा**
1546. ऊ पइला (बीस गंडी) जे एकदम खरा हे - **पकि**
1547. मादा पाँड़ के कि कहल जा हे - **पँड़कि**
1549. पंछि जे पानी मे डुबकी लगाइ आहार खोज हि - **पइन डुबकि**
1550. पटके आर पटकाइ के परकिरिया - **पटका-पटकि**

1551. जे तराजुक संतुलन हेंठ ऊपर हे - **पसंगा**
1552. दु पहरियाक बेरा - **पहर टिंगा**
1553. खडजंतर करेक जुगति - **परपँच**
1554. सवागत के नेग नियम - **पइरछन**
1555. सुरूज डुबतिक समय - **पहइलि साँझ**
1556. छोले खातिर काठ राखेक पिर्हा - **परिहट्ठा**
1557. पातें पकवल माँस - **पतपोड़वा**
1558. उलटि चलेक परकिरिया - **पइछवाँड़ि**
1559. पाँच काठ से बनल जलना - **पँचकट्ठा**
1560. जहाँ विंडा लादल गाड़ि डँडवल जाहे - **पइसा गाड़ि**
1561. आपन कुटुम के जमाइत - **पंगइत**
1562. विचारें ककरों बाटे टान करा - **पछपाइत**
1563. गाँवेक विचार सभा - **पँच-पंचाहित**
1564. जे जमीन जोतल नाञ् जा हे (खिल) - **परति**
1565. बहुत दिन के बनल आदइत - **परबिरति**
1566. जेटा आप रूपि भेल हइ - **परकीरति**
1567. काना पतियारिक सेवा - **पथल भगति**
1568. पहिल बइर के गाभिन - **पइहलठ**
1569. घेरान के देवाल कहल जाहे - **पचरी**
1570. पसलिक हाड़ के कहल जाहे - **पँजरा, पँजरी**
1571. थोक खरीददार के कहल जाहे - **पइकार**
1572. जे जनि बिना बिहा करले राखल गेल हइ - **पतोरिया**
1573. मेला उतसब मउज मसतिक रीत-रेवाज - **परब-परथा**
1574. डेराइल हालइत - **पद पदि**
1575. खोज खबइर लिएक काम - **पयान**
1576. छोट डांग जे दु अढ़ाइ हाथ लंबा हे - **पइना**
1577. जे खेति पानी पटवल से हवे हे - **पटनियाँ**
1578. खुँट दर खुँट, पुस्त दर पुस्त - **परियाक परिया**
1579. जलन से भोरल भाव - **परपरि**

1580. छगरिक मेदि छउवा - पँठियर
1581. जकर पर बिसवास करल जाइ पारे - पइतगर
1582. जकर में सकतिक लछन हे - पइनगर
1583. जे सोब तरह से बेबस हे - पठरू नियर
1584. जकर में हरेक साल के बोध हे - पइत-बछर
1585. जे बछर बित गेल हे - परियार
1586. जखन गाछ पात-पाल्हा से भोइर जा हे - पझइर
1587. जखन कोनो परतुल देल जा हे - पटतइर
1588. विदाइ करे ओला सामान - पठाइर
1589. जखन बहुत फुल-फोर के पसइर जाहे - पथाइर
1590. जखन सच के, हिया सिकार कइर लेहे - पतियार
1591. जकर सोवाद पानी जइसन हइ जाहे - पइनसोर
1592. खेती में पेपंटि बजवेक गँवइया वकसिस - पँइकरा
1593. देवाल के घेरान - पचरि
1594. गाड़ी चाहे चेनिक माझे लागे ओला लकडी बाँस - पंजरि
1595. जखन जोढ़रा पाइक के सुइख जा हे - पकठाइल
1596. जखन कोनो जिनिस छेतर में फइल जा हे - पनपनाइल
1597. सँवइ बदलेक हालइत - पइर बरतन
1598. आड़ करेक जोगाड़ - परदा-परदी
1599. सँवइ बदलेक हालइत - पइर बरतन
1600. जकराँ उठाइ के बजाइर देल गेल हइ - पट कनियाँ
1601. हुलासे हरियाइल मन - परफुल
1602. पानिक तरें बइसल माटिक परत - पलि
1603. जे आपन जोघो से बिना पुछले चइल गेल हे - पराइल
1604. जखन घामें देहि भिज जा हे - पसपसि
1605. जे आपन भासा-संसकीरति के माटि में नाञ् हे - परबइसि
1606. जे दोसर के चलति देइख डाह करे हे - पर सिनाहा
1607. खरिहान खातिर सुखल भुएँ पानी दइ कादो करा - पलियाइ
1608. ककरो परति डाह फुटेक गुमाइर - परपराइ

1609. डोराक मुख चिज हे - **पाक**
1610. बाँधेक सुखल पलि - **पाँक**
1611. कोइर आँठि छोलेक किरिया - **पाछ**
1612. गाछेक डाइर हटवेक - **पाँइग**
1613. छगरी बाँधेक डोरा - **पाघा**
1614. बिटा राखेक जोघो - **पाड़न, पाड़इन**
1615. जुआँइठ से डांगर के काँध छटकलें कहल जाहे - **पालोकाटा**
1616. जखन गुर आर पानी फेटल जा हे - **पाना**
1617. पाँच गुटिक खेल - **पाँच गुटिया**
1618. सकत करे खातिर खिल देवा - **पाचर**
1619. जे बहुत मिहिं हे - **पातर**
1620. खाइ-पिएक सरंजाम करा - **पानी-पतरि**
1621. नतुन बिहिन लागा - **पइरचल**
1622. कोनो आइल लोक के सनमान देवा - **पानी-पिर्हा**
1623. कोनो भंडा फुटल से परिसान होवा - **पिल्ही चमके**
1624. बाँचेक परमाइ के लेखा - **परमाइ**
1625. जखन बसुत एकदम छोट हे - **पिचकि, पिचि**
1626. जखन कोनो बात गब्वाइ कहल जाहे - **पिंगाठि**
1627. जखन कोनो पन के नकारल जाहे - **पिछरे**
1628. पिता से नाता राखे ओला - **पितिया**
1629. जखन केव मदइत में रहे हे - **पिठ ऊपरि**
1630. पिठेक पाछु रहे ओला - **पिठारि**
1631. जखन कुइद कुइद भागे हे - **पिदकल**
1632. जखन राग आर दुखे भिनभिना हे - **पिनपिनि**
1633. जखन केव मदइत में डाँड़ा हे - **पिठबोल**
1634. काकि-सास के कहल जाहे - **पितियाइन सास**
1635. जखन नाराजगि देखवल जाहे - **पिन पिनाइ**
1636. दिकदिकि देखवेक किरिया - **पितियाइ, तिताइ**
1637. जे बहुत डेराहि - **पुलकि**

1638. जखन डरें हालइत बिगइड़ जाहे	-	**पुलुक-पुलुक**
1639. आपन बाप दादाक बंस	-	**पुरखा**
1640. मुँहे भोरल पानी जोर लगाइ दुर फेंका	-	**पुरकुचा**
1641. जानकारी लिएक बात	-	**पुछा-गछा**
1642. बिना साड़ा बहरइले मुँहेक भितरे सबद घुरवा	-	**पुटपुटि**
1643. डाड़ाक हेंठ भाग	-	**पुठा**
1644. जहाँ सुविधाक सोब सरंजाम हे	-	**पुरजुइत**
1645. पुरबा पुरूस से जोरल	-	**पुरखउति**
1646. छोट छोट खुखडि	-	**पुटकि छाति**
1647. कुमुदनी फुलेक गाछ	-	**पुरइन**
1648. खार्टी गोड़ बाटेक डोरा	-	**पुथान**
1649. कथुक रोआँ कुबारा	-	**पुदका**
1650. पठरू पुजाक सरंजाम	-	**पुजा-पाहुर**
1651. जे बहुत परिसान करे हे	-	**पुसकारा**
1652. आपन बाप दादाक खुंट	-	**पुरबा पुरूस**
1653. एक मानुस भइर के नाप	-	**पुरसा**
1654. छोट बेटि छउवाक पहिनावा	-	**पुतलि**
1655. मुँहेक भितर साड़ा राइख गुस्साक हरकइत करा	-	**पुकपुकाइ**
1656. जे बहुत नरम धातु के हे	-	**पेचकाहा,** **पेल-पेल**
1657. जे बात-बात में काँदे हे	-	**पेनका**
1658. गँवइया सहनाइ	-	**पेंपटि**
1659. आलु रकम माटिक तरें होवे ओला एगो तियन	-	**पेकचि**
1660. पेटेक भोरें रहा	-	**पेटकुनिया**
1661. बेहिसाव सोच जावा	-	**पेटझरि**
1662. जेटा एकदम झुठ हे	-	**पेंदल**
1663. जे धोखा खाइ चुकल हे	-	**पेटेक डढ़ल**
1664. पेटेक भोरें सुतवल के कि कहल जाहे?	-	**पेट दाबरू**
1665. पुरान अनाज में किड़ा	-	**पोकि**

1666. अनुकूल मउका पइले आँकुर अनाज से बाहर हइ जाहे- **पोंग**
1667. झिंगा जकर में धारि नात्र हवे हे - **पोरोझिंगा**
1668. आपुस-कुटुम, हित-मितर घर जावा - **पोहनागि**
1669. जाबड़ के पहिल खेतेक आइर के कोदाइर से मरम्मत - **पोंछि**
1670. गोछा जे पोआँर से बाइध के राखल हे - **पोआँर आँटि**
1671. जे अउरत एखन-एखन गिदर के जनम देल हइ - **पोआति**
1672. जे काना पतियारी में फाँसल हे - **पोगापंथि**
1673. असर के कहल जाहे - **पोह**
1674. बुस सर्ट के कहल जाहे - **पेट फरवा कुरता**
1675. खाना में दुबारा लेवा - **पोरसन**
1676. आगु बछर के कहल जाहे - **पोरबछर**
1677. किड़ा सुर्हि, घुन आदि-आदि - **पोका माकर**
1678. नुकाइ के जमा करल दरदरइब - **पोगलि**
1679. साँत बइसलें डांगर मुँह चलवे हे - **पोगराइ**

फ

1680. जलदि आर ओसानी से - **फकफक**
1681. सुपें साफ करल गेल हइ - **फटइक**
1682. कोनो चिज हाथ से छुइट गेलइ - **फसइक**
1683. चाइरो बाँटे उजाड़ भेल - **फरफाँक**
1684. काठ चिराइ रहल हे - **फरवे**
1685. अनाप-सनाप बोले - **फचरे**
1686. आकासें बदरी फाइट गेले हे - **फहकल**
1687. घारेक छाइन के छाँछा - **फरका**
1688. अलग-अलग भइ गेल हे - **फरकल**
1689. बिना साड़ा के काँदे - **फफके**
1690. धुर-धुर तइक साफ-सुथर - **फइल-फरिछ**
1691. उचइक-उचइक उड़े ओला किड़ा - **फटिंगा**
1692. जे खालि देखावटी करे हे - **फटक फुलाञ्**

1693. जखन कोनो गार बसुत डबके हे - **फदके**
1694. जखन भिनु हवेक हिसाब हवे हे - **फरकइति**
1695. जखन कोनो धोती साड़िक कोचि फइले हे - **फलके**
1696. बइरसाक बाद आकास साफ होवा - **फहक, उबइर**
1697. अलग करके परकिरिया के कहल जाहे - **फरकइती**
1698. सेना के खोरठा मे कहल जाहे - **फउद**
1699. बेलाग पार हवेक परकिरिया के कहल जाहे - **फन्न सें**
1700. जलदि-जलदि बइजका - **फचर-फचर**
1701. साफ आर खुस होवा - **फरहर**
1702. आँधार साफ होवा - **फइरछाइल**
1703. झुठमुठ के वतंगड़ करा - **फफर दलाली**
1704. बइढ-चइढ़ के बोले ओला - **फदराहा**
1705. जे बसुत बातर हे - **फदकाहा**
1706. बझवे ओला डोरा - **फँसरि**
1707. जे सुखी सम्पन्न हे - **फलल फुलल**
1708. झगरा सुलइझ गेल हे - **फरियाइल**
1709. जे ओसानि से पार हे - **फकपार**
1710. जकर में सफेदिक चमक हे - **फहफहि**
1711. जे निरास हइ जाहे - **फकुवाइ**
1712. धान खेतेक पहिला जोत - **फारनि**
1713. जकर लुगा-लाता पुरान आर चिराइल - **फाटल चिटल**
1714. ककरो बझवे ओला डोरा - **फाँसा, फाँदा**
1715. जे चिज बेकार जा हे - **फाहें**
1716. जे जोघो टा फाटल हे - **फाइट**
1717. तमखुर आर सरइ पात से आपने बनवल बिड़ि - **फिका, चुटि**
1718. जे बहुत छोट हे - **फिचका, फिचकी**
1719. कोनो गाछ बाँसेक सोवले ऊपर भाग - **फिदवा, फिचवा**
1720. जे बहुत नेहोर बिनती करे हे - **फिफियाइ**
1721. जखन बइरसाक फुहारा परे हे - **फिसफिसाइ**

1722. काने चुपे कुछ कहा - फुसका
1723. ढेइर बोले ओला - फुड़का
1724. काम छोइड़ चुपें भागे ओला - फुचका
1725. मुँह से हावा दिएक काम - फुँकफाँक
1726. जे जलदि सें चइल गेल हे - फुचुक सें
1727. सहज में हवे ओला - फुटुक सें
1728. बाँस चाहे गाछेक आग - फुनगि, फुदनिएं
1729. भुलाइ-फुसलाइ के ठगा - फुचफाच
1730. कोनो बात साफ करेक - फुरूछ्वेक
1731. एकदम छोट चँरइ - फुचि
1732. बेकार के बोली - फुड़फुड़ि
1733. एकदम छोट बात - फुसबात
1734. बाभनि पाखंड के परतिक चुंदि छोड़ल चुइल - फुरचुँदि
1735. चुल्हा फुँकेक पाइप - फुँकनरि, फुँकरइनि
1736. बापेक बहिन - फुफु
1737. बापेक बहिन के पति - फुफा
1738. कउड़िक गनति मोताबिक काम - फुटिया
1739. खुदरा काम - फुटकारा
1740. फोड़ाक छोट रूप - फुसरि
1741. जे ढेइर बोले हे - फुरफुराइ
1742. जे मुँहेक भितरे बोले हे - फुसफसाइ
1743. जे बेकार वके हे - फेडरे, फेचरे
1744. जे बात-बात में काँदे हे - फेनका, फेसका
1745. बाभनेक बनवल पाखंड - फेचांग
1746. पाँखि जकराँ दिने नाञ सुझे हे - फेचा
1747. लंबा लुगा सें मुँड़े बाँधल जाहे - फेंटा
1748. ढेइर बोलल से चाहे ढेइर भुखें मुँहें थुक जइम जावा - फेफरि
1749. काटल गाछेक बाँचल भाग - फेड़ि

1750. बिन बियाइल बाछि - फेटाइन
1751. बिना मललब के कँदना - फेफकँदना
1752. फेव-फेव करे ओला सियार के एगो जाइत - फेकाइर
1753. जे गिड़ागिड़ाइ बुले हे - फेफाइ
1754. जे सुबइक-सुबइक काँदे हे - फेसफेसाइ
1755. कोनो बसुत के माँझे छेद - फोंक
1756. डाढ़ल के घाव - फोंका
1757. धान जकर भितरें चार-नाञ - फोंकि
1758. पाखंड कइर ठकेक काम - फोरिफँदि
1759. जे धान बिड़ा मइसेक पहिले झरे हे - फोर धान
1760. जे बसुत बहुत कम देल गेल हे - फोरन रकम
1761. जे समान फुइल गेल हे - फोंकइर
1762. जकर मुँह दाँत नाञ हे - फोगला
1763. जे झुठमुठ के मोटा देखा हे - फोंकरल
1764. जकर भितर दाना-दाना नाञ हे - फोइकला
1765. जे अंग सें सांस लिएक काम करे हे - फोफसि
1766. जे झूठ मुठ के मोटा देखा हे - फोंकरल
1767. गोटा लहसुन के कहल जाहे - रसुन फोटा

ब

1768. मुँह से बहराइ ओला साड़ा - बक
1769. बेकार के बात - बकबक, बड़बड़ी
1770. दामल बाछा जकराँ हारें जोतल जाहे - बरद
1771. गाछ-बिरिछ के समूह - बगइचा
1772. जे कुछ नाञ समझे - बजरबट्ट
1773. जे कुछ नाञ सुने - बहिर बकाट
1774. जे समइसा सुलझे नाञ खोजे - बजर गाँइठ
1775. गरू गाड़िक बाँस जे पिरिंहा के दवाइ राखे हे - बगड़ा
1776. जकर मुँड़ बहुत बोड़ हे - बजर मुँड़ा

1777. जे बदमासी करे हे - **बज्जाइत**
1778. जखन सोव कामें बढ़ती हवे हे - **बरकइत**
1779. बोर देखेक नेग-नियम - **बरतुपात**
1780. कोनो बेकतिक भासन - **बकिता**
1781. जेटा बहुत टेढ़ा-मेढ़ा हे - **बरदमुता**
1782. बापेक देल संपति - **बपउति**
1783. कखनु बदरि, कखनु रउद - **बदइर कटु रउद**
1784. बासि हवेक गमक - **बसियाइंध**
1785. ठहरे खातिर जे जोघो बनवल गेल हे - **बर-बथान**
1786. जे बात कभुँ-कभुँ हवे हे - **बड़ी संधने**
1787. जे रकम-रकम के रूप बदले हे - **बहुरूपिया**
1788. बिहान हवेक पहले के आँधार - **बड़कि भिनसर**
1789. जे बहुत बलगर हे - **बरियार**
1790. जे खेते बारो महिना पानी रहे हे - **बहियार**
1791. खानदानी घारेक समूह - **बखरी**
1792. जेटा बहुत बेस मउका हे - **बतरसिरें**
1793. जे निंदे में बकबक करल हे - **बउवाइल**
1794. एके बात के घुइर-घुइर बकते रहा - **बतरस**
1795. आल गिदर जखन बिमार हवे - **बलसे**
1796. बापेक देल खजाना - **बप घोद (पिंगाठी)**
1797. जे काम जबरजसती कइर देल जाहे - **बरजोरी**
1798. बिना लइछ के काम करे ओला - **बयाहा**
1799. जते उधार करजा हइ - **बाकि ढेंकि**
1800. कोई चीज के जबरजस रोक - **बाघ टेका**
1801. चुने बाछेक किरिया - **बाछ कुछ**
1802. ककरो फुसलुवेक कोसिस करा - **बाबा-बाछा**
1803. चुने छाँटेक परकिरिया - **बाछा-बाछि**
1804. एगो पुस परबें बने ओला झारखंडी पकवान - **बाँकापिठा**
1805. घार अंगनाक साफ-सफाइ होवा - **बाढ़ा सोढ़ा**

1806. बढ़ती बाटें जावा	-	**बाइढ़-बढइत**
1807. जकर रंग बाघ नियर चितकबरा हे	-	**बाघाचिता**
1808. बरन-बरन के बाजाक समूह	-	**बाज-बजना**
1809. अन, फल साग-सबजिक रोपेक फोर चाहे दाना गोटा	-	**बिहिन-बिच**
1810. काटल अनाज के बोझा	-	**बिंड़ा**
1811. माटिक तरें बइसे ओला कंद मूल अलति आलुक जइर	-	**बिझिं**
1812. गाछी पारेक बिहिन छिटेक कियारी	-	**बिहिन गाड़ी**
1813. जेटा बहुत नामी बइन गेल हे	-	**बिखियात**
1814. अंगठा सें कानी अगंरिक दुरि	-	**बिता**
1815. जेटा मूलबासी बिसइर गेल हथ	-	**बिसमिरति**
1816. अनाज जोगवेक गँवइया साधन	-	**बिटा-पोटोम**
1817. पाँइते चले ओलि लाल चिंटि	-	**बिस पिपरि**
1818. जखन डांगर बहइक के कधुँ चइल जा-हथ	-	**बिलटल**
1819. चाँड़ा-चाड़ी, भागा-भागि करेक	-	**बिरबिरइले**
1820. जकर से मेरूदंड के बोध हवे हे	-	**बिसि**
1821. जकर में बिस भोरल हे	-	**बिसाहा**
1822. उरीद के कहल जाहे	-	**बिर्हीं**
1823. चंदा के कहल जाहे	-	**बिहरी**
1824. रकम-रकम के विहिन के कहल जाहे	-	**बिहिन चोंच**
1825. जखन गिदर गोहाइर कइर काँदे	-	**बिंबियाइ**
1826. जकर उमइर साइठ बछर से बेसी भइ गेल हइ	-	**बुजरूक**
1827. जे मानुस बुइधमान हे	-	**बुइधलग**
1828. जेटा पुरा नाञ हे	-	**बुचा**
1829. जे सतर से बेसी बुढ़ा भइ गेल हे	-	**बुढ़ पुरान**
1830. धुरूब के चकर लगवे ओला सात ताराक समूह	-	**बुढ़ि खइटला**
1831. मुरूख के मुरखालि के कहल जाहे	-	**बुड़बकाहि**
1832. बउँड़ी दिने निसाना साधेक ओदाबादि	-	**बेझा**
1833. ककरो संग अनियाइ करा	-	**बेजाञ्**

1834. खोपा बाँधेक काँटा	-	**बेलकाँटा**
1835. बहुत जोर के गोल आँधि	-	**बेरेन्डो**
1836. आपन जिनगिक संगी	-	**बेगइत**
1837. कोरे गिदर के बाँइध लेवा	-	**बेंतइर**
1838. आम-जामुन में रहे ओला लाल चुंटा	-	**बेमुत**
1839. कोनो सरंजाम के कहल जाहे	-	**बेबस्था**
1840. जखन कोनो जिनिस नस्ट होइ के बेकार होइ जाहे	-	**बेरबादि**
1841. चरँइ चिनगिक सिकार करे ओला	-	**बेयाधा**
1842. कोनो काम के बाधा बिधिन	-	**बेबधान**
1843. जकर से रोटि बेलल जाहे	-	**बेलना**
1844. जे आदमि बुड़बकालि करे हे	-	**बेकुप**
1845. लोहा छेदेक किल	-	**बेना**
1846. साँइझ के समय	-	**बेरडुबिया**
1847. बिना मजुरिक काम	-	**बेगाइर**
1848. बेंगेक बच्चाक पहिला रूप	-	**बेंगचुर**
1849. सिरा घँसकल के कहल जाहे	-	**बेंहचल**
1850. सुरूज डुबेक पहिले	-	**बेराबेरि**
1851. करम परबें लागे ओला खेतेक फुल	-	**बेलंदरि**
1852. बेस कइर के	-	**बेस सिरें**
1853. जे बिगाइड़ चुकल हे	-	**बेड़ाइल**
1854. जे पराधिन लाचार भइ गेल हे	-	**बेबस**
1855. जेकर पति मोइर गेल हइ	-	**बेवा**
1856. जेकराँ कोनो लुइर ढंग नाञ	-	**बेलुइराहा**
1857. जिनगि चलवेक बेपार	-	**बेबसाइ**
1858. पानी नाँभेक धारा	-	**बोह**
1859. धान पउधाक एगो बिमारि	-	**बोकि**
1860. दुइयो हाथ से समइठ के उठाइ लेवा	-	**बोकइच**
1861. पुरा मुठा भोरल सामान	-	**बोकटा**
1862. बिटा बाँधेक पोआँर डोरा	-	**बोइरनुड़ा**

1863. बच्ची सब के फराक - बोड़ि
1864. बेटा विहाक पहिला नेग - बोहराता
1865. बकरी का नर बच्चा - बोदा
1866. जंदे आना गोना हवे हे - बोहोन
1867. जकर से घार बाढ़ल जाहे - बोढ़नि
1868. जंगल में बास करे ओला - बोनतरिया
1869. धोती-साड़िक चउड़ाइ - बोहोर
1870. उलटि करेक परकिरिया - बोकले
1871. कोनो गाछेक छाल - बोकला
1872. जकर बिहा हवे हे (लड़का) - बोर
1873. जे हेराइ गेल हे - बोंड़ाइल

भ

1874. कोनो बात के अपसोच - भभना
1875. जे बात से धमकवेक बोध हवे हे - भभकि
1876. जे नेंगराइ के चले - भचके
1877. जखन गरम भेले डबके - भभके
1878. ककरो मनेक गुबार - भकभकि
1879. पकवल आलू बगइन के केचइट बनवल जाहे - भइरता
1880. आपन गुसटिक लोक - भयाद
1881. 'जुगनू' के खोरठा में कहल जाहे - भगजोगनि
1882. जे भार ढोवेक काम करे हे - भरिया
1883. जे भरथरि के गीत गाइ के भिख मांगे हे - भरथरिया
1884. कोनो जिनिस के जोरगर पहर - भरखर
1885. जे बेकार के बोलते रहे हे - भचरे, भटरे
1886. भात राँधेक घार - भँइड़सार
1887. जिलेबि रकम बेसन के पकवान - भभरा
1888. आपन बिहोति पति - भतार
1889. जकर पर ककरो कहल के कोनो असर नाञ हवे हे - भठियाइल

1890. एके बाटें रहलें खुइन चलाचल नाञ भेले पिरा हे - भरूवाइल
1891. जखन बहुत आलो हवे हे - भभक्काल
1892. जखन जमल राग बहरा हे - भड़ास
1893. जे हक्का-बक्का होइ जा हे - भकुवाइ
1894. जखन आवाज कइर के गिरे हे - भदरस सें
1895. जखन आवाज कोनो गिदर गिरे - भुद रूस सें
1896. डोरा बनवेक परकिरिया के - डोरा भाँगा
1897. जेटा मानुस के मुँह से बहरा हे - भाखा
1898. चले में गोड़ेक चिन्हा - भाँज
1899. जे जोघो छोइड़ बिना कहले चइल गेल हे - भागल
1900. आपन गुसटि ओला - भाइ-गोतिया, भयाद
1901. चाइर हाथेक डाँग जकर दुइओ बाटे भार, माँझे काँध हे- भारसिका
1902. जे आदमिक चरित्र नसाइ गेल हइ - भाँड़
1903. लोहारी भठिं हवा दिएक उपाइ - भाँथि
1904. सोंचे-विचारेक काम - भाभा-गुना
1905. जकर हिए सरधा भोरल हइ, ऊ भाव के - भाभ
1906. डोरा बाँटेक काम - भाँगा
1907. काम करेक लुइर - भास
1908. चेत के भाइग जावा - भिड़के
1909. मोटा तगड़ा लोक - भिसिंड
1910. खेतें पानी रोके ओला आइर - भिंड़
1911. अँइटा चाहें माटि से ऊँचा बनवल देवाल - भित
1912. जे मानुसेक बुइध पेटेक भितरे हे - भितर गुना
1913. घारे बारंडा के बाद के कोठरी - भितर
1914. जखन दोरोजा में दुइयो केवांइर सटाइ देल जाहे - भिड़काइ
1915. कोनो बसुत के घारेक भितरें राइख देवा - भितराइ
1916. जे अलग भइ गेल हे - भिनाइल
1917. जे घुइर-घाइर के थइक आइल हे - भुइल भटइक

1918. जखन ककरो बसुत के माँझे इपार-उपार छेद हइ जाहे- **भुरूक**
1919. ककरो हिएँ रागेक गुमाइर - **भुकभुकि**
1920. जे गरीब बेसहारा हे - **भुखा-दुखा**
1921. हिंदे-हुंदें अगल-बगल से निकला - **भुचभाच**
1922. जखन मोहाइ के कोनो चीज लइ लेल जाहे - **भुसलाइ के**
1923. खाएक सामान जे सुखा-सुखी बनवल गेल हे - **भुँजा**
1924. मनेक भितर के गुमाइर - **भुटभुटि**
1925. बाँसेक पातर-पातर खइरका जे भुँजा भुजेक काम आव हे - **भुजनाठि**
1926. जे धुरा गरदा से सराबोर भइ गेल हे - **भुसुर भुँड़**
1927. मन भितरेक गुबार - **भुड़-भुड़ि**
1928. धान के एकदम पातर भुंसा - **भुसकुड़ा**
1929. मनुस डेरवेक खड़जंतर - **भुत**
1930. जे लिखे पढ़े कुछ नाञ जाने हे - **भुचुंग काना**
1931. धानेक भुँसा आर दाइलेक चोकोर - **भुँसा-चोकर**
1932. जहाँ-तहाँ बाति बरा - **भुकुर-भाकर**
1933. जे बात इयाइद से निकइल गेल हे - **भुलल-बिसरल**
1934. बेकार चिज के जोगवल - **भुसा-भोरल**
1935. जे खाएल-पियल नाञ हे - **भुरवल**
1936. अँचार चाहे कोनो राखल चिजें पोरल फुंदि - **भुवा**
1937. कोड़ेक पहिले आलू, सकरकंद...के हाँथे कोइड़ लेवा - **भुरकाइ**
1938. जखन हियाँ-हुआँ कहीं-कहीं बाति बरे हे - **भुकभुकाइ**
1939. रागें ककरो बुराइ मने मन बिन साड़ा के कहे - **भुन-भुनाइ**
1940. जेटा एकदम झुठ लागइ - **भेख**
1941. कोनो सोलो अनियां काम खातिर जे मदइत माँगल जाहे- **भेजा**
1942. ककरो से मिले-जुलेक बात - **भेंटाभेंटि**
1943. बिना सोंचले-बुझले भेड़ि रकम झाँप देवा - **भेड़िया-धसान**
1944. आपन मरद के बोड़ भाइ - **भेंसुर**
1945. जे छेद सोझ नाञ हे - **भेंकाभुर**

1946. दुइओ हाथें पकइर छाती से छाती सटाइ मिला - **भेंट-अँकवाइर**
1947. आलू रोपेक कियारी के कहल जाहे - **भेली**
1948. आवाज कइर उड़े ओला एगो किड़ा - **भेंभरा**
1949. घेरान के काम आवे ओला एगो झाड़ी - **भेंडरि**
1950. बिना मजुरिक काम लिएक सामंति परथा - **भेंट बेगारि**
1951. जेकर रूप-रंग बिगइड़ गेल हइ - **भेस्ताइल**
1952. आलू भिंडि रोपेक नालि - **भेलि**
1953. जेटा कल्पना के चिज लागइ - **भेव**
1954. एगो जंगली फल - **भेलवा**
1955. बिमारी में फुइल के जकर चेहरा खराप भइ गेल हे - **भेभ साहा**
1956. जे मरद के चेहरा खराप भइ गेल हे - **भेकामुँहा**
1957. छगरि बोलेक साड़ा - **भेभाइ**
1958. जखन ककरो नकल कइर रगवल जाहे - **भेंसाइ**
1959. जखन रागे चेहरा फूइल जा हे - **भेभसाइ**
1960. देहि में खाना जमा हवेक जोघो - **भोटि**
1961. जहाँ बहुत बोड़ छेद बइन गेल हे - **भोभोर-फाँक**
1962. जे बहुत सुस्त हे - **भोंदा**
1963. सराथ में खावा - **भोज**
1964. बोड़ भाइ के बहोरिया - **भोजी**
1965. जेकर देहि बहुत मोटा हे - **भोंड़ा, भोंड़ी**
1966. जे कुछ बुझे-सुझे नाञ - **भोंड़**
1967. मूलवासिक रचल सिब बाबाक आदि परब - **भोगता**
1968. धुरा गुड़ा सें सराबोर - **भोंथाइल**
1969. छोट भाइ के बहोरिया - **भोवासिन**
1970. जकर में धार नाञ हे - **भोंथर**
1971. गाय के बोलेक साड़ा - **भोंकइर**
1972. जकर से देहिक ओजोन के बोध हवे हे - **भोर**
1973. गाढ़ा भोरेक परकिरिया - **भोंथाभोंरा**
1974. मुँड़े समान लइ घुइर-घुइर के बेंचा - **भोंरि**
1975. जरूरत सें जादा खाइ लेवा - **भोकोइस**

1976. जाड़ भगवे खातिर मड़नि में आइग राखा - **भोरसी**
1977. बोड़ भाइ के बहोरिया - **भोजाइ**
1978. जेटा कोड़े मे एकदम नरम हे - **भोसभोसाइ**

म

1979. जखन मानुस आनंदे इतरा हे - **मलके**
1980. जखन सुगंध पसरे हे - **महके**
1981. जखन मउज मसतिक परकिरिया चले हे - **मकमकि**
1982. जे माँछी मधु सिरजन कर-हि - **मधु माछि**
1983. जखन मन मोताबिक काम हवे हे - **मनमउजि**
1984. जहाँ सबकुछ बेरबाद हे - **मटियामेट**
1985. जे कामें खालि फाँकि-बाजी हे - **मटमटि**
1986. ताकइत देखवे ओला बदमास - **मरखँड**
1987. फागुने जखन मिठा जाड़ पड़े हे - **महुआजाड़**
1988. पाँच छो हाथ लंबा सहनाइ - **मँदनभेड़**
1989. झारखंडी मिल-मेइस एक दोसराक कामें जुमे-जुटेक - **मदइत**
1990. सिब बाबाक मँड़प जेटा मूलबासिक भगता परब करहथ- **मंडा**
1991. गछति राखेक काम - **मनउति**
1992. जखन सम्मान दिए खातिर नेतल-गोतल के रोकल जाहे- **मरजाद**
1993. जे काम आपन मनेक मोताबिक हे - **मनेक मतन**
1994. जेटा चाइरो बाटे सें बंद हे - **महर मुँद**
1995. जमीन दइ के जमीन लेवा - **मरजा बदल**
1996. हाँसी मजाक के परकिरीया - **मसकरा**
1997. सोब कुछ बेरबाद - **मटिया मिलान**
1998. जकर में महान गुन हे - **महत गुन**
1999. दहि मथेक अउजार - **मथानि**
2000. जहाँ जकर माइनता परसिध हे - **महातम**
2001. आफइत करे ओला - **मरखँडिया**
2002. जहाँ दारू बेचल जाहे - **मइदसार**

2003. दाँतेक तरें जे मास रहे हे - **मसकुर**
2004. साँइझ जखन माछि नाञ सुझे हे - **मइछ अंधार**
2005. मन भितर के गुमाइर - **मरमरि**
2006. जहाँ माथा खटवल जा हे - **मगज मारि**
2007. हेंगा जकर से माटिक ढेका फोरल जा हे - **मइर**
2008. जाड़े माघ महिनाक कँपकँपि - **मधडुँडरू**
2009. मधुमासें जखन पात-पल्हें रस चुवे हे - **मधुवाइल**
2010. जखन पानि बिनु पत-पल्हा सुखल हे - **मसुवाइल**
2011. सुगंधे भोरल बोन झार - **महमहाइल**
2012. जखन पानि बिनु पात-पाल्हा मुरझाइल हे - **मरूवाइल**
2013. बाभनि पाखंड के बोड़ नमुना - **मदोलि**
2014. मानुस जेटा आपन मन से गढ़ल हे - **मनगढ़वा**
2015. भैस के खोरठा में कहल जाहे - **महिस**
2016. जेटा माटिक रंगे भइ गेल हे - **मइलछाहा**
2017. जखन कामे नाकर-नुकुर हवे - **मटियाइ**
2018. जे भातेक माड़ सुइख गेल हे - **माड़सुटका**
2019. सुन्दर सुथर कोंचि ओला धोति - **मालकोंचा**
2020. आर्य गुलाक बनवल माटिक मुरूत - **माटिक माञ्**
2021. मानिन मानुस के कहल जाहे - **मानगर**
2022. जखन जबरजस्ती से काम हवे हे - **माइर-धइड़**
2023. जे सुस्त आर बेकुप हे - **माठा-मेढा**
2024. आदर परतिसठा देखवेक सबद - **मान--महत**
2025. सनमान दिएक सबद - **मान-मरजाद**
2026. जे मानिन बेकति हे - **माइन गइन**
2027. जेटा नेतल-गोतल के देल जा हे - **मान सनमान मानदान**
2028. जकर में रकम-रकम के गुन हइ - **मानी गुनि**
2029. मूलबासिक पारम्परिक बजना - **माँदर**
2030. जे बहुत धनि-मानि हे - **मातबर**

2031. चाँदे इंजोर के घेरा	-	**माँड़इर**
2032. काठेक भाँझ	-	**माझार**
2033. जेटा मनुस वादि हइ	-	**मानुसालि**
2034. खोरठा भासाक पहिल महाकाव्य	-	**माहराइ**
2035. ककरो ओतन-गोतन करा	-	**मिन-मेख**
2036. जेटा झुठ-मुठ लागइ	-	**मिछामिछि**
2037. जकर में बेस-भेद हानि लाभेक बात हे	-	**तितमिठ**
2038. एक नामेक दोस्ती	-	**मिता**
2039. जेटा बहुत पातर हे	-	**मिहिं**
2040. एकताक मंतर हे	-	**मिला-मेसा**
2041. ब्हुत नेहोर बिनती करेक बात	-	**मिमियाइ**
2042. आँइख से इसारा करा	-	**मिटकी मारा**
2043. जकर मइलकोति चल-हइ	-	**मिरा**
2044. राज, जकर आपन सासन हइ	-	**मुलुक**
2045. जे अपढ़ आर बोका हे	-	**मुरूख**
2046. पूस परब के खास पीठा	-	**मुँधी पिठा**
2047. जे धोखा दइ के भाइग जाहे	-	**मुँड़फुचका**
2048. पाँचो अँगरी बाँइध देलें	-	**मुक्का**
2049. मुँहे हाँसिक झलक आवा	-	**मुचकी हाँसी**
2050. नाखुस होवा	-	**मुँह चिमराइ**
2051. जे हुआँक मइधें परधान हे	-	**मुइख**
2052. छाँइट के काटेक काम	-	**मुरइछ**
2053. बेलाग बोले ओला	-	**मुँहफट**
2054. लोभी-लालची आदमी	-	**मुँहचट**
2055. बिजा रोपन का प्रारम्भ	-	**मुइठ**
2056. सुरू से अंत तक	-	**मुड़ा-गोड़ा**
2057. बहुत नाराजगी देखवा	-	**मुँड़गडि**
2058. परिवार के सोब आदमिक गनति	-	**मुड़ गनति**
2059. जेकर ऊपर गोटे घारे के भार रहे हे	-	**मुधाइन**

2060. जे सुइन के मुँड़ पिरा हे - **मुड़ मोरोन**
2061. कोनो कामे नाञ्-नाञ् करा - **मुड़धुना**
2062. खाइ-पिएक बंद करा - **मुँहे ठोना**
2063. पाँच फुट रकम पानी - **मुड़ छप छप**
2064. विश्वव्यापि हवेक सबद - **मुलुक जोरा**
2065. मुँडे दरद होवा - **मुँड़पिरी**
2066. जे बहुत बाचाल हे - **मुँहगर**
2067. सामना-सामनी होवा - **मुहाँमुहि**
2068. नाराज होइ के जावा - **मुँह चिमराइ**
2069. मुदइ-मुदालइ के समझाइ झगरा खतम करवा - **मेटमाट**
2070. कोनो समूह के सरदार - **मेठ**
2071. जे असकतिया आर बुरबक हे - **मेढ़ा**
2072. जकर में मिलल-जुलल सामान हे - **मेझर**
2073. जखन खासता चीजें नमी आइ जाहे - **मेहाइ**
2074. अधन मे चार दिएक परकिरिया - **मेराइ**
2075. जेटा बहुत पातर हे - **मेहीं**
2076. भंगठल चिज के साइर देवा - **मेरामइत**
2077. जे जोड़ि में से नर हे - **मेदा**
2078. बड़कि भिनसरिया में डांगर चेरवेक - **मेलान**
2079. जोतल खेते ढेंका फोरे खातिर जे पाटा देल जाहे - **मेइर**
2080. मानुस मइधें जनि जाइत - **मेहरारू**
2081. अधन में चार देल - **मेरवल**
2082. ककरो खुब गर-गरवल - **मेहनबल**
2083. जेटा बहुत पातर हइ - **मेहि**
2084. कोनो सुखल कुरकुर समान बतइस जावा - **मेहाइ**
2085. जखन छगरिक बच्चा साड़ा कर-ही - **मेमाइ**
2086. कइ चिज के मेझाइ - **मेसाइ-कोसाइ**
2087. बेटा छउवा जुआन भेले ओठेक ऊपर नाकेक हेठें चुइल आवे हे - **मोछ**

2088. जकर में प्रजनन सकति नाञ हे - **मोगा**
2089. जखन कोनो चिज के बतर बनल हइ - **मोका ताक**
2090. जखन कोनो खास के कहल पर काम भेल हे - **मोताबिक**
2091. मोरोन के नेग जोग रीत-रेवाज - **मोरखि**
2092. गोटे सराध परकिरिया - **मोरखि-बेरखि**
2093. निसा करेक सिलसिला - **मोद-भांग**
2094. कोनो सरगर के माया-दाया पर होवा - **मोहताज**
2095. खुसिक बेराक आनंद लेवा - **मोज मउज**
2096. किताप के सुरछा खातिर जिल्द - **मोलाट**
2097. खपरेल घार के परधान खुंटा - **मोहरि खुँटा**
2098. जे कोनो बात नाञ बुझे-समझे - **मोठ**
2099. खपरा जेटा चाइल के जोड़ में देल जाहे - **मोगरा**
2100. आगु बाटेक चेहरा - **मोहड़ा**
2101. मोटा काठेक टोना - **मोढ़ा**
2102. छाइन मे लागल रोलाक ढकना - **मोहबइत**
2103. महुआक रस - **मोद**
2104. धान सँचेक बड़का सरंजाम - **मोराइ**
2105. जइरें फुटल अनगइन झार - **मोवाइर**
2106. जेकर चेहरा रूपगर हइ - **मोहड़गर**
2107. सोनाक टाका - **मोहोर**
2108. सामान के गठरि - **मोटरि**
2109. बोनेक एगो सुन्दर चरँइ - **मोहकल**
2110. महुआ भाफाइ के चुवल दारू - **मोदरस**
2111. सामना-सामनी होवा - **मोहड़ा-मोहड़ि**
2112. चापलुसी से ठके खातिर तइयार कइर लेवा - **मोघाइ**
2113. दर-भाव करा - **मोलाइ**
2114. उचित दाम के तइ, तपाटा करा - **मोल मोलाइ**

र

2115. जे झारखंडी नाचें गीतें बजने तेज हे - **रसिक, रसइका**
2116. झाँइझ-रउद के कहल जाहे - **रउद-बसात**
2117. एक करधनि के बराबइर के ओजन - **रति**
2118. जे घटना से मानुस अनजान हे - **रइन**
2119. खुइन से लथपथ - **रकता रहइन**
2120. एगो काँटा ओला पोधा - **रंगइनि**
2121. मोहड़ाक नाक-नकसा - **रंगरूप**
2122. जे जिद सें बहुत देरी तइक काँदे हे - **रदना पसारा**
2123. जे कामें पारंगत हइ जा हे - **रपटाइ जावा**
2124. जेटा कोनो रंगे हे - **रंगिया**
2125. सगरखिन खुस रहे ओला - **रंगचंगिया**
2126. राधा-किसन के नाच - **रसधारि**
2127. नगद मजोरिक काम - **रोडका मजोरी**
2128. ककरो खोज मे जोघो के रोंदा - **रदबदवल**
2129. जे चिरोदिन खातिर बइस गेल हइ - **रसल-बसल**
2130. धान खेत जाबड़ करे में जे पाटाक दरकार हवे हे - **रकसा**
2131. कोनो बसुत के सार - **रसभुँसा**
2132. मउज-मस्तिक गुमाइर - **रसरसी**
2133. किसी चिज को बनाइए - **रचा-गर्हा**
2134. जेटा मजबुति से बाँधल गेल हइ - **रसरसाइ**
2135. डाइर काटले गिरेक पहिले - **रचरचाइ**
2136. जोर से पानी बइरसेक साड़ा - **रदरदाइ**
2137. ढेइर संगरवइटका टुटेक साड़ा - **रटपटाइ**
2138. हिंछाक विरोधेक काम हवेक गुमाइर - **राग**
2139. लुगा-लाता चमकवेक परकिरतिक फोर - **राँझा-रिंठा**
2140. धान पियर हवेक बिमारि - **राता**
2141. माटिक देवाल के परत - **रादा**
2142. लोहाक काम करे ओला - **राना**

2143. नोकसान से बँचवेक उपाइ - **राखाइर**
2144. दुखें कुचाइल लोक सहायता रूपें पावे हे - **राहाइ**
2145. जे नेग नियम पुरबा पुरूस के चलल हे - **रित-रेवाज**
2146. हुब हुलइर हुलास के उपज - **रिझ**
2147. जे बदमासी करे में लागल रहे हे - **रिंडा**
2148. जेटा खइलें जीव काटे ऊ कहल जाहे - **रिब रिबाइ**
2149. जोर-नार के उपज - **रिसता**
2150. जकराँ एकदम छोट-छोट टुकरा करल गेल हइ - **रिदि-रिदि**
2151. जे धन सुद लिए खातिर देल जा हइ - **रिन**
2152. गीत झुमइर बाज बजनाक उपज लागइ - **रिझवाइर**
2153. जेटा सकत बइन गेल हे - **रिठाइल**
2154. जे कामे माइत गेल हे - **रितुवाइल**
2155. जहाँ रिझ-रंग गमगमाइ गेल हे - **रिझें रांगल**
2156. सजाइ के बाद हवे हे - **रिहा**
2157. आफइत के गोहाइर - **रिरियाइ**
2158. कुलकुलि से मसुड़ा काटा हे - **रिबरिबाइ**
2159. जेटा मन के बेस लागे हे - **रूचि**
2160. जेटा बहुत छोट हे - **रूटु**
2161. जेटा एकदम सुइख गेल हे - **रूइन**
2162. जेटा बउना बइन गेल हे - **रूठना**
2163. जे बेटी छउवा घनें-घनें रूइस जाही - रूसनी
2164. छोट छेद करेक बढ़ियालि अउजार - **रूखनी**
2165. जकर आकार बहुत छोट हे - **रूनु**
2166. जे हमेसा रूइस जा हे - **रूस निहार**
2167. जे अनाज बहुत सुइख जाहे - **रूनाइ**
2168. गीत गावेक साड़ा - **रेघ**
2169. कागज उपर टानल डंडिल - **रेघा**
2170. जेटा पुरबा पुरूस से चलल आइल हे - **रेवाज**
2171. जे एकदम घुइल मिल गेल हइ - **रेठो**

2172. बेइमानी करेक नीति - **रेनामु**
2173. बिना आदर के बोला - **रेकाइर**
2174. कामें जखन इरसा हवे हे - **रेस**
2175. जकराँ आदर सूचक के बेबहार नाञ हवे हे - **रेकाइर**
2176. दोसर के ठेघन दइ काम नाञ करा - **रेसा-रेसी**
2177. रोक लगवेक परकिरिया - **रोक-टोक**
2178. जेटा एखन के तोरल हे - **रोऽका**
2179. जे एकदम बुरबक हे - **रोठा**
2180. धान रोपेक बेरा - **रोपा**
2181. जे खेति बिना पटान के उपजे हे - **रोंदा**
2182. जे जनि धान रोपेक करऽ ही - **रोपनि**
2183. जकर कहल पर लोक चले हे - **रोबदाब**
2184. जेटा नाञ हवे खातिर बारन करल गेल हइ - **रोकथाम**
2185. जे काम के मजोरि संगइ देल जाहे - **रोडका मजोरि**
2186. खपराक घारे जकर ऊपर बाँस ठाठल जा हे - **रोला**
2187. जे साड़ा टा ककरो बेस नाञ लागे - **रोढ़ बोलि**
2188. गाते जनमल पातर-पातर चुइल - **रोआँ**
2189. जकराँ कोनो लंबा बेमारि हइ - **रोगलाहा**
2190. माछेक मइधे जे सोवले बेस कहल जाहे - **रोहु**

ल

2191. जे नेंघा निपटकाना बजरबट्ठ हे - **लड़बक**
2192. जकर बाइढ़ में बहुत तेजि हे - **लकालक**
2193. कामेक मुदइ लागइ रकम रकम के - **लटका**
2194. लुगे लटके ओला कांटा - **लटलटि**
2195. गोड़ बझाइ के गिरवेक फंदि - **लंगि**
2196. ऊँचा गाछ से फल तोरे खातिर अकसि बाँधल बाँस - **लघि**
2197. जे बसुत एक दोसरा में लटइक जा हे - **लटलट**
2198. जे रस तियन में लटकल रहे हे - **लटपट**

2199. दुबर-पातर भइ गेल हे - **लइट**
2200. बाँसेक मुँड़ि से बनल घुरवेक गोल आकार - **लट्टू**
2201. जहाँ रोज झंझट पटपट पसरे हे - **लउवालाठि**
2202. जकर हाथे-गोडें चेठा देखा हे - **लड़चड़**
2203. फेंके खातिर हुकुम देवा - **लबद**
2204. जकर वियाइ के समइ नइजकाइ गेल हे - **लदफद**
2205. जकर में लाल रंग के झलक हे - **ललुहन**
2206. जे करछुल बहुत बोड़ हे - **लबना**
2207. जकराँ बहुत लाज लागे हे - **लजोना**
2208. जे जनि बहुत अदरा ही - **लहसनि**
2209. जे जिनिस बहुत लचिला हे - **लपलप**
2210. जेटा चाँड़ें-चाड़ें लचके हे - **लपालप**
2211. जे काम जलदि-जलदि हवे हे - **लबलब**
2212. जे बसुत बहुत लचिला हे - **लकलकिया**
2213. जे गाय दूध देहि - **लघइर**
2214. जे कोनो कामे अटइक रहे हे - **लसइर**
2215. जकर से बहुते पिरा हवे हे - **लहइर**
2216. जेटा बरबाद भइ गेल हे - **लटवालाहइर**
2217. जेटा कोनो रकम सें भेल हे - **लइर-धइर**
2218. हेराइ गेल हे मूलबासिक - **लइर-जइर**
2219. मधुमासें सोन सरइ गाछ जाहथ फुलें - **लझइर-पझइर**
2220. रमझिगाक रस हवे हे - **लरलर**
2221. जेटा देखा-देखि करल जाहे - **लभर-चभर**
2222. जे दुबर-पातर भइ गेल हैं - **लटल**
2223. जे मानुस बहुत लजा हे - **लज कोटरा**
2224. जे देखा देखी बिना कामें जाइले सँपरे हे - **लहसल**
2225. जेटा खुइन से लथपथ हे - **लहुआ लोखर**
2226. बिना मतलब के खुब बकते रहा - **लबर-लबर**
2227. जहाँ कोनो साफ सफाइ नाञ हे - **लसर-पसर**

2228. देखादेखि कोनो काम करा - लहर चहर
2229. डांगर के पेछु गोड़ेक माइर - लथाइर
2230. जे लाज से भोरल हे - लज कोटरा
2231. बोली सें लोक के हँसबे ओला - लबार
2232. जे कहुँ अटइक गेल हे - लसकल
2233. जे लालच में पड़ल हे - ललचल
2234. जे मुरझाइ गेल हइ - लरूवाइल
2235. जे माटि गिला हे - लसलस
2236. जे बकति बहुत लोभी हे - ललचाहा
2237. जे लगातार बहुत बोले हे - लबलबाइ
2238. लाइत सें मारेक काम - लतियाइ
2239. जकर सोभाभ में लाज हइ - लाजुक
2240. जे एकदम नजिक आइ गेल हे - लागालागि
2241. लंबा बास जकर फिदवे चोगि हे - लाघा
2242. जेटा लाज के बिसइ लागइ - लाज-लिहाज
2243. झगरा से जोरनार - लाइलाठा
2244. जकर हाथ गोड़े लड़चड़ नाइ हइ - लारूपातु
2245. कोनो चिज के ज़इर जिनिस - लादा-पेंदा
2246. पेटे जे 36 गज अँतरी हे - लादि
2247. फँसवेक सरंजाम - लागान-बाझान
2248. सुराग चाहे पृष्ठभूमि के कहल जाहे - लाप धाप
2249. तर-ऊपर करेक काम - लाइर देवा
2250. एक दोसरा सें जोरा-जोरि - लाताइर
2251. लत-पत में लागे ओला किड़ा - लाहि
2252. लोभ-लालच के परबल भाव - लाल्हाइ
2253. जे बहुत दुबर-पातर हे - लिकिपिकि
2254. अपमान आर उपेछाक परतिक - लिलिछिछि
2255. जे दोसर के जिनिस देइख-देइख कुरचे - लिलकें
2256. जे दुबर-पातर आर निमर हे - लिटिपिटि

2257. जहाँ विवाद के मेटाइ देल गेल हइ - **लिपा-पोता**
2258. चरँइ चिनगिन भगवेक साड़ा - **लिलिलोहा**
2259. पाछु से कुकुर छोइड़ देवा - **लिलियाइ**
2260. लकड़ी जकर एक बाटे आइग हदके हे - **लुआठि**
2261. कंठेक एगो मासेक खुँटि - **लुड़लुड़ि**
2262. जकर मे कुछ करेक गियान हे - **लुइर**
2263. जे सोब काम रसे-रसे कर-ही - **लुसरि**
2264. जकर से भलगर मनोरंजन हवे हे - **लुझड़लिला**
2265. तरहाथेक पाछुक जोड़ - **लुल्हुवा**
2266. जे चापलुसी में आगे-पाछू करे हे - **लुड़ फुड़ाइ**
2267. सुध-असुध के मिला-मिसा - **लेट-घेट**
2268. ककरो सुता समटे ले कहा - **लेटपेट, लेपट**
2269. जे बेढंगा आर लापरवाह हे - **लेभरा लुझड़**
2270. जे लेगंराइ के चले हे - **लेढ़ा**
2271. जे बहुत पियारा बइन चुकल हे - **लेठो**
2272. आम पारेक टाल्हा - **लेबदा**
2273. घार-देवाल के टुटल-फुटल के सारा - **लेसा-मुदा**
2274. कोनो कामें बेकार के संगी - **लुड़ फुड़का**
2275. जकर से लिया-दिया के बात चले हे - **लेन देन**
2276. जे बुड़बक गंवार हे - **लेपा**
2277. बाँस-बाता से बाँधल घोरान - **लेवाइर**
2278. जेटा गिला भइ गेल हइ - **लेहर**
2279. जे संगी रकम बइन गेल हे - **लेठाइल**
2280. कोनो काम में देरी करे ओला - **लेझराहा**
2281. जकर चेहरा बुरबक रकम हइ - **लेकामुहाँ**
2282. जकर में बुइध विवेक के अभाव हइ - **लेल्हा**
2283. जे सबद में आदर नात्र हे - **लेकाइर**
2284. ककरो संग जोगा जोग - **लेताइर**
2285. कोनो रंग के थेबराइ देवा - **लेसाइर**

2286. जखन डांगर पइछला गोड़ से मारे हे - **लाथाइर**
2287. गाय के बच्चा - **लेरू**
2288. जेटा लेपइट देल गेल हइ - **लेपटल**
2289. धानेक जे विहिन कादो खेतें पारल जाहे - **लेवा**
2290. जे बावाँ हाथ से काम करे हे - **लेटराहा**
2291. जकर में गुड़िक सुता लेपटा हे - **लेटाइ**
2292. ओसानि से जंदे मन तंदे घुइर जावा - **लेरबेराइ**
2293. ई धरतिक विवेकसिल जानवर - **लोक**
2294. जेटा देखेले लिएक मन करे हे - **लोभ**
2295. हाथे उठे लाएक गोल पथल - **लोढ़ा**
2296. हरदी-मसाला पिसेक पथल - **लोर्ही-पाटि**
2297. सानल माटिक बोड़ चोता - **'लोधा**
2298. मानुसेक गोंठ - **लोकजन**
2299. जोरा-जोरी कर निहार - **लेतर वइया**
2300. जे पाछुँ-पाछुँ चइल के पिछा करे - **लोइत-लोइत**
2301. एगो चमके ओला बिसाहा किड़ा - **लोहटन**
2302. दुइयो तरहाथ से बनल अंजुरि - **लोप**
2303. कटनिक बाद छुटल-छाटल अनाज के खोजा - **लोरहा**
2304. कांचा काठेक पातर रोला - **लोदरा**
2305. संगे-संगे देखले आइल - **लोथल**
2306. जे देखलें सुनलें लिएक मन करे - **लोलस**
2307. जकराँ उपरे उपर हवा में पकइर ले - **लोकइ**
2308. जकर चुपें-चुपें पिछा करे हे - **लोतियाइ**
2309. ढिल कइर देवा - **लोझराइ**
2310. कोनो गिल बसुत के गिरवेक लुइर - **लोदलोदाइ**

स

2311. जे कामे सिहरन बुझा हे - **सकसकी**
2312. जेटा बहुत ओसान हे - **सहज**
2313. जे देइख के डरे धाइर हइ जा हे - **सपटे**
2314. भुएँ पसाइर के बिछवेक बोड़ विछोना - **सतरंजि**
2315. जलदि मे काम करेक - **सरपट**
2316. जेटा एकदम सटाइ-सटाइ के हे - **सटमसट**
2317. जे रसता सगर गाड़ि चलल सें बनल हइ - **सगरँठ**
2318. जे कामे बहुत सुविधा हे - **सरजुइत**
2319. जेटा बहुत मजगुत हे - **सकत**
2320. जेटा बहुत उपजाऊ हे - **सरगत**
2321. जहाँक वाताबरन साँत हे - **सलसँत**
2322. बिहा में कनियाँइ बाटेक लोकजन - **सरियाति**
2323. रहन-सहन आचार-विचार - **संसकिरति**
2324. जकर में खेमोता हइ - **समरथ**
2325. मोरखी-बेरखिक 10-12 दिनेक रित-रेवाज - **सराध**
2326. कोनो हेराइल जिनिस के आता-पाता - **संधान**
2327. समाजे ककरो सरधा-आदर देवा - **सनमान**
2328. हड़पा काल से चलल मूल बासिक धरम - **सरना**
2329. झारखंड के गइर आदिबासी - **सदान**
2330. कोनो बोड़ काम करेक उता-सुता - **सरंजाम**
2331. जकर गातेक बाँधन बहुत सुंदर सुथर हे - **सलसलिया**
2332. जे बहुत चाँड़े-चाँड़े चले हे - **सरसर**
2333. समधिक घार-दुआर - **समधिअर**
2334. जे जोघो एकदम बराबइर हइ - **सइर**
2335. जे तनि घसइक गेल हे - **ससइर**
2336. कोनो बात के माइन लेवा - **सकाइर**
2337. कोनो चिज के सेवा सुसार - **सम्हार**
2338. जखन मने सानति आइ जा हे - **सबुर**

2339. बेटा-बेटिक ससुर - **समधिसोर**
2340. खाइल-पियल के जुठ-कुँठ - **सँखरि**
2341. जेटा हमेसा हवे हे - **सगरघरि**
2342. गर्भबति बेटी खातिर नहइरा से आइल पकवान - **सधोरि**
2343. समय के मोताबिक - **समइ सिरें**
2344. कोनो चिज जेटा जमा करल गेल हइ - **संगाठल**
2345. कोनो चिज जेटा सजाइ के राखल गेल हइ - **सँइतल**
2346. दस पइलाक नाप - **सलि**
2347. जेटा सो के हिसाबें चले हे - **सत करा**
2348. सकसकि से भोरल - **सकपकाइल**
2349. सात घाटेक एगो गिदरालि खेल - **सत घरवा**
2350. बुढि खइटला - **सततरवा**
2351. जे बहुत बरियार हे - **सरकस सरगर**
2352. सोब कुछ बेरबाद होइ जाबा - **सतियानास**
2353. फाँस जेकरा टानले लाइग जाहे - **सरगफाँसि**
2354. तनि बाते जकराँ राग लाइग जाहे - **सनकाहा**
2355. जे हिआब धइर हिबडे - **समसे**
2356. सरहुल में जे गाछ के पुजल जाहे - **सरइ**
2357. गरू गाड़िक चाका में तेल देवा - **सनाइ**
2358. दहेक पानी जखन सुखाइ देल जाहे - **सटकाइ**
2359. जे काम चाड़े-चाड़े हवे हे - **सड़सड़ाइ**
2360. जे कामे चाँड़े-चाँड़े हवे हे - **सरसराइ**
2361. साइठ बछरे मानुस सुस्त हइ जाहे - **सठियाइ**
2362. कमल से छोट बाँधे फुटे ओला फुल - **सालुक**
2363. बेगइत, मरद, जुआन रकम सबद लागइ - **सावाँग**
2364. बोनेक एक खुब नरम काठ - **सालगा**
2365. जकर चोड़ाइ बहुत कम हइ - **साँकट**
2366. हारें लागे ओला पाँच-छो हाथ के डाँडि - **साँइढ़**
2367. पहुना अइलें परिछन - **सागत**

2368. जेटा गोटा-गोटि हे - **साबुत**
2369. जेटा काने सुनल जाहे - **साड़ा**
2370. जकर में कोनो रंग नाञ हे - **सादा**
2371. जकर में कोनो बाँधन नाञ हे - **साधिन**
2372. जाहाँ कोनो साड़ा सबद नाञ हे - **सानसुन**
2373. जे बहुत तकलिफ देहे - **साले**
2374. पोआँर पानी महुआ खरि से बनल डाँगर के खावा - **सानि**
2375. जकर से दुख के बोध हवे हे - **साँताप**
2376. ढेकिक धुसइर में लागे ओला लोहा - **सामि**
2377. भँइस के मादा छउवा - **साँढ़ारू**
2378. खाटिक पउवा पाटि छोइल छाइल बनावा - **साइल**
2379. सोब काम जने-तने - **साढ़े बाइस**
2380. जखन आराम करल जा हे - **साँथाइ**
2381. जकर ऊपर छाइन के ओजोन रहे हे - **साँगा**
2382. जे कामे कोनो रकम के ताम झाम नाञ हे - **सादा माठा**
2383. साइठ दिन में उपजे ओला धान - **साठि**
2384. पंच-पंचाहित जे सजाइ टा ककरो दे हे - **सासति**
2385. समान राखेक फाँस जेटा छाँइन सें टाँगल जाहे - **सिका**
2386. गरू खेदे ओला पातर पइना - **सिटका**
2387. पुरान सोलह पइसाक चइर अन्नी - **सिकी**
2388. क..ख सिखेक पथल के चापट चोखुटा - **सिलट**
2389. हरदी-मसाला पिसेक चापट पत्थल - **सिल पाटी**
2390. डरे होस-हवास खोवल अबस्था - **सिटीपिटी**
2391. जकर सें सोब रस निकाइल देल गेल हइ - **सिठा**
2392. जकर सें सिमाना जानल जाहे - **सिआँड़ी**
2393. रातीं जे पानीक सवज धरतीं देखल जाहे - **सित**
2394. जे लिखे-पढ़े जाने हे - **सिखित**
2395. मुडे कँकरी से जे रेघा बने हे - **सिथा**
2396. सुते में जे मुड़तइर लेल जाहे - **सिथान**
2397. जकराँ लगाइ गरू गाड़ी डँड़वल जाहे - **सिरपा**

2398. जे सिखर छेतर के मानुस लागे - सिखरिया
2399. वहंगी जकर सें दुइयो बाटे भार टांगल जाहे - सिकाभार
2400. घेंचाक गहना - सिकरी
2401. मुँहें सिटी बजवेक हिकमइत - सिसकारी
2402. केवाँइर में ताला लागे ओला सिकड़ - सिकली
2403. तेल चामें होवे ओला एगो दाग - सिहली
2404. जाड़ेक बोड़ कँपकँपी - सिलसिली
2405. एकदम छोट छउवा के कहल जाहे - सिसु
2406. कुछ नाञ् पइले हतास हवेक सवद - सिठाइ
2407. जखन दाँतेक जइर सिहरे हे - सिब सिबाइ
2408. दुबर-पातर होइ जावा - सिट सिटाइ
2409. जे गाँइठ डोरा टानलें खुइज जाहे - सुरका
2410 एगो जनिजातिक रोग - सुटका
2411. जेखन काम सुखद भाव सें करल जाहे - सुरूमुखें
2412. परते भादर रइसका हाथ-गोड़ेक तालें देखा हे करमाक- सुगबुगि
2413. विछाक मुँड़े रहे हे भोंसेक - सुंघा
2414. तेल पावे खातिर एगो बेस खेति - सुरगुंजा
2415. कोनो बेस कामेक आगु करल जाहे - सुझाबुझा
2416. जकर हिया में छल-छइब नाञ हइ - सुध-सुपट
2417. जकर में कोनो रसमूसा नाञ पावल जाहे - सुखल सोंइठ
2418. जकर में खालि हित के बात हइ - सुबधान
2419. जखन कोनो अंगे चेतना नाञ रहे हे - सुन
2420. गोड़ेक चउड़ा भाग टा - सुपती गोड़
2421. जे बाजा कोनो खेल कूद में बजवल जाहे - सुड़सुड़ी
2422. बिना बुनले खेतें उगे ओला साग - सुसनि
2423. जे हवा मे बहुत कनकनि हे - सुलसुलिया
2424. माञ-बापेक रिन सोधे खातिर उपाय हे ओखनिक - सुसार
2425. बोका एम.पी संसदें बइस-हथ - सुगुम बरें
2426. जे मंहगिक दुखें गइज-गेल हे - सुखल टाटाइल

2427. जे कुछ बेस करे खातिर तात्र् भेल हे - **सुरियाइल**
2428. जेटा समाजे अपने आप हइ जा हे - **सुगुम वासि**
2429. जकर मुँह सुअर जइसन हइ - **सुअर मुहाँ**
2430. हड़पा काल से मूलबासिक एगो परब - **सुरजाहि**
2431. धान उड़इले जे बेथा टा नाक के हव-हइ - **सुरसुराइ**
2432. पूर्से हावाक कनकनि जेटा करे हे - **सुलसुलाइ**
2433. पुरान चारे पोका (कीड़ा) होवा - **सुर्ही**
2434. जे दुखेक दिन संगी-सहिया दे हथ - **सेंक**
2435. दछिने खोरठा छेतर के सिऑंड़ी - **सेवाँति**
2436. बहुत भुखें मेलें मुँह निकले ओला सुखल थुक - **सेंप**
2437. ढेइर गीत गइले ढोढ़ाक हालइत - **सेंसइर**
2438. जखन कोनो तातल जिनिस जुड़ाइ लागे हे - **सेराइ**
2439. जेटा मानुस हियाक हिंछा - **सोक**
2440. जमीन के लंबा पातर भाग - **सोंघा**
2441. जे एकदम सोझ हे - **सोहिला**
2442. जे मानुस छल-छइब नात्र जाने हे - **सोझ-सपाट**
2443. लपलप करे ओला पातर पइना - **सोंटा**
2444. पोंचल कुदरूम के सुखनल डंटि - **सोनखाढ़ि**
2445. जे किताप-पोथि से अलग हे - **सोढ़-मोढ़**
2446. लालचें जखन ककरो ढेइर छूट देल जा हे - **सोसरोंग**
2447. जहाँ से हमेसा पानी वोहे हे - **सोत**
2448. कोनो चिज खइले जीभ-जेटा बतवे हे - **सोवाद**
2449. बेंचा-किना करेक काम - **सोदा**
2450. जकर सोवाद में माटिक महक हे - **सोंध**
2451. जे सुन्दर सुखद जोघो सुमन-सुउरभ से हरियर हइ - **सोहान**
2452. धान खेत के दोसरा जोत - **सोभरनि**
2453. एगो गिदरालि खेल - **सोना थुपु**
2454. जे सोवसे बेसी तेंताल हे - **सोबले बिस**
2455. मूल बासिक हड़पा कालिन परब - **सोहराइ**

ह

2456. जेटा ई धरती में जीए ओला सोब परानि के बराबर हे- हक
2457. जकर ओजन बहुत कम हइ - हलुक
2458. रसता खराप भेले इटा जरूर लागे हे - हचका
2459. जकर से हाड़ टुटे हे - हड़टुटा
2460. जेटा लोक आवइते मतर पइदा हइ जाहे - हटहटि
2461. ते तबाह होइ के थइक चुकल हे - हरनठ
2462. जेटा बिना मतलब के भेल हे - हरसठे
2463. जेटा अचानक आइल हे - हरपट
2464. जे खेमोताक संग गरइज उठल हे - हकंदल
2465. जे बोल के साथ सामने आइल हे - हबड़ल
2466. जे हिमइत के साथ हँकवल हे - हकड़ल
2467. जे बहुत जलदी में हे - हड़बड़
2468. जे डरे भागल हे - हड़कल
2469. बेसुइध होइ जावा के कहल जाहे - हाताँग-पाताँक
2470. जहाँ आइग लहकल हे - हदकल
2471. जकर खुसि टा मुँहे देखाइल हे - हँसवल
2472. जे डाकल हे - हँकवल
2473. जे भगवल हे - हटवल
2474. जे हदइस चुकल हे - हदियाइल
2475. जेटा एक-ब-एक भइ गेल हे - हटाइत
2476. जकर में हुआँक बाताबरन के बोध हे - हवा-बसात
2477. अइसन बेकति जकर भात नाञ जुटे हे - हइभाता
2478. जहाँ बहुत पानी ऊपर से गिरे हे - हदहद
2479. थइक के जकर हालइत बिगइड़ गेल हे - हलुवा हारान
2480. जेटा हारेक कामे आनल जाहे - हराठि
2481. जे रागे हरहराइ के बजइक रहल हे - हनहनि
2482. जे गइर कानुनि हपुवाइ लेल हे - हड़पल
2483. ढेइर पानी आवेक किरिया - हबहबाइ

2484. जे बोलेक कामे देहि टुइट जाहे - **हड़तोखा काम**
2485. जे बोलेक कामे देहि टुइट जाहे - **हड़भंगवा**
2486. जे बोलेक कामे देहि टुइट जाहे - **हड्टुटा**
2487. खुब चाड़े-चाड़े बोले ओला - **हरहरिया**
2488. बहुत जलदि काम करा - **हकर-बकर**
2489. साँस फुले लागल - **हफँरल**
2490. जे निरास भइ चुकल हे - **हदरल**
2491. जे डाकल गेल हे - **हँकवल**
2492. जे ककरो हतिया करल हे - **हतियार**
2493. जे घारे खाना बने हे - **हँइड़सार**
2494. जेटा पिअर रंग के हे - **हरदियार**
2495. हाड़ जोरेक बाँधन - **हड़जोर**
2496. जहाँ झंझट आर गोहाइर हे - **हल्ला-हुजरा**
2497. हड़पेक परकिरिया - **हँसते-बोटरे**
2498. जेटा हप्ते-हप्ते हवे हे - **हप्तवारि**
2499. नेहोर बिनतिक परकिरिया - **हथजोरि**
2500. जे रगड़ल हे - **हँसतल**
2501. जे दाबि धरल हे - **हँकरल**
2502. जे निराश भेल हे - **हहरल**
2503. बहुत खुस भेल हे - **हरसल**
2504. जे पुरा लंबा-चउड़ा हे - **हइल-फइल**
2505. जे मुँहेक भोरें गिरल हे - **हब्वाइल**
2506. जे एकदम निरास हे - **हदियाइल**
2507. जे सोंचे बुझे के काबिल नाञ् हे - **हलदिल**
2508. घेचे पिंधेक एगो मोटा गहना - **हँसलि**
2509. करिल कुचा के सुखवल रूप - **हँढुआ**
2510. बिहा में कनियाइ घार दिए खातिर मिठाइ के खाँचा - **हँठुआ**
2511. डर से उपजल भाव - **हदस**
2512. जे हार जोते हे - **हरवाहा**

2513. बहुत जिद करे आलि जनि	-	**हरहटाहि**
2514. जे कोनो फोर दाँत से काइट खा हे	-	**हबकइ**
2515. पियासल डाँगर के पानी बिनु	-	**हकहकाइ**
2516. ऊपर से बहुत पानी गिरेक साड़ा	-	**हदहदाइ**
2517. जबरजस बइरसा हवेक साड़ा	-	**हरहराइ**
2518. ऊ भूख जेटा बाद संतोस नाञ हवे हे	-	**हाहुत**
2519. जखन लड़ाइ खातिर हँकवल हाहे	-	**हाँका-हाँकी**
2520. धुर से ककरो बोलावेक डाक	-	**हाँक**
2521. जकर बहुत कम ओजन हे	-	**हालुक**
2522. जे कोनो जिनिस देइख-सुइन गुडुम भंइ गेल हे	-	**हाइकाठ**
2523. खुसी खातिर ठिठोली करा	-	**हाँसिठाठा**
2524. टेहुनाक बोले खड़ा होवा	-	**हाठुगोड़ा**
2525. जहाँ सजाइ देल बेकति के राखल जाहे	-	**हाजइत**
2526. जे जमिने बेड़ देल गेल हइ	-	**हाता**
2527. जे सबद से 'गाँव' के बोध हव-हइ	-	**हातु**
2528. जे दोइड़ के थइक गेल हे	-	**हारान**
2529. 'अनुसासन' के खोरठें कहल जाहे	-	**हाँक-दाब**
2530. जखन ककरो बात सिकार करल जाहइ	-	**हामि**
2531. कोनो जोघोक खइर-खबइर	-	**हाल-बनार**
2532. हार जोतेक काम बंद कर	-	**हार कँधार**
2533. जे थइक के निरास भइ गेल हइ	-	**हाइनिसार**
2534. हाइ-हाइ के बेबस्था	-	**हाहाइर**
2535. जे दुःख सहइत-सहइत थइक गेल हे	-	**हाताइल**
2536. कामे टेहुना नोखराइ जावा	-	**हाँठुक छाल**
2537. मुखे पियासे मुँह फारा	-	**हाहि**
2538. जे बात बोले में अटके हे	-	**हाकलाइ**
2539. जे बिदइक के चले हे	-	**हाथ-मलकाइ**
2540. जकर खावा घेचें अटइक गेल हे	-	**हिटइक**
2541. जेटा आदइत बइन चुकल हे	-	**हिंसका**

2542. काम करेक लुइर - **हिकमइत**
2543. जेकर से जोरनार हइ - **हितनाता**
2544. कोनो काम के चेत - **हिमसिम**
2545. मनेक मतन संगि-सहिया - **हित-मितर**
2546. जे सुध-सुपट बेकति हे - **हिया-खलास**
2547. जकर में नोकसान करेक बात हइ - **हिंगसा**
2548. जकर सें पानी गंदा हइ जाहे - **हिड़ाइ**
2549. आनंद के भाव जागा - **हुचुक**
2550. भितर से केवाँर लगवेक काठेक पटिया - **हुड़का**
2551. डांग के आग से कुइच के मारा - **हुरकुचा**
2552. जकर में कोनो सोच समझ नाञ - **हुरमुठ**
2553. परिसान करेक नीति - **हुरूहुतु**
2554. मान इजइत करेक विधि - **हुंका-पानि**
2555. पठरू ढाँपेक खाँचा - **हुड़पि**
2556. जे पानि में डुबे के करीब हइ - **हुबुडुबु**
2557. एगो डेरडेरान पाँखि जे रातिं साड़ा करे हे - **हुड़गुम**
2558. खुब चहल-पहल ओला जोघो - **हुइलमलिया**
2559. जेटा खुब आनंद दिए ओला हइ - **हुइलगर**
2560. कहनी सुनेक साछि देते रहा - **हुंकारि**
2561. सगर घरी हुकुम बजवे ओला हे - **हुकमाकारि**
2562. जहाँ कोनो घटनाक गुइल गोहाइर हे - **हुइल माइल**
2563. जहाँ हक खातिर उलगुलान हे - **हुलुस्थुल**
2564. जहाँ चाइरो बार्टे उमंग हे - **हुलहुलि**
2565. हुजइत खड़ा करा - **हुरसा**
2566. जे काम बिना सोंचल करल गेल हइ - **हुड़मुड़ाइ**
2567. जे बिना कारन के रूसते रहे हे - **हुरसाहा**
2568. जखन आदमिक हिसाबें कुधा लगवल जाहे - **हुँदा**
2569. जे कोर्हि आर निकमियां हे - **हेंजामारा**
2570. जे देखते रहे हे - **हेरल**

2571. जकर में चाइरो बाटे सें लापरवाहि हे - हेला
2572. एगो पेंदल नाम जकर सें गिदर डेरवल जा हथ - होटंगा
2573. बोनेक जानवर चाहे चरँइ चुनगुन भगवेक साड़ा - होहाइर
2574. एगो साँपेक जाइत - होरहोरवा
2575. सुनल सानल पेंदल गप - होहि

◈ ◈ ◈

एक सबद के दोहरी तेहरी अरथ्

"मुँड़ेक चुइल पाइक गेल, बितइलों कते बछर
खोरठाक खोजें लागल हों, राइत दिन सगर
आपुस परें सोभेक घरें खोरठाक समुंदर
एक सबद के ढेरी अरथ, खोजल श्याम सुन्दर।"

खोरठें सबद अलिंगा हे, अनगइन हे, अगाध हे, अफरात हे, अनरी हें, अनठेहरी हे, अमेला हे, अनइत हे, अछइत हे, अकूत हे, कचर-कूट हे, अछल-गदल हे, अथाह हे, ठसम ठस हे, कुधाक कुधा हे, गादाक गादा हे, कचाइंध हे, बियापक हे, गजगजा हे, देदार हे, अंध-पथार हे, ओउरी-पथारी हें, आधें-मुंधे हे, बावें-दहिने हे। खोरठाक भाँडार के आड़ा-गोड़ा नाञ् हे। गनति के आता-पाता नाञ् हे। मगुर सबद रकम-रकम के हे। बरन-बरन के हे। निमन-चिकन हे। मनेक मतन हे। रंग-बिरंग हे, रंग चंगिया हे। हियाँ बाइस हजार गाँवे रसल-बसल हे। खोरठा बरियार हे। खोजे पारलें एके रंग के सबद हजार हे। खोरठें सबद के सोबले बोड़ भाँडार हे।

मगुर सोब सबद छिरियाइल हे, छितराइल हे, चाँताइल हे, चिपाइल हे, अरगुझाइल हे, अझबझाइल हे, कुछ कालेक खोहें नुकाइल हे, बेसी सबद गरीब-गुरबा, गरू-चरवा, छगइर-चरवा, निपट-काना बुढ़ा-बुढ़िक हिएँ गुल-मुटाइल ही। कते मोर-निहार के संगे-संगे हेराइल ही। कुछ बेंड़ाइल ही। कुछ बँउड़ाइल ही। कते सतियानासेक गढ़े सुखाइल-टेटाइल ही। कते लाजेक भावें भकुवाइल ही। कुछ सबद अन-चिन्हार हे। कुछ के बिचार सें ई बेकार हे, सँकार हे, घाँस-पोआँर हे। कते सबद बेरबाद हे। फइर भी खोरठाक सोबले बेसी मरजाद हे। एहे सबद सें हजारो साहित हे। हजारो कहनी, कथा, गाथा आर लाखो गीत-रीत हे। आहना, पटतइर, बुझवल निसचित हे। हजारो बी.ए., एम.ए., पी-एच.डी., डिलिट जइसन सिखित हथ। खोरठा सबद जरूर पोहपित हे, मगुर लाखों सबद छपित हे।

सइले भासा देखे में नरम नीमर हे। जरजर हे, दबगर हे, दर-दर हे, टुअर-टापर हे, दुबर पातर हे। दीन-हीन हे, छितिछिन हे। छिनभिन हे।

सोब समरिध भासा रकम खोरठा में भी बहुत सबद देखे-सुने आर लिखे में

एक रकम हे मगुर बेबहार के मोताबिक एके सबद के दोहरी-तेहरी अरथ हइ जाहे। अइसन सबद के एक रंगिया सबद भी कहल जाहे।

जैसे -

छाँट -	ओकाइ	- ढेमना खिचरी खाइ के सोब छाँट कइर देलइ।
छाँट -	अलग करना	- ढेमना, गोल-गोल पथल गुला के एक बाँटे छाँट।
छाँट -	चावल बनाना	- ढेमना, पोहनाक चार के तीन बइर छाँट।
छाँट -	एक तरह का	- ढेमनाक तीनों बेटा एक छाँट के हथुन।
छाँट -	काटना	- ई पइना के छ इंच छाँट।
छाँट -	बाल काटना	- ढेमनाक चुइल के छाँट।
छाँट -	गुण	- ढेमनाक चुइल बम्बइया छाँट के हवेक चाही।

एक सबद के दोहरी तेहरी अरथ्

1. **अइन** - कानून
2. **अइन** - दोसर
3. **अलगे** - भिनु-झारखंड **अलगे** राइज बइन गेल हे।
4. **अलगे** - नितराइ-ढेमनाक गिदर मेला जाइ खातिर **अलगे** लागल हथ।
5. **आरा** - काठ फारे ओला।
6. **आरा** - गाड़िक अउजार।
7. **आरा** - जिला
8. **उधार** - बकाया
9. **उधार** - छुटकारा
10. **कटु** - अनपच
11. **कटु** - साँकार'
12. **कटु** - अपसबद
13. **कर** - काम करो
14. **कर** - बगल होना
15. **काँड़** - ढेकिक काँड़
16. **काँड़** - घारेक काँड़
17. **काँड़** - तीर
18. **काँदा** - रोइए (किरिया)
19. **काँदा** - कंद (संगिया)
20. **खर** - खड़ा (हार खर)
21. **खर** - कड़ा भुना हुआ
22. **खइर** - खल्ली
23. **खइर** - शुभ
24. **खइर** - कथ
25. **खभइर** - सूचना

26. **खभइर** - मिलावट होना- विहिन धान **खभइर** गेल हे।
27. **खुर** - गाय-महिसेक गोड़ेक खुर
28. **खुर** - दार्ही बनवेक अउजार
29. **खुर** - सुखल माटी कोड़ेक साड़ा
30. **खिल** - परती
31. **खिल** - पाचर, खूंटी
32. **खुँट** - वंश
33. **खुँट** - बाँधो गाँइठ
34. **खोल** - लेपेक खोली
35. **खोल** - गड़ढा
36. **खोल** - बाजा
37. **खोल** - खोलिए कि.
38. **गड़** - गड़ा हुआ भाग
39. **गड़** - गड़िए (क्रि.)
40. **गड़** - मिला-जुला
41. **गढ़** - गढ़ो
42. **गढ़** - अड्डा
43. **गढ़** - महल
44. **गत** - हालइत
45. **गत** - काम मे लगो लगना
46. **गइर** - पराया
47. **गइर** - बीमार होना
48. **गइरें** - तकलीफ में
49. **गइरे** - दूसरे ने
50. **गलगल** - लकड़ी
51. **गलगल** - अधिक पका हुआ
52. **गजल** - बीमार
53. **गजल** - गीत
54. **गइर** - पानी चुवा - लुगा से पानी **गइर** रहल हे।

55. **गइर** - अन्य-झारखंड **गइर** गुला सें गइराइ गेल हे।
56. **गाँजा** - खूब सानिएँ
57. **गाँजा** - निसाक समान
58. **गार** - घना
59. **गार** - निचोड़ो
60. **गारा** - कादा
61. **गारा** - निचोड़ो
62. **गिल** - गीला
63. **गिल** - निगलना
64. **गूंज** - लटटू का
65. **गूंज** - प्रतिध्वनि
66. **गुम** - धान सड़ना
67. **गुम** - गायब होना
68. **गुम** - चुपचाप
69. **गुडरा** - नाटा
70. **गुडरा** - टाइट करना
71. **गुरगुरी** - माटी
72. **गुरगुरी** - क्रोध
73. **गुड़ल** - विटा बाँधना
74. **गुड़ल** - खूब पीटना
75. **गुल गुलवा** - नरम-नरम गादा
76. **गुल गुलवा** - मिठाइ
77. **गुल गुलवा** - खूब मारिए
78. **गोड़ा** - धान
79. **गोड़ा** - कारन
80. **गोड़ा** - नींव
81. **गोधा** - खेल के साथी
82. **गोधा** - बेकूप
83. **गोर** - रंग

84. **गोर** - धेयान
85. **गोल** - एक रंग
86. **गोल** - गायब
87. **गोल** - गोलाकार
88. **गोली** - एक रंग
89. **गोली** - काँच, दवा की गोली
90. **गोछा** - विचाली
91. **गोछा** - समूह
92. **गोटा** - दाना
93. **गोटा** - साबुत
94. **गोंठ** - जमा होने का स्थान
95. **गोंठ** - जमात
96. **घठा** - लपसी
97. **घठा** - काम सें गाँठ पड़ना
98. **घड़ी** - समय
99. **घड़ी** - समय देखने की मशीन
100. **घना** - हम्मड़
101. **घना** - गाढ़ा
102. **घरी** - पहर
103. **घरी** - चाँद उगने का समय
104. **घाट** - चिन्ह
105. **घाट** - तालाब, नदी का किनारा, दस कर्म
106. **घाट** - घुमाव दार
107. **घाट** - कर्मकांड मे दशकर्म
108. **घाट** - गर्दन
109. **घूस** - रिसवत
110. **घूस** - अंदर जो
111. **घाठा** - लपसी
112. **घाठा** - गाँठ पड़ना

113. **घाही** - चोट
114. **घाही** - घोंद
115. **घुरा** - गोल मेढ़
116. **घुरा** - फाँसा
117. **घुरा** - लोटिए
118. **घेर** - घेरा डाल के
119. **घेर** - लंबाई चौड़ाई
120. **घेरा** - बाजा
121. **घेरा** - चहार दीवारी
122. **घेरा** - घेर दीजिए (किरिया)

च

123. **चंदा** - चाँद
124. **चंदा** - बिहरी-बँउड़ी-करमा में कोनो **चंदा** चुंगी नात्र हवे हे।
125. **चाट** - थप्पड
126. **चाट** - सूखना
127. **चाट** - चाटो
128. **चाट** - लालसा
129. **चाट (अंग्रेजी)** - तालिका
130. **चाँइड़** - पानी झिटने का बर्तन
131. **चाँइड़** - जल्दी
132. **चाँड़े** - भूँजना
133. **चाँड़े** - फुरती
134. **चाँदी** - कपार
135. **चाँदी** - रूपा
136. **चाँदी** - अति शुभ .
137. **चाँप** - दबाब (कि. वि.)
138. **चाँप** - दबाइए (क्रि.)

139.	**चाकर**	-	चउड़ा
140.	**चाकर**	-	कमियाँ
141.	**चारा**	-	घाँस समेत माटी
142.	**चारा**	-	उपाय
143.	**चारा**	-	आहार
144.	**चाइल**	-	चलन
145.	**चाइल**	-	गति
146.	**चाइल**	-	चाँलाकी
147.	**चास**	-	एक शहर
148.	**चास**	-	खेती
149.	**चाह**	-	हिंछा
150.	**चाह**	-	चाय
151.	**चिटा**	-	कड़ा
152.	**चिटा**	-	कंजूस
153.	**चित**	-	उतान
154.	**चित**	-	परास्त
155.	**चिता**	-	समाधि
156.	**चिता**	-	बाघ
157.	**चिती**	-	जंग
158.	**चिती**	-	एक साँप
159.	**चीन**	-	देस
160.	**चीन**	-	घुइन जावा
161.	**चीरा**	-	चुड़ा
162.	**चीरा**	-	चीर देहक-ढेमना ई लुगा के माँझ सें **चीरा**
163.	**चीनी**	-	चीन के वासी
164.	**चीनी**	-	शक्कर
165.	**चिन्हा**	-	पहचानिए
166.	**चिन्हा**	-	नमूना
167.	**चिलुम**	-	एक फूल

168.	**चिलुम**	-	धुआँ पिएक जंतर
169.	**चिरा**	-	चुड़ा
170.	**चिरा**	-	टुकड़ा
171.	**चिरा**	-	चिरिइए, चिर देवा (किरिया)
172.	**चिपरी**	-	गोइंठा
173.	**चिपरी**	-	गाँव
174.	**चुरचु**	-	एक झाड़ी
175.	**चुरचु**	-	गाँव
176.	**चुटी**	-	वेणी
177.	**चुटी**	-	पत्ते का सिगरेट
178.	**चुन**	-	पसिंद कर
179.	**चुन**	-	धोतीक तह
180.	**चुन**	-	चूना
181.	**चुन**	-	सफेद होना
182.	**चेत**	-	निर्माण की निशानी
183.	**चेत**	-	सावधान होना
184.	**चोका**	-	छिलका
185.	**चोका**	-	10′-10′ माटिक नाप
186.	**चोकी**	-	तख्ता की खाट
187.	**चोकी**	-	बड़ा मेइर
188.	**चोंख**	-	तेज
189.	**चोंख**	-	होशियार
190.	**चोप**	-	छाँकल पकोड़ा
191.	**चोप**	-	बकला से बनल डोरा
192.	**चोरस**	-	उबड़-खाबड़ नात्र् होवा
193.	**चोरस**	-	चाइर रस

छ

194.	**छइठ**	–	तकलीफ
195.	**छइठ**	–	परब
196.	**छक**	–	धोखा खाना
197.	**छक**	–	तिरफित होता, हाम **छकल** हों
198.	**छक**	–	अचानक न देखना, ढेमना **छक** से गाइब होइ गेल।
199.	**छक**	–	तेज, ढेमनाक गारी **छक** सें लागल
200.	**छाँट**	–	ओकाइं
201.	**छाँट**	–	छाँटना
202.	**छाँट**	–	पोहनाक चार टा बेस कइर **छाँट** (किरिया)
203.	**छाँट**	–	तरह, एक **छाँट** के गिदर (विसेसन)
204.	**छाँट**	–	स्टाइल, बंबइया (विसेसन)
205.	**छाँट**	–	छोट करा, छः इंच (किरिया)
206.	**छइप**	–	छपना, किताप **छइप** गेल
207.	**छइप**	–	ऊपर से बहना। पानी पुल के ऊपर सें **छइप** के जाइ रहल हे।
208.	**छपछप**	–	मुड़ी छपछप पानी। बाधें पानी मुड़ी **छपछप** हे। (किरिया विसेसन)
209.	**छपछप**	–	साड़ा होवा (किरिया विवेसन) गोटे सड़कें एक इंच पानी हे, चलला पर **छपछप** साड़ा करे हे।
210.	**छतरी**	–	छोट छाता
211.	**छतरी**	–	जाइत
212.	**छन**	–	गाइब – पानिक फोकना देखते **छन** होइ जाहे।
213.	**छन**	–	सँबइ – एहे **छन** ढेमना आइल हे
214.	**छिन**	–	कम – ढेमनाक उमइर **छिन** भेल जाहे
215.	**छिन**	–	लुइट लेवा – ढेमनाक जिनिस मुदइ **छिन** लेला

216.	**छपाइ**	–	प्रीन्ट होवा
217.	**छपाइ**	–	छपित होवा
218.	**छाँदा**	–	छाँदिए (किरिया) अगरिक पानी छाँइद के राखा।
219.	**छाँदा**	–	बाँधना, मरखँड़ गाय के छाँइद के दूहा।
220.	**छाँदा**	–	अलग, बखरा खाएक सँवइ बामन अलग पतरी में **छाँदा** राखऽ हथ।
221.	**छापा**	–	छापिए
222.	**छापा**	–	हमला
223.	**छार**	–	बानी, राख, छाइ (संगिया)
224.	**छार**	–	छारना (किरिया)
225.	**छार**	–	उसर, छार घुटु में कोनो उपज नाञ हवे हे।
226.	**छिट**	–	छिट (धान) मइड़ेक पहिले जे धान झर हे।
227.	**छिट**	–	छिटना – रोहइन में विहिन **छिटेक** चाही।
228.	**छिट**	–	रंग-बिरंग, फूल छापल लुगा-लाता।
229.	**छिटा**	–	बुनिए, रोहइन महिनें खेते विहिन **छिटा**
230.	**छिटा**	–	दाग लागा, ढेमनाक पिंधना में कादाकं **छिटा** लागल हइ।
231.	**छिन**	–	लुइट लेवा, दिकु गुलें मूल बासिक जमीं **छिन** लेल हथ।
232.	**छिन**	–	कमजोर होवा, बेमारी से ढेमनाक देहि **छिन** भइ गेल हइ।
233.	**छुटा**	–	आजादी, खेतें सरकारी साँढ़ **छुटा** घुरऽ हथ।
234.	**छुटा**	–	खुदरा, ढेमनाक टिकिस कटवे खातिर **छुटा** पइसा राखे हे।
235.	**छेद**	–	बलि, ढेमना दसँइ में कोहड़ाक **'छेद'** दे हे।
236.	**छेद**	–	भूर, ढेमनाक छाइन में **छेद** भइ गेल हे।
237.	**छेइर**	–	पसुक डहर, बोनें सुअर गुलें **'छेइर'** बनाइ लेऽ हथ।

238.	**छेइर**	-	पतला पइखाना, ढेमना आलू साग खाइ के **'छेइर'** रहल हे।
239.	**छेव**	-	टंइगलाक माइर
240.	**छेव**	-	सुरू करा, ढेमना लउतन घार बनवेक **छेव** दइ देल हे।
241.	**छोछोर**	-	जमीन से रगइड़ के उठावा-ढेमना पक्का भुवें तेल गिरल हो ओकरा बेस कइर **छोछोर**
242.	**छोछोर**	-	लोभी, ढेमनाक बेटा गुला **छोछोर** लागविन।

ज

243.	**जग**	-	दुनियाँइ
244.	**जग**	-	पानिक बरतन
245.	**जबद**	-	भारी, ढेमना **जबद** चीज मत खो।
246.	**जबद**	-	जप्त, सरकार कुड़की में ढेमनाक सोव सामान **जबद** कइर लेल।
247.	**जस**	-	जइसा, ढेमना **'जस'** करल तस पाइल
248.	**जस**	-	कीरति, एखन ढेमनाक **जस** गनगना हे
249.	**जाँता**	-	दवाना, जाइल-जनमल के **जाँता** नाञ् तो बदमाश भइ जिबथुन।
250.	**जाँता**	-	आटा दाल के चक्की, दाइल दर्रे खातिर ढेमना **'जाँता'** राखल हे।
251.	**जाँती**	-	सरोता
252.	**जाल**	-	झंझट, दिकू पसारल हथ, मूल वासिक फँसवे खातिर बहुत **'जाल'** रचऽ हथ।
253.	**जाल**	-	मछरिक
254.	**जाल**	-	जाल-माछ
255.	**जाल**	-	साजिस, ढेमना एखन दिकुक **जालें** फँइस गेल हे।
256.	**जाला**	-	मकड़िक

257.	**जाला**	-	तकलीफ, ढेइर गिदर जनमइलें बड़ी **जाला**
258.	**जाली**	-	नकली
259.	**जाली**	-	लउवा जाली
260.	**जाली**	-	जलनाक
261.	**जीरा**	-	माछेक चारा
262.	**जीरा**	-	मसाला
263.	**जीरा**	-	सुस्ताना
264.	**जुड़ुवा**	-	ठंढा करा
265.	**जुड़ुवा**	-	छाया में
266.	**जेठ**	-	महिना
267.	**जेठ**	-	बोड़
268.	**जोइर**	-	जोड़कर
269.	**जोइर**	-	आइग जोइर
270.	**जोंखा**	-	तोलना
271.	**जोंखा**	-	मउका
272.	**जोति**	-	जुआँइठ के जोति
273.	**जोति**	-	आँइख के जोति
274.	**जोरन**	-	दहिक
275.	**जोरन**	-	अरसी में **जोरन** नाञ सहे हे
276.	**जोरन**	-	लेरू बाँधेक
277.	**जोइर**	-	आइग
278.	**जोइर**	-	सहिया
279.	**जोइर**	-	लेरू बाँधेक
280.	**जोरे**	-	हार, ढेमना रोजे हार **जोरे** हे
281.	**जोरे**	-	संगे, ककर **जोरें** अइलें
282.	**जोरें**	-	बोले, देहिक जोरे
283.	**जोरें**	-	आइग।

झ

284. **झइर** – झड़ना – पिपर गाछेक पात **झइर** रहल हे।
285. **झइर** – लगातार बइरसा– तीन दिन सें **झइर** करल हे
286. **झाँप** – ढकना, ढेमना तोञ् आपन मुरगी छउवा गुला **झाँप।**
287. **झाँप** – कूदना, ढेमना, तोर गिदर बाँधे **झाँप** दे हथुन।
288. **झार** – जंगल
289. **झार** – धानेक
290. **झार** – वंश
291. **झार** – झारना, (किरिया)
292. **झाल** – मेरचाइ
293. **झाल** – कुआँ, ढेमना तोञ् कुआँ के **'झाल'** पानी बहुत गंदा हो।
294. **झाल** – बजवेक
295. **झट** – तुरत
296. **झट** – ठगिए, दिकु गुलें अनपढ़ गुला सें बहुत कुछ **झटऽ** हथ।
297. **झुरपुट** – बुढ़ा
298. **झुरपुट** – **झुरपुट** से झाँप देल
299. **झूम** – नींद
300. **झूम** – आनंद लेवा, मगन
301. **झोंटी** – जोढरा
302. **झोंटी** – मुँड़े, जनि बेटी गुलें खोपा नाञ् **झोंटी** बाँधऽ हथ।
303. **झोल** – ढिला, ढेमनाक खाटी बड़ी **झोल** हइ
304. **झोल** – मकरा जाल पोड़ाव।

ट

305. **टनटन** - चुहुल, एखन ढेमनाक गिदर बड़ी **'टनटन'** हथिन।
306. **टनटन** - घंटिक आवाज
307. **टान** - कमी, निरन महिने ढेमनाक कुएँ पानिक **टान** हइ जाहे।
308. **टान** - खींचो, ढेमना लुगा सुखवे खातिर अँगने एगो डोरा **टान।**
309. **टान** - बिड़ीटान, ढेमना, देहि बँचवे खातिर चुटि-फिका मत **टान।**
310. **टरटराइ** - बेंग, बेंग **टरटराइ** रहल हथ।
311. **टरटराइ** - के खाइल, ढेमना **टरटराइ** के मास खाइल हे।
312. **टांगा** - टांगिए, ऐ गिदर सब आपन-आपन लुगा अलना में **टांगा।**
313. **टांगा** - मोढ़ा फारेक, ढेमना **टांगा** सें काठ फारे हे।
314. **टाँइड़** - मइदान, ढेमना **टाँइड़** में कुरथी बुनल हे।
315. **टाँइड़** - ढेमना सोब डुभी गुला चाहें **टाइड़** राखल हे।
316. **टेंटवा** - घेंचा, अरे ढेमना बेसी टाँय-टाँय मत कर न तो **टेंटवा** दाइब देबो।
317. **टेंटवा** - बिजर, ढेमना एगो धनुक आर 50 गो **टेंटवा** राखल हे।

ठ

318. **ठाठ** - घारेक, ढेमना आपन घारें बाँसेक अभावें झाँटिक **ठाठ** लगवल हे।
319. **ठाठ** - खुसी, ढेमना बेटाक बिहा में सब **ठाठ** करल हे।
320. **ठाँव** - नजिक, ढेमनाक टिसन **ठावें** हइ।
321. **ठाँव** - लिपना, खाइल बाद जुठाइल जोघो में **ठाँव**

दिएक चाही।

322. **ठाँव** - जोघो, नाँव के बाद ठाँव लिखेक चाही।

ड

323. **डाँट** - तना, सागेक **डाँट** के तियन भी बने हे।

324. **डाँट** - सकत, ढेमनाक बाप एखन बहुत **डाँट** हे।

325. **डाँट** - डाटो

326. **डाँडा** - खड़ा होवा

327. **डाँड़ा** - कमर

328. **डाँडी** - लकीर

329. **डाँडी** - लाठक डाँडी

330. **डाँडी** - तराजू

331. **डाँड़ी** - मछली

332. **डीड़ी** - खड़ा होवा

333. **डींड़ी** - दाना

334. **डीड़ियाइ** - दर्द से, ढेमना फोड़ाक दरद से **डिडियाइ** रहल हे।

335. **डीड़ियाइ** - गिड़गिड़ाना, मानुस माटिक मुरूत ठिन बेकार **डिडियाइ** रहल हथ।

336. **डूब** - डूबना, ढेमना कहल, ऐ सुरूज तोंञ एखन नाञ **डूब**।

337. **डूब** - नहाइ मे डूब देवा, ढेमना रोज नदी में **डूब** दइ के नहा हे।

338. **डूबा** - डुबिए, मकरें ढेमना कहल-आइज, कनकन पानी में **डूबा**।

339. **डूबा** - पड़ना, **डूबा** परल सें ढेमनाक धान पोइच गेलइ।

340. **डेढ़ी** - लेवो, ढेमना बिहिन धान डेढ़ी घुरवल, माने एक के **डेढ़**।

341. **डेढ़ी** - पहिनना, लुखरिक लुगा छोट हइ, सइले डेढ़ी कहर पिधऽ ही।
342. **डोका** - एक लकड़ी, **डोका** बहुत नरम काठ लागे।
343. **डोका** - खुल्ला मुँह, आइज काइल नेता गुला कमीशन खातिर **डोका** फारल हथ।
344. **डोगा** - कतारिक, ढेमना कतारिक **डोगा** छाइल रहल हे।
345. **डोंगा** - भटकर मांगना, खोरठा सबद खोजे में समाजे **डोंगे** पड़ऽ हइ।
346. **डोभा** - गाढ़ा, एक दु फूट पानी रहे ओला दस पाँच फूट के गाढ़ा।
347. **डोभा** - रोपा क़ा, संगिया सबद, रोपा-**डोभा**।

ढ

348. **ढाँक** - ढाँइप दिहिं
349. **ढाँक** - एक बाद्य
350. **ढांगी** - लंबी औरत
351. **ढांगी** - बस्ती, बाबु बिनोद बिहारीक मोसी घार
352. **ढाल** - नामान
353. **ढाल** - फरिया, नटुआ खेले में ढाल के बेबहार हवे हे।
354. **ढेंसाहा** - दोसर पर आरोप ठोंका
355. **ढेंसाहा** - कविता का एक रस
356. **ढोढ़ा** - गला
357. **ढोढ़ा** - पेट साफ होवा, पतला पइखाना होवा।
358. **ढोल** - ढिला, ढेमनाक कुरता पूरा **ढोल** हे।
359. **ढोल** - बजना, बिहा में **ढोल**-ढाँक जरूरी हे।

त

360.	**तर**	-	नीचे, हेंठ
361.	**तर**	-	सराबोर
362.	**तरि**	-	रकम
363.	**तरि**	-	गिला
364.	**तलि**	-	पेंदी, आधार
365.	**तलि**	-	तह एक के ऊपर एक
366.	**तइस**	-	संखिया
367.	**तइस**	-	क्रोध, राग
368.	**ताक**	-	देख, भाल, ऐ, ढेमना, तनी हामर बाटें **ताक**
369.	**ताक**	-	मोका, अवसर, एखन बिहिन बुनेक बेस **ताक** हइ
370.	**ताक**	-	झाँक के संगिया, **ताक**-झाँक
371.	**ताँइत**	-	नस के डोरा, धुनकी में **ताँइत** के डोरा लागे हे।
372.	**ताँइत**	-	कामें तइयार
373.	**तान**	-	सुर
374.	**तान**	-	पसार
375.	**तान**	-	खींच के संगिया, खीच-**तान**
376.	**ताना**	-	लुगा बुनेक परकिरिया
377.	**ताना**	-	टिटकारी
378.	**ताना**	-	तानी के संगिया, **ताना**-तानी
379.	**ताइर**	-	ऊँचा उठवेक काम, नेहरू इंदिरा गाँधी के **ताइर** देलइ।
380.	**ताइर**	-	तार, आइज-काइल फोन में **ताइर** के दरकार नाञ हे
381.	**ताइर**	-	धान नापेक, ढेमना खरिहाने कटाही सें धान **ताइर** रहल हे
382.	**तारा**	-	कटाही सें धान नापा

383.	**तारा**	-	तरींगन
384.	**तियन**	-	तरकारी
385.	**तियन**	-	सालन के संगिया, तियन-सालन
386.	**तिर**	-	टान, खिचो, ढेमना, ई डोरवा **तिर** ने, पाक दिएक हइ।
387.	**तिर**	-	खेलेक तिर, एक ढेंगुर के टोना जकर दुइयो बाटें सोरू हे
388.	**तिर**	-	धनुस के तिर, बिज्जर, काँड़
389.	**तोप**	-	गाड़
390.	**तोप**	-	हथियार
391.	**तोप**	-	ढाँप के संगिया, ढाँप-तोप
392.	**तोपा**	-	गाड़, गाड़िए
393.	**तोपा**	-	एगो जोघो, तोपा कोलियरी
394.	**तोर**	-	तुम्हारा, ढेमना ई गइया **'तोर'** लागो
395.	**तोर**	-	तोइर दिहीं, कोनो कानून के मत **'तोर'**
396.	**तोला**	-	तोलिए
397.	**तोला**	-	एक ओजन, चाँदिक टाकाक बराबइर
398.	**तोला**	-	जोंखा के संगिया, तोला-जोंखा
399.	**तोर**	-	तोड़ो
400.	**तोर**	-	तुम्हारा

थ

401.	**थल**	-	बेस जोघो, बिनोद बाबुक समाधि एगो नामी **'थल'** लागइ।
402.	**थल**	-	साँति, रोपा खतम भेल बादे ढेमना **थल** पाइल।
403.	**थपाइ**	-	खंपरा, एखन ढेमना खपरा **थपाइ** रहल हे।
404.	**थपाइ**	-	हुआँ भूत हो, एखन देसे बहुत नावा-नावा भूत **थपाइ** रहल हे।

405. **थान** - जगह, बलिया पुरें **'बिनोद थान'** बनल हइ।
406. **थान** - लुगाक, पाटिक झाँड़ा बनवे में कते **थान** लुगा बेरबाद होवे हे।
407. **थान** - कियारी, ढेमना चाइर **थान** पयाज रोपल हे।
408. **थाना** - पुलिस, ढेमनाक **थाना** तोपचाँची लागइ।
409. **थाना** - कियारी, ढेमना पयाज रोपे खातिर 10 गो **थाना** बनवल हे।
410. **थाप** - झापड़, ढेमना, लुरका के एक **थाप** माइर देलइ।
411. **थाप** - चिपरी, ऐ लुखरी, तोञ् रोज 10 गो चिपरी **थाप**।
412. **थाप** - माँदइरे, भादर परते ढेमना माँदइरे **थाप** दइ दे हे।
413. **थाम** - खूंटा, ढेमनाक गाँवे भगता परब के **थाम** खड़ा करल हथ।
414. **थाम** - रूको, सावन भोइर **थाम** भादरे झुमइर लागतो।
415. **थाह** - पता, भटिन दहें पानिक **थाह** नाञ् लागऽ हइ।
416. **थाह** - तृष्णा, एते कमीसन खइलो पर नेता गुलाक **थाह** नाञ मोरे हे।
417. **थिहा** - मुड़ेक थिहा।
418. **थिहा** - ठेकान, एखन तइक सुभाष बोस के कोनो **थिहा** नाञ् पावाइल हे।
419. **थिहा** - धेयान, माञ-बापेक, माञ्-बापेक **थिहा** राखा सोवले बोड़ करतब लागइ
420. **थेथर** - झाड़ी, ढेमनाक बाँधेक घाटी **थेथर** बोनाइ गेल हइ।
421. **थेथर** - जकर पर कोनो बातेक असर नाञ हवे हे।

द

422. **दइब** – दब कर, दइब के, भुँवेक बेटा आपन मार्टी **दइब** के रहऽ हथ।
423. **दइब** – देव, पोंगा पंथी लोक **दइब** (देव) के बात करे हे
424. **दर** – नेव, आबें नीचु समाजें भी सिछाक **दर** दियाइ गेल हे।
425. **दर** – भाव, एखन लुगाक **दर** नाञ् बाढ़ल हे।
426. **दल** – पानी में उगे वाला पउधा
427. **दल** – समूह
428. **दल** – पेंदल बडाँइ नाञ कर, आइज काइल ढेमना बहुत **दले** हे।
429. **दाम** – मूल्य
430. **दाम** – बाछा दाम, ढेमना, तोञ आपन बाछा **दाम**, ढेइर अखरखँड करऽ हो।
431. **दारू** – एक गाँव का नाम, हजारीबाग के नजिक।
432. **दारू** – मदिरा
433. **दाइ** – कुसराइन
434. **दाइ** – मसकिल, सावने बरद मोरला सें ढेमनाक भारी **दाइ** भेल हइ।
435. **दिक** – दिसा, उत्तर दखिन पुरूब पछिम चाइर गो **दिक** हे।
436. **दिक** – झंझट, मंदिर के लाउड स्पीकर पढ़निहार खातिर **दिक** पइदा करे हे।
437. **दिग** – दिसा, ढेमना चाइरो **दिग** घुरल हे।
438. **दिग** – भ्रम, दिल्ली देखते ढेमना के **दिग** लाइग गेलइ।
439. **दुबइर** – दु दफे, ढेमना **दुबइर** खाहे।
440. **दुबइर** – निमर, ढेमना **दुबइर** बइन के मत रोह।

441. **देही** - देती है, लुखरी रोज अखरें गोबोर **देही**।
442. **देही** - शरीर, ढेमनाक **देही** सकत हइ।
443. **दिसा** - सउच।
444. **दिसा** - इयाद, ढेमनाक जनम दिनेक **दिसा** नाञ है।
445. **दिसा** - दिग।

ध

446. **धक** - आवाक, ताज महल देइख **धक** हे।
447. **धक** - दाएं, कर्जाक **धक** सें, ढेमना बरद कीनेक लेल **धकें** खेत बेंइच देल।
448. **धक** - धक्का, सावने बरद मोरल से ढेमनाक **धक** लाइग गेल।
449. **धरता** - रखेंगे, मइड़ल बाद सभीने बिहिन धान बिटे **धरता**।
450. **धरता** - मालिक, ढेमना आपन घरेक करता-**धरता** लागे।
451. **धरता** - किसमत, बरदा ढेमनाक **धरता** में नाञ् हल, सइले मोइर गेल।
452. **धनी** - पियार के संबोधन, ढेमना आपन बहु सें कहल, **धनी** पूस परबें कनोसी लइ देवों।
453. **धनी** - धन के मालिक, मोहर महतो **धनी** लोक लागे।
454. **धर** - पकड़ो, ढेमना, जे ढुकतो कतारी बारी ओकरों **धर**।
455. **धर** - रकखो, ढेमना, मइड़ल बाद बिटे बाँइध बिहिन **धर**।
456. **धाप** - सहारा थामना, ढेमनाक गोड़ मेहचल हइ सइले **धाप** नाञ दिए पारे हे।
457. **धाप** - पिड़ा, ढेमना **धाप** बनवल हे
458. **धापी** - हक धइर उठे हे, ढेमना ठिन परचा नाञ हे

			तावो जोते के **धापी** धरे हे।
459.	**धापी**	-	ढेमना जरें अइसन गइज गेल हे कि **धापी** धइर उठे हे
460.	**धार**	-	काटेक, ढेमना तेल बेस **धार** नाञ् काटऽ हो, सइले वाहरें गिरऽ हो।
461.	**धार**	-	उधार, ढेमना कोनो दोकान सें **धार** नाञ खा हे,
462.	**धार**	-	पानिक, बइरसा में नदिक **धार** बइढ़ जा हे।
463.	**धार**	-	छुरिक, ढेमनाक छूरी में बहुत **धार** हइ।
464.	**धारी**	-	हाम ककरो नाञ **धारी**
465.	**धारी**	-	पहार **धारी** धार
466.	**धारी**	-	कुरता मे करिया **धारी** हइ
467.	**धाँस**	-	तोड़ दो, ढेमना, लुरका अखरा टाँड़ी घार बनवल हे ओकराँ जलदि **धाँस**।
468.	**धाँस**	-	मुखियाक, **धाँस** आब नाञ चलतइ
469.	**धुँध**	-	झाड़ी, ई पहरिया बाँसेक **धुँध** लागइ, हियाँ खुखड़ी मिले पारे।
470.	**धुँध**	-	भरम, ढेमना दिल्ली गेल तो ओकरों **धुँध** लाइग गेल
471.	**धुन**	-	तेजी से घुमाना, ढेमना एते जोर मुँड़ नाञ् **धुन**।
472.	**धुन**	-	पक्का इरादा, ढेमनाक बेटा सब एखन पढ़ेक **धुन** में लागल हथ।
473.	**धुर**	-	जोत की जोड़ी, मोहर महतोंक सात **धुर** काड़ा-बरद हथिन।
474.	**धुर**	-	जमीन के नाप, ढेमना दु **धुर** जमीन बेचल हे।
475.	**धुर**	-	दूर, दिल्ली हियाँ से बहुत **धुर** हे।
476.	**धुर**	-	धुल, कोलियरी में करिया **धुर** उड़े हे।
477.	**धोवा**	-	धोइए, खाएक पहिले हाथ **धोवा**।

478. **धोवा** - एक अच्छी जाति की लकड़ी, **धोवा** काठ के बेस जुआँइठ बने हे।

न

479. **नकटी** - नाकेक मइल, ढेमनाक नाके **नकटी** नाञ
480. **नकटी** - जे जनिक नाक कटल हइ, लुखरी **नकटी** जनि लागी।
481. **नस** - नाड़ी, ढेमनाक बेटा **नस** के डाकतर बनतइ।
482. **नस** - छीकेक दवाइ, नाके **नस** लेवा खराप नेसा लागइ।
483. **नागा** - अनुपस्थित, ढेमनाक बेटा गुलाक इसकुले एको दिन **नागा** नाञ्।
484. **नागा** - नंगा साधु, **नागा** साधु असइभताक चिन्हा लागइ।
485. **नागा** - एक जाति, **नागा** जाति खातिर **नागा** लैंड बनल हइ।
486. **नाठ** - बेकार, रामें, स्वर्णनखा के **नाठ** कइर देलइ।
487. **नाठ** - सरदार, ढेमना रइसका दलेक **नाठ** लागे।
488. **नाना** - अनेक, ढेमना **नाना** रंग के खेती करे हे।
489. **नाना** - माँ के पिता
490. **नाया** - आदि पुरोहित, जइहरा में **नाया** पूजा करे हे,
491. **नाया** - नया, आखाइन से हामनिक **नाया** साल सुरू हवे हे।
492. **नारा** - धानेक, बहियारे धानेक **नारा** मोटा हवे हे।
493. **नारा** - भइनता, बिनोद बाबु पढ़े आर लड़े के **नारा** देल हथिन।
494. **नेंगा** - लंगड़ा, काँटा गड़ल से ठेमना **नेंगा** हे।
495. **नेंगा** - बायाँ, ठक वाजी करा दिकु खातिर **नेंगा** हाथेक खेल।

496. **नेवता** - झुकेंगे, एक दिन परकीरतिक आगु सोभिन **नेवता**।

497. **नेवता** - न्योता, ढेमना, **नेवता** पूरे खातिर गेल हे।

498. **नेंगा** - बाँया, **नेंगा** हाथ

499. **नेंगा** - लँगड़ाई के चला, ढेमना **नेंगा** हे।

प

500. **पचक** - बिगड़ल तिथि, **पचक** में किसान विहिन नाञ पार-हथ।

501. **पचक** - चिपटा होवो, जादूगर कहल अरे टिन, तोञ् **पचक**, आर टिनवाँ चेपट भइ गेलइ

502. **पच** - थूकने की आवाज

503. **पच** - हजम होवो

504. **पँइचा** - उधार, ढेमना पँइचा-उधार पसिंद नाञ् करे हे।

505. **पँइचा** - सूप से फटकें, ए, गिदर चार के सूप सें पँइचा, साफ हइ जितो।

506. **पट** - तुरत, ढेमना गिदर पढ़वेक नामें **पट** सें पइसा बहरवे हैं।

507. **पट** - टूटने की आवाज, ढेमना, संग खपाटी के **पट** सें तोड़र देल।

508. **पट** - चित, पइसा के दु भाग हवे हे, एगो चित एगो पट

509. **पटपट** - टूटने की आवाज, ढेमना झूरी तोर हे, सइले **पट-पट** के साड़ा हे।

510. **पटपट** - झंझट, ढेमना के झंझट **पटपट** पसिंद नाञ।

511. **पइट** - आधा बोतल, ढेमना के एक **पइट** दारू रोज चाही।

512. **पइट** - काड़ा गेल, ढेमनाक काड़ा तीन कोरी में **पइट**

			गेल हे।
513.	**पइट**	-	पानी गेल, ढेमनाक आलू आइज **पइट** गेल।
514.	**पइठ**	-	पहुँच, ढेमनाक **पइठ** सोब जोधो हे।
515.	**पइठ**	-	सफल, ढेमनाक मनान **पइठ** भइ गेल हे।
516.	**पइत**	-	सत्य, माटिक मुरूत में कोनो **पइत** नाञ् हे
517.	**पइत**	-	प्रत्येक, ढेमना **पइत** एतवार हाट जा हे।
518.	**पछिया**	-	पछिम के हवा, पूसे **पछिया** हवा चले हे।
519.	**पछिया**	-	टोकरी,.ढेमना एक **पछिया** महुआ विछल हे।
520.	**पछिया**	-	पछिम के मानुस
521.	**पटिया**	-	लोरिंया-पटिया
522.	**पटिया**	-	खिजुर, ढेमना खिजुर **पटिया** बनवे हे।
523.	**पटिया**	-	खाटिक, ढेमना खाटी में बाँस के **पटिया** लगवल हे।
524.	**पटिया**	-	दल, ढेमना झारखंड **पटिया** के पसिद करे हे।
525.	**पटनियाँ**	-	पटनावासी, झारखंडे, **पटनियाँ** लोक ढेइर मड़ियाइल हथ।
526.	**पटनियाँ**	-	जो पानी पटाने से होता है। ढेमना **पटनिया** बइगन रोपल हे
527.	**पसर**	-	मेलान, ढेमना, रोज अनगुते **पसर** खोल हे।
528.	**पसर**	-	फैलाना, ढेमना कहल, ऐ सिछा, तोञ् जलदी झारखंडे **पसर**
529.	**पंजरी**	-	देहिक, कुपोशण सें ढेमनाक गिदर के **पंजरी** देखा हे।
530.	**पंजरी**	-	चेनिक, ढेमना चेनी में सकत **पंजरी** लगवल हे।
531.	**पइला**	-	पा गए, सोब गरीब इंदिरा आवास **पइला**।
532.	**पइला**	-	एक नपना, ढेमना सदाइ बीस-गंडी **पहला** से नाप-जोंख करे हे।

533. **पइला** - गरू गाड़िक कुँद, ढेमना गाड़िक चार्कें सरइ काठ के **पइला** लगवल हे।
534. **पकवा** - पकाइए, ढेमना कहल, पूसें सोभिने घीव के रोटी **पकवा**।
535. **पकवा** - सिमेंट का बना, ढेमना कहल, ई **पकवा** बनवे में एक बोरा सिमेंट लागल
536. **पकवा** - डोरा, ढेमना कहल लउतन सन से लउतन डोरा **पकवा**
537. **पकवा** - उघरे नाञ चाही, ढेमना कहल ई डोराक सोब **पकवा** खुइज गेल हइ।
538. **पटवा** - पानी, ढेमना कहल सोभिने हामर बाँधेक पानी सें आलू **पटवा**।
539. **पटवा** - मुर्तिक, पोगां पंथी मूर्तिक **पटवा** के भी गोड़ लागऽ हथ।
540. **पटवा** - दाम के ठीक से, ढेमना कहल, बरद के दाम ठीक से **पटवा**, हामें किनवइ।
541. **पटवा** - पेटेक, गिदर के पेटे **पटवा** भेलें गिदर लइट जा हथ।
542. **पटवा** - दारूक, ढेमना दारूक भोरल **पटवा** के फोइर देल।
543. **पतवा** - सहिया, ढेमना कहल गावें सोभिने सहिया **पतवा**।
544. **पतवा** - आमेक, ढेमनाक छगरी आमेक **पतवा** बेसी साही।
545. **पतवा** - लिखा हामर, ढेमनाक **पतवा** सभे नेता ठिन हे।
546. **परवा** - अँइटा, बेस बतर हइ सभिने अँइटा **परवा**।
547. **परवा** - मन, 18 दिसम्बर विनोद बाबुक मन **परवा** दिन लागइ।

548. **पलवा** - तेंतइर, ढेमना माड़-भात संग तेंतइर **पलवा** खाहे।

549. **पलवा** - केंवाइर, ढेमना केंवाइर के दुइओ पलवा कटहर काठ के बनवल हे, ढेमना दिल **पलवा** डिउटी करे हे।

550. **परचा** - पम्पलेट

551. **परचा** - जमीनी हक के कागज

552. **पराइ** - मुनिस गेल, **पराइ**, भाइग जावा

553. **पराइ** - अइंटा, एखन 200 टाका हजार अंइटा **पराइ** के रेट हे।

554. **पाक** - ऐ आलू, तोञ जल्दी, **पाक**

555. **पाक** - डोराक, ढेमना डोरें **पाक** दइ रहल हे।

556. **पाँइख** - पंख, उकिया के **पाँइख** होवा, माने मोरेक पहइर।

557. **पाँइख** - एगो खेल, आर्य संसकीरति **पाँइख** खेला के खतम करल हे।

558. **पाग** - चीनिक, चीनीक **पाग** से मिठाइ ठीक बने हे।

559. **पाग** - पगरी, झारखंडी **पाग** के एखनो बहुत महत हे।

560. **पाछ** - पीछे,

561. **पाछ** - छिलना, ऐ ढेमना, तोञ आपन कोइर-आँठी के **पाछ** नाञ तो दरद देबो

562. **पाट** - आधा बोतल, ढेमना के एक **पाट** दारू रोज चाही।

563. **पाट** - कोठा, ढेमना तोञ आपन कोठा के जलदी **पाट**।

564. **पाट** - पोहनाक लेल खाटी **पाट**!

565. **पाट** - हारेक, **पाट** बिना हार ढिला हइ जाहे

566. **पाट** - नदिक, नदी में दुगो **पाट** हवे हे

567.	**पाट**	-	भाग, काशमीर देसेक एगो सुंदर **पाट** लागइ
568.	**पाट**	-	पुरी धामेक ठोंका, तिरिथ ओला तिरिथ से घुइर **पाट** ठोंकऽ हथ।
569.	**पाट**	-	मुरूत के, काठेक **पाठ** के उपर मुरूत बने हे।
570.	**पाट**	-	मुरूत ठिन परनी-पाट, पोंगापंथी मुरूत ठिन चित पातांग गिर परनी-पाट हवऽ हथ।
571.	**पाटा**	-	मेइर, ढेमना ढेंका फोरे खातिर खेतें **पाटा** दइ रहल हे।
572.	**पाटा**	-	मूर्तिक, **पाटा** के ऊपर मुरूत बने हे।
573.	**पाटा**	-	खाइ के **पाटा** सुता, खाइ के आधा घंटा रगर्टी पाटा
574.	**पाटी**	-	सीथा, ढेमना रोज कंकवा सें **पाटी** फारे हे।
575.	**पाटी**	-	सिल, लुखरी **पाटी** में हरदी पिसऽ ही।
576.	**पात**	-	पसारो, हाथ पात, ढेमना बेटा सें कहल ककरो ठिन हाथ मत **पात**
577.	**पात**	-	पत्ता
578.	**पात**	-	पाल्हा, आर पाल्हा का सगिया सबद, पाल्हा-**पात**, साग-पात
579.	**पारत**	-	सकेगा, ढेमना अंग्रेजी नाञ पढ़े **पारत**
580.	**पारत**	-	अइंटा, ढेमना काइल से अंइटा **पारत**
581.	**पाना**	-	सर्वत, गरम दिने पोहना के गुर के **पाना** दिएक चाही।
582.	**पाना**	-	अउजार, मोटोर मिस्त्री सब **पाना** के बक्सा राखऽ हथ।
583.	**पार**	-	विहिन, ढेमना रोहइने धानेक विहिन **पारे** हे।
584.	**पार**	-	खाटी, ढेमना, पोहना अइला चाँड़े खाटी **पार**।
585.	**पार**	-	पाटी, ढेमना अरसी-कँकवा लइ पाटी-**पार**
586.	**पार**	-	नदी, ढेमना नदी **पार** गेल हे।

587.	**पार**	-	हइजो, ढेमना पचरी डेइंग **पार** भेल
588.	**पार**	-	डीम, ढेमना मुरगी ढाँइप के कहल, तोञ एकरे भीतर डीम **पार**
589.	**पाइर**	-	डीम, मुरगी आइज पहिला डीम **पाइर** देल हे।
590.	**पाइर**	-	विहिन, ढेमना रोहइने विहिन **पाइर** देल हे।
591.	**पाइर**	-	खाटी, ढेमना पोहुना आवेक पहिले खाटी **पाइर** देल दे
592.	**पाइर**	-	पाटी, ढेमना पूस परबे पाटी **पाहइर** के बइराइल हे।
593.	**पाहइर**	-	लुगाक, लुखरी लाल **पाइहर** के लुगा पिंधल ही
594.	**पाहइर**	-	लाठेक, ढेमना लाठें **पाहइर** लगवल हे।
595.	**पाहइर**	-	धानेक-धुकेक बेरे, धानेक **पाहइर** बनाइ ढेमना धान धुँके हे।
596.	**पासाइर**	-	मेलान, ढेमना बड़की भिनसरे काड़ाक **पासाइर** खोले हे।
597.	**पासाइर**	-	फैलाकर, ढेमना खरिहाने धान **पासाइर** देल हे।
598.	**पासाइर**	-	दुइयो, सँडक के दुइओ **पासाइर** ढेमनाक खेत हइ।
599.	**पाछाइर**	-	कोइर आँठी, ढेमना कोइर-आँठी के **पाछाइर** देल हे।
600.	**पाछाइर**	-	ढेमना, ढेमना लुरका के **पाछाइर** देल।
601.	**पाछाइर**	-	ढेमना गरू गाड़ी में बिंड़ा ढोवे खातिर **पाछाइर** लगवल हे।
602.	**पाछाइर**	-	ढेमना गाड़िक वोज ठिक नाञ हो, **पाछाइर** बुझा हो।
603.	**पास**	-	नजिक

604. **पास** - ढिप, ढेमना बइगन गाछें **पास** भोरल हे।
605. **पास** - सफल, ढेमनाक बेटा परिछें **पास** भेल हे।
606. **पारा** - अँइटा बनवा, ढेमना कहल, फुरसत के दिने, अँइटा **पारा**
607. **पारा** - विहिन बुना, ढेमना कहल, रोहइन पोइर गेल विहिन **पारा**
608. **पारा** - भागा, ढेमना गाँव वाटें हाथी देइख गोहाइर करल, **पारा** रे भाइ।
609. **पारे** - विहिन, ढेमना कहल, विहिन गाड़ी जोता, बिहिन **पारे** हतइ।
610. **पारे** - डीम, ढेमना कहल, मुरगी बारो गो डीम **पारे** पारऽ ही।
611. **पारी** - मउका, सोभिन जोधो छोड़ा, अबरी ढेमनाक **पारी** हइ।
612. **पारी** - हाम सोब करे **पारी**, ढेमना कहल हमरों निमर मत बुझा, हाय सोब करे **पारी**
613. **पारी** - जोरा आर पारा के संगिया सबद, जोरा-**पारी**, पारा-**पारी**
614. **पाल** - छगरी **पाल** खइलइ, गरमाइ गेलें छगरी के बोदा से **पाल** खिवे चाही।
615. **पाल** - समूह, गाँवें भेड़िक **पाल** आइल हे।
616. **पाला** - केवाइर, ढेमनाक दुआरीं कटहर के **पाला** लागल हे।
617. **पाला** - बइरसल, **पाला** गिरल सें ढेमनाक खेती गइल गेल हे।
618. **पाला** - कुकुर **पाला**, ढेमना कहल, रातीं पहरा दिए खातिर कुकुर **पाला**।
619. **पाला** - पोसा का संगिया सबद, पासा-**पाला**
620. **पासी** - फारेक पासी, ढेमना हारेक फारें **पासी**

ठोंकाइ लेल हे।

621. **पासी** - जाइत, ढेमना जाइत के **पासी** लागे।

622. **पाइ** - गाड़िक **पाइ**, गाड़िक धुरी जकर में धुरे हे, ऊ गोल काठ के **पाइ** कहल जात हे।

623. **पाइ** - नापेक **पाइ**, नपना, जकर में आधा पइला अँटे हे।

624. **पराइ** - भागेक काम, ढेमना ढेइर काम देइख **पराइ** गेल।

625. **पराइ** - अंइटा पराइ, ढेमना अंइटा **पराइ** रहल हे।

626. **पिया** - पति

627. **पिया** - पीजिए, गरम दिने सोभिन पाना **पिया**।

628. **पितर** - पीतल

629. **पितर** - पूर्वज, जकर संबंध पिता से हे।

630. **पियार** - बोनेक फोर

631. **पियार** - प्यारा, प्रेम, प्रीति

632. **पिंजरा** - गूंथ गुंध कर गंदा किया हुआ, भात के एते नाञ् **पिंजरा**

633. **पिंजरा** - पक्षी रखने वाला

634. **पिसा** - बापेक बहनोई

635. **पिसा** - पीसिए

636. **पिसा** - धँसा का सहिया सबद, **पिसा**-घँसा

637. **पूज** - धावेक **पस**

638. **पूज** - पुजिए

639. **पुंठा** - गरू **गाड़िक** सामान

640. **पुंठा** - शरीर का एक अंग

641. **पुतइर** - एक जंगली पौधा

642. **पुतइर** - बेटा

643. **पुर** - गाँव

644. **पुर** - चउक, लुखरी, सोहराइ अइलो, गोझी-अँगना

			में चउक **पुर।**
645.	**पुर**	-	पुर वरद, ढेमनाक बरदा दु बछर के **पुर** लागइ।
646.	**पेछुआ**	-	एक गहना
647.	**पेछुआ**	-	पीछे जाइए
648.	**पेछुआ**	-	ऊदल के पीछे जोड़, ढेमना बिड़ा ढोवे खातिर गाड़ी में **पेछुआ** लगवल हे
649.	**पोन**	-	कन्या के लिए रकम। पहिले बिहा में कनिआँइ के **पोन** दिएक रीत हलइ
650.	**पोन**	-	तीन चौथाइ
651.	**पोहना**	-	अंडा में फुटल माछ, ढेमना आपन बाँधे माछेक **पोहना** छोड़ल हे
652.	**पोहना**	-	मेहमान। ढेमना घाटे **पोहना** आइल हथ।
653.	**पोरब**	-	पर्व, सोहराइ झारखंडेक नामी **पोरब** लागइ।
654.	**पोरब**	-	पर्डेगे, ढेमना कहल हाय झमेला में नाञ् **पोरब**
655.	**पोर**	-	बाँसेक, ढेमना बाँसेक **पोर** से फिचकारी बनइल हे
656.	**पोर**	-	गोड़-पोर किरिया, बाभन कहल, सोभिने हामर गोड़ **पोर**
657.	**पोर**	-	बिमार, ढेमना कहल, सावने केव बिमार नाञ **पोर**
658.	**पोर**	-	पिछला वर्ष, **पोर** साल ढेमना सोहराइ में ढेइर खरच करल हल।
659.	**पोवा**	-	सेर का चौथा भाग
660.	**पोवा**	-	खाटिक पउवा।

फ

661.	**फरका**	-	घारेक छाँछा
662.	**फरका**	-	अलग
663.	**फटका**	-	माथे मे एक चिथड़ा जो अछूतो को बाँधना था
664.	**फटका**	-	पटाखा
665.	**फरिया**	-	मांस मे टांग का हिस्सा
666.	**फरिया**	-	नटुआ का ढाल
667.	**फल**	-	परिणाम
668.	**फल**	-	बीज कोश
669.	**फरकल**	-	आँइख नाचना, बरद मोरेक पहिले ढेमनाक आँइख **फरकल** हल।
670.	**फरकल**	-	अलग होना, बाप मोरल बाद ढेमना-लुरकाक मन **फरकल**।
671.	**फाँक**	-	बैल गाड़ी का पटरा, **फाँक** टाइन लेले गाड़िक बोझा हेठें गिर जा हे।
672.	**फाँक**	-	छेद, ढेमना हावा खातिर घारे **फाँक** छोड़ल हे,
673.	**फाँक**	-	खाना, ढेमनाक कहल, आइज कुछ नाञ मिलतो, बस खजागी **फाँक**।
674.	**फाँकी**	-	चूर्ण, ढेमना हजम करे ओला एगो **फाँकी** बनवल हे।
675.	**फाँकी**	-	धोखा, ढेमना ककरो कोनो कामें **फाँकी** नाञ देहे।
676.	**फाइट**	-	दरार सं., ढेमनाक देवालें एगो **फाइट** भइ गेल हइ।
677.	**फाइट**	-	फट जाना, लुखरिक लुगा **फाइट** गेल।
678.	**फाँइड़**	-	चीर कर (क्रि), पेट **फाँइड़** के ढेमनाक इलाज भेल हइ।
679.	**फाँइड़**	-	होनी, ढेमनाक घार धारिक गछवा बाहरे गिरलइ एगो **फाँइड़** कइट गेलइ

680.	**फार**	-	हारेक (सं), **फार** बिनु हार बेकार हे।
681.	**फार**	-	फाड़ो, ऐ ढेमना, तनि हमरो कठवा **फार**
682.	**फिका**	-	देहाती बिड़ी, ढेमना सरइ पातेक **फिका** पिए हे।
683.	**फिका**	-	उदास, बरद मोरल सें ढेमनाक चेहरा **फिका** भइ गेल हे।
684.	**फुइट**	-	कंकडी
685.	**फुइट**	-	टूट जाना, एखन ढेमना-लुरका भिनु भेल हथ, घार **फुइट** गेल
686.	**फुल**	-	दोस्ती, ढेमना आर जुमना **फूल** पतवल हथ।
687.	**फूल**	-	फल के पहले की आकृति, कोनो गाछें **फूल** के बादे फल आवे हे।
688.	**फुटिया**	-	कोड़ी, कामेक गनति कउड़ी से हवे हे, जकराँ **फुटिया** कहल जा हे
689.	**फुटिया**	-	कंकड़ी, ककड़ी जाइत के एगो परकार **फुटिया** हे।
690.	**फुटल**	-	फूल, बाँधे कमल फूल **फुटल** हे।
691.	**फूटल**	-	धान, ढेमनाक सब धान **फुटल** हे।
692.	**फूटल**	-	थारी, ढेमना फुटल थारी के बदइल देल हे।
693.	**फूटल**	-	आइर, बइरसा में ढेमनाक एको आइर नाञ **फुटल** हे।
694.	**फेरा**	-	कुरथी, ढेमना कहल, कुरथी पाइक गेल हइ, सोभिन **फेरा**
695.	**फेरा**	-	पड़ल फेरा में, रिन लइ के ढेमना **फेरा** में फँइस गेल हे।
696.	**फेरा**	-	मंदिर के, पोंगा पंथी मंदिर में **फेरा** लगाइ रहल हथ।
697.	**फेरा**	-	वापस करा, ढेमनाक सहिया कहलथिन, तोहें साहु के रिन **फेरा**

698.	**फोंकी**	-	धान की बीमारी, ढेमनाक धाने **फोंकी** लाइग गेल हइ।
699.	**फोंकी**	-	बाँस, ढेमना **फोंकी** बाँस लगवल हे।
700.	**फोटा**	-	तिलक, ढेमना कधियों **फोटा** नाञ लगवे हे।
701.	**फोटा**	-	पैर से मारिए, ढेमना फुटबॉल आनल हे, एकराँ सोभिन **फोटा**
702.	**फोटा**	-	अँतड़ी, ढेमना एगो चरँइ के अइसन **मारल** कि फोटा वहराइ गेल
703.	**फोटा**	-	रसुन, ढेमना तीन **फोटा** रसुन देल।
704.	**फोरन**	-	मसाला, ढेमना **फोरन** दइ दाइल छोंके हे।
705.	**फोरन**	-	अभी, बइरसा हवइते **फोरन** ढेमना आइर बाँधे गेल
706.	**फोर**	-	फोड़िए, ढेमना आर जुमनाक दोस्ती **फोर** तभीं दंगा हतो,
707.	**फोर**	-	धान, **फोर** धाने काँकर, पाथर हवे फरे।
708.	**फोर**	-	फल, अइसों आमे बेस **फोर** धरल हइ।
709.	**फोरल**	-	फोड़ दिया, मुदइ गुलें ढेमना-जुमना के **फोरल** हथ।
710.	**फोरल**	-	फला हुआ, अइसो आम खूब **फोरल** हे।

ब

711.	**बइजका**	-	बोलिए, मिटिंगे सोभिने कुछ-कुछ **बइजका।**
712.	**बइजका**	-	एक पकवान, ढेमना कटहर के **बइजका** बनवल हे।
713.	**बइठ**	-	अवकाश प्राप्त, ढेमना 55 सालें नोकरी से **बइठ** गेल हे।
714.	**बइठ**	-	बैठिए, ढेमना कहल, आव **बइठ**
715.	**बड़बड़**	-	बड़बड़ाना, ढेमना जरें **बड़-बड़** करऽ हल।
716.	**बड़बड़**	-	बड़ा-बड़ा, कांग्रेस **बड़-बड़** के जेहल ढुकवल

हे।

717. **बराँड़ी** – खाटिक, ढेमनाक खाटीं वइठते मतर **बराँडी** टुइट गेल।

718. **बराडी** – शराब, ढेमना कधियो **बराडी** नाञ पियल हे।

719. **बकता** – बेकार, चला घार, आवें मुदइ गुले खाली गड़बड़ **बकता।**

720. **बकता** – बोलवइया, इंदिरा गाँधी एगो बेस **बकता** हलथिन।

721. **बनता** – बर्नेंगे, आवें केव गाँधी नियर नेता नाञ बनता।

722. **बनता** – एक गाँव, **बनता** राँची जिलाक एगो गाँव हे।

723. **बारता** – बतियों को जलायेगें, साँइझ भेलइ आवे लोक बाती **बारता।**

724. **बारता** – बात-चित, एखन पाकिस्तान संग **बारता** चइल रहल हे।

725. **बँद** – बाँधने का फिता, करखने सामान के **बँद** से बाँधल जाहे।

726. **बँद** – खतम, आवें तरगइर गजिक लड़ाइ **बँद** हे,

727. **बरही** – मोटा रस्सा

728. **बरही** – जी.टी. रोड में एगो जोधो

729. **बहिनी** – बहन, ढेमनाक **बहिनी** लुखरी लागइ

730. **बहिनी** – मिट्टी का होदा, ढेमना **बहिनी** में गाय के भूसा- चोकर साने हे।

731. **बरिया** – बारी में, ढेमना **बरिया** में आलू लगवल हे,

732. **बरिया** – बड़ी, **बरिया** मेसाइ देलें तियन सोवादगर बइन जाहे।

733. **बरिया** – दो, **बरिया** हातु (गाँव) जे गाँव दु गो गाँव सें बनत हे।

734. **बर** – बड़ का पेड़, ढेमनाक घार धारीं बड़का **बर**

			गाछ हइ
735.	**बर**	–	दुल्हा, बिहा में बर-कनियाँइ के जोड़ी ठीक हवेक चाही।
736.	**बर**	–	जलो, ऐ दीया, सोहराइ में तोञ् सगर राइत बर
737.	**बलिया**	–	धान मकई की, ढेमना, तोर धनवाँक एक एक **बलिया** देखे जुकुर हे।
738.	**बलिया**	–	बिहार का जिला
739.	**बँसिया**	–	बाँसुरी, ढेमनाक **बँसियाक** बेस सुर हइ।
740.	**बँसिया**	–	एगो गाँव
741.	**बइर**	–	बत्ती, ढेमनाक गाँवें बिजली बाती **बइर** रहल हे।
742.	**बइर**	–	दुश्मनी, ढेमना के खरगा सें **बइर** हइ।
743.	**बाजार**	–	बाजार, ढेमना पइत एतवार **बाजार** जा हे।
744.	**बजार**	–	पटको, ढेमना, जोदि खरगा वदमासी करतो तो, उठाइ **बजार**
745.	**बचवा**	–	बचाइए, ढेमना कहे हे कि गिदर पढ़वे खातिर पइसा **बचवा**।
746.	**बचवा**	–	बच्चा, ढेमनाक **बचवा** पढ़े में तेज हइ।
747.	**बसवा**	–	बसाइए, ढेमना कहल, दिकु के हियाँ नाञ् **बसवा**
748.	**बसवा**	–	बस, ढेमना राँची जाइ खातिर मोहर माहतोंक **बसवा** चढ़े हे।
749.	**बकसा**	–	संदूक, ढेमना टाका पइसा **बकसा** में राखे हे।
750.	**बकसा**	–	मुक्त करें, ढेमना माहतों से कहल हमराँ **बकसा**, सूद नाञ् देवो।
751.	**बइस**	–	वैश्य, चाइर बरन में एगो
752.	**बइस**	–	बैठो, ढेमना नोकरी से **बइस** गेल हे।

753. **बाँइच** - पढकर अर्थ बताना, ढेमना करमाक कथा **बाँइच** रहल हे।
754. **बाँइच** - बँचा रहना, ढेमनाक घारें एखनो विहिन धान **बाँइच** रहल हे।
755. **बात** - एगो बीमारी
756. **बात** - कथा बतरा
757. **बाछा** - गाय का बच्चा, ढेमनाक गाय **बाछा** वियाइल हइ।
758. **बाछा** - चुनिये, ढेमना कहल, हरेक माल 10 टाका, चुना-**बाछा**।
759. **बाछा** - खोरठा का सबद साड़ा, हाथी रगदलो मगुर तोञ् बाँइच गेले रे **बाछा**
760. **बाजी** - करिश्मा, सरकसें ढेमना एक से एक **बाजी** जीत गेल।
761. **बाजी** - शर्त, ढेमना मुर्गा-लड़ाई में **बाजी** जीत गेल।
762. **बाँट** - थन, ढेमनाक गाएं दुंइए गो **बाँट** हइ।
763. **बाँट** - रस्सी, ढेमना, तोञ् दिन भोइर हियाँ डोरा **बाँट**।
764. **बाँट** - बाटो, ढेमना तोर गिदर पास करलो, मिठाइ-**बाँट**।
765. **बाँइट** - डोरा, ढेमना डोरा **बाँइट** रहल हे।
766. **बाँइट** - बाँटना, ढेमना मिठाइ **बाँइट** रहल हे।
767. **बाँड़ा** - जकर पुँइछ नाञ्, ढेमनाक कुकुर टा **बाँड़ा** हइ।
768. **बाँड़ा** - छोटा, ढेमनाक कुरतुआ **बाँड़ा** हइ।
769. **बाँड़ा** - नंगट, ढेमना आबें **बाँड़ा** नाञ् हे।
770. **बाइढ़** - बढ़ती, गिदरेक, बेस खान-पान सें गिदरेक बेस **बाइढ़** हवे हे।
771. **बाइढ़** - बाइढ़, सोइढ़, झाड़ना, ऐ लुखरी, धरवा

बाइढ़ दिहीं।

772. **बाइढ़** - बान, बाढ़, नदी में **बाइढ़** आइल हे।

773. **बाइढ़** - बढ़इत के संगिया सबद, **बाइढ़**-बढ़इत।

774. **बात** - एगो रोग, ढेमना, **बात** रोग के दवाइ जाने हे।

775. **बात** - बोली, ढेमनाक, **बात** बहुत पक्का हवे हे।

776. **बाँचत** - बचेगा, खाइ-पी के ढेमनाक धान जरूर **बाँचत**।

777. **बाँचत** - अर्थ कहेगा, ढेमना अइसों करमाक कथा **बाँचत**

778. **बाँचत** - जीना, गाछ-पात नाञ् रहले, जीव नाञ **बाँचत**

779. **बारत** - बाती बारत, ढेमना सोहराइ में सो गो दीया **बारत**।

780. **बारत** - परहेज करेगा, ढेमना आइज सें मास-मछरी **बारत**।

781. **बाता** - बात का बिगड़ा रूप, कहीं-कहीं बात के **बाता** बोलल जाहे।

782. **बाता** - बाँस, घोरना में बाँस के **बाता** देल जा हे।

783. **बाँध** - बाँधो, ढेमना, तोञ् गाय-बरद के खूँटे **बाँध**।

784. **बाँध** - तालाब, ढेमनाक एगो बोड़ **बाँध** हइ।

785. **बाँइध** - बाँधकर, ढेमना आपन बरद **बाँइध** के राखे हे।

786. **बाँइध** - दस काठ, ढेमना के दस **बाँइध** धान हवे हे। 10 काठ = 1 बाँइध।

787. **बाँइध** - छाँइध के सहिया सबद, **बाँइध**-छाँइध।

788. **बान** - बाइढ़, जोरिएँ बइरसाक सँवइ **बान** आइ जाहे।

789. **बान** - रोपा सुरू, बतर पाइ के ढेमना असारे में **बान** नभाइ देल।

790. **बान** - तीर, बिरसाक धनुक आर **बान** दुइओ परसिध हे।
791. **बान** - मंतर मारा, ढेमना **बान** मारेक बात के पेंदल कहे हे।
792. **बाना** - लुगा-लाता, ढेमना सोहराइ में झारखंडी **बाना** पिंधे हे।
793. **बाना** - पिंगाठी, ढेमनाक **बाना** 'खइट-मूतना' लागइ।
794. **बारा** - बाति बारा जलाओ, ढेमना कहल, सोहराइ में सोभिन **बाती** बारा।
795. **बारा** - चेंका **बारा** (छोड़), रोग भेलें, चेंका जरूर **बारा**।
796. **बारा** - उरीद के बारा, ढेमना उरीद के **बारा** छाँकल हे।
797. **बारी** - जमीन बारी, ढेमनाक **बारी** में आलू लगवल हे।
798. **बारी** - खाएक **बारी** (मउका), काम खतम, अबरी खाएक बारी हे।
799. **बारी** - मुरूत के बारी, मुरूत पूजा में बाँध से **बारी** आनल जाहे
800. **बालि** - सुग्रीव के भाइ
801. **बालि** - कानेक बालि, पूस परबे ढेमना कानेक **बाली** किन देल हे।
802. **बालि** - नदिक बालि, जमुनियाँ नदिक **बाली** बेस किसिम के हे।
803. **बाँटे** - डोरा बाँटे (बनवे) ढेमना डोरा **बाँटे** जाने हे।
804. **बाँटे** - मिठाइ बाँटे, ढेमना मिठाइ **बाँटे** हे।
805. **बिस** - संखिया, **बिस** संखिया के कोरी भी कहल जा हे।

806.	**बिस**	-	जहर, खरिस के **बिस** तेज हवे हे
807.	**बिछा**	-	बाना, 'खइट मुतुआ' ढेमनाक बाना **बिछल** गेल हइ।
808.	**बिछा कि.**	-	महुआ बिछा, महुआ गिर के पाथाइर हे सोभिन **बिछा**।
809.	**बिछा**	-	घेंचाक हाइर, लुखरी चाँदिक **बिछा** घेचें पिंधल ही।
810.	**बिछा**	-	बिसाहा किड़ा, ढेमना **बिछा** काटले के दवाइ जाने हे।
811.	**बिखार**	-	बिसाहा, गोहमन **बिखार** साँप लागइ।
812.	**बिखार**	-	पानी से धोव, पहिले गिलास के **बिखार** तब पानी दे।
813.	**बुनल**	-	कुरथी, ढेमना तीन पइला कुरथी **बुनल** हे।
814.	**बुनल**	-	टोकरी बुनना, ढेमना एगो जाल बुनल हे।
815.	**बेंतइर**	-	गिदर के कोरें, लुखरी गिदर के पिठें **बेंतइर** काम करऽ ही।
816.	**बेंतइर**	-	मरम्मत, लुखरी सूप-डाली के **बेंतइर** देल ही।
817.	**बोकि**	-	धानेक रोग, ढेमनाक धाने **बोकि** लाइग गेल हइ।
818.	**बोकि**	-	बेकुप बेटि छउवा, लुखरी **बोकि** बेटी छउवा लागी।
819.	**बोदा**	-	बोकोर, छगरी, **बोदा** आर पाँठी दुगो बच्चा बियाइल ही।
820.	**बोदा**	-	बसे नाञ् होवा, अइगटंगवा गुला ककरो सें नाञ **बोदा** हथ।
821.	**बोर**	-	बिटा बाँधेक, बिटा बाँधेक **बोर** पोंआर सें बने हे।
822.	**बोर**	-	कनियाँइ बोर, **बोर**-कनियाँ एक उभइरें बेसी

फरक नाञ चाही

823. **बोर** - बोर गाछ, **बोर** गाछ सदा बहार हवे हे।

824. **बोर** - रंगे बोर, ढेमना, ई लुगा के रंगे **बोर**।

भ

825. **भटभटि** - गाड़ी, देहाइतें मोटर साइकिल के **भटभटी** कहऽ हथ

826. **भटभटि** - मनेक गुबार, सुलह नामाक वादो लुरकाक मनेक **भटभटी** नाञ गेल हे।

827. **भरम** - इजइत, ढेमना सभेक मान-**भरम** के खेयाल राखे हे।

828. **भरम** - धोखा, **भरम** में पइर मानुस माटिक मुरूत पूजऽ हथ।

829. **भंगवे** - बहकवे, ढेमनाक गोरखिया **भंगवे** में लुरका लागल रहे हे।

830. **भंगवे** - बर्हि भंगवे, बर्हि **भँगवे** खातिर सगरे ढेमनाक मांग हे।

831. **भंगवे** - माड़ा, माडा **भँगवे** में आखइन के दरकार हवे हे।

832. **भकुवा** - टांगी, ढेमना संगे **भकुवा** राखे हे।

833. **भकुवा** - बँड़ुवाइ जा, आँधारे बेस-बेस लोक **भकुवा**-हथ।

834. **भांग** - बर्हि भांग, ऐ ढेमना, तोहिं हामर बर्हिया **भांग**।

835. **भांग** - भाड़ा, माड़ा खिज गेलो एकराँ जल्दि **भांग**।

836. **भांग** - भांग खाइ, ढेमना कधियो **भाँग** नाञ् पियल हे।

837. **भाइग** - तकदीर, ढेमना **भाइग**-भगति के बात नाञ माने हे।

838.	**भाइग**	-	गाँव छोइड़ गेल, ढेमनाक मुनीस काम छोइड़ के **भाइग** गेल हे।
839.	**भाँज**	-	पहिचान, हियाँक मूल वासी पुरखाक **भाँज** के भुइल गेल हथ।
840.	**भाँज**	-	गोड़ेक चिन्हा, ढेमना बोने हाथिक **भाँज** देखल।
841.	**भाँज**	-	पाता कर, ढेमना, इटा कि काठ लागइ, तनि **भाँज** तो।
842.	**भाँज**	-	रूपया, ढेमना, हमराँ 100 टाकाक **भाँज** चाही।
843.	**भाँड़**	-	भाँड़े ओला बेकति, ढेमनाक भाइ टा **भाँड़** लागइ।
844.	**भाँड़**	-	भरस्ट बनाव, ऐ लुरका, कोनो रकम ढेमनाक गिदर गुलाक **भाँड़**
845.	**भाँड़**	-	माटिक, ढेमना कुम्हार ठिन बूड़का माटिक **भाँड़** लेल हे।
846.	**भाल**	-	भालु, ढेमनाक दुआरी **भाल** के नाच होइ रहल हे।
847.	**भाल**	-	देख, ऐ ढेमना, तनि हामर वार्टें **भाल** ने।
848.	**भाव**	-	दरभाव, ढेमना आलू विहिन के **भाव** बुझे बजार गेल हे।
849.	**भाव**	-	समताक भाव, ढेमना में सबके साथ समताक **भाव** हइ।
850.	**भुइल**	-	बिसइर जावा, मूलवासी आपन पुरखा के **भुइल** गेल हथ।
851.	**भुइल**	-	पइदल चइल, ढेमना सदाइ **भुइल** के बजार चइल जाहे।
852.	**भेंट**	-	सालुक-फल, सालुक फुलेक फोर टा के **भेंट** कहऽ हथ।
853.	**भेंट**	-	मुलाकात, आइज ढेमना मोहर माहतो से **भेंट**

करल।

854. **भेंट** – उपहार, ढेमना ककरो बिहा में कविता **भेंट** कर हे।

855. **भिन** – असर होवा, ढेमनाक गाते दुख **भिन** गेल हे।

856. **भिन** – दोसरा

857. **भेड़ा** – दामुदरेक सहायक नदी, रजरप्पा में **भेड़ा** नदी दामुदर सें मिले हे।

858. **भेड़ा** – एगो जानवर, **भेड़ा** एगो पालतु जानवर लागे।

859. **भेलि** – कियारी, ढेमना आलुक **भेलि** बनवल हे।

860. **भेलि** – गुरेक भेलि, ढेमना के **भेलि** गुर बहुत पसिंद हइ।

861. **भोर** – ओजन, सरकसें पहलवान हाथिक **भोर** सहइ ले हथ।

862. **भोर** – सवेरा, ढेमना रोज **भोर** बिहान नहा हे।

863. **भोर** – थोलि, ढेमना, वेतन मिललो, थालि **भोर**।

864. **भोइर** – भइर देवा, ढेमना लुरकाक थोली **भोइर** देल

865. **भोइर** – तइक, ढेमना छिन **भोइर** खटल हे।

म

866. **मइल** – गातक गंदा, ढेमनाक देहिं **मइल** हइ।

867. **मइल** – दूरी, ढेमनाक घर से राँची तीन **मइल** हे।

868. **मतारी** – माञ

869. **मतारी** – एगो गाँव

870. **मतारी** – एगो रेल स्टेशन

871. **मल** – दुषित, मलमास, ढेमना **मल**-मास में कोनो काम सुरू नाञ करे हे।

872. **मल** – हाथ मल, खइनि, ढेमना तनि खइनी **मल**।

873. **मन** – 40 पइला, चालीस पइला चार में एक **मन** हवे हे।

874.	**मन**	-	दिल, ढेमनाक **मन** बहुत हिया खलास हे।
875.	**माठा**	-	घोर, ढेमना जोढरा लपसी संग **माठा** पसिंद करे हे।
876.	**माठा**	-	कोर्हि, लुरका टा **माठा** मानुस लागो
877.	**माठा**	-	सादा के संगिया सबद, सादा-**माठा**
878.	**माड़**	-	भातेक माड़, ढेमना रोज एक गिलास गरम **माड़** पिए हे।
879.	**माड़**	-	घारेक माड़, लुरका, हिंदे-हुंदे नाञ् रोह, कही आपन घार **माड़**।
880.	**मेढ़**	-	बुड़बक, लुरका खाली अपढ़ नाञ्, **मेढ़** लागो।
881.	**मेढ़**	-	मुरूत, ढेमना **मेढ़** पूजा नाञ करे हे।
882.	**मेढ़**	-	खेतेक आरा, बइरसा सें खेतेक **मेढ़** बेरबाद भइ गेल हे।
883.	**मुरचा**	-	चिति, जंग, ढेमनाक बिजरें **मुरचा** लागल हे
884.	**मुरचा**	-	लड़ाइ के गढ़
885.	**मेला**	-	बहुत, अइसों ढेमनाक **मेला** कतारी भेल हइ।
886.	**मेला**	-	उत्सव, गोटे झारखंडे देदार पूस **मेला** लागे हे।
887.	**मोजा**	-	गाँव, खेसमी **मोजा** के नाँव धुर-धुर तइक हे।
888.	**मोजा**	-	पैतावा, ढेमना बिना **मोजा** के जूता पिंधे हे।
889.	**मोट**	-	मोटा, ढेमनाक देहि **मोट** नाञ हे।
890.	**मोट**	-	गठरी, लुरका **मोट** ढोवेक काम करे हे।
891.	**मोहबइत**	-	प्रेम, ढेमना सोब संग प्रेम-**मोइबइत** से रहे हे।
892.	**मोहबइत**	-	रोला ढापेक तख्ता, ढेमनाक खपराक घारें रोला में **मोहबइत** ठोकल हे।
893.	**मोरी**	-	धानेक मोरी, मोहर माहतोक पास धानेक

			मोरी हे।
894.	**मोरी**	-	डांगर के मोरल देहि, ढेमना **मोरी** के माटी गाइड़ दे हे।
895.	**मोहा**	-	घोर मोहा, देहि के बेस बेबहार, ओकराँ घोर **मोहा**।
896.	**मोहा**	-	गीते मोहा, रसिक मानुस के गीते **मोहा**।

र

897.	**रट**	-	रट, ढेमना ककरो नाम के **रट** नाञ लगवे हे।
898.	**रट**	-	ढेइर, अइसों ढेमना कतारिक **रट** लगाइ देल हे।
899.	**रट**	-	कसना, ढेमना गाडिक तेंतला **रट** रटाइ के बाँधल हे।
900.	**रगड़**	-	जिद, नरता में भाट सब बहुत **रगड़** करऽ हथ।
901.	**रगड़**	-	घँस, ढेमना, तोञ देहि में साबून **रगड़**।
902.	**रइन**	-	होनी, ढेमना जिनगी में ढेइर **रइन** झेलल हे।
903.	**रइन**	-	लड़ाइ, भिनु राइज के **रइन** में झारखडिंक जीत भेल।
904.	**राग**	-	गोसा, ढेमनाक देहिं **राग** नाञ हे।
905.	**राग**	-	लइ, लोक गीतेक **राग** गुला हामनिक पुरखाक देन लागइ।
906.	**राग**	-	तेज (खइनी), सुनल हो कि सरइसाक खइनी में बेसी **राग** हे।
907.	**राव**	-	आवाज
908.	**राव**	-	एक उपाधि
909.	**राइस**	-	रासेक काम, ढेमना आपन फुटल थारी गुला **राइस** रहल हे।
910.	**राइस**	-	मेल होवा, ढेमना आर लुरका के **राइस** नाञ

			बइठऽ हइ।
911.	**रूसा**	-	रूइस जा, घारेक जोक सें रागा **रूसा** ठीक बात नाञ हे।
912.	**रूसा**	-	राज मिस्त्रीक, राज मिस्त्री बिना **रूसा** पलस्तर नाञ कर हथ।
913.	**रेघा**	-	चिन्हा, सोब आदमिक कपार में **रेघा** हवे हे।
914.	**रेघा**	-	रट लगवा, भाट गुला तीन दिन सें छगरी खातिर **रेघा** हथ।
915.	**रेघा**	-	नाटा, लुरका साइजें **रेघा** मानुस लागो।
916.	**रोंदा**	-	बढ़िक अउजार, ढेमना **रोंदा** पहलें आपने पालिस कइर लेहे।
917.	**रोंदा**	-	बइगन, जे सबजी बिना पटवल हइ जा हे, **रोंदा** करल जाहे।
918.	**रोप**	-	धान, ऐ ढेमना, सावन आइ गेल, धान **रोप**
919.	**रोप**	-	गोड़ राख, ढेमना, आव एक दिन हामर घारें गोड़ **रोप**।

ल

920.	**लहरे**	-	हदके
921.	**लहरे**	-	दरद देहे
922.	**लट**	-	दुबर होव, ढेमना, तोञ पातर भेल जाहे, आव नाञ **लट**
923.	**लट**	-	मुड़ेक, गंदा रहल सें लुखरिक मुँड़े **लट** भइ गेल हे।
924.	**लट**	-	कतारिक **लट** लागल हे, ढेमनाक घारें कतारिक **लट** लागल हइ।
925.	**लत**	-	आदत, लुरका के खइनिक **लत** लाइग चुकल हइ।
926.	**लत**	-	लतरी, ढेमनाक छानी ढेइर लउवा **लत** बाढ़ल

हे।

927. **लइर** – लड़ेक, ढेमना आर लुरका में लड़ेक **लइर** लागल हे।

928. **लइर** – लगाव, ढेमनाक बेटा-बेटी में पढ़ेक **लइर** हइ।

929. **लाग** – लाइग जो, ऐ ढेमना, गप छोड़ आब कामे **लाग**

930. **लाग** – लगाव, आब ढेमना-लुरका में कोनो **लाग** नाञ हे।

931. **लाठा** – गाछेक लाठा, ढेमना तेलहर के **लाठा** सें दवाइ बनवे हे।

932. **लाठा** – झगरा, ढेमना लुरका में **लाठा** लागल रहे हे।

933. **लादा** – लाइद देहक

934. **लादा** – पेट

935. **लादा** – लादेक काम करा, सोव सामान ढेमनाक गाड़ी **लादा**।

936. **लादा** – पेट, सउसक गुलाक **लादा** में लास फूटे हे।

937. **लासा** – टुटल फुटल के, आपन फुटल थारी के राँगा से **लासा**।

938. **लासा** – लाठा, बुच के फोर **लासा** के काम करे हे।

939. **लोक** – बेकति, मोहर माहतों एगो बेस **लोक** लागथ।

940. **लोक** – बोझा, मोहर माहतोंक मुँड़े बोझा हइ ओंकराँ जल्दी **लोक**।

स

941. **सत** – फल-जड़िक, दवाइ खातिर जड़ी से **सत** निकालल जाहे।

942. **सत** – सच्चा, मोहर माहतों में **सत** हइ।

943. **सन** – सनइ, कुदरूम के बकला से **सन** बने हे।

944. **सन** - हक्का-बक्का, घारें हाथी छुकल देइख के ढेमना **सन** भइ गल
945. **सही** - हस्ताक्षर, ढेना भोटेक कागजे **सही** कइर देल हे।
946. **सही** - ठीक, ढेमनाक सिरिफ **सही** चीज पसिद हे।
947. **सालुक** - फुल, ढेमनाक बाँधे ढेइर **सालुक** फूल हे।
948. **सालुक** - कपड़ा, ढेमना सोब कागज पतर **सालुक** लुगा में बाँधल हे।
949. **साज** - पेटारि, ढेमना घारेक दामी जिनिस गुला हरकें **साज**।
950. **साज** - बजवेक सामान, बिना **साज** के गीत बेस नाञ हवे हे।
951. **साबुत** - प्रमाण, इटा मूल वासिक देस, एकर **साबुत** ढेमना ठिन हे।
952. **साबुत** - गोटा, हड़पाक ढिपाढाने कोनो **साबूत** नाञ बाँचल हे
953. **सान** - सातु, भूख मेटेक उपाई, सातू **सान** आर पेट भोर
954. **सान** - गउरब, हड़पा में मूल वासिक **सान** हइ।
955. **सान** - उत्तेजना, बहुत **सान** विनास के कारन हवे हे।
956. **सामी** - ढेकिक, धुसइर के रछा खातिर लोहाक बनल कवच।
957. **सामी** - पति, लुसरिक **सामी** लुरका लागे
958. **साइर** - काम खतम कइर देवा
959. **साइर** - बोड़ बाँध
960. **सान** - गउरब के साथ, ढेमना **सान** से रहे हे
961. **सान** - धार, ढेमना खुरें **सान** धरवे हे।
962. **सार** - साला, ढेमनाक तीन गो **सार** हथिन

963. **सार** – खाद, ढेमनाक खेतें **सार** के दरकार नाञ हे।

964. **सार** – काम खतम कर, करमा नजिक हे, जलदि खेतेक काम **सार**

965. **साल** – कमर, ढेमनाक घार पासें कमर **साल** हे।

966. **साल** – बछर, ढेमनाक जनम टा आजादिक **साल** हलइ।

967. **सिका** – छात से टांगेक, विलाइर के डरे दूध दहि **सिका** में टागल जाते।

968. **सिका** – गोटा टाका, आवें दस के **सिका** भी चल हे।

969. **सिधा** – गाछ, **सिधा** काठ के जुआँइठ बने हे।

970. **सिधा** – काँचा अनाज, बाभन सब **सिधाक** चारें बाँचऽ हथ।

971. **सिधा** – छल–छइव से रहित, ढेमना **सीधा** सादा मानुस लागे।

972. **सिधा** – सोझ, रेल लाइन **सिधा** बनेक चाही।

973. **सिकार** – मांस, ढेमना **सिकार** नाञ खा हे

974. **सिकार** – स्वीकार, ढेमनाक देसेक सोब कानून **सिकार** हइ।

975. **सिकार** – बोने सिकार, पुरखाक सँवइस बोने **सिकार** हवऽ हल।

976. **सिरा** – छोर, ढेमना बर्हिक **सिरा** में गाँइठ बाँधल हे।

977. **सिरा** – रस, ढेमना मिठाइ बनवे खातिर चीनीक **सि़रा** बनवल हे

978. **सुचि** – तालिका, ढेमनाक पास खोरठा कवि लेखक के **सुचि** हइ।

979. **सुचि** – पवित्र, जहइरा एगो **सुचि** थान लागइ

980. **सुचि** – सहीद शक्तिक बहु, शहीद शक्ति नाथ महतो आर **सुचि** पर 'श्याम' खण्ड काइब लिखल हथ

981.	**सुन**	-	कोनो चेत नाञ, मोरल पर देहि **सुन** हइ जाहे।
982.	**सुन**	-	काने सुन, डेमना तोञ शक्तिक बखान आपन काने **सुन**।
983.	**सेंस**	-	खतम, ढेमनाक रोपा **सेंस** भइ गेल हे
984.	**सेंस**	-	खजाना रोड सेंस, ढेमना माल गुजारिक संग रोड **सेंस** देल हे।
985.	**सुता**	-	सुइत जा
986.	**सुता**	-	तागा
987.	**सोंठा**	-	निफुट होवा, देमनाक देहि-गात एकदम **सोंठा** हइ।
988.	**सोंठा**	-	आराम करा, ढेमना ढेइर काम भेलइ, आब तनि **सोंठा**
989.	**हलका**	-	छेतर
990.	**हलका**	-	हालुक
991.	**हरदी**	-	हल्दी
992.	**हरदी**	-	हारेक बोली
993.	**हार**	-	हल जोतेक हार
994.	**हार**	-	घेंचाक हाइर
995.	**हार**	-	परास्त
996.	**हाल**	-	कुसल, मंगल
997.	**हाल**	-	नमी
998.	**हाल**	-	गरू, गाडिक चाकेक ऊपरी बँद
999.	**हाँस**	-	हँसो
1000.	**हाँस**	-	हंस
1001.	**हिया**	-	गाय
1002.	**हिया**	-	हिरदइ
1003.	**हुक**	-	मारो
1004.	**हुक**	-	झटका

1005. **हुड़गुम** - चुपचाप बइठे ओला
1006. **हुड़गुम** - एक पंछी
1007. **हेला** - पानी में जावा
1008. **हेला** - लापरवाही
1009. **होड़** - मानुस
1010. **होड़** - ढेर, अँइटाक होड़
1011. **होड़** - जिद करे ओला, ढेमना **होड़** मानुस लागे।

बेयाकरन

आरो भासा गुला रकम खोरठा सबद के भी,

(1) संइगा (2) सरबनाम (3) बिसेसन (4) किरिया (5) बितल किरिया

(6) किरिया बिसेसन (7) अबिअइ (8) जोरनी सबद के बेवहार हव हे।

खोरठा मे सबदबइन के मोटा-मोटी दु भाग करल जा-हइ।

(1) खोरठाक आपन ठेठ सबद

(2) दोसर-तेसर भसवइन से लेल, मेसर-कोसर सबद

जइसे-

(1) ठेठ में- ठोपा, खरठी, मेरखु, गेड़ा, ओझा, ठोपा, अलखा, ढोढ़ा, लेंदा, रेगंटा, नरकट, घेंचा, खुखड़ी, परपरी, फुरछवेक

(2) मेसर-कोसर मे- कुसती, कथा, कतारी, करात, असनान, इसकुल, मास्टर, सरीर, बोली।

संइगा

अंग्रेजी में - Noun is naming word जते नाम सोव के संइगा कहल जा हे।

ई नामें सोव चीज बसुत, जीव जंतु, जोघो, आर भाव विचार भी संइगा में गनल जा हे। जइसे-

(1) बेकति वाचक - बेगइत आर जोघो- गुड्डु, बुधु, बिरजू, गुलू, कोदवा, किरीबुरू, नागपुर, खोरठा, नागपुरी, दिल्ली, लंदन

(2) जाति वाचक- गरू, डांगर, छउवा, पढ़ुवा, पोहना, नदी, गीदर समुन्दर, पहाड़, टुंगरी।

(ख) दूर वाची- दूर के संकेत करवइया-

परानी बाची - अपरानी बाची

उ ओह ओहे - उटा/ओहटा/सेटा

सबंध कारेक रूप -

उकर ओकर ओहेकर - उटाक ओहटाक सेटाक

(3) सबंध बाची- जे/से/ते

संबंध कारेक रूप जेकर सेकर तेकर-

(4) प्रश्नवाची सरबनाम - के/कउन/कोन

संबंध कारके रूप - केकर, कउनकर कोनटा

(5) समइ बोधक सरबनाम - कखन/जखन/तखन/एखन/सेखन, कहिआ

संबंध कारके रूप - खनेक/जखनेक/तखनेक/एखनेक/सेखनेक, कहिआ

(6) दिसा बाची सरबनाम - कने/जने/तने/एने/ओन/हिने/हुने/हिंदे/हुँदे

संबंध बाची - कनेक/जनेक/तनेक/एनेक/आनेक/हिनेक/हुनेक/हिंदेक

(7) अनिसचइ बाची - केव/कोइ/कोन/आन/जरि कटि तनि

सबंध कारकें रूप - केउकर/कोइकर/केकर/काकर

(8) मातरा बाची - एते/ओते/जते/तते

संबंध कारेंक रूप - एतेक/ओतेक/जतेक/तकेक

(9) संजोगी सरबनाम - जे कुछ/जे सब/जे बेरा/जे समइ/ जे लेल

संबंध कारेंक रूप - जे कुछेक/जे सबेक/जे बेराक/जे सभेक

(10) असथान बाची - हिआँ /हुआँ /जहाँ /तहाँ /जंदे/तंदे

संबंध कारेक रूप - हिआँक/हुआँक/जहाँक/तहाँक

परकार या गुन बाची - अइसन/वइसन/तइसन/कइसन/ जइसन

संबंध कारेक रूप - अइसनेक/वइसनेक/तइसनेक/कइसनेक/

जइसनेक

हिंदी में भी लिंग के प्रक्रिया नियम नाञ हे

एके जाइत में लिंग बदइल जा हे जइसें

लोग पुलिंग	जनता स्त्रीलिंग
वर्ग पुलिंग	श्रेणी स्त्रीलिंग
पवन पुलिंग	हवा स्त्रीलिंग

बोड़ छोटा भेला पर भी लिंग बदइल जा हे जइसें

थाल पुलिंग	थाली स्त्रीलिंग
कड़ाह पुलिंग	कड़ाही स्त्रीलिंग
छाता पुलिंग	छतरी स्त्रीलिंग

खोरठा में नाता बदलले लिंग बदइल जा हे जइसें

हामर माञ् अइली - स्त्रीलिंग (अपनत्व)

तोर माञ् अइलो - पुलिंग

ओकर माञ् अइलइ -

कारक

खोरठा में कारक के चिन्हा गुला मूल सबद के संगे रहे हे, जइसें

कर्ता, ने	चाचा ने	ककवें	ककवइनें
कर्म, को	चाचा को	काकाक	ककवइनेक
करण, से	चाचा सें	काकाले	ककवइनले
सम्प्रदान, के लिए	चाचा के लिए	काका लागिन	ककवइन लागिन
आपादान, से	चाचा सें	काका सें	ककवइन सें
संबंध का, के, की	चाचा के	काकाक	ककवइनेक
अधिकरण, में, पर	चाचा में	ककवें	ककवइने
संबोधन, हे अरे	हे चाचा	एगो काकाहे	काका सब

एकर में देखल जाइ पारे कि कर्ता आर अधिकरन एके रकम के हवे हे।

खोरठा में संगिया सबद

हदर-बदर	लभर-चभर
लदर-फदर	लटर-पटर
लपक-झपक	लझर-बझर
लटक-पटक	लफर-धफर
लहक-चहक	लरक-बरग
लड़र-बड़र	लधका-लधकी
लचर-पचर	लब-लबी
लदरी-पोटरी	लग-लगी

अइसने हजारो हजार संगिआ सबद गरहल जाइ पारें।

पर्यायबाची सबद

बइरसा देखवे खातिर खोरठा में अनगइन सबद हे

पानी फिस फिसा हे	पानी रदरदाइ के बइरसे हे
पानी पुहि काटऽ हे	पानी झर-झराइ के बइरसे हे
पानी सुता काटे हे	सूप उझला पानी वइरसे से
पानी फुसरी काटे हे	हड़पा नाभा पानी वइरसे हे'
अगरी भिंजा पानी	रोद पानिक बइरसा
छगइर झिड़का पानी	

अइसने नाटा सबद के परकार देखल जाइ पारे-

गुडरा, गेड़ा गेड़मेठा, टिरा, टिरका, टिपरा, बितना, जुमना, ढुमका, टुना, ठना, लेदा, खाँट बुटु, ठुठकु, मुनि, बउना।

एक सबद के कते अरथ

सोंटा - छड़ी संगिआ
सोंटा - मारेक काम किरिआ
सोंटा - मालिस करा किरिया
सोंटा - पानी पोंछा किरिया
खोंटा - बड़ी चींटी

खोंटा - बाध्य करना
खोंटा - दाँत से काट कर छोटा करना
खोटा - चखका देखना
पाट - लूट के संगिआ सबद
पाट - आधा बोतल
पाट - कोठा पाटेक
पाट - खाटी बिछवे
पाट - हारेक पाट
पाट - नदिक पाट
पाट - भाग
पाट - तिरिथ के फोटा
पाट - माटिक मुरूत के आधार
पाट - मुरूत ठिन परनी-पाट

अधसेंस	अधबइसु	अधविदरा
अधनिंधरा	अधकसारी	अधखंचरा
अधपुरूआ	अधजिवाही	अधँबटइआ
अधमोरआ	अधपक्का	अधबँटइआ

खोरठा में रकम रकम के किरिया रूप हे
जइसे रहा किरिया सें
हे, हइ, हथ, हथे, हें, हा, हाइ, हों, हो हिए उत्तम पुरुस मे हिक ही स्त्रीलिंग में।
हउ, हो, हथु, हथुन, हिअउ मध्यम परुस में
हिअइ, हिअइन, ही, हइ, हथि, हाथिन, हइन हइएं अन्य पुरुस मे।

विपरित सबद

बेटा	-	बेटी	सूप	-	सूपली
मात्र्	-	बाप	पाँठा	-	पँठिअर
बाछा	-	फेटाइन	नुनु	-	नुनी
कडरू	-	फेटाइन	नुनु	-	नुनी
कडरू	-	साँढ़ारू	जेठा	-	जेठी

चिन्हा

1	थिरा	-	अल्प विराम coma	,
2	डाँड़ा	-	अर्द्ध विराम semi colom	;
3	थाम्हा	-	विराम colom	.
4	ठँढुआ	-	पूर्ण विराम fullstop	/
5	ठठका	-	dase	-
6	नेतरवइआ	-	संयोजक comiucliam	_
7	चिमसइआ	-	संयोजक	()
8	अधनिघरा	-	बिलोपन	……
9	पँइचवा	-	उद्धरण	::
10	अकचकी	-	आश्चर्य बोधक	!
11	गोडवइआ	-		:-

भाव वाचक संइगाः-

बढ़ा	बुढ़ारि
गिदर	गिदराली
वयस	बइसालू
चेंगा	चेगंरालि

नि' से

अदरइनि

चमकइनि

धधइनि

मतइनि

चेगरइनि

मोटइनि

अपनउति

पुरखउति

बपउति

भाव वाचक संइगा बनवेक नियम :-

क्रिया वाची सबद से :-

कर + नि करनि

कुट + इ कुटाइ

लड़ + इ लड़ाइ

सुट + इ सुताइ

देख + इ देखाइ

पेढ़ + इ पढ़ाइ

नाभ + इ नभाइ

चढ़ + इ चढ़ाइ

गाद + इ गदाइ

पिट + इ पिटाइ

फूद + इ कुदाइ

नाच + इ नचाइ

सुन + इ सुनाइ

संज्ञा का प्रयोग–

(1) जाति बाचक संज्ञा – व्यक्ति बाचक के रूप में –

'पुरी' शब्द सामान्यतः किसी नगरी (जाति बाचक) के रूप के लिए हैं। किंतु पुरी विशेशतः जगन्नाथपुरी के लिए प्रयुक्त हो रहा है, जो व्यक्ति बाचक है।

'प्रसाद' पंत' 'गोस्वामी' 'गाँधी' 'पटेल' आदि जाति वाचक शब्द है जो विशिश्ट व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त हो रहे हैं।

(2) व्यक्ति बाचक संज्ञा का जाति वाचक के रूप में –

किसी के असाधारण गुणो का प्रदर्शन के लिए व्यक्ति वाचक संज्ञा का प्रयोग, जाति वाचक के रूप में किया जाता है।

जैसे–

वह आधुनिक भीम है।

यहाँ भीम व्यक्ति वाचक है, परन्तु किसी के बलवान होने को प्रदर्शित किया जा रहा है।

जयचंदो की कमी नही है।

सीताओं के प्रति अत्याचार है।

जानाकियो की कमी नही है।

(3) भाव बाचक संज्ञा का प्रयोग जाति वाचक के रूप में :-

(2) समुह बाचक - बइठकी, जतरा, पेठिया, कलास, बरिआत, इसकुल

(4) दरइब बाचक –

कचा, पखन, लुगा, रूचिया, चोका

(5) भाव बाचक –

ढढ़नच, टिडुअइनी, ढनमनी, सनसनी, गरगरी

किरिया विसेसन आर जाति बाचक संइगा से भाव बाचक बने हे जइसे

गगनगनाइक से	–	गनगनी
किरिया सेंचरचराइक से	–	चरचरी
रटरटाइ सें	–	रटरटी
कनकन सें	–	कनकनी
बिसेसन सें चेका सें	–	चेंकाइठ
बड़ सें	–	बड़ताइ
गिदर सें	–	गिदराली
संइगा सें पीतर सें	–	पीतरांइध
लोभ सें	–	लोभाइल
आपन सें	–	अपनवल
सरबनाम सें हामें से	–	हम्हुवल।

◈ ◈ ◈

परिआइवाची सबद

"सबद खोजे तेलो-तरंगा, गेलों तोपचांची।
जहाँ गेलों बइसे खातिर, पइलों खाटी-माची।
एक अरथ के ढेइर सबद, खोंजलों खाँचिक-खाँची।
जाना गीदर अइसने सबद, कहाइ परिआइवाची।"

सोब भासा में सबद के झार हे। सबद के भाँडार हे। एकरे कम आर बेसी सें, भासा नीमर आर बरिआर हे। भासा में सबद के रकम-रकम के परकार हे। अइसने समान अरथ के सबद के छाँइट-छाँइट हियाँ सँचल गेल हइ, जकराँ परिआइवाची सबद कहल जाहे। ई कितापें अइसन गारो सो (1100) सबद के संगाठल गेल हइ।

भासा के दिढ़गर, दमगर, बोलगर बनवे खातिर अइसन सबद गुला के टोवे-टमड़े के दरकार हइ। परिआइवाची सबद के मदइत सें कोनो संबाद सरकस हवे हे, जबरजस हवे हे। जइसन परिआइवाची सबद के बेबहार कइर कहल जाइ पारे कि खोरठें परिआइवाची सबद अकूत हे, अनगइन हे, अति हे, अथाह हे, अगाध हे, अपरिमित हे, अनरी हे, अनखाही हे, अनथाही हे, अलिंगा हे, अनगिना हे, अनठेकान हे, अमेला हे, अंधपथार हे, देदार हे, बेसी हे, खूब हे, भरपूर हे, जते मन तते हे, कचरकूट हे, ठेलम ठेल हे, ढसमढस हे।

भासा के दमगर दिढ़गर, बोलगर बनवे खातिर अइसन सबद के खोजे में हड़पा काल तइक हबड़े हतइ। सगरे टोवे-टमड़े हतइ। अइसन सबद गुला के टोइ-टमइड़ के संगाठे में मानिन ए.के. झा बहुत काम करल हथ। ऊ 'नाटा' सबद के, बइरसा के, आरो अइसने ढेइर सबद के समान अरथ में डेढ़-डेढ़ सो सबद तइक बतवल हथ।

सबद भासा के रकत हे, साहितें सबद के बहुत महत हे। कोनो संवाद के सकत बनवे में एखनिक मदइत हर बखत हे। सइले हामें सोब साहित परेमी से कहबो कि खोरठाक खोजें, देखवा आपन बोल-बुता, आपन कुबइत, आपन ताकइत, आपन खेमोता, आपन चेठा, के लगवा, देरी नाञ् करा, लाइग जा चटपट, चाँड़े-माँड़ें, ताता-ताही, ताड़ा-ताड़ी, तुरते, जलदि, जुनजुनात, फुरति, दन-दन, तुरता-तुरती काहे कि

एखन बेसी खोरठा सबद सब हिंदे-हुँदे हे, तितर-बितर हे, छिरिआछाट हे, छिति छिन हे, सबद गुला लटवालाहइर हे, बेरबाद हे, नेसनाबुत हे, छेक-छातुर हे, मटिआमेट हे, नाना-थाना हे, बेआकुल हे, आलाचार हे, काहिल हे, ढिपाढान हे। सोब सबद गुलाक समटेक जर-जोगाड़ करा, बंदोबस्त करा, बेबस्था करा, परबंध करा, इंतजाम करा। आपने करा, नाता-गोता, आपुस-कुटुम, जोर-नार, गोतिया, रिस्ता-नाता से काहा, तभीं खोरठा भासा आर खोरठा भासी बाँचल रहता, जगजगिया रूपे चिरोक्काल।

नाञ् तो माएक भासा-बापेक माटी निमराझार हइ जितो, ओझराइ जितो, निंघइर जितो, फुराइ जितो, सोब कुछ खतम होइ जीतो झारखण्डी साहित सबद संसकीरति के बाँचाइ राखे पारलें, पिरथिवि परकीरति परिआबरन पबितर रहतइ। संसारें हुब-हुलइर, हुलास, हरस, रिझबाइर, रीझ-रंग, खुसी, आनंद, मस्ती, अखरा ढोल-माँदइर, बाँसी, डोहा, झुमइर, चाँचइर आर झलका-झुमइर सदाइ रहतइ, रीझे राँगल राइत आर हुबे भोरल दिन।

जैसे -

कचा	-	पइसा, दर दरइब, संपइत, किरी, धन।
घाघ	-	घाखुर, चाँलाक, ओगार, पटु, चरपट, सइतान।
जोधो	-	थान, ठाँव, ठौर, ढेकान, पाता, गढ़।
पट	-	उलटा, उलट, अउँधा, पेट-दाबरू, पेट-कुनिया।

परिआइवाची सबद

अ

1.	**अक**	-	उलटिक साड़ा, ओकाइ, वोमी, छाँट, उलटी, कइ
2.	**अटक**	-	रूकावट, विधिन-बाधा, रोक, अटक
3.	**अरज**	-	नेहोर, विनती, परथना, खोसामइद
4.	**अचरज**	-	अड़गुड़, पेंच, अजब, अलबत, अजगइबी अबाक
5.	**अंदाज**	-	अटकर, अनठेहरी, अटकल, अनथाही, अनुमान, अनरी, अनखाही
6.	**अक्खड़**	-	गंवार, अनारी, जिदाहा, काञ्
7.	**अजगड़**	-	अरकुंजल, बलगर, बरिआर, मजगुत, अजगुत आँट, सकत,
8.	**अनइत**	-	खूब, अति, वेसी, अलिंगा, ढेर, बहुत, अकूत, अगाध, अनगइन
9.	**अजलइत**	-	झंझट, खटखट, हरहट, कलकल, खिटपिट
10.	**अनवरत**	-	सगरखिन, लगस्तर, सदाइ, बारो महिना तिरिस काल
11.	**अकूत**	-	अनगइन, अनइत, वेसी, अति, अथाह, अपरिमित, अगाध, अनरी, अनखाही, अनटेकान, अलिंगा, कचरकूट, देदार, अछल-गछल, अनथाही
12.	**अनजानति**	-	असखें, अनथाही, बेजानती
13.	**अगधा हे**	-	गझा हे, अँइठा हे, अदरा हे, छरके हे
14.	**अधिअन**	-	पढ़ा-सुना, सीखा, जाँच
15.	**अजगइबी**	-	अड़गुड़, अचरज, अजब, अलबत, पेंच ओला
16.	**अनचिन्हार**	-	अइरा-गइरा, अनारी, बेबोहन, अनजान
17.	**अमीर**	-	मातबर, तलेबर, धनी-मानी, धनगर, धनवान
18.	**अबधइर**	-	एखन-एखन, अभी-अभी, तुरते
19.	**अबइर**	-	अबरी, इस बार, फहक
20.	**अरकुंजल बोन**	-	बीजू बोन, अजगढ़ बोन, अरइन बोन
21.	**अछल-गदल**	-	अलिंगा, अनइत, खूब, अगाध, भरपूर, ठेलम ठेल

22. **अरगुझाइल** - उलझल, ओर-छोर हेराइल, अझबझाइल
23. **अनस** - अनकुर, अनगुइत
24. **अरसी** - अइना, दरपन, सिसा
25. **अबगा** - ताजा, अरदा अबधइर, एखन-एखन, टटका, एखन के, रोड़का, रोऽका
26. **अइग टंगवा** - बदमास, डिंगर, चरपट, ढढ़-नचिया, ढँठ, लंपट, लंठ, उइत पतिया
27. **अनगइन** - अनगिना, अकूत, अपरिमित, अथाह, अनइत, अगाध, अनरी, अनखाही
28. **अड़गुड़** - पेंच, अबुझ, अजगइबी, अचरज, बझाँट
29. **अजठ** - महा मूर्ख, वेकूफ, उज्जट, निपट-काना, धोंधा, माठा-मेढा, बुड़वक, नेंधा, नोंधा, नोंधरा, भोड़, बजरबट्‌ट, मेढ़ा, बयाहा, लेपा, मोठ, लेल्हा, रोठा, सोढ़-मोढ़, लड़बक, हुरमुठ, लेभरा, भेंका, भोंका, मरकट, धेंधा, धुंधरा, धोंधा, धोधरा, धोधवा, नाठा, मउगा, रेंगटा, ढोकसाहा, नडुर नढ़, बयाहा, बोका, बेंड़ाइल, ओछाहा, छुदर, घटिया, अदना, मामूली, अलगा।
30. **अगड़-दिगड़** - इधर-उधर, अनाप-सनाप, अल्ल-बल्ल, अलाइ-बलाइ, इटा-उटा, इकर-उकर
31. **अनगुते** - बहुत सबेरे, झलफले, भोरे, विहाने, अंधरे-पराते, भिनसरे, मुँह अँधरे, लोहखरे, भिनसरिया
32. **अड़ बेरिया** - आइग-पानिक बेरा, आइग काठिक बेरा, आइग अधनेक बेरा, साँइझ पहर, फुल सुंदरिक बेरा
33. **अनुरोध** - नेहोर, छेवँाइध, छाँवाइध, विनती, परथना, गोड़लगी
34. **अदना** - ममुली, अलगा, तुछ
35. **अन ठेहरी** - अनजान,अटकल, आँधे-मुँधे, जहाँ-तहाँ, अंधपथार, अनथाही, अनखाही
36. **अंदोर** - गुइल-गोहाइर, हल्ला-गुल्ला, कोआँइर, चेंचाइ

37. **अउरत** - जनि, मेहरारू, जनाना, बेगइत
38. **अबाक** - आसचरज, अनहोनी, अजब, अजगइबी, अद्‌भुत
39. **अनठेकान** - अंधपथार, अनजान, अनचिन्हार, बेपाता

आ

40. **आउड़ी** - पोंआँर, आँटी, बिचाली, गोछा, मुठिया
41. **आपुस-कुटुम** - आपुस-पर, जोर-नार, आपुसाली, हित, कुटुम, समन्ध, रिसता, नाता-गोता, जोर-नार
42. **आहना** - कहनी, कहावत, भइनता
43. **आहला** - भरक, आलो, गरम, धाह, धोंका
44. **आड़ा-गोड़ा** - उता-सुता, ओर-छोर, मुडा-गोड़ा, ठेकाना, आता-पाता, ओर-पुथान
45. **आबगा** - एखन के, ताजा-ताजी, बिलकुल अबधइर के, टटका
46. **आजी** - बापेक माञ्, गूँगू माञ्, दादी, बोड़ो
47. **आँट** - सकत, डाँट, कठिन, अनकुर, आड़ा-गोड़ा, उता-सुता, ओर-छोर, मुड़ा-गोड़ा
48. **आफइत** - मसकिल, बिपइत
49. **आँधे-मुधें** - जँदे-तँदे, हिंदे-हुँदे, अनखाही, अनथाही, जाहाँ-ताहाँ
50. **आँधार** - राइत, अँधिआर, अँधरिया
51. **आलाचार** - बेबस, पराधिन, अबस, बर्से
52. **आखिर** - अंत, सेंस, पेछु
53. **आहला** - झरक, आलो, धोंका, लहक, लपक

इ

54. **इलिम** - सिछा, गिआन, बुइध, खेमोता, अकिल, हिकमइत
55. **इंजोर** - आलो, परकास, उजर, रोसनी, चमक
56. **इरा** - इरसा, डाह, जलन, राइर
57. **इछा** - हिंछा, चाह, खाँहिस, मांग, रूचि, रोख
58. **इड़के** - दउड़े, उछले-कूदे, घुर-घुराइ
59. **इजइत** - आदर, माइनता, सवागइत, पइरछन, पानी-पिर्हा,

सनमान

60. **इति** - खतम, उठा-उठी, उछिन, सेंस, फुराइ

उ

61. **उमका** - दउड़ा, पँइंरा, उछला, मलके, चमके
62. **उसट** - नीरस, बेसोवाद, फिका, रूखा, बंजर
63. **उटपटांग** - जेटा-सेटा, अंधा-धुंध, अनथाही, अखाही
64. **उछिन** - खतम, इति, निमराझार, उजर, फुराइ
65. **उजर** - चरक, सादा, साफ, चेरक
66. **उसास** - सहोलियत, सहयोग, ओसान
67. **उतसाह** - आनंद, होसला, उमंग, हिंच्छा, कस-कसी, कहकही, खदखदि, खबखबी, खबखब, खदखद, हिलोर
68. **उसुक-पुसुक** - हिल-डुल, हिंदे-हुंदे, घसक-पसक, उता-सुता
69. **उटका-पँइचा** - ओतन गोतन, नोखता चिनि, उलखा, खोदा-खोदी
70. **उदास** - मनझान, लरकल, खिदोर
71. **उपाय** - जुगति, साधन, जोगाड़, रसता

ए

72. **एका** - अकेला, एकाइ, बिन-संगिक
73. **एक मुसुत** - एके बइर, एके धाव, एक दफे
74. **एवज** - बदले, बदे, ओजी
75. **एक कटि** - कटिकुन, थोरे कुन, तनिकुन, किंचित
76. **एखन** - अभी, तुरते, लगले, अबधइर

ओ

77. **ओसान** - सहज, सुगम, सोझ, सहज
78. **ओड़** - आड़, ओट, छिपल, नुकाइल, पाछु,
79. **ओदा** - भिंजल, गिला, अध-सुखा, मसुवाइल
80. **ओसोद** - दवाइ, उपाइ, बुटि
81. **ओजोन** - भार, बोझा, लदनी

82. **ओगार** - चलाँक, पटु, दइछ, हुसिंयार घाघ
83. **ओउरी-पथारी** - अंधपथार, आँधे-मुंधें, जंदे-तंदे, छिरिया-छाट, जहाँ-तहाँ
84. **ओनाव** - सुन, धेआन दे, कान आड़ा, कान पात, कान देवा

क

85. **कटुआ** - खइटका, घाँस-फुसेक टुकरा, छोट साँकार, नरकट, पातर झुरी, तिनका, तिरिन
86. **कचकच** - झंझट, बिबाद, झगरा, कुल-कुली, कलकल, हरहट, लउंवा-लाठी, कउवा-काठी, खट-खट, खटपट, खिटखुट, खिटपिट, घचघच, चाँञ्-चाँञ्, झकझक, झाँञ-झाँञ, तकझक, घचपच
87. **कचा** - पइसा, दर दरइब, संपइत, किरी, धन
88. **कचरकूट** - अछल-गछल, अलिंगा, अनठेकान, अनखाही, देदार, अनगइन, अनइत, बहुत बेसी, अति, अथाह, अगाध, अनरी, जते मन तते
89. **कपट** - छल, छइब, झूठ, धोखा, ठकबाजी, पेंदल
90. **कटु** - कबज, बेमारी, कुबोली, गारी, कठिन
91. **कटिकुन** - थोरे कुन, तनिकुन, एक कटि, तरिसुन
92. **कइदा** - रित, बिधि, ढंग, तिहा, ततबिर, नियम, बेबस्था, खेमोता, इलिम
93. **कइसनो-मइसनो**-बेगारी, कोनो रकम, जने-तने, फाहें, बेमन सें, जइसें तइसें
94. **कबरा** - टिका-फोका, चितकाबरा, बहु रंगिया, चितल
95. **कइदगर** - लुइरगर, खुब बेस, ढंग गर, बेस रकम, मनेक मतन
96. **कसुर** - गुन्हा, दोस, खुनुस, चूक, पाप, भूल
97. **कलें-बलें** - चुपें-चुपें, थिर, चुपचाप, मउन, गुपुत रूपें
98. **कँकवा** - कँकरी, कंघी, चिरून, मुँड़ चिरनी
99. **कसकस** - सकत, चाँपल, नाप सें कम, आँकस, सँकरा, आँट
100. **कमजोर** - ठस, दब, नरम, हिन, निमरगर, निरबल

का

101. **काँञ्** - कंजूस, किरपन, सुम, चिटा, खोटका, चिपास, चिमट

102. **कादा** - पाँइक, कीचड़, कादो, गारा, पलि

103. **काँध** - गरदन, घेंचा, नरटी, टेंटुआ, घेंटुआ, कोर कोंधी

104. **काबू** - बेबस, अबस, पराधिन, बसे, काहिल, चेठा हारा

105. **काना पतियारी**- पेंदल, झूठ, अंधविसवास, फहिया-फाजिल

106. **काहिल** - काबु, अबस, बेबस, बर्से, चेठा-हारा

107. **काबिल** - जोइग, लुइरगर, हुसिंयार, कुबइत, चेठगर

108. **काँव-काँव** - चिकचिक, झकझक, झाञ्-झाञ्, तकझक, दिकदिक, झागरा-झाँटी, कुलकली, झँझट, कल-कल, कउवा-काठी, लउवालाठी, हरहट, खट-खट, खटपट, खिटखुट, खिचखिच, घचघच, घिचपिच-घिचपिच, चाँञ्-चाँञ्

109. **काल्हा** - ठंढा, जुडाइल, हेमाल, सितल, कनकन, सिल

कि

110. **किचकिच** - झकझक, झाँञ-झाँञ, तकझक, दिकदिक, झँझट, कुलकुली, कलकल, झगरा-झाँटी, कउवा-काठी, लउवालाठी, हरहट, खट-खट, खटपट, खिटखुट, खिटखिट घचघच, घिचपिच-घिचघिच, चाँञ्-चाँञ्, चिकचिक

111. **किसमइत** - कपार, तकदीर, भाइग, करम, नछतरें

112. **किरती** - जस, मान, परतिसठा, नाँव, खेआति, पुइन

113. **किरिया** - कसम, परतिंगा, सपथ, काम, कारक के एगो भेद

114. **कियारी** - गाँड़ारी, थाना, भेलि, खँड, भाग

115. **किरी** - पइसा, दर-दरइब, संपइत, धन, पुंजी

कु

116. **कुल्ही** - गली, खोइर, पाड़ा, मोहल्ला, पातर सँड़क

117. **कुटा** - घुसा, डाँगेक मुड़ी सें हुर-कुटा, थुरा, मुका बाँइध हुरकुटेक काम
118. **कुटकुटी** - चिकचिक, जलन, झगरा, झँझट, कुलकली, लउवालाठी, हरहट, गुटगुटी, खिटखिट, घचघच, घिचपिच-घिचघिच
119. **कुबइत** - चेठा, ताकइत, खेमोता, बुता, बोल
120. **कुरता** - कामिज, बंडी, आंगा
121. **कुधा** - डिंग, ढेइर, गादा, हुढ़ा, कुधि
122. **कुनमुन** - नाराजगी, नाकर-नुकुर, नाञ्-नुकुर
123. **कुटुम** - हित, रिस्तेदार, नाता-गोता, जोरनार, आपुस
124. **कुबर** - टेढ़ा, बेंका, भेचका, बकर
125. **कुइला** - करिया, कार, कोया, कुहरकुस
126. **कुरचाहा** - झगराहा, कपटाहा, बिसाहा, कुइट लाहा, खोंचाहा
127. **कुकरपेटा** - लोभी, छोछर, अदखलाहा, जकर पेट नाञ भोरे

के

128. **केंथा** - नेंदरा, गेंदरा, बिछोना
129. **केंवार** - कोपाट, दोरोजा, पल्ला, टाटी

को

130. **कोरकोंधी** - घेंचा, नरटी, गरदन, काँध, घेटुवा
131. **कोया** - करिया, कार, कुइला, कुहरकुस
132. **कोवांइर** - गोहाइर, गुइल, हल्ला-गुल्ला, चेंचोनी, चेंचाइ, ढोढा-फारा, डोंड़ाइ, नरटी चिरा
133. **कोकलाहा** - डरपोकना, डरूक, छइब, सकसकिया, बिना डर के डर

ख

134. **खइरका** - झुरी, कटुआ, पातर काठी, खइटका, नरकट, तिनका
135. **खचपच** - झगरा-झंझट, कुलकुली, कलकल, लउवालाठी,

कउवाकाठी, हरहट, खचखच, खट-खट, खटपट, खिटखुट, खिटपिट, खिचखिच घचपच, घिचपिच-घिचपिच, चाँञ-चाँञ, चिकचिक, झकझक, झाँञ्-झाँञ्, तकझक, धिचधिच

136. **खरनठ** - उसर, रेढ़, नोनियाहा, बाँझ, खरनाहा, रेहड़

137. **खँडो** - फुटल, बोही, टुट

138. **खयानत** - हानि, बेरबादी, नोकसान, नास, घचका, डँड़, घटि

139. **खसता** - नरम, चुरमुर, झुरझुरिया, खर-खर, कुरभुर

140. **खपतान** - बदमास, बद, बदजाइत, दुस्ट, खच्चड़, नटखट, झगराहा, खल

141. **खराप** - बेकार, नस्ट, पोचोल, गलल, बसतल, भुवाइल

142. **खचाखच** - ठसमठस, टुलेटुल, लबालब, तारा ऊपरी

143. **खय** - खरच, नोकसान, हानि, घँसान, खइ

144. **खरखर** - पकिया, उदार, बेस, सच्चा, बिसवासी, सतबादी, बेसलोक, खरा

145. **खडजंतर** - जाल, कपट चाइल, भितर घात, घुरपाक, घाही

146. **खल** - दुसुट, बदमास, झगराहा, खच्चड़, बदजाइत, खपतान

147. **खरखस** - रूखड़, खदखुदर, खुदरा, खरखर

148. **खरखाँह** - विसवासी, सच्चा, पकिया, खरा, खरखर, सतवादी

खा

149. **खाँट** - छोट, ठुठकु, नाटा, टुना, टेपा, रेघा, गुड़ा, खेपचा

150. **खाँटी** - सुध, ठिक, पवितर, सुचा, खालिस

151. **खाभढ़** - असुध, भेल, मेसर-कोसर, गड़बड़, खाराप, मेझर

152. **खातिर** - मान, इजइत, सनमान, सवागत, पइरछन

खि

153. **खिचा** - नरम, जाली, सोहनो, पोहा, फुनगल, सिसु

154. **खिचखिच** - झंझट, कुलकुली, कलकल, झगरा-झाँटी, हरहट, खचपच, खटखट, खटपट, किचकिच, खिटखुट,

खिटपिट, घिचपिच, घचपच, चिकचिक, झक-झक, झाञ्-झाञ्, तकझक, दिकदिक

155. **खिल** - परती, बंजर, खाली, अजवाइर, उसट

156. **खिस** - राग, गोसा, क्रोध, गुटगुटी, तमतमी

खु

157. **खुँट** - बँस, कुल, गुसटी, बरग, परकार

158. **खुती** - थइली, धोकरी, पाकिट, थोली, बोरिया

159. **खुनुस** - बहाना, निंग, कारन, ओजोह

160. **खुसी** - आनंद, बेस, फरहरी, मउज, मसती, हुब, हरस, हुलास, हुलइर, खद खदी, गही गही

खे

161. **खेंचा** - टुकरा, टोना, खंड, हिंसा, भाग

162. **खेमोता** - हिमइत, बुता, चेठा, जोर, ताकइत, बोल

163. **खेदा** - भगवा, बहरवा, निकाला, हटवा, दुर करा

164. **खेपा** - पागल, पगला, दुरमतिया, छिन-मतिया, कुकुर मगजिया

165. **खेंखरी** - दुबर-पातर, लटल, सुखइल, टेटाइल, खेंखराइल

खो

166. **खोराक** - खाना, आहार, दाना-पानी, खोरपोस, भाग, हिसा

167. **खोटका** - कंजूस, काँञ्, सुम, किरपन, चिटा, चिमट

168. **खोल** - ढोंढोर, बड़का भूर, खोढ़ोर, खोह, लेप के खोली किरतन के बजना, खोलेक किरिया

169. **खोर पोस** - खोराखी, खाइक-खरच, दाना-पानी, जिनगिक खरच

170. **खोह** - खोल, ढोंढोर, बड़का भूर, भोंभोर, माँद

171. **खोचाहा** - झगराहा, कचकचिया, खटपटिया, टेरा, रेना, बइमान

ग

172. **गमक** - गंध, बास, महक, गमगमी, महमही
173. **गच्चा** - हानी, जरीबाना, नोकसान, डँड़, घचका, खयानत, घटि
174. **गछा** - सिकार करा, माइन लेवा, जिम्मा लेवा, पेड़, बिरिछ
175. **गझा हे** - अदरा हे, मलके हे, नितरा हे, कुरच हे, अलगे हे
176. **गपोड़** - गप्पी, मुँहगर, बतरस, बतक्कड़, गाल-मरनिहार, घखे ओला, घोख निहार, पेंदलबात
177. **गइत** - भरती, सामिल, लटइक, छेद में ढुइक जावा, बेजारें, बेबस होवा
178. **गडरा** - चेडरा, पडरा, बेल मुंडा, मुँडरा, बेलचट
179. **गँव** - ताक, सुविधा, मउका, जुइत, आराम

गा

180. **गाचा** - घाटा, नोकसान, डँड, हानि, घचका, घटि
181. **गात** - देही, सरिर, काया, सावाँग, आकार
182. **गादा** - बेसी, ढेइर, थोक, कुधा, टाल, लाट, थाक, खूब-मारा, खुँटा सकत करा
183. **गारा** - कादा, लेवा, किचड़, पलि, मवाद, चिपरा
184. **गामाइ** - देखाइ, निराइ, नइजराइ, लोको हे

गि

185. **गिदर** - चेंगा, छउवा, लड़का, बुतरू, बालक, छोंड़, चेंगइर

गु

186. **गुड़ा** - मारा, पिटा, ठोंका, गुल गुलवा, धोवा, दिलदिलवा, नाटा, खाँट
187. **गुसटी** - पुस्त, खुँट, बँस, कुल, खानदान, गोतर
188. **गुटगुटी** - राग, जलन, खिट-पिट, गुबार, भड़ास, गुमाइर

189. **गुन-गिआन** - पोढ़ा-लिखा, सद्सिछा, पढ़ेक बेस फल
190. **गुमसुम** - चुपचाप, गुड्डुम, हकबक, सुगुमबरें, रूसल रहा

गे

191. **गेड़ा** - नाटा, बितना, जुमना, ढुमका, रेंघा, गेड़-मेढा, गुड्डु, गुड़ा, गुडरा, टिपरा, टेपरा, टिरा
192. **गेंदरा** - नेंदरा, कॉंथा, डिसना, बिछोना, गेंदर

गो

193. **गोदा** - बोका, बुड़बक, घोंचा, घेंधा, गँवार, जाहिल, लेका, निपट काना, गाधा, उज्जट, बइला, बयाहा
194. **गोधा** - संगी, साथी, जोड़, बेकुप, कम बुइध ओला,
195. **गोला** - मालिक, सामी, मीरा, गोल आकार के, बम, भंडार

घ

196. **घचघच** - झंझट, हरहट, किचकिच, खिटखुट, खिट-पिट, खटपट, खटखट, खचपच, झगरा-झाँटी, कलकल, खिचखिच, घिचपिच, चिकचिक, झक झक, झाञ-झाञ, तकझक
197. **घचका** - घाटा, गाचा, नोकसान, डँड़, हानि, जरीबाना, गच्चा, घटी, झटका, छक्का

घा

198. **घाघ** - घाखुर, चाँलाक, ओगार, पटु, चरपट, सइतान
199. **घात** - खड़जंतर, कपट चाइल, जाल, तिकड़म, दाव, पेंच
200. **घाखुर** - कपटी, छलिया, ठकबाज, तिकडमबाज, चँट
201. **घाही** - चोट, पेंच, माइर, घुरपाक, पेंच, दाव
202. **घिनघिन** - पोंचल, सरल, चिकठ, छि छि, छिया
203. **घिसट** - गंदा, गिदाहा, घिनाहा, घिसटाहा, पोचलाहा

घु

204. **घुरपाक** - पेंच, खड़जंतर, घात, घाही, चरपटाली, दाव-पेंच
205. **घुरान** - घुमाव, घुरा, मोड़, बेंका, कुबर, घुरेक बेरा
206. **घुरा-फिरा** - आवा-जाहि, आवा-जावा, आना-गोना

घे

207. **घेंचा** - गरदन, नरटी, टेंटुवा, काँध, घेंटु, घेंटुआ
208. **घेरान** - पचरी, हाता, बेड़, छर देवाली, घेराव

घो

209. **घोंचा** - बोका, बुरबक, गोंदा, गँवार, जाहिल, लेका, बयाहा
210. **घोच-पोच** - गड़बड़, घिचपिच, घचपच, घुरपाक, खचपच, उटपतांग
211. **घोंपा** - घोद, झोंपा, गोछ, झोटरी, काँधी

च

212. **चक** - छेतर, हलका, सिमाना, गाँव, चमकेक किरिया
213. **चटपट** - चाँड़े-माँड़े, ताताताही, तुरते, ताड़ा-ताड़ी, जलदि
214. **चहट** - भगाव, खेद, रगद, हटाव, दुर कर, चमके ओला रंग
215. **चरपट** - घाघ, घाखुर, ओगार, ढँठ, बज्जाइत, डिंगर,
216. **चटकन** - थप्पड़, चाट, झापड़, झाप, लप्पड़
217. **चनफन** - फुरतिला, चहट, चहचह, गद-गद, तेजगर
218. **चकरीघूम** - दिसा-भरम, हकबकी, ठाढ़ी, दिग-भरम, दिसाहारा
219. **चलाँक** - हुसिआर, बुइधरगर बुइधलग, चनफन, तेंताल

चा

220. **चाक चमक** - टिमटाम, ठाठ-बाट, गदगदी, रंग-रंगी, तामझाम
221. **चासा** - खेतिहर, किसान, चासी, जोत दार, खेती करनिहार
222. **चाँज्-चाँज्** - झगरा, झाँटी, कुलकुली, झंझट, कलकल, हरहट,

खटखट, खटपट, खिच-खिच, घचपच, कउवा-काठी, चिकचिक, झक-झक, झाञ-झाञ, तकझक, दिकदिक

223. **चाँड़-चपट** - चाँड़ा-चाँड़ी, चाँड-माड़, झट सें, तातामाही, तुरते, ततछन, हड़बड़, तड़बड़, धड़फड़, तड़तड, चाँड़े, जुनजुनात, फुरती में, जलदि-पलदि, दनदन, तुरता-तुरती

224. **चाटी** - कपट, छल, छइब, ठकबाजी, फाँकी, धोखा बाजी

225. **चाकर** - चउड़ा, फइलगर, ओसार, फइलल, पसरल, नउकर, कमियां, मुनीस

चि

226. **चिकचिक** - घचपच, झंझट, किचपिच, खिटखुट, खिटपिट, खटपट, झगरा-झाँटी, कलकल, खिचखिच, घिचपिच, झक-झक, झाँञ-झाँञ, तकझक, दिकदिक, खटपट, खचपच, चमके ओला, चिकन

227. **चिकठ** - घिसठ, गंदा, गिदाहा, घिनाहा, घिनघिन

228. **चिन्हाप** - परिचइ, चिन्ह-जान, पहिचाना, चिन्हल-जानल

229. **चिरोक्काल** - चिरोदिन, सबदिन, बारो महिना तिरिस काल, सदाइ

230. **चिपरी** - गोंइठा, उपला, सुखल गोबर, थापल गोबर के सुखल रूप

231. **चिपास** - कंजूस, काँञ्, किरपन, सुम, चिटा, खोटका

232. **चिन्हा** - दाग, नमूना, लकीर, मुरगी टेंग, निसान

233. **चिरोरी** - बिनती, नेहोर, खोसामइद, छाँवाइंध, कर-जोरी

234. **चिचि** - मास, सिकार, चोंथा-चिरा, झोरझार

235. **चिकन** - साफ-सुथर, बेस, परिसकार, तकतक, टनक, निठा, निफुट, निमन

चु

236. **चुक** - भूल, गलती, गड़बड़, नोखता, तफात
237. **चुकल** - दहिनाइल, छुटल, छिनगाइल, छँटाइल, बगदल
238. **चुइन** - बाइछ, छाँइट, पसिंद कइर, देइख सुइन के, ठोंइक-बजाइ के
239. **चुइल** - केस, बाल, बार, रोआँ, झोंटी
240. **चुहुल** - चिकन, तकतक, चहट, तेज, तेंताल

चे

241. **चेठा** - ताकइत, खेमोता, बुता, बोल, चेत,
242. **चेंगा** - गिदर, चेंगइर, बुतरू, पुता, लड़का, छउवा

चो

243. **चोका** - छिलका, बकला, खोली, खोहइला, छाल, फोइकला
244. **चोज** - चिनता, फिकिर, मोह, धेयान, वेयाकुल,
245. **चोंख** - तेज, धार, ताजा, चकमक, सनवल

छ

246. **छवि** - फोटो, चित्र, चेहरा, छहँइरा, छाँहुर
247. **छइठ** - दुख, पिरा, दरद, अजलइत, छेवाँइध
248. **छक्का पंजा** - धोखा-धड़ी, चाइल बाजी, तिकड़म, दाव-पेंच, ठक बाजी
249. **छड़ी** - सोंटा, सिटका, चाबुक, पइना, बाँस-बेंत के टहनी
250. **छपित** - गाइब, ओट, हेराइल, ओड़, नुकाइल
251. **छल-छइब** - चाइल बाजी, छाका-पाँजा, धोखा-धड़ी, दाव-पेंच, छाका-पाँजा
252. **छर-छर** - तेज-तर्रार, चुहुल, चनफनियां, झकझकिया, फुरतिला, पानी गिरेक कि.बि.
253. **छउवा** - चेंगा, गिदर, बेटा-बेटी, पुता, लड़का, आल

छा छि

254. **छाँछा** - अगरी, चाल, फरका, चाली, छाँहुर
255. **छिप** - छोर, ओर, गोड़ा, मुड़ा पुथना, नुकाइ कि.
256. **छिपाट** - संधान, अता-पता, सुग-बुग, टोह खोज, टवान
257. **छिरियाछाट** - हिंदे-हुँदे,तितर-वितर, छिरिआइल, छितराइल, अउरी -पथारी
258. **छिंड़ा** - छिनगाइल, एकाइ, नाता टुटल, अलगा, फाँका
259. **छितिछिन** - बेकार,नोकसान, लटवा-लाहइर, बेरबाद, नेसनाबुत
260. **छिपि** - छोटधारी, छिंपनी, पिलेट, उथर डुभी
261. **छिनाइर** - बदजाइत जनि, बेसवा, चरितर हिन, ढुकनी, रखनी
262. **छुछा** - खाली, गरीब, फोंका, खोहिला, फाँका, फोइकला

छे

263. **छेपक** - खाँट, छोट, नीचा, हेंठ, हिन
264. **छेंदा** - भुर, छेद, भुरूक, भुरकी, फाँका
265. **छेछर** - थेथर, बेलज, लीलज, बेहाया, निरलज
266. **छेक छातुर** - बेरबाद, नेसनाबुत, छितिछिन, नोकसान, लटवा लाहइर
267. **छेव** - घाव, चोट, आघात, टाँगाक माइर, सुरू
268. **छेइर** - जंगली डहर, रस्ता, गरू-काड़ा सें बनल डहर, पानी जइसन पइखाना।
269. **छेछरा** - बेरवाद, चुरचुर, नेसनाबुत, छितिछिन, बेकार, बेहाया, नड़ुर, थेथर

छो

270. **छोट** - खाँट, निन्ही, टुकरा, टेपा, टोना, ढुमका, दबगर, दुबर, ननका, नाटा, फुचा, बितना, बुटु, भुटका
271. **छोछोर** - लोभी, जुठखोर, थेथर, लिलज, बेलज
272. **छोर** - ओर, छिप, गोड़ा, धाइर, सेंस

ज

273. **जनि** – अउरत, मेहरारू, जनाना, नारी, इसतिरी, जोरू, कनिआँइ
274. **जजाइत** – संपइत, धन, दोलइत, अउकात, काचा–कउड़ी, टाका–पइसा
275. **जर–जोगाड़** – बेबस्था, परबंध, बन्दोबस्त,जोगाड़–जंतर, इंतजाम
276. **जबद** – जबिद, जप्त, कब्जा, हरन, भारी, बोड़
277. **जलदि** – चाँड़े, तड़बड़ी, जुनजुनात, तातांताही, फुरती, तुरते, ततछन, झट, ताड़ाताड़ी
278. **जमा** – जुमल, जुटल, गोंठाइल, गोछियाइल, जोड़, कुल
279. **जलइ** – कांटी, कील, कांटा
280. **जर** – बोखार, असुक–बेसुक, बेमार, बेजार, जजाइत, असुक
281. **जबर** – बोड़, जेठ, झाइल, धाखड़, बड़का

जा

282. **जाँक** – सकत, अकस, कड़ा, कठोर, कठिन, रोक, टान
283. **जाइज** – सही, उचित, ठीक, जुइतगर, नीमनगर
284. **जाड़** – सित, ठाँढ़ा, कनकनी, सितल, हेमाल, डुँडरू
285. **जादा** – बेसी, बहुत, अनइत, परिआप्त, अधिक, देदार, दोमे, पाथाइर
286. **जाम** – जबिद, अटक, रोक, डाँड़ाइल, थिर, थुम
287. **जाहिल** – बोका, गँवार, निपटकाना, बुड़बक, धेंधा, लेका, घोंचा, गोदा, गाधा, उज्जट, बइला, बयाहा, नरकट, नेंजरा–पेंजरा, लिलज, लेका
288. **जाला** – तकलीफ, दुख, बेथा, पिरा, कलेस, कसट, टिस, दिक–दिक, फझइत, मकराक बनवल जाल
289. **जान** – परान, जीव, अतमा, चेत, परानी

जि

290. **जिआन** - बेरबाद, नोकसान, हानि, घाटा, तेन-बेन, बिगान, सतियानास, तितिर-बितिर, नाना-थाना
291. **जिली** - खिचा, सोहनो, ननका, सिसु, फोर के पहिला रूप

जु

292. **जुग** - संवइ, काल, बेरा, पहर, सँवइ के सोबले बोड़ इकाइ
293. **जुटा** - जुमा, गोंठा, सामिल होवा, जामा होवा, संग होवा
294. **जुइत** - मउका, ताक, बतर, जोगाड़, जोंखा, साइत, जोंख
295. **जुनजुनात** - जलदी, चाँड़े-माँड़े, ताताताही, ततवाही, तुरते, ततछन, फुरती, चाँड़-चपट, ताड़ा-ताड़ी, तुरता-तुरती, दनादन, फोरन, सरपट, हरपइट, ततके, तड़ातड़, फुरती में, जलदि से, जलदि-पलदि

जे

296. **जे रंग** - जइसन, जेतरि, जे रकम, जे नियर, बिसेस रंग
297. **जेठ** - बोड़, सरगर, बीस, जोबोर, जोरगर, महिनाक नाँव
298. **जेब** - थोली, धोकरी, खोंइछा,खुती, पाकिट

जो

299. **जोंख** - मउका, ताक, बतर, जुइत, जोगाड़, साइत, जोगान
300 **जोधो** - थान, ठाँव, ठौर, ढेकान, पाता, गढ़
301. **जोड़ी** - गोधा, संगी, खुँट, लाग, डोरा
302. **जोधा** - वीर, बहादुर, बरियार, हिमतगर, जोरगर

झ

303. **झकझक** - चिकचिक, झंझट, घचपच, किचकिच, खिटखुट, खिटपिट, खटपट, खचपच, झगरा-झाँटी, कल-कल, खिचखिच, घिचपिच, चाँञ्-चाँञ्, झाँञ-झाँञ, तकझक, दिकदिक

304. **झनगा-झनगी**- एकाइ-एकाइ, एक-एक के, अलगे-अलगे, भिनु-भिनु, छिनगाइल
305. **झटपट** - तुरते, ततछन, चाँड़े, जुनजुनात, ताताताही, फुरती से, जलदि, जलदि-पलदि, झट, ताड़ा-ताड़ी, दनदन
306. **झंझट** - अजलइत, चिकचिक, घचपच, किचकिच, खिटखुट, खिटपिट, खटपट, खचपच, झगरा-झाँटी, कल-कल, झाँञ-झाँञ, दिकदिक
307. **झगराही** - लड़ाकिन, झँझटाही, किचकिचाही, कुरचाही, दिकदिकाही

झा

308. **झाँञ-झाँञ** - झकझक, चिक-चिक, झंझट, घचपच, किचकिच, खिटखुट, खिटपिट, खटपट, खचखच, झगरा-झाँटी, कल कल, खिचखिच, घिचपिच, चाँञ्-चाँञ्, झाँव-झाँव, तकझक, दिकदिक, हुइल-माइल, हाला-हुजरा
309. **झारन-झुरन** - निमराझार, सेंस, खतम, सिराइ, फुराइ
310 **झार** - घउद, गोछ, मोवाइर, झोंटा, जंगल, झारखण्ड के पहिला सबद
311. **झाइल** - लंबा, बोड़, लमहर, डोड़गा, ढांगा, कांसाक बनल बाजा
312. **झाँव-झाँव** - झकझक, चिक-चिक, झंझट, घचपच, किचकिच, खिटखुट, खिटपिट, खटपट, खचखच, झगरा-झाँटी, कल कल, खिचखिच, घिचपिच, चाँञ्-चाँञ्, झाँव-झाँव, तकझक, दिकदिक, हुइल-माइल, हाला-हुजरा
313. **झाँसा** - होही, फकइती, फरदी, धोखा, पेंदल बतकही, पेंदल भोरोसा
314. **झिझक** - अजलइत, खचपच, खिचपिच, घचपच, मिनमेख, सकसक, सकपक, हकपक, संकोच, सक

झु–झो

315. **झुठ** – पेंदल, असत, मिछा, अंथाही, फाहें, फेंचाग
316. **झुँड** – गोंठ, झोंतइर, गोछ, झोंपा, जिद, पाल
317. **झोंतइर** – झोंपा, गोछ, गोंठ, ढेइर के समइट के बाँधल

ट

318. **टटका** – ताजा, आयाँ, अबगा, एखन के, नउतन, टनटन, टनकल, टभटभाइल, टहटहिया, तकतक, रंग-चंगिया
319. **टउवाइल** – मनझान, मसुवाइल, हेंजामारा, चेठा हारा, सिठाइल, लरूवाइल, टटाइल
320. **टँगना** – टंगोना, अलना, अलगनी, टाँगेक आधार, खुँटी

टा

321. **टाटक** – नाटक, पेंदल, बाजी, कोला, बहाना
322. **टाका** – रूपिया, दर-दरइब, काचा-कउड़ी, धन, संपइत
323. **टाना टानी** – कमी, आकाल, टाने-घिचेक काम
324. **टाल्हा** – लेबदा, ठुठना, पइना, ठुरूंग

टि टु

325. **टिपका** – ठोपा, बुंद, महुआ-कोचरा गिरेक किरिया
326. **टिम-टाम** – लिकि-पिकि, लचक-पचक, मिठ-तित, कोनो रकम, कइसों कइर
327. **टिटकारी** – चटकारी, टोक, इरखाली, सबदेक चाटी, हुल-हुली
328. **टिस** – तकलीफ, दुख, बेथा, पिरा, कलेस, कसट, जाला
329. **टुकटाक** – धिरें-सुसतें, कम-बेसी, तनि-मनी, टुम-टाम, टिम-टाम
330 **टुअर** – टुरा, गरीब, गज़ल, गेल गुजरल, छछन्दल
331. **टुकरा** – टोनल, टुटल, टुकरल, टोना, खँड़, भाग, हिसा

टे टो

332. **टेढ़ा** - कुबर, बेंका, घुरान, टेपर, बाँका, पेचका
333. **टेपा** - टेना, नाटा, रूनु, बितना, खाँट, छोट
334. **टेक** - रोक-टोक, बाधा, घोरान, बेड़, जाँक
335. **टोना** - टुकरा, खँड, भाग, हिसा, टोनल, टुकरल
336. **टोह** - खोजा-खोजी, टवान, छिपाट संधान, अता-पता, खउज

ठ से ठो

337. **ठगी** - चोरी, झाँसा, चइल बाजी, फकइती, फरदी, धोखा
338. **ठाढ़ी** - चकरी घूम, दिसा भरम, हकबकी, अकचकी, दिग-भरम
339. **ठाठबाट** - साज-बाज,सहज-धइज,चाक-चमक, साज-सजावट साज-सिंगार
340. **ठान** - फरमाइस, फेचांग, ठकठेन, ठेनमेस, बहाना, नखरा
341. **ठाँव** - नजिक, पास, भिरी, करें, लगें, गोबर पानी से निपा, सुध करा

ठि

342. **ठिक** - बेस, सही, उचित

ठु

343. **ठुठना** - पइना, छोट डाँग, टाल्हा, लेबदा, ठुरूंग
344. **ठुली** - काग, ढकना, ढेपी, गोज, ठोना
345. **ठेक** - बाधा, अटक, लाठा, नेग, कारन
346. **ठेलम-ठेल** - अछल-गदल, ठसम ठस, अमेला, कचरकुट, अकुत
347. **ठेर-ठेकान** - अता-पता, ठाँव-ठेकान, आता-पाता, छोर-छिपात, रहेक जोधो

ड – डो

348. **डर** - भइ, भाँञ्-भाँञ्, भुताइल, धकधकी, सक, दोगधा
349. **डरपोकना** - डरूक, पुलका, डर-पोकिया, डरनिहार, भयालु

350. **डांग** - ठेंगा, पइना, लाठी, ठुठना, टाल्हा, डुरूंग
351. **डाबु** - करछूल, लबनी, चाटु, लारेक अउजार, छोलनी
352. **डीह** - गाँव, टोला, बसती, हातु, पुर, कुदर, चक
353. **डेग** - कदम, चाइल, गोड़-रोपा, बरतन
354. **डोंहगा** - टहनी, डाइर, डोहरा, चाताइर
355. **डोड़गा** - झाइल, लंबा, बोड़, लमहर, लाम

ढ – ढो

356. **ढकचे** - पिए, ढोंके, हरकचे
357. **ढबढचर** - रूप, मोहड़ा, आड़ा-गोड़ा, नाक-नकसा
358. **ढांगा** - झाइल, लम्बा, लमहर, डोड़गा, बोड़, होड़गा
359. **ढाँप-तोप** - नुकाब, ओड़ कर, गाड़, माटीतर कर
360. **ढिपाढान** - ढेइर नोकसान, सतियानास, मटियामेट, बेरबाद, मटिया-मिलान
361. **ढुमका** - गोल, छेपक, नाटा, गुड्डु, गुडरा, बितना, ठुरका
362. **ढेरी** - थाक, गादा, कुधा, डिंग, लाट
363. **ढोढ़र** - बोडभूर, भोंभोर, खोंढोर, खोल, खोलोर

त

364. **तड़क भड़क** - तामझाम, ठाटबाठ, तमक-झमक, साजबाज, सज-धज, चाक, चमक
365. **तकझक** - झकझक, चिकचिक, झंझट, घटपच, किचकिच, खिटखुट, खिटपिट, खटपट, खचखच, झगरा-झाँटी, कलकल, खिचखिच, घिचपिच, चाँञ-चाँञ्, झाँव-झाँव, दिकदिक, हुरूहुतु, हाला-हुजरा, लउवा लाठी, बकझक, तकझक
366. **तदारक** - देख-भाल, देख-रेख, तिहा-ततविर, हर हिसाब
367. **तलविच** - फरक, तफात, उनइस-बीस, अंतर
368. **तहखाना** - खजाना, भाँड़ार, लाट्, डिंग, गादा
369. **तलेबर** - अमीर, धनी-मानी, धनवान, धनगर, पुंजीपति,

मातबर, मनेजर

370. **ततके** - जलदि, तुरते, जुनजुनात, चाँड़े-माँड़े ताता-ताही, ततवाही, ततछन, फुरती, तुरता-तुरती, तड़ातड़, ताड़ाताड़ी

371. **तड़ातड़** - जलदि, जुनजुनात, ताता-ताही, ततछन, तुरता-तुरती, ततवाही, ताड़ाताड़ी, दनादन

372. **तइतपाटा** - फइसला, मेटमाट, निरनइ

373. **ततविर** - तिहा, तदारक, देखा-सुना, देखभाल

374. **तमतमी** - गोसा, राग, रिस, खुद खुदी, गुमाइर

375. **ततवाही** - जलदि, जुनजुनात, ताता-ताही, तुरता-तुरती, ततछन, ताड़ा-ताड़ी, दनदनी

ता

376. **ताक** - मउका, बतर, सुतार, साइत, सँवइ

377. **ताजा** - तकतक, अबगा, अरदा, टटका, टहटहिया

378. **ताक-झाँक** - ताका-ताकी, खोजा-खोजी, देखा-सुना, हुलका-हुलकी, निरवा

379. **ताड़ाताड़ी** - चाँड़े-माड़े, ताताताही, जुन-जुनात, तड़बड़ी, फुरती, तुरते, ततछन, झट, जलदि, तुरता-तुरती

380. **ताँता** - पाँइतेक-पाँइत, लगस्तर, अनगइन-पाँइत, गोछेक-गोछ लोक

381. **ताना-बाना** - तामझाम, चाक-चमक, आड़ा-गोड़ा, रोक-थाम, रोब-दाब, साज-बाज, ठाठ-बाट

382. **तातल** - गरम, धिपल, डबकल, भाफाइल, अगियाइल

ति

383. **तिराझिंका** - टानाटानी, हुरू हुतु, बिगा-फेंका, नेंजरा-पेंजरा, नाना-थाना, घोच-पोच

384. **तिखार** - तेज, बिसाहा, बातर, तिताइल

385. **तिख** - अनकुर, आँट, खचपच, घचपच, घोच-पोच, दिक-दिक

386. **तिरपित** - थल, फुरसइत, फिट-फाट, साँनती, सोहान, हेमाल
387. **तिहा** - सम्हार, सुसार, देख-रेख, देखा-सुना, सरंजाम
388. **तिअन** - तिनइ, तरकारी, सबजी, सालन
389. **तितिर-बितिर** - छिरियाछाट, हिंदे-हुंदे, जने-तने, छितराइल, छिटाइल
390. **तिरछा** - टेढ़ा, तिरपट, कोनाही, कुबर, बेंका

तु

391. **तुसका** - फलना, अमुक, फलाँ
392. **तुछ** - ममुली, हलुक, बेगनतिक
393. **तुरता-तुरती** - ताताताही, जुनजुनात, जलदि, ततवाही, ततछन, ताड़ा-ताड़ी
394. **तुब** - ठुस, धकल, ढोकस, लिल, नुड़
395. **तुना-तुनी** - मेरामती, लेसा-लेसी, सइरवेक, तेंतारेक, लासेक

ते

396. **तेन-बेन** - बेरबाद, हिंदे-हुंदे, हेन-तेन, तितिर-बितिर, छिटल-छाटल
397. **तेंतार** - सेवा, तिहा, सेवा-सुसार, देख-रेख, ततबिर
398. **तेंताल** - तेज, चुहुल, टनकल, चनफन, फुरतिला

तो

399. **तोपा** - गाड़ा, ढाँका, माटीतर करा, दफनवा
400. **तोल-मोल** - मर-मोलाइ, तइ-तपाटा, मोल-भाव, कम-बेसी, दाम-दोड़ी

थ से थि

401. **थल** - कले, सानति, थिर, सुगुम, तिरिपति, आराम
402. **थनवे** - देखे, तिकवे, नजइरवे, आँइख लगवे, निरवे
403. **थथुना** - चेहरा, मुँह, थुमड़ा, नाक-नकसा, मुड़ी
404. **थल** - साँति, थिर, थलकुल, कल, आराम, जमीन
405. **थाक** - ढेरी, टाल, लाट, कुधा, गादा
406. **थाती** - धरोहर, बिरासत, नाम नमुना, चिन्हा-मुंदा, जोगा, जोगवल

407. **थारा** - थाली, खाँड़ा, बरतन, थरिया, बासन
408. **थिर** - थुम-थाम, थलकुल, सानति, हेमाल, असथिर, थल, बिना हिल-डुल के
409. **थाना** - फाँड़ी, फानसी, कियारी, गंड़ारी, भाग

थु से थो

410. **थुर** - कुचा, खोरा, अड़गाही मारा, ढुँसा
411. **थुम** - रोक, बिराम, थिर, डाँड़ाइल, रोकाइल
412. **थेथर** - बेहया, लिलज, निरजल, बेलज बेसरम, एगो झुर के जाइत
413. **थोक** - गादा, लाट, टाल, ढेरी, कुधा
414. **थोली** - धोकरी, पाकिट, जेब, खुति, बोरी

द

415. **दगदग** - चकचक, तकतक, टहटह, दमक, दपदप
416. **दहंजा** - बेरबाद करा, नेसनाबुत करा, तिनबेनवा करा, सँतवा, अलवा, लटवा-लाहइर करा, तेन-बेन करा
417. **दर** - नेव, गोड़ी, गाढ़ा, सुरू करा, चेत देवा, दाम
418. **दरद** - बेथा, पिरा, दुख, कस्ट, तकलीफ
419. **दनदन** - जलदि, जुनजुनात, तातातााही, तुरता-तुरती, ततछन, ताड़ाताड़ी, ततवाही
420. **दपदप** - दगदग, चकचक, तकतक, टहटह, दमक
421. **दर-दरइब** - रकम, रूपया-पइसा, टाका-कउड़ी, टाका-पइसा, नगदी, धन
422. **दबदबी** - दाबी, धापी, हेकड़ी, जोर, हक
423. **दमगर** - अजगढ़, खरखाँह, छरहर, ठाट-बाट, बरियार, तड़क-भड़क, ताना-बाना, पइतगर, पकठाहल
424. **दबगर** - नीमर, छितिछिन, कमजोर, निरबल, दुरबल
425. **दगरिन** - धाय-माञ्, कुसराइन, आया
426. **दलिदर** - हहरल, हदरल, लटवा-लाहइर, भोकसाहा,

ढोकसाहा, कुकुर पेटा, पेटु

427. **दनार** - टहलमार, भटक, बुल, ढपच, दउड़

428. **दबइर** - नुकाइ, डेराइ, सपइट, भितराइ, छपित

429. **दरकार** - चाहत, जरूरत, माँग, परजोग, महजुत, सरोकार

430. **दहलाइ** - कादो करल, दिल-दिलाइ, हिलहिलाइ, जमाइ, तिन बेनवाँ कइर देवा

दा

431. **दाव** - मउका, जुइत, सुतार, साइत,

432. **दाबी** - हक, तागइत, दबदबी, दावा, जोर

433. **दारोमदार** - आधार, सोबकुछ, सहारा ठेघ, सर्वे-सर्बा

434. **दाबी** - हक, ताकइत, दबदबी, हेकड़ी, दावा

दि

435. **दिकदिक** - झकझक, चिकचिक, झंझट, घचपच, किचकिच, खिटखुट, खिटपिट, खटपट, खचखच, झगरा-झाँटी, कलकल, खिचखिच, घिचपिच, चाञ-चाञ, झाँञ-झाँञ

436. **दिढ़** - सकत, दमगर, बलगर, जोरगर, मजगुत

दु

437. **दुख** - पिरा, दरद, बेथा, बिकोली, घाव, तकलीफ, आफइत -बिपइत, असुक-बेसुक

438. **दुरमति** - कुबुइध, नासेक बुइध, बेड़ाइल मति, कुमति, गजबइध

439. **दुबर** - दबगर, नीमर, चेठा हारा, कमजोर, निरबल

दे

440. **देदार** - बहुत, दोमे, अछल-गदल, अनगइन, अलिंगा, अकूत, अनइत, बेसी, अति, अथाह, अगाध, अनठेकान, कचरकूट, अनखाही, ठेलम-ठेल

441. **देरी** - बिलम, हेला, कोताही, बेसी सँवइ, कामें लटकल

दो

442. **दोमे** - देदार, बहुत, अछल-गदल, अलिंगा, अकूत, खूब, बेसी
443. **दोस** - अइब, खरापी, गड़बड़ी, नोखता, पेंच
444. **दोइद देवा** - नकाइर देवा, बइमानी करा, जबरन ठइक देवा, हक गुचाइ देवा, पेंदल कहइ देवा

ध

445. **धकपक** - हलदिल, हकपक, सात-पाँच, सकपक, सकसक, धकधक, घचपच
446. **धकाधक** - दनादन, धड़ाधड़, खचाखच, सरपट, बेधड़क
447. **धरती** - पिरथिबी, दुनियाँइ, सनसार, धरा, भूमि, माटी
448. **धपधपी** - चकचक, नउतन, उजर, चँरक, फिट-सादा, लउतन
449. **धच्चर** - ढंग, आदइत, लुइर, सहुर, गिआन, इलीम, कुबइत, मगज, बुता, सुझबुझ, बिरती, चेठ, कइदा

धा, धि, धु

450. **धाक** - धाह, धोंका, ओजोन, खेमोता, दबदबी, मातबर
451. **धाखड़** - बरियार, घाखुर, हुइलगर, समरथ, सरकस, नाँव-जइजका, दमगर, दिढ़, धाखड़, मजगुत
452. **धांगर** - नोकर, कमियां, मुनिस, आदिवासी
453. **धारी** - किनारे, पार्से, एक धाइर, मुड़ा, छिप, ओर
454. **धाव** - दफे, बइर, झिंका, टीप
455. **धिपल** - तातल, गरम, उसन, दहकल, लहरल
456. **धुंधा** - बोका, मुरूख, मेढ़ा, मोठा, रेघा, रोठा, रोढ़, लेका उसट, गेड़ा, गोदा, घिसट, घोंचा, जाहिल, टेपा, ढुमका, दुबर, बाँड़ा, धेंधा, नीमर, नेठा, नेंधा, नोंधा, पेचा, फुचा, बितना, बुचा, बेकुप, भुटका, भोका, भोदा

धे धो

457. **धेयान** - मन, जोग, तप, खेयाल करा
458. **धेंधा** - लेका, धोंधा, धुंधा, बोका, मुरूख, मोठा, रोढ़, लेका
459. **धेव** - मतलब, हिंछा, महातम, माने, साइत, आधार, गँव, जुइत, ठेक, परभाभ
460. **धोखा** - दगा, ठगा, मुकइर जावा, दोइद देवा
461. **धोंधा** - धेंधा, धुंधा, मुरूख, मेढ़, मोठा, रेघा, रोढ़, लेका, उसट, गोदा, जाहिल, ठेपा, ढुमका

न

462. **नजिक** - पासें, नाकानाकी, भिरीं, ठावें, लगें, लेताइरें
463. **ननका** - छोटका, मेंही, खँाट, गेड़ा, छोट, भुटका
464. **नरकट** - नढ़ा, काहिल, कुइला, कोया, खरनठ, खरखस, चिकठ, जाहिल, कटुआ, झुरी
465. **नइजगा** - सोहनो, सोहिला, कोमल, फुनगल, जिली
466. **नरटी** - गरदन, घेंचा, टेंटुवा, घेंटुआ
467. **नतुन** - नावा, नया, लउतन, नोतन
468. **नरम-नीमर** - दबगर, दुबर, पिचका, कमजोर, काहिल

ना

469. **नाव-जइजका** - नामी, खरखाँह, बरियार, मातबर, माइनबर, मानिन
470. **नाकानाकी** - नजिकें, पासें, बगलें, धारीं, करें, लगें, भिरी, ठावें, लगले
471. **नागा** - गइर हाजिर, नखे आइल
472. **नाटा** - ठुरका, ढुमका, गेड़ा, रेंघा, गेड़मेठा, टेपरा, बितना, टिरा, जुमना, गुड्डु गुड़ा, गुडरा, टिपरा, नटरा, नान्ह, नुटरा, पुचका, फुचा, बुटु, भुटका
473. **नाता-गोता** - आपुस, कुटुम, जोर-नार, गोतिया, रिस्ता-नाता
474. **नाभान** - ढलान, हेंठगड़िया, उतार, ढरकउवाँ
475. **नावा** - नतुन, लोतन, नया

हलइ पिपर बिछे।

371.	घारेक सोभा चाली, आर सोसराइर के सोभा साली।	-	अपना घर और अपनी साली अच्छी होती है।
372.	घुमचल जइसन कुकुर पुँइछ।	-	ऐसी टेढ़ी समस्या जिसका समाधान सभंव नहीं।
373.	घोर मांगे गेल हे तो पेछुँ कहे चुका।	-	लज्जा त्याग कर मांगने गए हैं तो फिर छिपाना कैसा।
374.	घोरनी माते मुरगी, बिलाइ खाइ अंडा।	-	खटनेवाला आदमी भूखा है, परजीवी मजे में खाता है।

च

375.	चलले चालीस-बुइध, नाञ् चलले होतो बुइध।	-	कामयाबी मिलने पर किसी तरकीब की पूछ होती है अन्यथा नहीं।
376.	चतनियां माइर बइसल साव, लगवे पारे कोनो दाव।	-	अनर्थ करने की पूरी तैयारी है, कुछ भी हो सकता है।
377.	चलेक चेठा नाञ्, पादेक अपना ही।	-	जिसके पास औकात नहीं उसका डींग हाँकना बेकार है।
378.	चले नाञ् जाने अंगना टेढ़।	-	जब काम का ढंग नहीं तो बहाना पेश करना बेकार है।
379.	चलेक बेरिएं लुआठी।	-	चलने के समय में भोजन के इंतजाम का शुरू करना।
380.	चढ़ी न चलिए नो चास।	-	बार-बार जोत से जमीन हल्की हो जाना।
381.	चलेक नाञ् मोना, मार भाइ पइना।	-	कमजोर बैलों को सिर्फ मारने से ताकत नहीं बढ़ती।
382.	चलेक नाञ् चाइल, करे हाइल-हाइल।	-	जिन बैलों में चलने का सामर्थ्य नहीं हल्ला करना बेकार है।
383.	चट लगन, पट बिहा। नाञ् तरक, नाञ तिहा।	-	जल्दी में काम निपटाने की प्रक्रिया का करना।

384. चले तो गाड़ी, नाञ् तो हाड़ी।	–	गाड़ी चले तो ठीक अन्यथा बेकार।
385. चमके पछिम उत्तर ओर, जानइ तब पानी के जोर।	–	जब उत्तर-पश्चिम में बिजली चमके तो जोर की बारिश निश्चित है।
386. चरे गेल, पेटेक लेल लोभें-सोभें चोंथाइ मोरल।	–	रोजी-रोटी के लिए जाना पर फँस जाना।
387. चले सादा, निभे बाप दादा।	–	सादा जीवन स्थायी होता है।
388. चमड़ी जाइ, मगुर दमड़ी न जाय।	–	कंजूसी कर नुकसान उठाना
389. चरे गेली, चोथाइ अइली।	–	लाभ से अधिक नुकसान।
390. चल चलंती चोदह घोड़ा, जनी-मरद के लागे होड़ा।	–	जब घर में चलती रहती है तो औरत-मर्द में बहुत ठाठ होता है।
391. चलले कोस, बइसले दोस।	–	लगातार चलना ठीक है, रूकावट से बाधा आती है।
392. चइत सुते रोगी, बइसाख सुते भोगी।	–	चैत वैशाख में सजग रहने वाला व्यक्ति तन्दुरूस्त रहता है।
393. चलले चालिस, बुइध, नाञ तो हतऽ बुइध।	–	सम्पन्नता रहने पर ही बुद्धि काम करती है।विपन्नता पर कोई नहीं पूछता है।
394. चाहल चल सादा, निभतो बाप दादा।	–	सादगी हमेशा अच्छी होती है।
395. चाँड़-चाँड़, काम भाँड़।	–	जल्दी बाजी से काम खराब होता है।
396. चाहें ने चितें।, इटा कोन रितें।	–	बिना सोचे जल्दी का काम करना।
397. चोर गरू सें बेस, सूना गोहाइल। नाञ् हतइर हाइल-हाइल।	–	जिसका लक्षण ठीक नहीं उसे रखना बेकार है।
398. चाहें गरीब, चाहें अमीर, सोवले बेस घारेक खीर।	–	घरं का खाना सबके लिए अच्छा है।
399. चासा चिन्हाइ आइरें, आर तांती चिन्हाइ पाहइरें।	–	किसान खेत से तांती कपडे से पहचाना जाता हैं।
400. चोर के अंधरिआ बेस लागे।	–	अप्रिय वस्तु भी किसी के लिए अच्छी है।
401. चासेक चुकल बछर दिन, भातेक	–	खेती की चूक से साल भर दिक्कत

	चुकल एके दिन।		है, भोजन की चूक से एक दिन।
402.	चाल मारबइ आपन चेत, जिबइ नाञ् पादु सावेक खेत।	-	दूसरे के खेत में काम करने से अच्छा है, अपना खेत बनाओ।
403.	चाहें खाइब चुनी भूँसी, पइढ़ बनब हाँम्हू डीसी।	-	यह एक बच्चे का प्रण है कि चाहे लाख मुसीबत हो, पर मुझे डी.सी. बनना है। (दिवाकर)
404.	चाइल-चाइल आव-ही।	-	किसी काम को नकारने की तरकीब (झिंगफुलिया)
405.	चाह-चिलम, करे बिलम।	-	नशा समय बर्बाद करता है।
406.	चिन्हल चोरें जान मारे।	-	जान पहचाने लोग ही धोखा देते हैं।
407.	चिंगडी माछ ऊपरे बुले, बोड़ माछ भीतरे रहे।	-	महत्व की वस्तु ऊपर से नहीं दीखती।।
408.	चिन्ह ने जान, हमराँ बोड़ मान।	-	बिना परिचय के प्रतिष्ठित बनने की कोशिश।
409.	चुटरी गिरले राम-राम। तहाँ कइसन ताम झाम।	-	जिसके घर में अन्न का दाना तक न हो, वहाँ आनन्द कहाँ।
410.	चुटरी मुसें धान खाइ, हागइते परान जाइ।	-	औकात से अधिक भोजन करने से तकलीफें बढ़ती है।
411.	चुटरी पूछे हाथिक उमइर।	-	अपनी औकात देखकर ही किसी बड़ी हस्ती के पास जाएं।
412.	चुतरे नाञ चाम, आर रूपवती नाम।	-	अर्थ विहीन नाम का होना।
413.	चेंगा-चुटिया पटरा परथ, भीतर बाटें घटरा सुंघब।	-	बाल बच्चों की चिंता न करके सिर्फ अपनी चिंता करना।
414.	चरक बोदा भुइं पटका जहाँ-तहाँ नाञ् फचका।	-	जहाँ-तहाँ गंदा न करे।
415.	चेंकाक डरे भागलो आर तेतंइर तरें बासा।	-	जिस दुर्गुण से बचने के लिए यहाँ आया उसकी तो यहाँ खान है।
416.	चेंग-बेंग एक भाव।	-	अंधेर करना।

417. चेंग माछे खइटका सहे? - जो तेज तर्रार होते हैं, वे उलाहना बरदाश्त नहीं करते।

418. चेति चला, बाघो ने खाइ। - सचेत होकर चलने से बाघ भी नहीं पकड़ सकता है।

419. चोर गरूक, अलगे बथान।
एहे ओकर बेस पछान। - चोरकट व्यक्ति सज्जनो से अलग ही रहना चाहते है।

420. चोराक भाइ, मोटे-मोटे सपनाइ। - चोर, सपने में भी चोरी का सामान ही देखता है।

421. चोरिक धने, मांदइर के पइला। - मुफत के माल में परवाह की क्या जरूरत।

422. चोटे चार, आँचे पिठा।
चोटें-आँचें बनें निठा। - चावल की गुणवता चोट से, पिठा की आँच से।

423. चोर की सुने धरमेक कहनी? - चोर को उपदेश से लेना-देना नहीं रहता है।

424. चोर गुरूक, बाउरी बागाल। - चोर व्यक्ति का निगरानी कर्त्ता भी चोर ही हो तो क्या कहने।

425. चोर-चोर मोसेरा भाइ। - एक पेशे वालो में खूब पटती है।

426. चोखा पर चोखा, कभुँ ने धोखा। - चालाक के ऊपर चालाक रहने से सफलता अवश्य मिलती है।

427. चोख नरहइनी, तार नाञ काटे। - अच्छी चीज हो तो औकात से अधिक काम करती है।

428. चोरें चिन्हे, बिहिन धान। - चोर किसी की हानि से मतलब नहीं रखता।

429. चोरेक आगु ताला आर बेइमानेक आगु केवाला। - जिसने बेईमानी ठान लिया है उसके आगे हर कानून बेकार है।

430. चोर मारेक भिन्नु डाँग? - कानून सबके लिए एक है। (खिरोधर)

431. चोटे चार नाञ् हवे हे। - तुरत में किसी काम का फल नहीं मिलता।

432. चोर के चोरासी बुइध। - चोरों के पास चोरी करने के एवं

मूर नाञ, चाही सुइध।		उससे बचने के अनेकों उपाय है।
433. चोंख मानुस खोजे जोंख जोंखा ओकर रूचि रोख।	-	तेज आदमी मौके की तलाश में रहता है।

छ

434. छगइर जिवाहाक देखलों हाटें, हुलइक देखे चुनइक चाटे।	-	लालची का कभी पेट नहीं भरता।
435. छातीं नाञ् चाम, सेनापति नाम।	-	बे मेल की पदवी।
436. छठिक दूध देहिक सुध, मोद भुलवे मंगर बुध।	-	नशा नाश का कारण है।
437. छिटकल पानी हिटकल बात। बिना आगी जरावे गात।	-	दोनों चीजे कड़वी होती है।
438. छिनाइर मोगी के भेंसुर ओझा।	-	ब्राह्मण व्यवस्था में भेसुर की परछायीं से भी परहेज है, पर व्यभिचारिणी को बहाना चाहिए।
439. छिटे गोबर, होवे दोबर।	-	सही उर्वरक से उपज दोगुनी हो जाती है।
440. छेदामेक दाएँ, चाम चोंथाइ।	-	चमड़ी जाय पर दमड़ी नहीं जाय।
441. छोट-मोट अंगना, गोटे गाँव भेंसुर।	-	रहने की असुविधा।
442. छुछा के, के पुछा।	-	जिसके पास कुछ नहीं, उसे कोई नहीं पूछता।
443. छुछुआ माइर के हाथ गंधवे।	-	छुछुन्दर जैसे निर्बल और दुर्गुंध युक्त जंतु को मारना तारीफ नहीं ग्लानि की बात है।
444. छुबा नाञ छुवा, कोही हुवा।	-	डींग हाँकना। (झिंगफुलिया)
445. छोड़े चाही पथल भगति, पूजे चाही परकीरति।	-	मूर्ति पूजा छोड़ कर प्रकृति पूजा करनी चाहिए।
446. छगइर भिड़का पानी, झुठोक	-	पलभर की बारिश सें कुछ हानि लाभ

पइरसानी।		नहीं।
447. छगइर जिवाहा लोक, हवे हे परखोक।	-	दूसरों की कमाई खाने वालों की जिह्वा बस में नहीं होती।
448. छगरी से कि खेती हवे।	-	बकरी से हल नहीं जोता जाता।
449. छह कोसें पानी, आर बारह कोसें बानी बदइल जाहें।	-	छह कोस में पानी और बारह कोस में भाषा बदल जाती है।

ज

450. जइसन करनी ओइसन भरनी।	-	जैसा मनुष्य वैसा सत्कार
451. जखन आपन बेटी भेल, बाप के बेटी भुइल गेल।	-	अपनी संतान के आगे बहन की पूछ नहीं होती है।
452. जइसन देव ओइसन पूजा।	-	जैसा आदमी वैसा सम्मान।
453. जनिक नाक नाञ् रहले, मइला खइतला।	-	बुद्धि की कमी से अनर्थ होता है।
454. जकराँ रतन के गादा गुला घोंघा बुझाइ।	-	अनजान को हीरा भी काँच लगता है।
455. जहाँ सूइ नाञ आँटे, तहाँ फार अटावेक कोसिस।	-	किसी काम में जबरजस्ती करना।
456. जनि आर पानी के एके ढंग। गेले भतार।	-	औरत का चरित्र पानी की तरह होता है।
457. जाड़ गेलें जड़ाउर आर उमइर गेले भतार।	-	समय महत्व की चीज है।
458. जोरल बार नाञ टुटे।	-	घनिष्ठ संगी।
459. जरल में नुन छिटका।	-	दुखी आदमी को और दुख देना।
460. जते मुँह तते बात, बातें-बातें अपघात।	-	बात से बात फैलती है, परिणाम बुरा होता है।
461. जकर घारें चले चाटी, सोना छूलें हवे माटी।	-	दिल साफ नहीं रहने से हानि होती है।
462. जकर गहना तकरे साजे,	-	बिना नाप का गहना बेतुका होता है।

बाजे खातिर ठेरका बाजे।

463. जनी छोड़े खातिर धुनि रमावे।	-	बिना मतलब के बहाना।
464. जते पानी बरसइ, तते किसान हरसइ।	-	वर्षा किसानों का जीवन है।
465. जहाँ गाछ ने पात हुआँ अरंडी परधान।	-	जहाँ महत्वपूर्ण वस्तुओं का अभाव है वहाँ महत्वहीन ही पूजे जाते है।
466. जइसन मइया, तइसन धिया।	-	लड़कियों का लक्षण माँ से मिलती है।
467. जते गुर, तते मीठ।	-	किसी आयोजन मे जितना अधिक व्यय होगा, शोभा उतनी अधिक होगी।
468. जइसन गुरू, तइसन चेला।	-	शिक्षक की गुणवता पर ही विद्यार्थी की गुणवता निर्भर करती है।
469. जइसन भूत, तइसन पूजा।	-	जिस दर्जे का व्यक्ति हो उसे उसी दर्जे का सत्कार चाहिए
470. जइसन जुग, तइसन चाइल।	-	जमाने के अनुकूल चलना चाहिए।
471. जइसन देस, ओइसन भेस।	-	जिस मिट्टी में रहे उसी के अनुकूल अपने को ढालना चाहिए। (रामचन्द्र)
472. जइसन करनी, ओइसन भरनी।	-	कर्म के अनुकूल ही फल की प्राप्ति होती है। (राजकुमार)
473. जइसन हीरा चोर, तइसन खीरा चोर	-	चोरों का चरित्र एक ही होता है।
474. जइसन तोर मुडवाक गुड़ी, तइसन हामर अध-अध कुँड़ी।	-	कम मजदूरी से अधिक काम लेना कभी संभव नहीं है।
475. जतने लुगुवा, ओतने घुघुवा।	-	उतने पैर पसारें जितनी लम्बी चादर हो। (खिरोधर)
476. जतना लम्बा धोती ओतने गोड़।	-	औकात से बाहर नहीं होना चाहिए।
477. जते बोड़ ढोल, ओते बोड़ खोल।	-	जो वस्तु जितनी बड़ी होती है अवगुण भी उतनी ही बड़ी होती है। (अब्दुल बाकी)
478. जधीं भोज, तधीं सोझ।	-	जिधर लाभ की गुजाइश हो, उधर ही

			मुड़ जाना।
479.	जकर नाम ऊँच, तकर कान बुच।	-	जिनका सुनाम है, बदनामी उन्हें जल्द लगती है।
480.	जनिक रूप, परें भव कूप।	-	औरतों का चरित्र बड़ी जटिल है।
481.	जकर रोटी, बोन-बोन रोवे, फीकरे-ठइक-ठइक खाइ।		खटने वाला भूखों मरता है, परजीवी मांग-मांग कर मौज उड़ाता है।
482.	जहाँ झगर-कुटा लोक, हुआँ झिरी झोंक।	-	झगलाडू जहाँ, झगड़ा वहाँ।
483.	जहँइ देखे अनक ढेरी, सभे मिली बइसे घेरी।	-	जहाँ-जहाँ गुड़ गिरता है चीटियाँ वही पहुँच जाती है।
484.	जखन जाइ लोकेक जान, बामन आवे जनो टाइन।	-	जो ब्राहाम्ण जीवन भर एक गिलास पानी नहीं देता वही मरने पर स्वर्ग देने आ जाता है।
485.	जते रोवाँ तते करजा।	-	बेशुमार कर्ज।
486.	जखन पिरतीं डूबे मोन, तखन, कि हाड़ी, कि डोम।	-	जब मनुष्य में असली प्रेम जगता है तब जात-पात का ज्ञान शून्य हो जाता है।
487.	जहाँ बही, तहाँ दिहिं।	-	जहाँ हिसाब-किताब हैं, वही लेन-देन हो।
488.	जतना के मुरगी नाञ ओकर सें बेसी पुदकाइ।	-	खेत से बेसी अनाज के दाम।
489.	जकर नून खाइल जाहे, ओकर गुन गावल जाहे।	-	एहसान की कीमत चुकानी चाहिए।
490.	जतना के गिदर नाञ् ओकर सें बेसी झुनझुना।	-	मूल वस्तु से बेसी साज-बाज होना
491.	जाय देखलों बोतल मोड़ें, मुदइ के आगु गवाह दोड़े।	-	धूर्त्त गवाह चापलूसी करते है।
492.	जाव उमइर, ताव झुमइर।	-	आनंद उत्सव का समय यौवन तक ही सीमित है।

493. जानले घार जोरे चाही, जानले फोर तोरे चाही।	–	जान-पहचान के यहाँ ही रिश्ता करना चाहिए और जाना-पहचाना फल ही खाना चाहिए।
494. जानले फल खाएक लागइ।	–	अनजान चीजें हानि पहुँचा सकती है।
495. जाँचल जवइया खीर नाञ् खाइ भिनसरे ढेंकी चाटे।	–	समय पर इठलाने वाले लोग बाद में गिड़गिड़ाते है।
496. जामिन हवे हे देवे ले, आर गाछ चढ़े हे, मोरे ले।	–	किसी की जमानत होना और पेड़ पर चढ़ना दोनों खतरा मोल लेने का काम है। (धीरेन्द्र)
497. जाना आपन हितेक भाखा, मनेक गुमान मन्हीं राखा।	–	अपनी प्रतिष्ठा बचावें इसे न खोवें।
498. जींते जुठा नाञ् खइलइ, आर मोरलें सती गेलइ।	–	दिखावे की भक्ति बेकार होती है।
499. जुठा खाहे, मिठाक लोभें।	–	लोभ से प्रतिष्ठा घटती है।
500. जवान देइख आड़ाई आर बुढ़ा देइख डाँड़ाइ।	–	जवान को प्रेम और बूढ़ा को आदर दें।
501. जुवान छोड़ाक पोट भारी।	–	जवानी में सबका भाव बढ़ता है। (खिरोधर)
502. जे खटे, से चाटे।	–	जिसकी मिहनत उसको लाभ ।
503. जेकर जोत ने जाँगर, कि जाने डांगर	–	काम के अनुसार सामान का मतलब होता है।
504. जे भेल नोकर, से कि आर तलेबर।	–	जो नौकर हो गया वह जमींदार कहाँ रहा।
505. जे करे टाक टोटोम, ओकरे घार पइरके जोम।	–	पोगापंथियों के घर भूत बसते हैं।
506. जेकर बाप के अजगर खाइल, से ढेकी देइख डेराइ।	–	बड़ा डर, घर कर जाता है।
507. जे सहे से लहे।	–	सहनशीलता बहुत अच्छा गुण है हमेशा फल दायक है।

508.	जे छोडे अइस, हवे एक से एकइस।	–	कुशल कर्मी तरक्की करता है।
509.	जे गरजे, से बरसे नाञ।	–	बड़ बोला से कोई काम नहीं होता।
510.	जेकर बंदरा ओहे नचावे।	–	जिसकी वस्तु वही उसका जानकार है।।
511.	जे डहर बतावे, ओहे डहर धरावे।	–	उपाइ बताने वाला काम पूरा करे।
512.	जे पतरीं खाइ, ओकरे में छेद	–	जिससे लाभ उसी का नुकसान करना।
513.	जेकर लाठी ओकर भँइस।	–	ताकतवाला फायदा उठाता हे।
514.	जेठ सुते राजा, असार सुते जोगी।	–	सब के आराम का समय अलग–अलग है।
515.	जोगी घारें ढेंकी।	–	आदमी मोताबिक चीजों का महत्व है।
516.	जोगी के बरद बलाय।	–	बिना जरूरत का सामान बेकार होता हे।
517.	जे गुर से मोरे, ओंकरा माहुर काहे।	–	जो मीठे–मीठे ठीक हो जाय, उसे तीता करने की क्या जरूरत।
518.	जे जाने, सइ साने।	–	किसी बात को जानकर ही उसमें पड़ना चाहिए।
519.	जेठ भेल हेंठ, असार भेल ऊपर।	–	कभी जेठ में बारिश और आषाढ़ में भी गर्मी बढ़ती है।
520.	जे हागइक ताक, से पानिक नाञ।	–	जब आवश्यकता की हड़बड़ी होती है तो प्राथमिकता के आधार पर काम होता है बाद मे विस्मृति आ जाती है।
521.	जे पंडित के पतरें, से पंडिताइन के अंचरे।	–	इस ब्राह्मणवादी कहावत में पंडिताइन की महिमा है। इन दिनों इसकी अहमियत नहीं है।
522.	जे करे पाप, से सात बेटाक बाप, जे करे पुइन, तकर ढीपा सुइन।	–	इस लोकोक्ति में पाप–पुण्य को नकारा गया है।
523.	जे पढ़भे से आगु बढ़बे, नाञ् तो घारे दारू पी के लड़भे।	–	जो पढ़ेंगे, वे आगे बढेंगें नहीं तो नशा करके मरेंगे।

524. जोरू ने जाता, खोदाइ से नाता।	-	जिसके पास दुनियाँदारी नहीं, उसे ईश्वर याद आते है।
525. जोदी चले ठीकेदारी, तीन खेद जमींदारी।	-	ठीकेदारी चलने पर जमींदारी से ज्यादा फायदा है।
526. जोदी तनी पावब नून, भात मारबइ तीन गुन।	-	गरीब जिन्हें नमक भी नसीब नहीं होता है, नमक मिलने से तीन गुणा खा सकता है।
527. जो अहिरा पिंगल पढ़े, तीन बातक	-	(झिंगफुलिया)।
हीन नाञ् जाने दहिन-बाँव, नाञ जाने घिन	-	डींग हाँकने से गोवर-भूत के बीच ज्ञान की बातें नहीं आती।

झ

528. झगर कुटा लोक, आर मानुस मरवा गरू से बाँचल रहा।	-	मरखंड बैल और आदमी दोनो से बचना चाहिए।
529. झार गुने झिंगा, आर बाँस गुने बहिंगा।	-	बीज की गुणवता के आधार पर ही फल लगते हैं।
530. झिंगाक लतें कि कोंहड़ा फोरे।	-	भ्रष्ट गुणवता वाले बीज से शुद्ध सृजन संभव नहीं।
531. झिंका झोइर झुमइर, पुरखाक लइर जइर।	-	खूब तामझाम के साथ झूमइर नृत्य पुरखों की देन है।
532. झिंझि कुकुर, करे अनकुर।	-	अनुशासन विहीन होकर झाँव-झाँव करना मन में झुंझलाहट पैदा करता है।
533. झिकटी चोर, झिकटी भूत, परेक माञके पूत।	-	दूसरे के बच्चो पर लोग अधिक दोषारोपण करते हैं।
534. झुर हिलइलें कि बाघ डेराइ।	-	झाड़ी हिलाकर बाघ डराए नहीं जा सकते हैं।
535. झाँटी के टाटी आर अलीगढ के ताला।	-	दरवाजे की मजबूती से ताले का तालमेल हो।

ट

536. टइट चारेक बीटा, अब टंगे ढोल पीटा।	–	सम्पन्नता से भय की सभी आशंकाएँ समाप्त हो जाती हैं।
537. टाँइड़-टिकुर सगरो, केव नाञ ककरो।	–	भरोसा सदा अपने ऊपर हो।
538. टाका से सुइद पियारा, बेटा से नाती पियारा।	–	सूदखोर को मूल से सूद अधिक प्रिय होता है। मनुष्य को बेटा से नाती अधिक प्रिय लगता है।
539. टाक-टोटोम करवा नाञ्, अपने से टांगा गोड़े बजरवा नाञ्।	–	अंध विश्वास में पड़कर मुसीबत मोल लेना नहीं चाहिए।
540. टिटहिक रोकलें कि सरग रोकाइ।	–	औकात से बाहर का प्रयास व्यर्थ होता है।
541. टिटकारी झगरा में, सिसकारी अखरा में।	–	झगड़ों में गालियाँ और अखड़ों में खुशियाँ जाहिर होती है।
542. टेढ़ पाटी, लंबा चीर, रसिक रहे निफिकिर।	–	रसिक बेफिक्र रहता है।
543. टोमइड़ देखा, कउवें लेगल कान।	–	बिना सोचे किसी के बहकावे में नहीं आना चाहिए। (झिंगफुलिया)
544. टोकाइरपारे मुँह लारे।	–	स्वाद की प्रशंसा करना, आहट देना।

ड

545. डंगुआ जनिक धार आर दमड़ा बाछाक हार जबरजस हबे हे।	–	अर्थ स्पष्ट है।
546. डहरे कोइर काँटा भमला, हेंठ-ऊपर देइख चला।	–	बाधाओं से सदा सावधान रहें।
547. डहरे पाइल कमार, फार पाइज दे हामर।	–	कोई कारीगर सामने भेंटने पर अपनी फरमाइस सुना देने की बात करता है।
548. डँड़ें नाञ भगवा, आर बेटाक नाँव रघुवा।	–	सामंती व्यवस्था में निचलो को अच्छा नाम नहीं दिया जाता था। गरीब को

		अच्छा नाम क्यों?
549. डाड़ी तरक खेत आर हाँड़ी तरक जनी कथिक कमी।	-	डाड़ी वाले खेत में पानी की, और हइड़सार की औरत को खाने की कमी नहीं होती।
550. डाढ़ल घावें नूनू छिटका, घार फोरे कन-फुसका।	-	जले पर नमक छिड़कने वाला और घर में कानाफुसी करने वाला, दुखदायी होते हैं।
551. डिंडा-पिड़ा ककर ऊँचा, ककर राधँके हाँड़ी बुचा।	-	यहाँ की संपत्ति पर किनका वर्चस्व है और कौन यहाँ भूखों मर रहा है।
552. डेराइल पेटें घाव, हवे पारे दाव।	-	एक बार मात खाने से भय बना रहता है।
553. डोरा पोड़ल, मगुर पाक नाञ उधनल।	-	मनुष्य मात खा गया पर शेखी नहीं गयी।
554. डोम बिना ढाँक नाञ।	-	यह सामंती सोच है डोम को नीचा दिखाने की कोशिश है।
555. डोंड के मंतर नाञ् जाने आर खरिसे पर हाथ।	-	कम जानकारी पर बड़े काम में हाथ नहीं देना चाहिए।

ढ

556. ढिढ़ा ऊपर बइसा नाञ्, मांगे जइहा पइसा नाञ।	-	दूसरों के लिए अड़चन न बने।
557. ढिठ चेंगइर, भोकीं हाथ।	-	बदमास बच्चो की हरकते अच्छी नहीं होती। (झिंगफुलिया)
558. ढिठ कनियाँइ गोदा बोर, बात करे टर-बर।	-	विवाह में जब लड़की लज्जा हीन एवं लड़का बेवकूफ होता है तो विवाद होता है।
559. ढेइर सुंदरिक जाइत नाञ, ढेइर कमियाक साइत नाञ।	-	अधिक सुंदरी को सभी पूछते हैं और बेसी मजदूर होने से उनकी पूछ नहीं होती।

560. ढेकी कुटा छाँटल चार, दिए हतो बाभन घार।	–	ब्राह्मणवादी व्यवस्था में वे काम नहीं करते, उन्हें कूट-छाँट कर चावल चाहिए।
561. ढेइर काठे महुआ सिझे, ढेइर बाते मुरूख बुझे।	–	महुआ सिझाने के लिए अधिक लकड़ी और मूर्खों को समझाने के लिए अधिक बातों की जरूरत होती है।
562. ढेइर सुंदरिक जाइत नाञ्, ढेइर कमियाक भात नाञ्।	–	अति होना अनर्थ है।
563. ढेइर भेड़ी पिलुवाइ मोरे।	–	अधिक संख्या होने से व्यवस्था अच्छी नहीं हो पाती।
564. ढेइर धोबी नेदरें लागे साबुन।	–	किसी वस्तु की अधिकता से उसका दुरूपयोग प्रारंभ हो जाता है।
565. ढेइर खट-खट, बेटा बत-कट	–	आज्ञाकारी पुत्र नहीं होने से गड़बड़ियाँ प्रारंभ हो जाती है।
566. ढेकी मुड़ साजले तो चोटेक कथिक डर।	–	जो मुसीबतों से लड़ने के लिए कूद पड़ा हो उसे आघातों का भय नहीं।
567. ढेइर जोगी मठ उजाड़।	–	अधिक संख्या होने से व्यवस्था बिगड़ जाती है।
568. जते मुँह तते बात, बातें-बातें हवे अपघात।	–	अफवाह का परिणाम बुरा होता है।

त

569. तनि बुडुक जान, गज भइर जुबान।	–	छोटी मुँह बड़ी बात।
570. तर गोड़ के लहइर कपारें चढ़े।	–	खूब क्रोध होना।
571. तरें-तरें गुर चिरा, ऊपरे एकादसी।	–	चुप-चुप चोरी, भगति का दिखावा।
572. तेली के तेल जले, मसालची के छाती फाटे।	–	गरीबों के लिए राशि सरकार देती है पर अफसरों, मंत्रियों का लालच बढ़

		जाता है।
573. तीन कनोजिया, तेरो चुल्हा।	-	असंगठित समाज तितर-बितर रहता है।
574. तीन गो तेरो, एगो नो।	-	गड़बड बँटवारा।
575. तोञ् डाइर-डाइर, हाम पात-पात।	-	नहला पर दहला होना।
576. तोर अइसन सोमु, तकर माथा परबोमु।	-	जिसका जैसा आकार होता है दिमाग भी उसी अनुपात में होता है। (झिंगफुलिया)
577. तिन टिकट महा-विकट	-	लोकाक्ति है कि तीन व्यक्ति होने से यात्रा बिगड़ जाती है। पर अब इसकी अहमियत नहीं है।
578. तियन के फोरन रकम, तनिके में बेसी धमधम।	-	बहुत कम मात्रा में होना, पर असर दूर तक होना।
579. तिस टाका लुइट के तीन टाका दान।	-	जबरजस्त शोषण का तरीका यही है।
580. तेली बुधि गेली।	-	इस जाति की बुद्धि पर कटाक्ष है।
581. तेल गहराक मुड़ें तेल, उखराक के पुछे हे।	-	सशक्त व्यक्ति को सभी पूजते है, कमजोर को कोई नहीं पूछता है।
582. तेंतइर देखले मुँहे पानी।	-	लुभाने वाली वस्तुओं से लालच बढ़ती है।
583. तेली घारेक गरूक, नाञ् अमावस्या ने पूर्णिमा।	-	बन्धुवा मजदूर के लिए काम के सिवाय कोई अवसर नहीं।
584. तेली घार गेलों तेल लिए मुँड़ तरे चुका।	-	किसी वस्तु को लेने के लिए तत्पर रहने की जरूरत नहीं।
585. तेल के नाञ् जाने हाल, सुध घी के करे सवाल।	-	जाने बिना किसी वस्तु की बखान व्यर्थ है।
586. तोर सिल, तोरे लोढ़ा, भाँगबो तोर दाँतेक गोड़ा।	-	दुश्मन के हथियार से ही दुश्मन को ध्वस्त करना।

द

587. दवाएक नामें सियारेक गू भी महंग हवे हे।	–	मौके पर मामूली चीज की भी अहमियत है।
588. दस के गोजा, एक के बोझा।	–	मिल्लत से वस्तु का वजन बढ़ जाता है।
589. देले बरदा खाइ नाञ, पाछु कोल्हु चाटे।	–	उपलब्धि का मौका खोने पर पीछे पछताना पड़ता है।
590. दस के लाठी, एके के बोझा।	–	एकता मे शक्ति है। दस का काम एक नहीं कर सकता।
591. दलु घार आइग लागल नो मन पाद पोड़ल।	–	गपोड़ो का डींग हाकना अतिवादी का उदाहरण है।
592. दादाक भोरोसें कतारिक चास।	–	दूसरे के भरोसे खेती में सफलता नहीं मिलती।
593. दानी दान करे भंडारी के पेट फाटे।	–	सरकार दलितों गरीबों को धन देती है मंत्रियों अफसरों का लालच बढ़ गया है।
594. दामड़ा बाछाक घेचें जोती।	–	बदमास को राह पर लाने हेतु उसपर शिकंजा कसा जाता है।
595. दामड़ा बाछाक दामे हतइ।	–	बदमासों पर शिंकजा कसना होगा।
596. दाता से सुभ भला, जे ठाढ़े दे जबाब	–	मांगने पर नाकर-नुकर करने वाले से वह अच्छा है जो सीधे ना कहता है।
597. दिन रहे आँधर, राइत कहे काना कामें फाँकी, मजोरी दुगुना।	–	हमेशा काम का बहाना करने वाला, आदमी सिर्फ मजदूरी पाने के समय चुस्त रहता।
598. दिन भोइर गेला-अइला, साझे कहे वारो पइला।	–	काम में कामचोरी और दोगुना मजदूरी।
599. दिने रहे उपास, राती खोजे बासी	–	उपवास और बासी दोनो खाने की उलटी बाते है।
600. दुइब तइक जइर जावा,	–	प्रचंड धूप और गर्मी का होना।

	चटाइन ऊपर फुटे लावा।	
601.	दूर देसें बेटी, आर नदी धारी खेती-	परदेश में बेटी और नदी किनारे की खेती दोनों में अनिष्ट का अंदेशा बना रहता है।
602.	दु लोकके जीना, सोचें हे किना। -	जिन्हें बाल-बच्चे न हों, उन्हे कैसी चिंता।
603.	दुधार गाइ के लाइतो सोवाद। -	जिससे लाभ होता है उसकी आघाते भी प्रिय लगती हैं।
604.	दुगो बेगइत, कथिक फझइत। -	सिर्फ मियाँ बीबी के परिवाार में झंझट कैसा ?
605.	दूध कटु गिदर, बदइर कटु रउद, बड़ी तेज। -	दूध कटु बच्चा और धूप-छाँह का धूप दोनो बहुत तीखे होते हैं।
606.	दूध के दूध आर पानी के पानी। -	न्यायपूर्ण फैसला।
607.	दु पइसाक मुरगी आर नो पइसाक फुचकाई। -	विषय से अधिक आड़म्बर में खर्च। (रामचन्द्र)
608.	दुरेक बजना सुनइते सोहान। -	दूर की चीजे सुनने में अच्छी लगती हैं।
609.	दुधेक डाढ़ल, घोरवो फुँइक पिए। -	ठोकर खाया, सब जगह संभलता है।
610.	दे गोबर, ले दोबर -	गोबर के प्रयोग से दोगुनी फसल होती है।
611.	देहाती मुरगी, विलायती बोली। -	आज के बच्चे माँ से भी मातृभाषा छोड़कर अन्य भाषा में बात करते हैं।
612.	देखलें नाञ् भावें, गेंदर ओइढ आवे। -	गुस्सा जिसे सुहाता नहीं है वह छिपकर सुनने आता है।
613.	देखले छोड़ीं समधिन। -	परिचित घर मे ही नया रिश्ता जोड़ना।
614.	देस गुने भेस। -	जिस मिट्टी में रहते हैं, उसी के अनुकूल चलना चाहिए।
615.	देखा भाइ कुदरत के खेल, पढ़े फारसी बेचे तेल। -	यह भाग्यवादी लोकोक्ति है कि भाग्य में न रहने पर शिक्षित भी तेल बेचता

		है। अब इसकी अहमियत नहीं है।
616. दोसर के देइख हाइ-हाइ, जेटो रहे सेटो जाइ।	-	दूसरे का धन देखकर जलना बेकार है, इससे लाभ नहीं हानिं होती है।
617. दँतकट से पारे, बतकट से नाञ्	-	बात काटने वाले लोग, दाँत काटने वालों की अपेक्षा अधिक दुखदायी होत हैं।

ध

618. धराइ गेलें चोर, नाञ धरइलें जोबोर	-	पकड़ाने से ही चोर नहीं तो बलवान।
619. धइन महतवाइन के जी, एक पाइ दूधे, नो पाइ घी।	-	बड़बोलेपन की हद नहीं होती। (खिरोधर)
620. धनेक सस्ते, मोसिक भोज।	-	धन को व्यर्थ में गँवाने के ढेर तरीके हैं।
621. धरलें नाञ् चोर, तो गागाइ के मोर।	-	चोर पकड़ाया नहीं तो हल्ला बेकार है।
622. धकें बिलाइर गाछ चघे।	-	विपरीत समय में स्वभाव भी विपरीत करना पड़ता है।
623. धन जीवन अढ़ाइ दिन, चामेक चोइख मानुस चिन्ह।	-	धन और जीवन स्थायी नहीं हैं, इसलिए मनुष्यता का कद्र करना चाहिए। (पूरन)
624. धन धरावे तीन नाम, फजलुवा, फजलु, फजलु रहमान।	-	जैसे-जैसे धन की वृद्धि होती है, उसके नाम के विशेषण बदलते है। (राम शरण)
625. धीया ने पुता, डंडाडोइर के खोजाइर।	-	बिना जरूरत के चीज खोजना, व्यर्थ मांग।
626. धानेक संगे, पोवांरे नाती।	-	बंसगत रिस्ता। (जगदीशराम, चिनपुन)
627. धान बाढ़ले गोबोर, कतारी बाढ़ले दोबोर	-	बढ़ने से धान बेकार, केतारी साकार होते हैं। (एस.के. दूबे)

628. धुरेक ढोल सुनइते सोहान। - दूर की आवाज सुनने में अच्छा लगता है।

629. धोबी पर धोबी बइसे, नेदरे लागे साबून। - एक ही तरह के काम करने वालों से उस काम की अहमियत कम हो जाती है।

630. धोबियाक नजइर धोतिए ऊपर। - सबकी नजर अपने लाभ की ओर दोड़ती है। (खिरोधर)

न

631. नइहराक कुकुर, सोसराइर के साढ़ बराबइर हवे हे। - औरत मैके से मिली सामानों को अधिक तबज्जो देती है। (सुदर्शन)

632. नरहड़ाक घाव, दुवारिक साव जल्दी नाञ् जाय। - टेहुना के घाव से और बनियाँ के ऋण से मुक्ति पाना सहज नहीं है।

633. नदी नाञ् नाभते भगवा खोले। - मैदान जाने की हड़बड़ी सबसे अधिक होती है।

634. नइहरे लबलब, सोसरारीं ढीठ, - नारी का फूहड़पन असंगत है। (यह बाट चलइते नाञ् ढाँपे पीठ। उन दिनो की लोकोक्ति है जब लोगों को नारी स्वतंत्रता पसंद नहीं थी। आज अर्थ बदल गया है।) (झिंगफुलिया)

635. नउवा देखले नोख बाढ़े - सामने काम वाला आदमी दिखायी देने पर अनायास उस काम की याद आ जाती है (बंशीधर)

636. नया मदारी, होर-होरवा साँप। - नया खिलाड़ी अनाप-शनाप करके ठगता है।

637. नरम भेंसुर, देवर बराबइर। - ब्राह्मणवादी व्यवस्था में भैंसुर के परछायी का स्पर्श भी पाप था। आज अर्थ बदल रहा है। (गोबिन्द)

638. नफा दाइले नून बराबइर, - सही मुनाफा पर अधिक ग्राहक आते

गँहकी आवे जरूर फइर।		हैं।
639. नइहर के कुकरो दुलरू।	–	नैहर की हर चीज प्यारी लगती है।
640. नंगटा नाचे तिते की? मेघ बरसे भींजे की?	–	नंगटा को पानी में कुछ भीगनें का गम नहीं उसी तरह निर्लज्ज को लज्जा भंग का गम नहीं।
641. नाचे नाञ् जाने मंदरियाक दोस	–	अपना अवगुण छिपाने के लिए बहाना बनाना।
642. नाचे नाञ् जाने अंगना टेढ़।	–	जिसे काम नहीं आता, उसे हजार बहाने ढूढ़ने पड़ते हैं।
643. नाञ् मामा तो काना मामा।	–	जिन्हें उमदा वस्तु उपलब्ध नहीं, वे खोट को भी तवज्जो देते हैं।
644. नाम गह-गह, कामें फाँक।	–	प्रसिद्धि से आदमी बड़ा बन जाता है, तो अदना काम भी अच्छा कहलाता है।
645. नाञ् काम, तो धाने कपासें सान।	–	जिन्हे कोई काम नहीं वे झूठा काम ढूढ़ते हैं।
646. नावा नौ दिन, पुरना सौ दिन	–	नयी चीजें कुछ दिन चमक सकती हैं पर पुराने की अहमियत हमेशा है।
647. नाञ् पारखें, नतिया भतार।	–	सही तरह से आवश्यकता की पूर्ति नहीं होने पर लोग गलत को भी तवज्जो देते हैं।
648. नाम विकलें ढेना राजा।	–	नामी हो जाने से वह राजा बन जाता है।
649. नाकट गावें, पतित बजावे।	–	इस समता राज्य में पतित कोई नहीं है। अर्थ बदल रहे है। (झिंगफुलिया)
650. नाँव ऊँच, काम बुच।	–	बड़ा नाम, घटिया काम।
651. नाञ् नो मन घी जुमत, ने राधाक नाच हवत।	–	असंभव शर्तो की कभी पूर्ति नहीं होती है।
652. नाढ़ाञ् देखे इद परब।	–	गरीबों को कभी आनंद नहीं। (अब

			अर्थ बदल रहे हैं।)
653.	नाँव देवइयाक ढेइर बुइध।	-	टरकाने हेतु बहानों की भरमार।
654.	नाँव गहगह, फेचा राजा।	-	अधिक प्रसिद्धि से अदना भी राजा बन जाता है।
655.	निमर के बहोरिया सभेक भोजाइ।	-	कमजोर की इज्जत कोई नहीं करता।
656.	निशा जइसन फझइत नाञ, अउकात छूटे आदइत नाञ।	-	नशा मनुष्य का बर्बाद करता है। जो छूटता नहीं
657.	निहकमियाँ गेलक हाट् किया देइख हिया फाट।	-	बिन पैसे का बाजार जाने से, वह बकवास लेकर आता है।
658.	निखवइयाक धन सरगे ठेके।	-	जिसके धन का कोई खाने वाला न हो वह बढ़ता जाता है।
659.	निहधनियाँ, धन देखे, दिन देखे तारा।	-	गरीब को धन होने से उसे असंभव चीजें दीखने लगती हैं।
660.	नींद नें माने खढरे खाट, पियास माने धोबी घाट, भूख न माने बासी भात, पिरित न जान जात-पात।	-	नींद, प्यास, भूख और प्रेम इन्हें परहेज की फुर्सत नहीं।
661.	नींद रहलें खढरे खाटी?	-	नींद खाट की परवाह नहीं करता।
662.	नून खाइ, गुन राखा	-	जिसने पाला-पोसा उसका गुन रखना चाहिए।
663.	निकलल बाण, वाणी, घुरतो नाञ नानी।	-	निकले तीर और बोली लौट कर नहीं आते।
664.	नून खाइ गुण गावे, ओहे मानुस पुन पावे।	-	नमक का मोल चुकाना चाहिए।
665.	निंदाइल, मोरल एक सामान ओकरा मारा हे ओसान।	-	सोए या मरे को मारना आसान हे।
666.	निमन मानुस निमन बात, सगरे पावे दूध भात	-	अच्छे व्यवहार की हर जगह इज्जत होती है।
667.	नोन बिना भोजन, आर सोन बिना खंजन।	-	नमक बिना भोजन और सोन बिना खंजन बेकार होते हैं।

668. नो सिखुवा मदारी, डोंड़ के भुरें हाथ।	-	झाँसा देकर ठगना।
669. नो नगद, तेरो उधार।	-	उधार की अधिकता होना।
670. नो के लकड़ी, नब्बे खरच।	-	मूल से सूद ज्यादा।

प

671. पइरकल बभना, घुइर-घुइर अंगना।	-	लोभ की लालच से बार-बार आना।
672. पड़े चाप तो बोले बाप।	-	पाबंद होने पर मनुष्य विवश हो जाता है।
673. पइसा रहलें, बाघेक आँइख मिले।	-	आज की दुनियाँ मे पइसा से सब चीज मिलना संभव हो रहा है। (चमन महंतो)
674. पठरूक मात्र, कते दिन खरजितिया मनइती।	-	निर्बल असहाय सिर्फ मान- मनौतियों के बल पर नहीं बच सकते। (राम चन्द्र)
675. पथल सिझे, ने मुरूख बुझे	-	मूर्ख को समझाना, पत्थर सिझाने के तुल्य है।
676. पहिल अतमा, तब परमातमा।	-	मनुष्य की पहली आवश्यकता रोटी है, बाद मे ईश्वर। (खिरोधर)
677. परास के ओहे तीन भेखुआ।	-	बहुत सी चीजों में कोई परिवर्तन नहीं है। (रामचन्द्र)
678. परक काँधे, बन्दूक कइ दिन।	-	दूसरे के सहारे हमेशा नहीं रहा जा सकता।
679. पहुने चिन्हे, विहिन धान।	-	मेहमान को सम्मान चाहिए उन्हें परिस्थिति से लेना देना नहीं हैं।
680. पढ़लँइ विद्दा, कोडलँइ पानी।	-	पढ़ाई किसी देवी देवता की देन नहीं, पढ़ने से विद्या और कोड़ने से अवश्य पानी मिलता है।(चमन महतो,खेसमी)

681. पथल तरें हाथ, कले-कले झाँक।	-	जब मुसीबत में जान, हो तो संभलकर धीरे-धीरे हाथ हटा लेना चाहिए।
682. पइसा ने कउड़ी बीच बाजारें, में दउड़ा-दउड़ी।	-	सम्पन्नता बिना खाली दिखावटी करना बेकार है।
683. परे कपारे, बुझे गँवारें।	-	अपने ऊपर आफत आने से, गंवार भी समझ जाता है।उसे समझाने की जरुरत नहीं ।
684. परोसिया भागल, बारी चाकर।	-	बगल वाला के जाने से जमीन मिल जाती है।
685. पइभे नाञ्,देखा बनाइर, एक खोखीं दु तरवाइर।	-	एक म्यान में दो तलवारें नहीं होती।
686. पढा-सुना खाक हे, दहेज देखा लाख हे।	-	योग्य तो योग्य अब अयोग्य भी दहेज में शामिल है।
687. परक रागें, भुएँ भात।	-	दूसरे के गुस्सा में, अपनी बर्बादी।
688. परक धने, विक्रम राजा।	-	दूसरे के धन को अपने में नहीं गिनाया जा सकता।
689. परेक देइख कहे हाय, जे रहे सेहो जाय।	-	जलन से अपना नुकसान है, नकल बेकार है।
690. पानी भोरे, से कि पियासें मोरे?	-	जिसके जिम्मे जो चीज होती है उसकी कमी उसे नहीं खलती।
691. पाँच जन जहाँ समाज हुआँ।	-	समष्टि से समाज बनता है।
692. पान बिना राजा? खान बिना घोड़ी।	-	सामंत वादी शान से समझौता नहीं करते। (यह सामंतवादी लोकोक्ति है, आज इसकी अहमियत नहीं है।)
693. पानी काटले, कि भिन हवे?	-	पानी को काट कर अलग नहीं किया जा सकता। (जमुना)
694. पाँड़े कइर घुरा-फिरा, हुमइच खाहे दही-चिरा।	-	यह ब्राह्मणवादी लोकोक्ति है, ब्राहाम्ण को खिलाना पुण्य कहा गया है। अब संविधान ने सबको समान हक दिया

			है।
695.	पाँच जन जहाँ, परमेश्वर हुआँ।	-	पंच परमेश्वर है।
696.	पिंधेक हो साँखा, तो मुँह काहे बाँका।	-	अपनी जरूरत साफ कहे, सिर्फ नाराजगी से जरूरत साफ नहीं होती।
697.	पिपर पात हांसे, बोर पात कांदे हे।	-	पीपल के पत्ते फड़फड़ाते हैं हँसते हैं बर के पत्ते चुपचाप रहते हैं। मतलब रोते हैं।
698.	पिठिया भाइ तरि नाता–गोता, एके–पेचें निपा–पोता		रिस्ता जो सहोदर भाई की तरह हो, धुर्त्त से नाता क्षण में समाप्त होता है।
699.	पुत मांगे गेलों, भतार खोइ अइलों।	-	लाभ की सभांवना से आना किंतु लाभ के बदले हानि उठाना।
700.	पूरबें रोपे पूरा किसान, तीन खँखरी तेरो धान।	-	बड़े किसान पूर्वा नक्षत्र तक धान रोपते हैं, जिसमें धान से अधिक खंखरी होती है।
701.	पूस पुनर्बसु बुना धान, माघा असलेसा कादो सान।	-	बुना धान की तैयारी, पुस पुनर्बसु से ही प्रारंभ होतो है।
702.	पेटें रेहे खुदी, तवे हवे बुधि।	-	भूख का निदान होने पर ही शिक्षा की बातें संभव है।
703.	पेंदली छोड़ी, सूरजी नाँव, सुरजी नासली गोटे गाँव।	-	नाम के अनुसार गुण का नहीं होना। (रामचन्द्र)
704.	पेटो नाञ भोरल, जाइतो गेल।	-	यह वर्णवादी लोकोक्ति है जब भात खाने से जात चली जाती थी। अब अर्थ बदल रहा है।
705.	पेट भेलो भारी, ककर बाप के धारी।	-	भोजन करने के बाद आदमी बेफिक्र हो जाता है।
706.	पेट बिगाड़े मुढ़ी, घार बिगाडे बुढ़ी	-	मुढ़ी से पेट और बुढ़ी से घर बिगड़ता है।
707.	पेंदल कथाक पाँइख हवे हे।	-	झूठी खबर जल्दी फैलती है।

708. पेट कुह-कुह, माथाञ फूल, देखा सइयाँ हामर रूप।	-	इस लोकोक्ति में एक अभद्र आमंत्रण है। (अविनाश)
709. पेटे-पिठें छोलइतो चाम, तभीं संभरतो घोड़ाक लगाम।	-	मोल चुकाए बिना सफलता नहीं मिलती।
710. पोसले कुकुर, काटे दोड़े।	-	अपना आदमी ही धोखा देता है। (रामशरण)
711. पोड़ल घावें, नुन छिटका।	-	जले पर नमक छिड़कना।
712. पोवा फुचकी बेचलों तेल, नाञ् जानो कि कते भेल।	-	खुदरा बिक्री का सही हिसाब संभव नहीं होता।
713. पोहुना चिन्हे, बिहिन धान।	-	मेहमानी सम्मान में, संचित सामान भी खपाना पड़ता है।

फ

714. फइर मुड़री बेल तर।	-	जहाँ एक बार धोखा हो जाता है। वहाँ दोबारा नहीं जाया जाता।
715. फाटल दूधे जोरन।	-	जिसका मन किसी मिलन से विरक्त हो जाता है उसे पुनः जोड़ने में सफलता नहीं मिलती।
716. फुसरी खोटइक के घाव।	-	तिल का ताड़ बनाना, खतम झगड़े को फिर उठाना।
717. फुटा बिसा, गाभ तिरिसा घोड़ा मुहाँ तेरो दिन।	-	धान फूटने पर 20 दिन में, गर्दन में 30, बाल झुकने पर 13 दिन में तैयार होता है।
718. फुहर नारी, ढिल कुदारी, हँसी के माँगे दामा, तीन काम बोकामा	-	चरित्रहीन स्त्री, ढीली कुदाली और हँस कर पैसा मांगने वाली औरत तीनों दुखदायी होती है।
719. फुटल डुभे माड़-भात, जारमनिक लोटे पानी।	-	यही गरीबी की हद होती है। अर्थ स्पष्ट है।
720. फेचा आपन आँइख नाञ देखे	-	जिसे स्वयं दिन को नहीं सूझता, वह

		पथ प्रदर्शक कैसे बन सकता है।
721. फोटा-फोटिक फचका फाँदा आड़ना	-	ठगने की साजिश रचने का काम करना।
722. फोड़ा फुटल, दुख बिसरल।	-	तकलीफ के क्षण समाप्त होते ही लोग दुख भूल जाते हैं।
723. फोद करे काम, सेनापतिक नाम।	-	काम मजदूर करे, नाम मालिक का होता है।

ब

724. बतर पइलें, अगरी धान।	-	वर्षा अनुकूल होने पर छप्पर के छाँछ में धान पकता है।
725. बत कट मउगी, नस कट खाटी।	-	बात काटने वाली औरत और नस काटने वाली खाट दुखदायी होती है।
726. बउना होइ के अकासेक बात?	-	औकात के मुताबिक डींग हाँकनी चाहिए। (झिंगफुलिया)
727. बइसाख मासें, बाभन हाँसे।	-	वैशाख ब्राहाम्ण के लिए असली आमदनी का महिना है।
728. बत्तीस दाँतेक भीतर जीभ।	-	जिसे बहुत दुश्मनों के बीच अकेले रहना है, उसे हमेशा सावधान रहना पड़ता है।
729. बप्पा गो बप्पा माँदइर लइ दे, बजाएब तो बजाएब नाञ तो टांगल रहे दे।	-	यदि वाद्य कला का ज्ञान नहीं है तो वाद्य-यंत्र रखने का कोई मतलब नहीं है।
730. बहुत काठें महुआ सिझे, बहुत बातें मुरूख बुझे।	-	महुआ सिझाने के लिए बहुत लकड़ी और मूर्ख समझाने हेतु बहुत बात चाहिए।
731. बइजके जाने, से सरगें घुरें।	-	मुँहगर आदमी हमेशा खुश रहता है।
732. बइठल बनियाँ कि करे, इ कोठाक धान ऊ कोठ में धरे।	-	बिना काम का आदमी, इधर का उधर करते रहता है।

733.	बइसल खइले, नदिक पानियो नाञ कुले।	- संचित धन को समाप्त होने में देर नहीं लगती।
734.	बजबे नाञ जाने तो मंदरियाक दोस।	- जिसे काम का अकल नहीं, वह बहाने वाली बात करता है
735.	बइठल बनियाँ कि करे, ई कोठी के धान ऊ कोठीं घरे।	- बे मतलब के काम करना।
736.	बइठल सें बेगारी बेस	- काम करते रहना चाहिए।
737.	बइनाक भोरोसे बियारी	- भरोसा पक्का नहीं होने से धोखा होता है।
738.	बरद खटे रउदें, साँढ खाइ मउजें	- खटनेवाला समाज भूखा है।
739.	बझवल बात छिटकल पानी	- गलत शिकायत जोर से लगता है।
740.	बाते लह लह, कामे ढोल	- बे मतलब की बात, काम कुछ नहीं।
741.	बप्पाक अरजन, मइयाक नाँव, सुन्दरें नासल गोटे गाँव।	- जब गृहस्थी में औरत का वर्चस्व हो जाता है तो माहौल बिगड़ जाता है।
742.	बइसल सें बेगारी बेस	- शरीर को बैठाकर नही रखना चाहिए।
743.	बाप-दादा के दाढ़ी नाञ, आर बकरा सें इयारी।	- बेमेल बात का सम्बंध होना
744.	बामनेक बेटा, धरे नाञ् बूँटा	- वर्णवादी पाखंड।
745.	बापेक नाम साग पात, बेटाक नाम- मिठाई दास।	अपनी पहचान को झूठी ऊँचाई देना।
746.	बाप कटा देखा, मगुर काठ काटा नाञ्।	- लकड़ी काटते देखना, बहुत खतरनाक है।
747.	बारो बेगइत, तेरो चुल्हा।	- एकता का विकृत रूप होना।
748.	बारो महीने बारो चास तब करिहे गोड़ाक आस।	- गोड़ा धान की खेती खेत को 12—13 बार वर्ष में जोतने की जरूरत है।
749.	बारो बछरे, बेहरा फुलल।	- बहुत दिनों के बाद अच्छे दिनों का आना।
750.	बारो गीदर तेरो ताल, सुअर निअर हवे हाल।	- बहुत बच्चो से बहुत तरक्की नहीं, घर में कलह होता है।

751. बाहर से चाँदी भीतर से गिलट।	-	ठगबाजी का धंधा ऐसे ही चलता है।
752. बाप देखे गठरी, माञ् देखे अँतरी	-	बाप पैसे का दीवाना होता है, माँ अच्छी सेहत देखना चाहती हैं।
753. बाप काले चास नाञ, कोदो बारी माचा।	-	जिसे खेती का अनुभव नहीं वह बेतुका हरकत करता है।
754. बाप काले चास नाञ बेला मुँडे बास।	-	जिसने कभी खेती नहीं की, वह क्या जाने निगरानी।
755. बाप हेरे, पुत खाइ।	-	इस जमाने में बेटे खा रहे हैं, बाप टुकुर-टुकुर देख रहे हैं
756. बाघेक अगुवा फेकाइर।	-	बाघ के डर से फेकाइर आगे भागता है।
757. बाँदर के हाथें नारियल	-	बन्दर के लिए नारियल का कोई उपयोग नहीं है।
758. बामन नाचे, कोइरी देखे।	-	ब्राह्मण नृत्य करता है, कोइरी देखता है।
759. बाँदर कि जाने, आदी के सोवाद	-	जो जिसको उपयोग नहीं करता, उसका स्वाद नहीं जानता।
760. बाँझ कि जाने प्रसूती के पीरा	-	जिसने कभी दुख झेला नहीं, वह दुख के विषय मे नहीं जान सकता।
761. बातें लह-लह काम ढोल।	-	बे मतलब की बातें, काम कुछ नहीं।
762. बावें-दहिनें बालुक घार, छुलें हवे फकपार	-	सरकारी घर ऐसे ही बन रहे हैं।
763. बाछा गरूक चास आर छोड़ा टिआक वास।	-	साँड़ और बच्चे परिश्रम के लायक नहीं।
764. बापें ने पुता, छाइन चइंढ़ मूता	-	बदमासी की हद होना।
765. बाँस बोने, डोम काना।	-	जहाँ एक ही तरह की बहुत चीजें होती है, वहाँ चुनाव करने में धोखा हो जाता है।
766. बाप कहले बनिएं गुर दे?	-	बनियाँ कभी किसी का मित्र नहीं होता

			और कोई चीज मुफ्त नहीं देता है।
767.	बापेक पुत परापइत घोड़ा, कुछ नाञ् तो थोड़म थोडा।	-	बाप का गुण बेटे में कुछ-न-कुछ अवश्य आता है।
768.	बाप खातिर एथी नाञ् पुत कहलक लोथी करब	-	जिसने पिता की सेवा नहीं किया, उसके लिए अन्य सभी आडम्बर व्यर्थ हैं।
769.	बाप काले नाञ् खइलों पान, दाँत निकोटइत गेल पुरान।	-	जिसे जिस चीज की जानकारी नहीं उसे उसका उपयोग नहीं करनी चाहिए। (झिंगफुलिया)
770.	बाप घार घोड़ी नाञ्, भोर्की लगाम।	-	जो जिस चीज को जानता नहीं वह उसका गलत उपयोग करता है।
771.	बाँस नेवल कुलेक डरे डोम कहे हामर डरें।	-	सज्जन अपने स्वभाव से झुकते हैं, घमंडी सोचते हैं कि उसके डर से झुक रहे हैं।
772.	बिछाक मंतर नाञ् जाने, साँपेक भूरें हाथ।	-	अल्प ज्ञानी बड़े काम को करने में खतरे का शिकार हो सकता है।
773.	बियाइ गाय, हाँफे बरद।	-	काम करने वाला परेशान नहीं, दिखावा में दूसरा व्यक्ति ही अधिक परेशान दीखता है।
774.	बिचारें कभुँ बदमासी नाञ्, झिंगा चोर के फाँसी नाञ।	-	अपराध के मुताबिक सजा हो।
775.	बिहा गेले, छमड़े नाच	-	अवसर गुजर जाने के बाद नृत्य-गीत वाद्य फीके लगते हैं।
776.	बुरबक तेली, कुरथिक घानी आधा तेल, आधा पानी।	-	हर काम में, कायदा का महत्व है बरना काम बिगड़ जाता है।
777.	बिचेक बजना, सुनइते सोहान।	-	दूर की आवाज अच्छी लगती है। (खिरोधर)
778.	बुतरू मोरे जाड़े, बिलाइ ले कुरता।	-	लोग कुत्ता बिल्ली के लिए पोशाक बनवा रहे है, पर मनुष्य के बच्चे नंगे

		घूम रहे हैं।
779. बुची घइली, नोकर चोर।	-	मामूली चीज की चोरी का चोर, मामूली व्यक्ति को ही दिखाया जाता है।
780. बुढ़ी घोड़ी, लाल लगाम।	-	वयस्क औरत के लिए अधिक साज-श्रृंगार अच्छा नहीं लगता।
781. बुढ़ बरदें, कि सोहराइ।	-	आनंद मनाने के लिए युवा उम्र ही उपयुक्त है।
782. बुढ़ कउवें कि पोस माने।	-	बचपन ही सीखने सिखाने का उपयुक्त समय है।
783. बुढ़ बकरी, हुड़ार से ठाठा	-	कम औकात वालों को बड़ों से नहीं लगना चाहिए।
784. बुझा हे आँधारें लुटल हाट	-	अंधेरे का लाभ उठाकर की गयी लूट-पाट की प्रक्रिया।
785. बुझा सुदखोरिक मान, किरी दइ कोरी टान।	-	सूदखोरी ही शोषण की पराकाष्ठा है। एक से हजार बनाने की व्यवस्था है।
786. बेटा आर लोटा मजइलें ठीक।	-	लोटा और बेटा को नित्य परिष्कृत करने की जरूरत है अन्यथा उसमें त्रुटियाँ आएगी।
787. बेल पाकल तो कउवा बापेक जाइ कि?	-	संसार में सुख के अनेक साधन हैं पर पहुँच के बाहर सोचने से क्या फायदा?
788. बेसवा नासे पगरी-पाग। उजर गाते, करिया दाग।	-	वेश्या सज्जन को बदनाम कर देती है।
789. बेलदारेक बेटिक नाञ् नइहरें सुख, नाञ ससुरारी सुख।	-	गरीब को बिना खटे कही उपाय नहीं, घर हो या ससुराल।
790. बेटा-बेटी ककरो, घी ढारे मंगरो।	-	किसी अन्य के खाने से, अपना पेट नहीं भर सकता है।
791. बेसी खट-खट गाड़ी कि मुड़ीं?	-	अधिक तकादा, खीझ का कारण बन जाता है।

792. बंद भेल नाक, फुइल के ढाँक - यदि श्वसन क्रिया बंद हो जाय तो शरीर फूल जाता है।

793. बंगला घर के चाली, आर ससुर घारेक साली, बड़ी सुन्दर - बंगला घर का छाँछ और ससुराल में साली देखने में अच्छी लगती है।

794. बोड़-बोड़ हाथी बोहाइ गेल, गधें कहे कते पानी। - जहाँ बड़ी-बड़ी हस्तियाँ नगण्य हों, वहाँ कमजोर की क्या पूछ?

795. बोहबें हिरवा तेली रकम। आपन खरच कर कम - धन का अंधाधुध दुरूपयोग विनाश का कारण बनता है।आमद के मुताबिक खर्च हो।

796. बोन पोड़े सोभिन देखे हिया पोड़े केव नाञ् देखे। - जंगल की ज्वाला सब की नजर में होती है, पर दिल की ज्वाला कौन देखे?

797. बोरेक भाइ बाहर, आर कनियाक भाइ भीतर। - बहन के घर उसका भाइ सबसे अधिक प्यारा होता है। पति का भाइ उसका स्थान नहीं ले सकता है।

798. बोन झार कि बोन झार, फइर बतइबइ मंगलबार। - वन प्रान्त का असीम सौन्दर्य अवर्णनीय है। इसका वर्णन समाप्त नहीं हो सकता है।

799. बोल नाञ् बोल, खाली कबर ओल। - श्रम शक्ति का सही उपयोग नहीं हों रहा है।

800. बोका गीदर सींघन चाटे, पढ़ल बुले ठाटें-बाटे। - शिक्षित महत्वपूर्ण बन जाता है अनपढ़ भूखा-नंगा दिन काटता है।

801. बोर-कनियाँइ राजी, तो कि करत काजी। - जोड़ी राजी हो तो कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता है।

भ

802. भइयो मीठ, भतरो मीठ। - एक विवाहित कन्या के लिए उसका पति भाई दोनों बहुत प्रिय होते हैं।

803. भइर रोपा, नाञ् खोपा। - सावन काम का महत्वपूर्ण महीना है,

			इसलिए साज–शृंगार बाज–बजना सभी बंद रहते हैं।
804.	भल–भल ऊँट बोहाइ गेला, गधा पुछे कते पानी।	-	जहाँ बड़ी–बड़ी हस्तियों का पता नहीं, वहाँ कमजोर की क्या बिसात। (रामचन्द्र)
805.	भजन कीरतन जाप जइग, सरग देखाइ लेहे ठइग।	-	परजीवी मन गढ़न्त स्वर्ग–नर्क की कल्पना से समाज को ठग रहे हैं।
806.	भदरिया दुख होवेक, पइलाक नाप पोवा होवेक।	-	भादो में, किसानों के घर अनाज की कमी के कारण परेशानियाँ आती हैं।
807.	भादर मासें नाभे बान, तेरो खखरी तीन धान।	-	भादो में रोपे गए धान में, धान से अधिक खँखरी होती है।
808.	भागल भूत के लगोटिए सही।	-	जहाँ कुछ भी मिलने की उम्मीद नहीं वहाँ थोड़ी भी मिले तो बहुत है।
809.	भादोक रउदें, घर जवँइया भागल	-	भादो महीने का धूप नाकाबिले बरदाश्त होता है, इसमें अच्छे–अच्छे परास्त होते हैं।
810.	भादोक अधरतिया, जेठक दुपहरिया।	-	भादो की आधी रात और जेठ का दोपहर दोनों बराबर दुखदायी होते हैं। (खिरोधर)
811.	भात खइलें भूते काटऽ हइ।	-	किसान के घर भात से परहेज समझ से बाहर की बात है।
812.	भात रहलें, कउवाक अकाल।	-	खाना रहने से खाने वालो की कमी नहीं।
813.	भिन–भेदवा जते चाइल, धुरूत गुलाक कुट–चाइल।	-	ऊँच–नीच भिन–भेद का जाल, धूर्त्त–बाजों के कारण है।
814.	भुख तो छुछ नाञ, नींद तो खढ़र नाञ	-	आँखों में नींद होने से, पेट में भूख रहने से, उखर खाट या बासी भात सब अच्छा लगता है।
815.	भूत भागलें सइरसा कि,	-	समय की कीमत होती है।

धान मोरलें बइरसा की?

816. भिनाइल भाइ, परोसिया बराबइर।	-	अलग रहने वाला भाइ पड़ोसी जैसा है।
817. भेरंडी बोने, बिलाइर बाघ।	-	जहाँ महत्वपूर्ण लोग नहीं होतें, वहाँ कमजोर ही श्रेष्ठ समझे जाते हैं। (दिवाकर)
818. भेलइ तो सूपे, नाञ तो चुपें।	-	यहाँ की उपज, हुई तो बहुत, अन्यथा कहने की जरूरत नहीं।
819. भूखल बंगाली, भात-भात।	-	बंगाली भात के शौकिन होते हैं।
820. भोजिक भाड़ँल भाइ, हवे नाञ सहाइ।	-	पत्नी के इशारे पर चलने वाला व्यक्ति किसी के काम नहीं आ सकता।
821. भोरल भादर सुखल जेठ, एके रंग रहेक।	-	सुख-दुख को समान रूप से निभाना।
822. भोज घरी कोंहड़ा रोपा।	-	तुरंत में सब चीज संभव नहीं हो सकता।
823. भोज के आगु, रइन के पाछु।	-	खाने में आगे और लड़ाई झगड़ा में पीछे रहने से लाभ मिलता है।
824. भोरल-पुरल घर होवा।	-	सुखी सम्पन्न परिवार का होना।
825. भोज-भात लंद-फंद, हवेक चाही सब बंद।	-	मातम में हलुवा-पुड़ी चकाचक उत्सव बंद होना चाहिए।

म

826. मंगरे खिअइली परोसिन, बुधें खटइली भोइर दिन।	-	छद्म दोस्ती से काम निकालना।
827. मंगनिक घोर, चेंको सोवाद।	-	मुफ्त मिली हुई वस्तु की गुणवता जाँची नहीं जाती।
828. मंगनिक घोड़ाक दाँत नाञ् देखल जाइ	-	मुफ्त मिली वस्तु की श्रेष्टता नहीं देखी जाती है।
829. मन भेले गन की,	-	जब मनुष्य के हृदय का मिलन हो

	मानुस मिललें पन की?		जाता है तब पत्रा का गन-पढ़ बेकार हैं।
830.	मने हुरा, बगलें छूरा चुक पइलें पुरम पूरा	-	प्रत्यक्ष में चिकनी-चुपड़ी बातें और परोक्ष में फाँसने की तैयारी।
831.	मनेक मतन खुसी, मिठाइ देली मोसी	-	बच्चों को मौसी प्यारी लगती है।
832.	मइया गुने धीया आर बपा गुने पुता।	-	बेटी में माँ का गुण और बेटा में पिता का गुण स्वाभाविक है।
833.	मइल कापड़, बाढ़ल केस एहे हे दरिदरेक भेस।	-	मैले-कुचइले कपड़े और बढ़े हुए बाल गरीब-गुरबों के चिन्ह हैं।
834.	मनेक गुमान मने राखा।	-	अपनी बड़ाई कभी न बोलें।
835.	मकरें बान, टिकुरें धान।	-	मकर नक्षत्र के रोपा से प्रचूर धान होता है।
836.	मन चंगा तो कठउती गंगा।	-	विशुद्ध रहने के लिए गंगा जरूरी नहीं।
837.	माएक घेचें डोरा, बहुक घेचें हाइर	-	माँ की अवहेलना, पत्नी से प्यार।
838.	माछी खोजे घाव, बादी खोजे दाव	-	दुश्मन को हमेशा मौके की तलाश रहती है।
839.	माछेक दउड़ पनिए भोइर।	-	हर बात की सीमा होती है।
840.	माँगनाक ऊपर चाखना	-	मांगी गयी सामग्री में ऊपरी स्वाद की गुंजाइस नहीं रहती।
841.	माँगल भातें बियारी।	-	मांगे हुए भोजन से रीत की पूर्ति नहीं की जा सकती।
842.	माँगल दूधे, छउवा पोसाइ।	-	दूध मांग-मांग कर किसी बच्चे का पोषण संभव नहीं।
843.	मारे मउगी, पादे परोसिया।	-	घर में उत्पात मचाने से उसका स्वभाव जान कर पड़ोसी उलझने से डरते हैं।
844.	मारे मिटकी विलाइर के।	-	बिल्ली से भी तेज आँख वाला
845.	मारेक मन तो सागे काहे नाञ	-	अनायास झगड़ा करने के लिए अनेक

	हरदी।		बहाने ढूढ़े जा सकते हैं।
846.	मालिक नाञ मालिक, जे चोंख सइ मालिक।	-	इस दुनियाँ में जो होशियार, वही मालिक बन जाता है।
847.	मांगा से भांगा बेस।	-	मांगने से अच्छा घर की टूटी वस्तु है।
848.	मामाक छगरी, बाँधेक मछरी।	-	सुलभ वस्तु, जो आसानी से मिल सकती है।
849.	माघेक जाड़ बाघ जइसन।	-	माघ में जाड़ा का अन्त है, पर माघ का जाड़ा कष्टकारी भी है।
850.	माछेक माञ के, पुतेक सोक।	-	मछलियाँ तो बिखर जाती है मछली की माँ कहाँ सुध ले पाती हैं?
851.	माड़ाक गरू जिते काहाँ।	-	बंधुवा व्यक्ति कहीं नहीं जा सकता है।
852.	माञ् मोरे, मोसी जीए।	-	जो बाप साली के वश में हो उसे बच्चों की माँ से अधिक बच्चों की मौसी की फिक्र होती है।
853.	मारिक डरे, भूत पाराइ।	-	पिटाई के डर से सभी डरते हैं।
854.	माइर करे मइने, नाम हवे ठढ सिंघवा के।	-	युद्ध में सिपाही लड़ते हैं, पर जीत का सेहरा मंत्रियों अधिकारियों को मिलता है।
855.	माग देखे गठरी, माञ् देखे अँतरी	-	पत्नी दौलत देखती है, पर माँ उसकी सेहत देखती है।
856.	माछेक दोड़ कतना, पानिक दोड़ जतना।	-	सीमा से बाहर जाना संभव नहीं।
857.	माछ खिआव बाँध नाञ देखाव।	-	उपज दो, स्रोत मत बताओ।
858.	माञ् गुने बेटी आर बाप गुने बेटा	-	लड़की में माँ का और लड़के में पिता का गुण आता है।
859.	मियां बीबी राजी तो कि करे काजी	-	यदि दोनों राजी हैं तो अन्य की दखल अंदाजी बेकार है।
860.	मुँहें माइर, पीठें चूमा।	-	सब के सामने बेइज्जती और घर में प्यार बेकार है।

861.	मुँह पर मीठ आर परे ढीठ।	-	ठगने के लिए मुँह पर चिकनी चुपड़ी बातें करना।
862.	मुरखा के मउगी, सभे के भउजी।	-	सभी सीधापन का फायदा उठाते हैं।
863.	मुँहे गुर, पेटें खुर।	-	मीठी बात से धोखा देना।
864.	मुँह चिन्ह-चिन्ह जिरा, गाँइड़ चिन्ह-चिन्ह पिर्हा।	-	औकात देखकर लोगो का सम्मान किया जाता है।
865.	मुरूख बुझे, ने पथल सिझे	-	जैसे पत्थर को सिझाना मुश्किल है, ठीक उसी तरह मूर्ख को समझना भी मुश्किल है।
866.	मुरूख बनाइ लेल हड़इप, कि करब काँइद कलइप।	-	हड़पने के पहले मूर्ख बनाया जाता है, बाद में गरीब रोता है।
867.	मूर नाञ् जाने, सूइद माँगे।	-	सूदखोरों को मूलधन से ज्यादा सूद की चिंता रहती हैं।
868.	मुरगी के जान जाइ, खवइया के सोवाद।	-	अपने आनंद के आगे, लोग दूसरे की पीड़ा नहीं देखते।
869.	मुड़ मुड़इते, ओला पड़ेक।	-	किसी काम के सम्पन्न, होते ही बाधाओं का टपक पड़ना।
870.	मुँड़ मुड़ाइ के, चुनेक टीका।	-	किसी अपराध पर सामाजिक दंड देना।
871.	मुरूख के टाका, बुइधगर के नास्ता	-	मूर्खो के परिश्रम पर ही चतुर मौज मनाते हैं।
872.	मुरूख बेटा, जोम बराबइर	-	अपढ़-लड़का पीड़ा का कारण बनता है।
873.	मुँड़ेक लुगा, भुइएँ धरा।	-	अपनी इज्जत आबरू दाव पर लगाना।
874.	मुँड़े तो चुइल नाञ, सिथें हे सिंदूर	-	केश बिना सिंदूर नहीं सोभता।
875.	मुचिक सरापें, कि डांगर मोरे?	-	किसी के कोसने से किसी की हानि संभव नहीं, यह ब्राह्मण वादी लोकोक्ति है। अब इसकी अहमियत नहीं है।

876. मुची घारें, फुचिक झोर	-	बड़े परिवार में कम सामग्री बेकार है। यह वर्णवादी लोकाक्ति है। अब इसकी अहमियत नहीं रह गयी है।
877. मुरगिक टेगे तेल देलें कि कोहबरे बइसे?	-	किसी पशु-पक्षी को मनुष्य जैसा तवज्जो देने से वह मनुष्य नहीं बन सकता।
878. मिल-मेइस करा काज, हार-जीते नखइ लाज।	-	हार-जीत की परवाह किए बिना मिलकर रहना चाहिए।
879. मिलत तो छोडब नाञ, माँइग के खाइव नाञ।	-	भूख रहने पर भी मांग कर खाना अनुचित है। सम्मान के साथ भोजन उचित है।
880. मोट देइख डरिहा नाञ्, पातर देइख के भिढ़िया नाञ्।	-	किसी की क्षमता-कुशलता मोटा या दुबला देखकर करने से धोखा हो सकता है। (रामचन्द्र)
881. मोछें मरद, गोछें धान, गोबर डिंगे डांगर।	-	मोछ से मर्द का, पुआल से धान का और गोबर से मवेशियों का पता चलता है।
882. मोरले बइद, बिकले गहँकिया।	-	मौका खो देने के बाद जरूरत बदल जाती है। (खिरोधर)
883. मोइर जइहा जी, तो बादे खहिया घी।	-	मर जाने के बाद बहुत अच्छा खाना या दवा बेकार है।
884. मोरल मुड़ी, घास खाइ?	-	मरा मुँह खाने के लायक नहीं होता।
885. मोद मासें, काम नासे।	-	किसी भोज-भात में शराब एवं मांस गड़बड़ी फैलाता है।

र

886. रइन के अगाड़ी भोज के पिछाड़ी	-	लड़ाई के आगे और खाने मे पीछे रहने से नुकसान होता हैं।
887. रइन के अगाड़ी घोड़ा के पिछाड़ी	-	लड़ाई के आगे और घोड़ा के पीछे

		रहना, खतरा है।
888. रसल-बसल गाँव आदि बासिक ठाँव	-	पुरबा-पुरूषों का बसाया, आदिम और सम्पन्न गाँव।
889. राजा घारें मानिक के दुःख।	-	यह राजतंत्र की लोकोक्ति है कि सत्ता के हाथों हर संपत्ति है।
890. रागल कुम्हार जुझे माटी।	-	कुम्हार अपना गुस्सा मिट्टी पर उतारता है।
891. रावें चिन्हाइ जाइत, चारें चिन्हाइ पाँइत	-	आवाज और खान-पान से श्रेणी का पता चलता है।
892. राँड़िक दुख परलें काँदे, देइख के अहियाता (सधवा) काँदे।	-	कुछ दुख से दुखी होकर रोते है। कुछ आदतन देखा-देखी रोते हैं।
893. रिन लइके, काने सोना।	-	उधार करके श्रृंगार ठीक नहीं। (खिरोधर)
894. रोउद उग रे अंभना देबो मुरगी चखना।	-	यह बच्चो की बोल है, जब बच्चे बारिश बादल से परेशान रहते हैं। (झिंगफुलिया)
895. रोऽ का मजोरी, पूरा काम।	-	नगद सही मजदूरी से, अच्छा काम होता है।
896. रामा माइर खाइ, लखना हेंसरे।	-	मार खाने वाला मार खाता है, दूसरा व्यक्ति रोता है।
897. राड़ो जाने महुआक हाल।	-	निचले लोग दारू को जरूर जानते हैं।
898. राँड़िक पुता खोदाही घोड़ा।	-	बे लगाम के बेकति।
899. रोह रे बोक, अघनेक आसें।	-	मौके की तलाश में आस लगाए रहना।

ल

900. लड़ -बड़ जितिया, दु पहरें पारन।	-	प्रकृति पर्वो के निभाने में लापरवाही।
901. लर लटेकन, नाक पारे।	-	नाको के जेवर तकलीफ देह होती है।
902. लट-पट, सट-पट ढेइर खट पट।	-	पाखंड प्रपंच बढ़ता ही जाता है।
903. लघें घास, ढोंगे पानी।	-	लापरवाही से भरी सेवा।

904. लटल मियाँ, सटल पेट, खाइ रोइज भइर पेट।	-	रोज खटना, रोज खाना।
905. लंगट गुरू, लंगट चेला, लंगटे लंगटे भेंट भेला।	-	चोर-चोर मौसेरा भाई होना। (कामता प्रसाद)
906. लंगटाक नाच, भंगठा देखे।	-	एक चरित्र के लोगों की एक ही पसंद होती है।
907. लंगट बेस, जे झंझट नाञ्।	-	झंझट बहुत खराब चीज है।
908. लादु साव के बेटा पादु साव।	-	शोषक का बेटा शोषक ही होता है।
909. लावा-लाठी, चंदन-काठी।	-	खेल में बच्चो के बोल।
910. 'लारी' हुहुआ सुखल खेत, गंड़क गोड़ातु पानिक रेत।	-	लारी, हुहुआ को सूखा क्षेत्र कहा गया है और गंडक गोड़ातु को पानी का।
911. लाख से लीख भेल, जग खातिर सीख भेल।	-	अमीर से गरीब बनने का उदाहरण होना।
912. लारी पोना, काने सोना, माइल चितरपुर हार्थे दोना।	-	लारी पौना को सम्पन्न कहा है, चितरपुर को गरीब कहा गया है, पर अब यह लोकोक्ति अर्थ हीन लगती है।
913. लाल धोती, फुच-फाच कहे खूब झूठ साँच।	-	गेरूआ पहने लोग खटकर नहीं, झूठ सच बोलकर ही खाते हैं।
914. लाजे भवासिन बोले नाञ्, भेसुर खाइले छोड़े नाञ।	-	ब्राह्मणवादी व्यवस्था में भेंसुर की परछायी से भी परहेज है। वैसे में गलत सम्बन्ध की चर्चा है।
915. लाइतेक देवता, बातें नाञ् सुने।	-	सबका शासन एक तरह नहीं हो सकता।
916. लार-बार, चेत संभार।	-	थूक और केश दूसरो के स्पर्श में नहीं आनी चाहिए। लोभ और केश दोनों पर नियंत्रण।
917. लीलज नाचे, थेथर देखे।	-	दोनों एक ही श्रेणी के लोग हैं।
918. लिया नाञ दिया,	-	बहुत भटकने के बावजूद भी कुछ नहीं

	घुराइ मोरली मइया धीया।		मिलना।
919.	लुइर ने भास, गोड़ लागऽहियो सास।	-	जिन्हें शिष्टाचार का ज्ञान नहीं वे सम्मान को मजाक में लेते हैं।
920.	लुइट आने, कुइट खाइ।	-	जिसके घर में जमा पूंजी कुछ नहीं, रोज कमाना, रोज खाना है।
921.	लेना-देना खारा-खारी, खावा-पिया भाया-चारी।	-	लेन-देन ठीक रहने से रिश्ता निभता है।
922.	लेना ने देना भोइर नाक ठेना	-	जिन्हे लेन-देन कुछ नहीं करना सिर्फ सर दर्द बनना है।
923.	लुगा गुने आंगा, लोहा गुने टांगा।	-	कपड़े से कमीज की और लोहे से कुल्हाड़ी की गुणवता बढ़ती है।

स

924.	सावाँग रहलें पहरी भात	-,	श्रम करने वाला भूखों नहीं मरता।
925.	सावाँग नाञ् चले आर कँइराक भार।	-	जो शक्तिहीन है, उसपर बोझ लादना बेकार है।
926.	सइ परासेक, तीन भेखुआ।	-	जिसमें कोई परिवर्तन न हुआ हो।
927.	सनिचरे सात, मंगरे तीन, बाकि बइरसा दिने-दिन।	-	बारिश शनिवार को शुरू होने से सात दिन, मंगल से तीन, एवं बाकि अन्य दिनो में एक दिन रहता है।
928.	सदाइ के कुद-चढ़नी, नाम पदनी।	-	यह सामंतवादी लोकोक्ति है। इसमें चंचलता कों घृणा वाचक नाम देकर भर्त्सना की गयी है।
929.	सास ने ननद, महाआनंद।	-	हमारी संस्कृति में सास एवं ननद पुतोह के आनंद में बाधा बनती है इसलिए उनकी अनुपस्थिति आनंद का विषय है।
930.	सास-ननद भेल झगरा, खपटा झिपटा भेल बखरा।	-	पारिवारिक कलह से कुछ उपलब्धि नहीं हो सकती। सिर्फ कुछ अपशब्द

		उपहार में मिल सकते हैं।(झिंगफुलिया)
931. सरगे कि बोड़ पइला हइ।	-	सभी जगह नाप-तौल एक जैसा ही है।
932. सहिया मीठ, कि गुर मीठ।	-	सहिया की मित्रता गुड़ से भी अधिक मीठी होती है।
933. सरला भुतेक, सपना गोरहो।	-	भूत काल्पनिक डर है। नहीं जानने वालों को इसका भान नहीं इसलिए इसका सपना भी डर का कारण बनता है।
934. सस्ता गोहुम, राड घर पूजा।	-	यह वर्णवादी लोकोक्ति है। इसमें दलितों को हीन कहा गया है। ऐसी कहावतें आज निरर्थक हैं।
935. सतुआ बाँइध के पाछु पड़ना।	-	दुश्मनी साधने के लिए किसी के पीछे लग पड़ना।
936. सइयाँ भेले कोतवाल आब हमरा कथिक डर।	-	जिसके सहायक के रूप में कोई महान शक्ति आ जा जाती है तो वह किसी की परवाह नहीं करता है।
937. समुंदरे सतुवा, पहारें कटुआ।	-	ऊँट के मुँह में जीरा, जैसा होना।
938. साँपो मरे, आर डांगो नाञ् टुटे।	-	किसी को मात देने में कम लागत हो।
939. साँझ के पहुना, साँझ के पानी कहुँ ने जाइ।	-	देखा गया है कि शाम की बारिश और शाम के मेहमान जरूर ठहरते है।
940. साग खाइ नाञ् जाने, पाते लइ दोड़ल।	-	वस्तु ज्ञान जरूरी है, जिसें साग का ज्ञान नहीं वह पतों को ही साग समझते हैं।
941. साँखा पिंधेक हइ तो, मुँह काहे बाँका।	-	अपनी जरूरत के मामले में स्पष्ट होना चाहिए संकोच करने से कार्य सिद्धि नहीं होती।
942. सेवा करलें मेवा पावे।	-	सेवा का फल मीठा होता है।
943. साँप छुछुंदर के गति होवा, जाइन बुझ्झ के अति खोवा।	-	दुविधा में पड़ना।
944. सियान के गुह तीन ठिन।	-	तथा-कथित सयाने हमेशा धोखा खाते

		है।
945. सुरू मुखें निशा थूके, ओहे सुखेक ढेलुवा झुके।	–	नशा नहीं करने वाला सुखी होता है।
946. सिंघ भाँगलें बाछाक दर्ले।	–	शक्तिहीन होने से पहलवान भी पहलवान नहीं रह जाता।
947. सिथ चाटलें कि पियास मोरे।	–	संतुष्टि के लिए भरपूर चाहिए।
948. सुधुवा खातिर साग-सतुवा, टेढ़ा खातिर पकवान।	–	बदमाश से सभी डरते हैं सब जगह उसके लिए अलग इंतजाम होता है।
949. सुम के धन, सइताने खाइ।	–	कंजूस का धन बदमास ही लूट ले जाते हैं।
950. सुम के धन, मिएँ चाहे दिएँ।	–	कंजूस का धन सड़ जाता है या कोई लूट लेता हैं।
951. सुते से खोवे, जागे से पावे।	–	सजगता से सुख मिलता है, आलसी को कुछ हासिल नहीं होता।
952. सुइया जहाँ समसे नाञ्, हुवाँ फार लइ के आवेक।	–	बिना तालमेल का प्रयास करना।
953. सुअर कि गुह खाइ ले छोड़े।	–	संस्कार जल्दी नहीं बदलते।
954. सेठ छाप बेबस्था।	–	आडम्बर पूर्ण खर्चीली व्यवस्था।
955. सोझ के धन सभे खाइ।	–	सीधा-सादा को सभी लूटते हैं।
956. सोझा बेचारा बाँधल जाय।	–	सीधा-सादा ही हमेशा पकड़ा जाता है।
957. सोनार के सौ चोट लोहार के एके चोट।	–	कमजोर तिल-तिल जोड़ता है। दबंग एक ही बार में ढाह देता है।
958. सोवें सुपारी, हजारें पान, लाखें घोड़ा, करोडें दान।	–	ये पुराने समय की औकात है, जिसमें सौ पर सुपाड़ी, हजार पर पान, लाख में घोड़ा और करोड़ पर दान की बात कही गयी है।
959. सोझ कहे, सुखी रहे।	–	छल प्रपंच से दूर रहने वाला व्यक्ति सुख से रहता है।
960. सोझ कहे, निरबत जाइ	–	सही कहने पर लोग विश्वास नहीं

		करते।
961. सँखवाक देइख के घोंघियों मोचराइल।	-	देखा-देखी करके नकल से ऊँचा उठना मुश्किल है।
962. सोब कुकुर गंगा नहइता तो पतरी के चाटत।	-	यह सामंती सोच है कि यदि सभी होशियार हो जाएंगे तो गंदा काम कौन करेगा।
963. सोझ अँगरी घी नाञ् उठे।	-	सीधे व्यक्ति हमेशा ठगे जाते हैं।
964. सोसता कांदे सो बार, मंहगा कांदे एके बार।	-	महंगा माल टिकाऊ होता है।
965. सोझ के धन सभे खाइ।	-	सीधा के सभे ठगे।
966. सोझा बेचारा बाँधल जाइ।	-	सोझा के सजाइ मिले हें।

ह

967. हाइ पेट बारो पइला।	-	थोड़ा काम में अधिक मजदूरी मांगना।
968. हाँड़ी किना ठोंइक के, कनियाइ करा देइख के।	-	रिस्ता बहुत सोच समझ कर करनी चाहिए।
969. हाम अइलों तोराँ जाइन, तोञ लेलें डोरा टाइन।	-	जिसके भरोसे आया वहीं धोखा पाया।
970. हथिया मोरल आरी में, आपन बरियारी में।	-	बिना मतलब के शक्ति प्रदर्शन से हानि होती है।
971. हँसइत देखा थान, कउवे लेगल कान।	-	जाँच पड़ताल किए बिना किसी की कही बात पर कूदना नहीं चाहिए।
972. हर दिहि धइर, देख बुइध कइर।	-	सिर्फ श्रम नहीं, बुद्धि की भी जरूरत हैं।
973. हड़बड़ी के बिहा, कनफटीं सिन्दूर	-	जल्दीबाजी के काम में गड़बड़ी होती है।
974. हरदिक रंगे रंग, आर परदेसिक संगे संग।	-	हल्दी का रंग और परदेशियों की संगत टिकाऊ नहीं होती।
975. हुँसुएँ चिन्हे मेरेन्डा, हाइल देखे पंडा।	-	स्वभाव के अनुकूल ही हर काम होता है।

976. हामे टानबो कते घानी, कबें पाइब पिर्हापानी। – श्रमजीवी कबतक श्रम करते रहेंगे। परजीवी उन्हें कब प्रतिष्ठा देंगे।

977. हाम नाञ जानो, दादा जाने, बुरबक राजा पकइर आने। – राजतंत्र में राजा शिक्षित नहीं होते थे। उनका हर काम मंत्रियों पर निर्भर था।

978. हागे बरद, कुँखे लेरू। – तकलीफ होवे किसी को और पीड़ा दर्शावे दूसरा।

979. हाथी चलल बजार, कुकर भूके हजार। – दबंग व्यक्ति कमजोरों की चिंता नहीं करता।

980. हार खोइल, बेराक आस। – कार्य समाप्ति के पश्चात् भोजन के लिए समय जोहना बेकार है।

981. हाथेक कंगनाक, अरसी की? – प्रत्यक्ष को प्रमाण की क्या जरूरत ?

982. हाथ गुने मोछ टेढ़। – कारीगर की कला पर निर्माण आधारित है।

983. हँासी-हँासी, बापे पर फाँसी। – मजाक सर्वनाश का कारण न बने।

984. हँासी-हँासी सरब नासी। – मजाक सर्वनाश का कारण न बने।

985. हिंग गेल, तो हिंगेक बासो गेल। – प्रभावशाली व्यक्ति गुजर जाता है, पर उसका प्रभाव रहता है।

986. हित कइर भीत नाञ् फोर। – निर्माण के बाद उसका नुकसान न करें।

987. हिलाइ के तुब आर कुकुवाइ के सुत – यह कहावत गरीब घर की है जिसमे कहा गया है कि जाड़े में भोरसी हिलाकर खाट के नीचे रखो, और पैर मोड़कर सोते रहो।

988. हित कइर भीत फोरे, बोका नाता तोरे। – बेवकूफी से नाता टूटता है

989. हिया खलास, रचे इतिहास। – अच्छे लोग ही इतिहास रचते हैं।

990. हिंगसा कइसन काने गोंजा, हेंठे बोहाइ ऊपरे खोजा। – ढोंग भरी सहायता का जाल रचना।

991. हुड़ मुड़ जतरा, ने पोथी ने पतरा – अपनी जरूरत से यात्रा करें, हर दिन

	जँदे दरकार तधीं डहरा।		शुभ हैं।
992.	होसिर साड़म गोमियाँ गाँव, जनियाँक अरजन मरदाक नाँव।	-	होसिर साड़म गोमियाँ की औरतें अधिक काम करती हैं, नाम तो मर्द का ही हावी रहता है।
993.	हुंसियार मुदइ बड़ी मोजें हेठें बोहाइ ऊपरे खोजे।	-	हित चिंतक बनने का नाटक करना।
994.	हुसियारेक गुह तीन ठीन गोड़े हाथें नाको गिन।	-	होसियार पैर में लगे मैल को हाथ में लेकर नाक में सटाता है।
995.	हुइल मलिया ढंग ठचर, करल जग नेठो नियर।	-	खुराफाती बर्बादी के कारण है।ये समस्या को पेचिदा बनाते है।
996.	हुवगर जहाँक हावा पानी, हइर लेहे सोब हइरानी।	-	स्वच्छ पर्यावरण सुखद है।
997.	हुका-पानी मिल-मेइस, जाहे हुआँ खुशी खइस।	-	जहाँ प्रेम वही खुशी।
998.	हुँकारी जहाँ हरस में, खुशी आवे बेबस में।	-	आनंद में दुखी भी खुश हो जाता है।
999.	हुलासें देहे के हुंकारी, जाहाँ जिनगी खाराखारी।	-	हिया खलास हमेशा खुश रहता है।
1000.	हुल हुलियाक पाल जहाँ, चले चाही सभेक हुआँ।	-	सबको आनंद की ओर चलना चाहिए।
1001.	हेमाल जिनगी हुआँ हइ, जहाँ कम धुआँ हइ।	-	स्वच्छ पर्यावरण में जीवन है।
1002.	हेंठ बार्टे बुइध काहे, धरती एते सुइंध काहे।	-	मनुष्य विवेकशील होने का परिचय दे।
1003.	हेराइ गेलें गाठिक सोना, पावत नाञ कोनो जोना।	-	जीवन के लिए पृथ्वी के अलावे दूसरी जगह नहीं है।
1004.	होतइ हाँसी-खुसिक थान, मानुस होता जखन महान।	-	दुनियाँ उस दिन खिलखिला उठेगी जिस दिन हर मनुष्य महान होगा।

खोरठा आहना/मुहाबरा

"मोहबरा चाहें अहना काहा, एहे भासाक गहना।
आहना बिना कोनो भासा, ओझराइ अध-मोरना।
सहइज-समइट संगाठल गेल हइ, हियाँ बारो सो अहना।
एकराँ एक लाख बढावा, खोरठा रेहे नाञ् अदना।"

अरबी में आलाप के मुहावर कहल जाहे। ई मुहावर सें हिंदी में मुहावरा बनल हे। खोरठा में मुहाबरा के 'आहना' कहल जाहे। आहना बाइक के बखरा लागे, टोना-टुकरा लागे। एकाइ टुरा लागे। मगुर ई टुकरा बाइक के संग पाइ के आपन अदना अरथ के बिसेस अजगुत आर अचरज बनवे हे, समझ के सहज बनवे हे। बाइक के बोलगर बनवेहे, जान दइ के जोरगर बनवे हे आर बिसेस अरथ जगजगवे हे, सुनेक सोवाद सरगतवे हे। हाँ, एहे टुकरा में बाइक के बिचारेक सार रहे हे, सिंगार रहे हे, सोब दारोमदार रहे हे।

मगुर ई टुकरा के बाइक सें छिनगाइ देलें एकर अजगइबी अरथ छपित हइ जाहे। जइसें- "पेट काटा" एगो आहना लागे। एकाइ ई टुअर हे। मगुर जोदि बाइक में जोइड़ देल जाइ कि "ढेमना पेट काइट के गिदर पढ़वल हे।" तो बाइक के अरथ जगजगाइ उठे हे। ओइसने- 'खिचरी पकवा' के सीधा अरथ, दाइल-चार मिलाइ के राँधा। मगुर जोदि कहल जाइ कि "ढेमना, जुमनाक जमीं हड़पे खातिर खिचरी पकाइ रहल हे" तबें खिचरी पकवेक अजगइबी अरथ हतइ कि ढेमना गुपुत चाइल चइल रहल हे। आहना के निपट काना भी सहजें समझे हे, एकर सें पकठाइल पेंच भी सुलझे हे। आहना सें भासा आबाद हे, सिछा के सोवाद हे। मानुस के मान-मरजाद हे। आहना भासाक अइना हे, आँइख-टेहुना हे, नीमन भासाक नमूना हे। भासा सजवेक गहना हे, भासाक घर-करना हे, दारुक ऊपर चखना हे। आहना भासाक भाँड़ार हे। साहित के सिंगार हे। एखन हजारो बछर के हेला सें खोरठा छितिछीन ही, तावो मानुसेक मुँहे कते आहना हे, कहा कठिन हे। सोब के समटे के दरकार हे। नाञ्, तो नोचे चोंथे खातिर सामने सियार हे।

अ

1. **अलकुसिक जनमल होवा**	-	बदमाश बच्चा होना।
2. **अइगटंगी करा**	-	बहुत बदमासी करना
3. **अइबी-बइबी करा**	-	बिना मतलब की चीज करना
4. **अगड़-दिगड़ करा**	-	अनाप-सनाप करना
5. **अछल-गदल होवा**	-	बहुलता का होना
6. **अंध बसियाम होवा**	-	आठ बजे दिन का पहर होना
7. **अधपढ़वा जमीं होवा**	-	जमीन का टेढ़ा-मेढ़ा होना
8. **अंधर चटकी करा**	-	अंदाज से काम करना
9. **अइगली होवा**	-	प्रथम रहना
10. **अड़खा लागा**	-	धसान बनाकर मिट्टी काटना
11. **अरदा अरदी होवा**	-	तुरत में काम होना
12. **अइबी-बइबी लोक होवा**	-	अनाप-सनाप आदमी का होना
13. **अगम-डिगम होवा**	-	झूठा-झूठी मंत्र पढ़ना
14. **अलर-बलर बोला**	-	बेकार की बातें करना
15. **अबेर-सबेर**	-	किसी भी समय, कभी भी
16. **अंगना कादा करा**	-	बार-बार आकर तंग करना
17. **अड़गाही करम करा**	-	नियमानुसार नहीं चलना
18. **अनरवाही करा**	-	उम्मीद से अलग काम का होना
19. **अंझमंझाइ जावा**	-	हक्का-बक्का हो जाना
20. **अँतरी दुहरा**	-	अत्यधिक शोषण
21. **अँखरी-पिपरी**	-	कीड़ा-मकोड़ा
22. **अँइठ लेवा**	-	ठग लेना
23. **अँकवाइर लेवा**	-	गले मिलना
24. **अइड़ जावा**	-	हठ करना
25. **अकल के दुसमन**	-	बेवकूफ आदमी
26. **अकल चइर जावा**	-	बुद्धि नहीं रहना
27. **अँचरा पसारना**	-	याचना करना
28. **अइरा-गइरा होवा**	-	अनजान, फालतू होना

29. **अइग टंगवा लोक**	-	आफत मचानेवाला आदमी
30. **अकर-बकर बोला**	-	अनाप सनाप बकना
31. **अगरी ढरका**	-	वर्षा जो सिर्फ छप्पर से ढरके
32. **अगड़-दिगड़ करा**	-	अनाप-सनाप, इधर-उधर करना
33. **अगभ-डिगम करा**	-	झूठा कर्म करके ठगना
34. **अंग लागा**	-	काम में मन लगाना
35. **अगइछ-निंगइछ के**	-	उजाड़ कर बर्बाद करना
36. **अगिया विजइया**	-	खाना हेतु चूल्हा बंद करने का न्योता
37. **असुक-बेसुक होवा**	-	कोई बीमारी होना
38. **अड़बेरिया होना**	-	सूर्यास्त का समय होना
39. **अड़गाही माइर**	-	सुविधा का प्रहार
40. **अरना साँढ़ होवा**	-	वह साँढ़ जो जोता नहीं जाता हो
41. **अरदा-अरदी होवा**	-	ताजा-ताजी होना
42. **अनगइन-झनगइन होवा**	-	असंख्य होना
43. **अठन-गठन बेस होवा**	-	अच्छी तन्दुरुस्ती होना
44. **अटकन-बटकन खेला**	-	गिदराली खेल खेलना
45. **अजना-बजना करा**	-	गाजा-बाजा करना
46. **अइमलो पिया**	-	बारात प्रस्थान के पहले वर को प्यार और वचन लेने का नेग
47. **अहर गेल पहर गेल दिन महिना बछर गेल**	-	अनेकानेक दिन बीत गए
48. **अउरी-पथारी होवा**	-	सब जगह होना
49. **अध बइसु होवा**	-	पचास से अधिक उम्र का होना
50. **अध जिवाहा बेकति**	-	लालची आदमी
51. **अगर-मगर करा**	-	तरह-तरह के बहाने करना
52. **अँगरे गोड़ राखा**	-	आफत मोल लेना
53. **अँगरा उलगा**	-	कड़वी बातें करना
54. **अँगरी उठवा**	-	दोषी करार देना
55. **अलाइ-बलाइ करा**	-	अनाप-सनाप बकना

56. **अछ-अच्छाइ होवा**	-	भलाई की प्रवृति होना
57. **अलकुसिक ढाइढ़ हो वा**	-	बदमाश व्यक्ति का
58. **अलग टोका मुँहे फोंका**	-	अकारण टोकने वाला गाली सुनता है
59. **अदल-बदल करा**	-	लेन-देन करना
60. **अध बँटइया होवा**	-	आधा भाग
61. **अध खेंचरा**	-	आधा काम किया हुआ
62. **अध बिदरा होवा**	-	आधा काम भी गड़बड़ी
63. **अध पका होवा**	-	जो आधा पका हो
64. **अध जिवाही होवा**	-	जो काम से संतुष्ट न हो, लोभी
65. **अंगठा देखवा**	-	अस्वीकार करना
66. **अध कपारी होवा**	-	आधे सिर में दर्द हो
67. **अध मोरवा होवा**	-	जो मृत प्राय हो गया हो
68. **अध पुरवा होवा**	-	जो आधा बना हो
69. **अध सेंस होवा**	-	जो समाप्ति के करीब हो
70. **अरंडी बोने बिलाइर राजा होवा**	-	अनपढ़ों के बीच थोड़ा पढ़ा भी विद्वान होता है।
71. **अघन मास आवा**	-	मेहनत का फल आने की खुशी
72. **अध गेंजरा करा**	-	आधा-अधूरा काम करना
73. **अध निंघरा करा**	-	आधा-आधी काम होना
74. **अँचरा पसारा**	-	लाचारी में मांगना
75. **अमर हइ जावा**	-	चिरस्थायी यश प्राप्त करना

आ

76. **आइग टांगा**	-	बदमाशी की हरकतें करना
77. **आब-खाब बका**	-	अनाप-सनाप बकना
78. **आँखिक राजा होवा**	-	सर्वाधिक प्रिय होना
79. **आञ्-बाँञ करेक**	-	अनाप-सनाप करना
80. **आँइख उलटा**	-	मुकर जाना

81. **आग–पाछ करेक**	–	असमंजस होना
82. **आटा–पाटा करेक**	–	शुरुआती हरकत करना
83. **आग–पाछ सोंचा**	–	असमंजस में पड़ना
84. **आपन गोड़ें खाड़ होवा**	–	आत्मनिर्भर होना
85. **आँइख जुड़ाइ जावा**	–	देखकर शांति अनुभव होना।
86. **आँइख मारा**	–	इशारा करना
87. **आँइख खोला**	–	ज्ञान प्राप्त करना
88. **आड़ा–गो ड़ा जानेक**	–	पता ठिकाना जानना
89. **आफइत–बिपइत होवा**	–	दुःख तकलीफ होना
90. **आता–पाता जानेक**	–	ठिकाना जानना
91. **आइग मूता होवा**	–	बेहद बदमाशी करना
92. **आँधे–मूंधे होवा**	–	जहाँ–तहाँ होना
93. **आँइख–ठेहुना जदें जाइ**	–	शरीर जिधर ले जाय
94. **आना–गोना करेक**	–	आना जाना करना
95. **आँट नियम होवा**	–	कड़ा कानून होना
96. **आँटिक काम**	–	मुश्किल का काम
97. **आपुस–पर होवा**	–	सम्बन्धी होना
98. **आयाँ उनार होना**	–	विपत्ति सर के ऊपर आना
99. **आचार–विचार जानेक**	–	तहजीब जानना
100. **आइर–गोहर फाँदा**	–	खेतों के मेढ़ फाँदना
101. **आँइख इंडाइर ताका**	–	गुस्से में आँखे फाड़कर देखना
102. **आँखी धुरा देवा**	–	धोखा से ठगना
103. **आइग पानिक बेरा**	–	संध्या समय
104. **आइग नियर फइला–पसरा**	–	तेजी से फैलना
105. **आइग काठिक बेरा**	–	सूरज के छिपने के बाद का समय
106. **आइग अधनेक बेरा**	–	गोधूली के बाद का समय
107. **आकाश पाताल एक करेक**	–	पूरी शक्ति से कोई काम करना
108. **आकुल बेयाकुल होवा**	–	बहुत घबराहट होना
109. **आँइख लागा**	–	सो जाना

110. **आँइख पथराइ जावा**	–	आस देखते-देखते थक जाना
111. **आँइख सें गिर जावा**	–	विश्वास खो देना
112. **आँइख फाटा**	–	आश्चर्य में डूब जाना
113. **आँइखें खुइन आवा**	–	हिंसक हो जाना
114. **आइल-झाइल होवा**	–	बच्चा-बुतरू, माल असवाब होना
115. **आपन डांग आपन हाथें**	–	अपना शासन अपने हाथ
116. **आइल गेल**	–	अतिथि
117. **आलाठी मारे**	–	व्यंग्य करे
118. **आइज काइल करेक**	–	दिन ठेलना
119. **आब-खाब बकना**	–	बड़बड़ाना
120. **आँइख ठिकुरवा रउद**	–	चकाचौंध करने वाली धूप
121. **आम बिहा**	–	झारखंडी संस्कृति में शादी की रस्म
122. **आलाय-बलाय होवा**	–	अनाप-सनाप होना
123. **आँखी आइग लहके**	–	क्रोध से भरा
124. **आँइख टेहुना लइ के जावा**	–	लाचार होकर भागना
125. **आकासके तरींगन तोरा**	–	असंभव काम करना
126. **आसाक फूल फुटा**	–	उम्मीद होना
127. **आइख से आइग बहराइ**	–	गुस्सा से लाल
128. **आँइख मइस-मइस देखक**	–	अच्छी तरह से देखना
129. **आइग टांगा**	–	जरूरत से ज्यादा बदमाशी पर उतरना
130. **आँधे-मुधें जावा**	–	अंधा-धुंध विचरण करना
131. **आटा-पाटा करा**	–	शुरुआती इंतजाम करना
132. **आगीं घी देवेक काम करा**	–	किसी के क्रोध को और बढ़ाना
133. **आपा परिया करा**	–	सिर्फ अपने लिए लूट मचाना
134. **आगीं पानी उझला**	–	उग्रता में शांति लाना
135. **आइगे झाँप देवा**	–	आफत में कूदना
136. **आइज-काइल करा**	–	टाल-मटोल करना
137. **आदमी बनना**	–	गुण सम्पन्न होना

138. **आञ्‌-बाञ्‌ बोला**	-	अनाप-सनाप बोलना
139. **आनेक नाकें काठी ढुसा**	-	अपना दोष दूसरे पर देना
140. **आपन चरखी तेल देवा**	-	अपने काम में ध्यान देना चाहिए
141. **आध ढेरका उमइर होवा**	-	8—10 वर्ष का लड़का
142. **आइग मुतेक**	-	बहुत बदमाशी करना
143. **आँगन कादो करा**	-	बार-बार तगादा कर परेशान करना
144. **आँइख मिटकावेक**	-	इशारा करना
145. **आँइख ठहरेक**	-	एकटक देखना
146. **आँइख मुँइद बिसवास करा**	-	बिना सोच-विचार के विश्वास करना
147. **आँखिक पानी गिरेक**	-	निर्लज्ज हो जाना
148. **आना-गोना करा**	-	सम्पर्क बढ़ाना
149. **आइरें-गोहरे दउड़ा**	-	दौड़-धूप में बाधाओं की परवाह न करना
150. **आगाइड़ होवेक**	-	बैलगाड़ी में आगे की ओर अधिक भार हो जाना
151. **आँइख फरकेक**	-	मन में संदेह पैदा होना
152. **आलाठी मारेक**	-	व्यंग्य कसना
153. **आँइख मुंदा**	-	अनदेखी करना, मृत्यु होना
154. **आँइख मारा**	-	इशारा करना
155. **आँखी धुरा देवा**	-	धोखा देना
156. **आँइख फुटा**	-	ज्ञान होना, ईर्ष्या होना, अंधा होना
157. **आँइख देखवेक काम**	-	राग या गुस्सा दिखाना
158. **आपन चरखी तेल देवा**	-	व्यक्तिगत फायदे का काम करना
159. **आँइख खोलेक काम**	-	गलतफहमी दूर करना
160. **आइग लगवेक काम**	-	झगड़ा फैलाने का काम
161. **आगीं मुतेक काम करा**	-	जानबूझ कर बड़ी बदमाशी करना
162. **आंगा-अंगी देवा**	-	एक-एक को देना
163. **आँखिक राजा होवा**	-	बहुत प्रिय वस्तु होना

इ

164. **इंचर-पोचर करा** - खोल-खाल करना
165. **इंचइर-पिंचइर देवा** - बेतरीके से उलट कर बिगाड़ना
166. **इंचइर-पिंचइर देखा** - वस्तु को ठीक से देखना
167. **इंचाइर-पिंचाइर देवा** - उलट-पुलट देना
168. **इजइत-आबरू** - मान-सम्मान
169. **इरखा-इरखी करा** - परस्पर दोष मढ़ना

उ

170. **ऊँच कपारी होवा** - भाग्यशाली होना
171. **उल्लू बना** - मूर्ख बनना
172. **उठा-गिरा होवा** - सफल असफल होना
173. **ऊँचा सुना** - बहरा होना
174. **उछल-पुछल करा** - उछल कूद करना
175. **उटा-बइसा करा** - मेल-जोल बढ़ाना
176. **उलाइ-उसाइ के** - ठंढा -गर्म करके
177. **उमइर-खमइर जावा** - बुढ़ापे की ओर कदम रखना
178. **उलटी गंगा बोहा** - प्रकृति के विपरीत काम का होना।
179. **उसुक-पुसुक करा** - काम के लिए हरकत में आना।
180. **ऊँचा पिर्हा देवा** - सम्मान करना।
181. **उबइर हवेक** - बारीश होने के बाद आकाश साफ होना।
182. **उठा उठिक पहर होना** - आयोजन समाप्ति का समय।
183. **उपरा-उपरी होवा** - किसी वस्तु की प्राप्ति हेतु लूट की आपा- धापी।
184. **उफइर परेक** - बिना सोचे समझे आफत में कूदना।
185. **उसुक-पुसुक करा** - अस्थिर होना।
186. **उफियाक मउत मोरा** - ऊफी कीड़े की तरह मौत होना
187. **ऊँच लादाक राजनीति करा** - सामंती राजनीति करना।

188. **ऊँचका–ऊँचकी करा**	–	उछला–उछली करना।
189. **ऊँचा पिर्हा पावा**	–	बड़ा पद पाना।
190. **उटका–उटकी करा**	–	शिकायत करना।
191. **उपरा–उपरी करा**	–	आगे उपलब्धि पाने की कोशिश।
192. **उमका–उमकी करा**	–	उमंग में उछलना।
193. **उसका–उसकी करा**	–	ढेंकी में अनाज चलाना।
194. **उबटन माखा**	–	झारखंडी विवाह में हल्दी लेपन की रस्म।
195. **उटका पइंचा करा**	–	आलोचना करना।
196. **उलखा पइंचा करा**	–	दुर्गुणो की बखान।
197. **ऊँइ–भुँइ खोजा**	–	जमीन खोजना।
198. **उठा उठिक पहर होवा**	–	समाप्ति का समय होना।
199. **उफड़–धाफड़ करा**	–	भरपूर कोशिश करना।
200. **उता–सुता करा**	–	प्रारम्भ की प्रक्रिया करना।
201. **उखइर–पखइर जावा**	–	नष्ट–भ्रष्ट होना।
202. **उचाइर–पुचाइर देवा**	–	छप्पर आदि उजाड़ देना।
203. **उजाइर–पुजाइर देवा**	–	तोड़–फोड़ देना।
204. **उदाइर–पुदाइर देवा**	–	नोंच–नाच देना।
205. **उखाइर–पखाइर देवा**	–	उखाड़ कर फेंक देना।
206. **उनाइर–पुनाइर देवा**	–	टेढ़ा–मेढ़ा कर देना।
207. **उधार–पुधार देवा**	–	ऋण देना।
208. **उनइस होवा**	–	थोड़ा कम होना
209. **उनइस बीस का फर्क होना**	–	थोड़ा फर्क होना।

ए

210. **एक सें एकइस होवा**	–	बहुत तरक्की करना।
211. **एड़िक लहइर चाँदी चढ़ा**	–	सिर से पैर तक गुस्सा से भर जाना।
212. **एक आर एक गारो होवा**	–	एकता में महान शक्ति होना।
213. **एक के तीन करा**	–	नाजायज लाभ लेना।

214. **एक आँइख से देखा**	-	सबको समान समझना।
215. **एक हइ जावा**	-	मिल जाना।
216. **एक गोछिया**	-	जो एक गुच्छे में हो
217. **एक अंछिया**	-	जिस चुल्हे में एक हँड़िया चढ़ती हो
218. **एक रोढ़िया**	-	जो एक ही विचार रखता हो
219. **एक हरिया**	-	जो चावल एक बार कुटा गया हो
220. **एक मुड़िया**	-	जिसमें एक ही सिर हो
221. **एक अरिया**	-	जिस खेत या तालाब में एक ही मेढ़ हो
222. **एक छिनवा**	-	जो साड़ी एक ही परत में पहनी गयी हो
223. **एक चुरूवा**	-	एक अंजुरी जल
224. **एक पुरसा**	-	एक आदमी की ऊँचाई के बराबर।
225. **एक धराहा**	-	जो एक ही धार में बहता हो,सबसे अलग।
226. **एक सॉस दउड़**	-	जो एक ही साँस में दौड़ा हो
227. **एक ढेंगुर**	-	अंगुठा और अनामिका की फैली दूरी
228. **एक मुसुत**	-	एक बार में अदा की गयी राशि
229. **एक कोड़**	-	जो खेती एक बार कोड़ा गया हो
230. **एक तोड़**	-	एक दरवाजे की ऊँचाई के बराबर एक तोड़
231. **एक हँथु**	-	जो सामान एक ही आदमी के व्यवहार में रहती हो
232. **एक कुटु**	-	जो चावल एक बार कूटा गया हो।
233. **एक लखें**	-	एक जैसा
234. **एक पुरना**	-	एक वर्ष का
235. **एक पहर राइत होवा**	-	9 बजे रात तक का समय, रात का चौथाई भाग।

236. **एक डांग बेरा**	-	सूर्यास्त में थोड़ी देर है, सूरज चढ़ गया है
237. **एक बाँस बेरा**	-	सूरज क्षितिज से एक बाँस दूर
238. **एक पइसी**	-	ब्रिटिश जमाने का एक पइसा
239. **एक टकी**	-	एक रूपया
240. **एक हरि**	-	जो चावल एक बार कुटा गया है
241. **एक कोरी**	-	20 ईकाई को कहते हैं
242. **एक सिकी**	-	ब्रिटिश समय के चवन्नी को कहते हैं
243. **एक बेजी**	-	एक बार।
244. **एक कटि**	-	थोड़ी सी
245. **एक छाती**	-	छाती भर की ऊँचाई
246. **एक घाही**	-	टांगा में एक बार का चोट
247. **एक गोड़वा**	-	जिसका एक पैर हो
248. **एक चलिया**	-	एक तरफ ढलान की छप्पर
249. **एक तरफा**	-	जो रास्ता एक तरफ जाता है
250. **एक टिपका**	-	एक बूंद
251. **एक धइरका**	-	जब वजन एक तरफ हो गया हो
252. **एक सिरहा**	-	जिसका एक अंडकोश बढ़ गया हो
253. **एक सुरिया**	-	जो एक ही धुन में काम करता हो
254. **एक खेंचा**	-	एक टुकड़ा
255. **एक कुधा**	-	एक ढेर
256. **एक दोसना**	-	एक दोसन

ओ

257. **ओज्-तोज् करना**	-	ओल थोथाना (हकलाना)
258. **औंधी पिठा**	-	बँउड़ी संक्रांति पर्व में झारखंडी पकवान
259. **ओइढ़- बेइढ़ के**	-	ओढ़ कर
260. **ओर मुड़ा, ओर पुथान**	-	एक छोर से दूसरे तक

261. **ओढ़ना बेढ़ना जुटावा**	-	जाड़ा से बचाव के सामानों का जुगाड़
262. **ओतन-गोतन करा**	-	आलोचना करना
263. **ओदाइर पोदाइर देवा**	-	उजाड़ कर
264. **ओहरिक काम दोहरी**	-	बेमन से किया काम दोबारा करना पड़ता है।
265. **ओइढ़- बेइढ़ के**	-	ओढ़ कर
266. **ओउरी-पथारी होवा**	-	सभी जगह होना
267. **ओकोल-बोकोल लागा**	-	कै करने की प्रवृति होना।
268. **ओउरी-पथारी होवा**	-	जहाँ-तहाँ हो जाना
269. **ओन-पोन करा**	-	छल-कपट का व्यवहार करना
270. **ओरस पारे बोरस**	-	सही संतान होना
271. **ओर-छोर नाञ् पावा**	-	भेद का पता न चलना

क

272. **कटुआ नाञ् लारा**	-	तिनका उठाने का काम भी नही करना।
273. **कउवा-काठी होवा**	-	झगड़ा-झंझट करना
274. **कंठ फुटा**	-	बोलने के काबिल होना
275. **कउवा-कुकुर कांदा**	-	देश व्याप्ति दुख होना
276. **कंठ सूखा**	-	प्यास लगना, डर से बोली नहीं निकलना
277. **कपार चमका**	-	भाग्य उजागर होना
278. **कपार बथेक**	-	तकलीफ होना
279. **कर काइट के चला**	-	अलग होकर चलना
280. **कंठ भिंजा**	-	थोड़ी तरावट मिलना
281. **कल नाञ् होवा**	-	चैन नहीं मिलना
282. **करम जरा होवा**	-	भाग्य हीन होना।
283. **करम-फूटा**	-	अभागा होना।

284. **करजिक टोना होवा**	–	बहुत प्रिय होना।
285. **कन रसिया मानुस**	–	गीत सुनने का शौकीन
286. **कन फुसका लोक**	–	गुप्त बात करनेवाला व्यक्ति
287. **कन फुँकवा पंडित**	–	कान फूँककर ठगनेवाला पाखंडी
288. **कन फोरवा गोहाइर**	–	बहुत हल्ला-गुल्ला
289. **करेजा फाटा**	–	अत्यन्त दुख होना
290. **कन फोरवा बेकति**	–	बहकानेवाला व्यक्ति
291. **कउवा नहान**	–	थोड़ा पानी से स्नान
292. **करनी ने धरनी**	–	निकम्मा व्यक्ति
293. **कइसनो-मइसनो करा**	–	किसी तरह काम निपटाना
294. **करजी काँपा**	–	दिल हिलना
295. **कचर-पचर खावा**	–	अनाप सनाप खाना
296. **कठफार बोली**	–	कड़ी बोली
297. **करल-धरल काम**	–	किया हुआ काम
298. **कइर-मइर के**	–	कष्ट से किया हुआ काम
299. **कचर- कुटा माइर**	–	अंधाधुंध मार
300. **कबरा-कबरिक बेरा**	–	उजड़ने का समय
301. **करें-करें-कर काइट के जावा**	–	धीरे से जाना
302. **कद कदाना**	–	आनंद लेना
303. **कउवा काठी**	–	लड़ाई झगड़ा
304. **कटुवाक जोरले खोंधा हवे**	–	बेकार वस्तु से भी अच्छी वस्तु बनती है।
305. **करजी खावा**	–	परेशान करना
306. **करजी जुड़वा**	–	शांति पाना।
307. **कहा सुनी होवा**	–	झगड़ा होना।
308. **कपार पीटना**	–	दुख में बेहाल होना
309. **कपार फाटेक**	–	संकट का आना
310. **कलेजी काइढ़ लेवा**	–	प्रियतम वस्तु छीन लेना
311. **काठ मारेक**	–	हक्का-बक्का होना

312. **करता–धरता होवा**	–	जिसके पास आमद–खर्च की पूरी जिम्मेवारी हो।
313. **काँटा रोपा**	–	षड्यंत्र करना
314. **काँकर–माकर मिलवा**	–	अनाज में मिलावट करना
315. **काना पतियारी करेक**	–	अंधविश्वास करना
316. **काञ – कुञ आंधार होवा**	–	गहन अंधेरा होना
317. **कार्हा करेक**	–	कठिन काम करना।
318. **काञ– कंजुस होवा**	–	बहुत कंजूस होना
319. **काइढ़ के बिहा होवा**	–	झारखंडी पद्धति जिसमें लड़की विवाह हेतु लड़के के घर लायी जाती है।
320. **कांदे मेमाइ**	–	रोना– धोना
321. **कपार ठोंइक के लेवा**	–	विश्वास के साथ खरीद लेना, भाग्य के भरोसे लेना
322. **कान तर बेरा होना**	–	4 बजे का समय
323. **कानें गोंजा**	–	ध्यान में रखना
324. **कानेक सोना होवा**	–	बहुत प्रिय होना
325. **काने कपारे टीका फोका**	–	पाखंडी होना
326. **काने कादा लागा**	–	दोष दीखना
327. **कान काटा**	–	अधिक चालाक होना।
328. **काना भोरा**	–	चुगली करना, अपना षडयंत्र समझा देना
329. **काने कान सुना**	–	जुबानी खबर सुनना।
330. **काँधा जोरा**	–	संग देना।
331. **कान देवा**	–	सुनने का प्रयास करना।
332. **काना फुसी करा**	–	गुप्त वार्ता
333. **कांदे झुझुवाइ**	–	बहुत रोना धोना
334. **काञ–काञ चेंका होवा**	–	बहुत खट्टा होना
335. **काँच–फिच फल तोरा**	–	कच्चा फल तोड़ना
336. **काँव–केंच करा**	–	हल्ला–गुल्ला करना

337. **काँच कुँवार धीया**	-	अविवाहित लड़की
338. **काँचा मन**	-	अपरिपक्व मन
339. **काञ-माञ करा**	-	ना- नुकुर करना
340. **काँञ -नाञ करा**	-	हाँ, नहीं कुछ भी नहीं कहना
341. **कादों गिरवेक चाइल**	-	मुसीबत में डालने की चालाकी
342. **काँचा-काँची देना**	-	अनाज के रूप में मंजूरी देना
343. **काँड़िक भीतर मुड़ साजा**	-	जान जोखिम में डालना
344. **काठ-कुचा करा**	-	लकड़ी का इंतजाम करना
345. **काना-कोंचा बाँचा**	-	दूषित वस्तु से बचना
346. **कोना कोचा सोब होवा**	-	पूरी जमीन होना
347. **काँदु-माँदु होवा**	-	रोने की स्थिति
348. **काँधा जोरा**	-	सहयोग करना
349. **काना-कानी सुनना**	-	इधर-उधर से सुनना
350. **कामे थइक चूर होवा**	-	कठिन परिश्रम करना।
351. **कान फूंका**	-	चुगली करके बहकाना।
352. **काने तेल दइ के सुता**	-	चिंता रहित होकर आराम फरमाना।
353. **कागजी घोड़ा दोड़वा**	-	पत्राचार करना।
354. **काने देवा**	-	सूचना दे देना।
355. **काम आवा**	-	समय पर साथ देना।
356. **काना कुनु सुना**	-	इधर-उधर से सुनना
357. **काना पतियारी में फँसेक**	-	अंधविश्वास में फँसना।
358. **कान काटा**	-	बड़ी चालाकी करना
359. **कांड़ाक कांध होवा**	-	बोझ खींचने के लिए बाध्य होना
360. **काने ताला पड़ना**	-	जबरदस्त आवाज से नहीं सुनने की स्थिति होना।
361. **काने तेल डाला**	-	बात अनसुना करके परवाह नहीं करना।
362. **कान खड़ा करेक**	-	सावधान होना
363. **कान मारेक**	-	बहकाना

364. **कान छाँकेक**	-	गुप्त बात जानने की कोशिश
365. **कान ओड़वेक**	-	गुप्त बात सुनने की कोशिश करना।
366. **काम किरिया करा**	-	श्राद्ध करना
367. **किरी दइ कोरी टाना**	-	भयंकर शोषण
368. **किताक किता लोक होवा**	-	लोगों की अनेकों कतारें होना।
369. **किटइर-खिटइर के**	-	टुकड़े-टुकड़े करके
370. **किसिर-किसिर पोका होवा**	-	कीड़ों से भरा हुआ
371. **किया देइख हिया फाटल**	-	आडंबर से घबड़ाना
372. **कुचकुचिया आंधार**	-	घना अंधेरा
373. **कुहर-कुस आंधार**	-	घना अंधेरा
374. **कुल्ही-कोचे होवा**	-	सभी जगह होना
375. **कुछो-मुछो होवा**	-	थोड़ा-थोड़ी होना
376. **कुच-कुच कुरिया होवा**	-	बिल्कुल काला होना।
377. **कुकुर के नींद सुता**	-	चौकन्नी नींद सोना।
378. **कुआँ कोड़ा**	-	हानि करने का उपाय करना, कठिन कोशिश
379. **कुकरें काटा**	-	पागल होना,बिना कारण कूद पड़ना
380. **कुञ-मुञ करा**	-	हरकत होना
381. **कुद -फांद करा**	-	चहल-कदमी करना
382. **कुधाक-कुधा जिनिस**	-	वस्तुओं का ढेर
383. **कुनमुन करा**	-	नाराजगी जताना
384. **कुटी चुभी करा**	-	मवेशी को खिलाने का इंतजाम करना
385. **कुंबा कुरिया**	-	झोपड़ी
386. **कुरथी डेढ़वा माइर**	-	जबरदस्त मार
387. **कुढ़ा कुटा माइर**	-	मारकर भुरता बनाना
388. **कुलकुली दिया**	-	कच्चा ओल का स्वाद देना, झगड़ा झंझट होना।
389. **कुँथा-कुँथी होवा**	-	किसी काम में सारी शक्ति लगाने

		के बाद भी कम पड़ना।
390. **कुकुरमुँहा लोक होवा**	-	कुत्ते की शक्लवाला मनुष्य होना।
391. **कुकुर पेटा लोक होवा**	-	बहुत खानेवाला मनुष्य
392. **केच मेच करेक**	-	आनाकानी करना
393. **कोरे काखें लेवा**	-	प्यार से अपना लेना
394. **कोरे बइसल बेरा**	-	जब सूरज किरणों को समेटता है
395. **कोकचा-कोकची करेक**	-	सटा-सटा कर ठूँसना
396. **कोवा-काठी होवा**	-	लड़ाई झगड़ा होना
397. **कोदो करहइनी खावा**	-	घटिया अनाज खाना।
398. **कोदो दइ के पढ़ा**	-	अच्छी शिक्षा नहीं जानना।
399. **कोनासी माइर**	-	सुविधाजनक तरीके से मारना
400. **कोदो कुटा**	-	परेशान करना
401. **कोराञ खेलना**	-	किसी को जन्म से ही जानना

ख

402. **खइप जावा**	-	काम में ठीक बैठना।
403. **खटपट करा**	-	झगड़ा करना।
404. **खटिया पटिया बिकेक**	-	घर उजड़ जाना
405. **खिचरी पकवा**	-	षड़यत्र रचना।
406. **खिदि-खिदि करेक**	-	टुकड़े-टुकड़े करना
407. **खिर खावान**	-	झारखंडी विवाह की एक रस्म
408. **खिखनी होवेक**	-	बहुत दुबला होना।
409. **खुइन सुइख जावा**	-	डर जाना।
410. **खुनुस खोजेक**	-	बहाना खोजना
411. **खुशी खदखदाइ उठा**	-	बहुत खुशी उपजना।
412. **खुसुर मुसुर करेक**	-	गुप्त मंत्रणा करना
413. **खेदा-खेंचा करा**	-	खदेड़ना
414. **खेइद खाइद के**	-	खदेड़ कर
415. **खोस खाज होवा**	-	चर्म रोग होना।

416. **खोरइठ के पूछा** - भीतरी बात जानने की कोशिश करना।
417. **खोंटा खोंटी करेक** - पहला स्वाद लेना
418. **खोटा चीप चाटे गुर** - अति कंजूस
419. **खोर-पोस देवा** - जीने का खर्च देना
420. **खोइर छानेक** - बहुत खोज करना
421. **खाम खेयाली** - कोरी कल्पना
422. **खार काँचा करा** - बहुत मारना-पीटना,परेशान करना।
423. **खाधाइन होवा** - औरत का बदमाश होना।
424. **खार होवा** - दुश्मनी होना, जल जाना
425. **खुंदुर-खुंदुर करा** - छिपकर गुप्त बातें करना
426. **खुइन-जारा संपइत होवा** - परिश्रम से अर्जित संपति का होना
427. **खुनुस खोजा** - लड़ाई झगड़ा के लिए बहाना खोजना
428. **खुटखुटी मन में रहा** - संतुष्टि की प्राप्ति न होना
429. **खुदुर-मुदुर करा** - बहुत धीरे बातचीत ताकि दूसरा न सुने
430. **खुइन-जारा धन** - पसीने की कमाई

ग

431. **गरू गायो से गेल गुजरल होवा** - जानवरों से भी बदतर स्थिति होना।
432. **गलगल काटें बलगर होवा** - कमजोर को सभी सताते हैं
433. **गंगा लाभ होना** - मर जाना
434. **गंगा नहाइ लेवा** - सही काम में सफल होना
435. **गरबे टिडुवाइल राहा** - घमंड में अकड़ा हुआ
436. **गजर-बजर होवा** - बहुत व्यक्तियों के गप-सप की आवाज होना।
437. **गजंदर पेट होवा** - बड़ा पेट होना

438. **गरमा–गरमी होवा**	–	रोष पूर्ण बात होना
439. **गरीब–गुरबा होवा**	–	दीन–हीन होना
440. **गड़गड़िया नाभाने जावा**	–	तीखा उतार में जाना।
441. **गइन–गइन डेग धरा**	–	सावधानी से आगे बढ़ना।
442. **गइन–गइन दिन काटा**	–	कष्ट में दिन बीतना।
443. **गड़ल मुरदार के कोड़ा**	–	खतम झगड़ा को सामने लाना।
444. **गरम होवा**	–	क्रोध करना।
445. **गाल मारेक**	–	गप–सप करना।
446. **गालें गीत गावेक**	–	एक ही बात को दोहराना।
447. **गाते लहइर फुटा**	–	गुस्सा होना।
448. **गाँव डीहेक देस**	–	गाँवों का देश।
449. **गात झाइर काम करेक**	–	यथाशक्ति काम करना।
450. **गारा–गारी करेक**	–	गाली गलौज करना।
451. **गाँदर–गुंदुर करेक**	–	फुसुर–फुसुर बात करना।
452. **गाबर–गाबर खावा**	–	बड़े कौर के साथ जल्दी–जल्दी खाना।
453. **गाड़ी उलार होवा**	–	संतुलन बिगड़ना।
454. **गाँवे गदगदी होवा**	–	गाँव में उत्साह होना।
455. **गादा–गादी खान–पान होवा**	–	खाने का भरपूर इंतजाम होना।
456. **गाड़ी–गोहोर होवा**	–	माल ढोने का साधन होना।
457. **गाँठिक सोना होवा**	–	अधिकार का धन होना।
458. **गाँइठ मोट संग जावा**	–	बोरिया विस्तर के साथ जाना
459. **गाँइठ बाँइध लेवेक**	–	किसी बात को याद रखना।
460. **गाल बजबेक**	–	डींग हाँकना।
461. **गाँइठ बाँधेक काम करा**	–	किसी बात से सबक लेना।
462. **गाँठिक सोना होवा**	–	बहुत प्रिय वस्तु होना।
463. **गरदा–गरदी होवा**	–	बहुत उल्लास होना
464. **गना–गुथा करा**	–	गिनती करना
465. **गमका–गमकी होवा**	–	दुर्गन्ध होना

466. **गटका–गटकी करा**	–	हजम करना
467. **गचका–गचकी करा**	–	घाटा होना
468. **गइराइ जावा**	–	बीमारी से शरीर तबाह होना
469. **गाइठें गाँइठ देवा**	–	झंझट को बढ़ाना।
470. **गिधका गिधकी लोक–होवा**	–	कम ऊँचाई के व्यक्ति होना
471. **गीत–नादेक गनगनी होवा**	–	गीतों की गहमा–गहमी होना
472. **गीत गावा**	–	प्रशंसा करना।
473. **गुरा फुइट जावा**	–	तकलीफ की समाप्ति होना
474. **गुन सोवाद जाना**	–	लाभ–हानि समझना
475. **गुजर–बसर होना**	–	जीविका चलाना
476. **गुल गुलाइ पिटा**	–	खूब पीटना
477. **गुम बाँइध के राहा**	–	मन मसोस कर रहना
478. **गुस गुसाइ के राहा**	–	क्रोध को नियंत्रित करके रहना
479. **गुडरी घेरा कइर फँसवा**	–	फँसाने की ऐसी तैयारी कि शिकार निकल कर भाग न सके।
480. **गुइड़ देवा**	–	कसकर मारपीट कर देना
481. **गेंड़ गेवारी का एक टेंग टुटा**	–	हानि का कोई असर नहीं होना
482. **गेड़ा–मेड़ा लोक होवा**	–	कम ऊँचाइ के लोग होना
483. **गेल–गुजरल बेकति होवा**	–	जिसका अस्तित्व समाप्त हो
484. **गेड़ मेड़वा बेकति**	–	नाटा आदमी
485. **गेंजो–थेथो होवा**	–	बिना मतलब परेशानी
486. **गोंइठा में घीव सुखवा**	–	फालतू मद में खर्च करना।
487. **गोहाइल ढुकाइ के पुँइछ काटा**	–	धोखा देना
488. **गोबोर पोका होवा**	–	वह व्यक्ति जिसे दुनिया का ज्ञान न हो
489. **गोड़े गिरवेक उपाय करा**	–	शरणागत करने का उपाय
490. **गोड़ हाथ छितरावा**	–	असमर्थ हो जाना
491. **गोबोर–गोथोर करा**	–	झाड़ू देने का काम करना
492. **गोझी गनगन होवा**	–	परिवार की रौनक बढ़ना

493. **गोबर गिधा** - गंदा काम करना
494. **गोड़ा-गोड़ी करा** - पीछा करना।
495. **गोड़ा से मुड़ा तइक** - आदि से अंत तक
496. **गोंद गोंदाइ के राहा** - गुस्सा में बड़-बड़ा के रहना
497. **गोटा आँखी नाञ देखा** - नजरअंदाज करना
498. **गोड़ समटा** - साथ छोड़ देना
499. **गोड़ा छांदा** - गिड़गिड़ाना, बाध्य करना
500. **गोड़े गिरेक काम** - शरण में जाना।
501. **गोड़ हाथ छिरियाक** - बेबस होना
502. **गोड़ेक लहइर चाँदी चढ़े** - मामूली क्रोध भयंकर बन जाना
503. **गोबोर माटी करा** - झगड़ा समाप्त करना

घ

504. **घर करना बेंचा** - घर का सब सामान बेच देना।
505. **घर बाँधा** - स्थायी बसेरा बनाना।
506. **घर-मोहड़ी जावा** - घर की ओर प्रस्थान
507. **घर गहिया बना** - घरेलू व्यक्ति बन जाना
508. **घर करना करा** - गृहस्थी बसाना
509. **घर जवइंया होवा** - सुसराल में बसने वाला दामाद।
510. **घर अगोरिया होवा** - घर में पहरा देने वाला।
511. **घर घुसरा होवा** - हमेशा घर के भीतर रहनेवाला
512. **घर सुमारी होवा** - घर का लेखा-जोखा करना।
513. **घर भतुवा होवा** - जो सिर्फ खाना खाकर घर की सेवा करने वाला।
514. **घर दोबरा होवा** - घर के भीतर छिपा रहनेवाला
515. **घर गुसटी जावा** - पूरा परिवार जाना
516. **घरी सगर चला** - हमेशा चलना
517. **घर अंगना एक करना** - बहुत आना-जाना करना
518. **घर फोरा** - कलह करवाना

519. **घर कादो करा**	–	बारबार घर में आना
520. **घाम चुवा रोटी खावा**	–	पसीने की कमाई खाना
521. **घर करना**	–	गृहस्थी
522. **घाम गारा काम**	–	परिश्रम का फल
523. **घारा–घारी होवा**	–	घर जाने की प्रक्रिया
524. **घार फूंका**	–	संपत्ति विनाश का आनन्द लेना।
525. **घाट घाटेक पानी पिया**	–	सब तरह का अनुभव रखना।
526. **घावें नून छीटा**	–	दुखी को और कष्ट देना।
527. **घास काटा**	–	व्यर्थ के काम में समय बिताना।
528. **घातें बइसा**	–	नुकसान देने हेतु ताक से रहना।
529. **घार गनगन होवा**	–	घर में धन–जन का अच्छा माहौल होना।
530. **घार चइढ़ के आवा**	–	घर में आकर तगादा करना
531. **घर कादो करेक**	–	बार–बार एक ही काम से आना
532. **घर फोरेक**	–	फूट डालना
533. **घर अंगना एक करेक**	–	घुइर–घुइर आवेक
534. **घेंचाक गाली गुचाइ फेंकेक**	–	परतंत्रता से मुक्तिपाने की प्रक्रिया।
535. **घेंचे गाली परेक**	–	परतंत्रता का आ जाना।
536. **घीव के दीया बारा**	–	बहुत खुशी होना।
537. **घीसल चित्ती होवा**	–	थेथर होना
538. **घुमचल कुकुर पुइंछ होवा**	–	टेड़ी बात होना
539. **घेंचे घाठा पोरा**	–	परिश्रम में सिद्ध होना
540. **घेंचे गाली लागा**	–	गुलाम होना
541. **घेंचे हाड़ हिटका**	–	मुश्किल होना
542. **घोड़ाक डीम पावा**	–	कुछ उपलब्ध नहीं होना।
543. **घोड़ा बेंइच के सुता**	–	बेफिक्र होकर सोना।
544. **घोइर के पी जावा**	–	सब कुछ आत्मसात कर लेना।
545. **घोरना बाता करा**	–	सुरक्षा का इंतजाम करना
546. **घोड़ामुहाँ बेकति**	–	लम्बे मुँह का व्यक्ति

च

547. **चपर गट्ट करा**	–	गुड़ गोबर करना
548. **चड़चड़िया रउद करा**	–	कड़ी धूप होना
549. **चकरी घूम होवा**	–	हक्का-बक्का होना
550. **चक्करें फँसवा**	–	धोखा में डालना।
551. **चटनी बनाइ देवा**	–	चूरकर पतला बना देना।
552. **चवाइ-चवाइ के बात करा**	–	सोच-सोच कर बोलना।
553. **चकर-मकर देखा**	–	अगल-बगल देखना
554. **चटर-पटर करा**	–	अनाप-सनाप करना
555. **चरपटाली करा**	–	बदमाशी करना
556. **चपट-चाँड़ करा**	–	जल्दबाजी करना
557. **चनफन चेठगर होवा**	–	शक्तिशाली होनाा
558. **चरवेक कोरसिस करा**	–	ठगने की युक्ति करना
559. **चटर जिवाही होवा**	–	लालची होना
560. **चाटाक-चुटुक चला**	–	किसी तरह चलना
561. **चाके बइसल सुरूज**	–	सूर्यास्त का समय
562. **चार सिझा भात**	–	माड़-भात
563. **चाँड़ चपट करा**	–	जल्दी बाजी करना।
564. **चाँड़-माँड होवा, करा**	–	जल्दबाजी होना
565. **चाँड़ा-चाँड़ी करा**	–	शीघ्रता करना
566. **चाँदी काटा**	–	धन बटोरना
567. **चाँड़ें-माँड़ें जावा**	–	जल्दी जाना
568. **चाम सुखा रउद होवा**	–	कड़ी धूप
569. **चाइर मुड़िया होवा**	–	चार सिरवाला
570. **चाँधाक चाँधा होवा**	–	पसरा हुआ होना
571. **चाइल खेला**	–	तिकड़मबाजी करना
572. **चाँदे माँडइर बइसा**	–	वर्षा की आस लगना (किवदंती)
573. **चाके सुरूज बइसा**	–	दिन की समाप्ति का संदेश।
574. **चाइर दिन के जिनगी होवा**	–	जिन्दगी का झणभंगुर होना।

575. **चाँदी होवा**	–	अनुकूल होना।
576. **चाइल में फँसवा**	–	धोखा देना।
577. **चलन सीखा**	–	तौर तरीका जानना
578. **चलन बेंड़ाइक**	–	स्वभाव बिगड़ना
579. **चाखे बइसा**	–	स्वाद जानने के लिए चखना।
580. **चिरकुट मइल होवा**	–	बहुत मैल बैठा हुआ
581. **चिलुम–तमखुर करा**	–	आव–भगत करना
582. **चितपातांग गिरा**	–	सिर से पैर तक जमीन में सटा देना
583. **चिमट–चिपास होवा**	–	बहुत कंजूस होना
584. **चिल झपट्टा करा**	–	किसी का माल झपट लेना
585. **चिप जाँइत के लुटा**	–	दबाब देकर लूटना
586. **चिचि–भात खावा**	–	मांस–भात खाना
587. **चिरा–चौथा करा**	–	लूट–पाट करना
588. **चिकन मुँहा लोक**	–	चिकनी–चुपड़ी बात करनेवाला ठग
589. **चिनगिनी फूटे**	–	क्रोध उपजना
590. **चुनका–चुनकी लेवा**	–	खरीद के बाद चुटकी भर मुफ्त लेना।
591. **चुटकी में होवा**	–	आसानी से होना।
592. **चुकरी पटका**	–	झारखंडी समुदाय विशेष का वैवाहिक रस्म।
593. **चुल्हा फूंका**	–	घरेलू काम में रहना।
594. **चुमा–चाटी करा**	–	प्यार करना
595. **चेरँइ चिनगीक ,चलेक बेरा**	–	चिड़िया जब बसेरा की ओर चलती है।
596. **चउदह चोवाड़ी करा**	–	बहुत परेशान करना
597. **चोंथा–चिरा करा**	–	लूट–पाट करना
598. **चउदह पुरुष के इयाइद करा**	–	पूर्वजों को याद करना
599. **चोटें चार होवा**	–	तुरत में नतीजा आना।
600. **चोराइ–नुकाइ राखा**	–	चुपके संचय करना
601. **चुल्हे मुता**	–	बहुत बदमाशी करना
602. **चुल्हाक जुकुर होवा**	–	वस्तु का बेकार हो जाना

छ

603. **छगइर जिवाहा लोग होवा**	-	बहुत लालची होना
604. **छिति छिन होवा**	-	इधर-उधर होकर बर्बाद होना
605. **छिरिया-छाट होवा**	-	तितर-बितर हो जाना
606. **छगरी भिड़का पानी होवा**	-	क्षण भर की वर्षा
607. **छनक-मनक करा**	-	स्वाद बढ़ाने की प्रक्रिया करना
608. **छल-छइब करा**	-	छल-कपट रचा
609. **छगइर गोड़िया बनवा**	-	लकड़ी चीरने का फाँद बनाना
610. **छनछनाइल जावा**	-	गुस्से में जाना
611. **छठी-छिला करा**	-	छठियारी मनाना
612. **छगरी चरवा होवा**	-	अनपढ़ होना
613. **छाँइद-बाँइध के राखा**	-	विवश करके रखना
614. **छाका-पाँजा करा**	-	फाँसने की चाल चलना।
615. **छाती चाकर होवा**	-	उत्साह बढ़ना
616. **छातीं पथल राखा**	-	बहुत कष्ट सहना।
617. **छाइन फाइर लउवा फोरा**	-	बहुत फल लगना
618. **छातीं पिटा**	-	गहरा शोक दिखाना।
619. **छिंड़ा होवा**	-	खेत कटने से किसी खेती का अकेले पड़ जाना
620. **छिति-छिन होवा**	-	तितिर-बितिर होना।
621. **छिछा लेदर करा**	-	दुर्दशा करना।
622. **छेदामेक दाएं चाम चौंथा**	-	थोड़ी सी वस्तु के लिए बहुत तंग करना।
623. **छेक छातुर होवा**	-	सत्यानाश होना
624. **छोर छिपाट पावा**	-	किसी चोरी का संधान मिलना
625. **छोंइठ धइर के चला**	-	पिछलगुवा बनना।

ज

626. **जइर कुबारा**	-	सदा के लिए समाप्त करना।
627. **जबान बदला**	-	कह-कर मुकर जाना।
628. **जबान चलवा**	-	मुँह लगाना।
629. **जरल घावे नून देवा**	-	दुखी को और दुख पहुँचाना
630. **जइर के छाइ होवा**	-	डाह से परेशान होना
631. **जइर बात के जाना**	-	असली राज को जानना
632. **जइर-फेड़ के बात करा**	-	असली उदेश्य को जानना
633. **जइट पइट लेना**	-	ठग लेना
634. **जबर पीड़ा होवा**	-	प्रभावित होना
635. **जर-जजाइत होवा**	-	धन दौलत होना
636. **जते रोआँ तते करजा**	-	बेहिसाब कर्ज
637. **जइ नासतिक बेरा**	-	नाश का समय
638. **जनी शिकार**	-	वीरांगनाओं का शौर्य प्रदर्शन (वीर नारी कैली सिनगी की याद में बारह वर्ष बाद यह उत्सव आता है।)
639. **जइन मेहरा लोक**	-	जिसकी आदतें औरत की तरह हो
640. **जाँता चिपा जबर्जस्ती करा**	-	दबाव से काम कराना
641. **जाइक गोड़ा सुरू होवा**	-	बर्बाद होने की शुरूआत
642. **जानाप-चिन्हाप करा**	-	जान पहचान करना
643. **जानल-मानल लोक**	-	मानिन व्यक्ति
644. **जानें जान आवा**	-	संतोष होना।
645. **जान छुटा**	-	आपत्ति से छुटकारा।
646. **जान भारी होवा**	-	जिंदगी दुखमय होना।
647. **जान सुइख जावा**	-	भयभीत होना।
648. **जाल पसारा**	-	षड़यंत्र रचना।
649. **जाँतल सोझ होवा**	-	किसी के दबाव से सीधा होना
650. **जाँता चीपा होवा**	-	जबरदस्ती वश होना

651. **जिरी जिदी लागा**	-	तन-मन से लगना
652. **जिली-मिली तोरा**	-	कच्च-खीचा तोड़ना
653. **जिनगिक जिनिष बँचवा**	-	जीवन की मूल्यतम निधि सुरक्षित करना
654. **जिनगी जियान करा**	-	जिंदगी बर्बाद करना।
655. **जिगिड़ जिद करना**	-	जबरदस्त जिद करना।
656. **जीव जाँइत लेवा**	-	कलेजा थाम लेना।
657. **जी टंगाइल रहा**	-	खटका बना रहना।
658. **जीव जाँइत के राहा**	-	मन-मसोस कर रहना।
659. **जीव जइर जावा**	-	तंग आ जाना
660. **जी के जाला होवा**	-	बराबर का झंझट होना।
661. **जोदी जीअब-जागब**	-	यदि जिन्दा रहेंगे
662. **जीव जुड़वा**	-	शांति से रहना
663. **जीओं-मोरों खटना**	-	जी जान से खटना
664. **जुन जुनात जावा**	-	अविलम्ब जाना
665. **जूता चाटा**	-	चापलूसी करा।
666. **जोर-नार करा**	-	सम्बन्ध जोड़ने की प्रक्रिया करना
667. **जोग छेंछा**	-	झारखंडी वैवाहिक रस्म
668. **जोइड़-सोइड़ के राखा**	-	जोड़ जाडकर रखना
669. **जोइर-तोइर के राखा**	-	खर्च संतुलित करके चलना।
670. **जोइर-तोइर के**	-	किसी तरह खर्च संतुलित करके।
671. **जोइर-नाइर के**	-	हिसाब-किताब करके।
672. **जोगाड़-जंतर करा**	-	उपाय करा
673. **झींगा चोर होवा**	-	छोटा चोर होना।
674. **झूठ-सच्च कहा**	-	वर्णन करना।
675. **जोखा-तोला करा**	-	संतुलन बैठाना

झ

676. **झनगा–झनगी होवा** – एक–एक व्यक्ति का होना
677. **झंझट–पटपट करा** – झमेला पसारना
678. **झइट–झपइट के** – पाखंड में फंसाकर ठगना
679. **झमझम राइत होवा** – मध्य रात्रि का समय
680. **झनकाही गाय** – बाँझ गाय
681. **झलफल होवा** – सबेरा, जब मुँह पहचान में न हो, मुँह अंधेरे
682. **झालक–झुलुक पावा** – सिर्फ झलकी पाना
683. **झारा–पोछा करा** – साफ–सफाई करना
684. **झाँइझ–बसात होवा** – गर्म हवा, आँधी आना
685. **झाँव–झाँव होवा** – कलह होना
686. **झालक–झुलुक आँधार** – अंधकार का प्रारंम्भ होना।
687. **झिरी–झोंक होवा** – तत्पर होना
688. **झिंगा–झाँटी करा** – बेकार का तकरार करना।
689. **झिंगफुलिया बेरा होवा** – झिंगा फूलने का समय होना।
690. **झिंका–झोइर होवा** – आनंद में मतवाला होना।
691. **झिंझि कुकुर होवा** – अवारा कुत्तों का झुंड
692. **झोंटा झोंटी होवा** – गुत्थम गुथी तकरार होना।
693. **झगर–कुटा होवा** – झगड़ा लड़ना और लड़ानेवाला होना।
694. **झलका–झुमइर खेला** – वह मस्ती भरा झूमर ढोल नगाड़ा बाँसी के स्वर में नाचनेवाले औरत मर्द मस्ती में मतवाले हो जाते हैं

ट

695. **टकटकी लगवा** – किसी चीज की प्राप्ति हेतु ठान लेना।
696. **टस–मस नाञ होवा** – किसी का प्रभाव नहीं पड़ना।
697. **टर–टर करा** – बिना मतलब का बकना।
698. **टटके टटक होवा** – ताजा होना।

699. **टरकल राहा**	–	दूर रहना
700. **टरइक जावा**	–	चुपके से निकल जाना
701. **टसक–मसक होवा**	–	हिल–डोल होना।
702. **टकुआ नियर सोझ होवा**	–	बिलकुल सीधा होना
703. **टाना–झिंका होवा**	–	परेशान होना
704. **टाञ–टाञ करा**	–	बकबक करना
705. **टाक–टोटोम करा**	–	टोटका करना।
706. **टाना–टानी होवा**	–	एक दूसरे पर दोष मढ़ना।
707. **टुनका–टुनकी गीदर होवा**	–	कमजोर बच्चों का होना
708. **टुम–टहल करा**	–	घूमना–फिरना
709. **टुलु–टुलु होवा पूरा**	–	पूरा भरना
710. **टुन–टुनाइ जावा**	–	स्वस्थ हो जाना
711. **टेना मेना गीदर**	–	नाटा–नाटी बच्चे
712. **टेपरा–टेपरी गीदर**	–	नाटे बेतुके बच्चे
713. **टोवा–टोमरा करा**	–	छान–बीन करना
714. **टोहा–जोहा करा**	–	खोज–खबर करना।
715. **टोपी–टोपी एक होवा**	–	आदमी अपनी श्रेणी खोजता है।
716. **टंगे ढोल पीटा**	–	हानि की आशंकाओं से परे होना
717. **टांगा बजरवा**	–	भारी चोट करना
718. **टान देखवा**	–	किसी की ओर झुकाव का होना
719. **टोकाइर पारा**	–	अच्छा स्वाद चखने का संकेत।

ठ

720. **ठमर–ठमर चाइल होवा**	–	नजाकत पूर्ण गति होना।
721. **ठनक–मनक जोधो होवा**	–	सूखा साफ जगह का होना।
722. **ठाढ़ बेरा होना**	–	दोपहर का समय होना।
723. **ठाँव–ठेकान जाना**	–	पता–ठिकाना जानना।
724. **ढिसढिसाइ जावा**	–	निराश होना
725. **ठुठु–मुठु बइस रहा**	–	निष्क्रिय होकर बैठ जाना

726. **ठेंला-गोंजा करा**	-	लापरवाही करना
727. **ढेर-बजर गिरा**	-	बिजली गिरना
728. **ढेर-ढेरी कसना**	-	बादल गरजना
729. **ठेलम-ठेल लोक होवा**	-	बहुत भीड़ होना
730. **ठेपो देखवा**	-	निराश करना
731. **ठेर-ठेकान जाना**	-	पता-ठिकाना जानना
732. **ठेरा-ठेरी करना**	-	चोंच मिलाना
733. **ठेंड़क बजाइ के देखा**	-	परखना।
734. **ठेना ठेंका**	-	बन्द करना।
735. **ठेनगी लेवा**	-	शराब पीना
736. **ठेरें छुआ**	-	स्वाद लेना
737. **ठनक होवा**	-	गीली जमीन का पानी पूरा-पूरी सूख जाना
738. **ठठइक जावा**	-	किसी आशंका से रुक जाना
739. **ठकठेन करा**	-	अर्थहीन अड़चन पैदा करना
740. **ठमर-ठमर करा**	-	अपनी चाल की लचक ये आकर्षण पैदा करना।
741. **ठाँव देवा**	-	जूठा या सँखरी हुए जगह को गोबर -मिट्टी पोत कर सफाई करना।
742. **ठाँव-ठेकान पूछा**	-	परिचय पूछना।
743. **ठिक-ठेकान होवा**	-	सब कुछ सकुशल होना।
744. **ठाठे ठुरे बेरा बितवा**	-	किसी काम की भूमिका बांधने में ऐसे वैसे में समय निकल जाना।
745. **ठेपो देखाना**	-	किसी बात से साफ इनकार कर देना
746. **ठेनगिक लत**	-	दारु पीने की आदत।

ड

747. **डाड़ा सकत करा** – अपने को मजबूत बनाने का काम।
748. **डिड़ी होवा** – (बचकाना शब्द) खड़ा होना।
749. **डुमइर के फुल होवा** – नहीं दिखाई देनेवाला।
750. **डुब दइ के देखा** – भीतर घुसकर जाँच करना।
751. **डुगडुगी बजाना** – जनता में संवाद फैलाना।
752. **डेग धरा** – आगे बढ़ना
753. **डेढ़ बुझे अढ़ाइ नाञ** – कम देने की कोशिश
754. **डेगे-डेगे लटलटी घास होवा** – हर कदम पर बाधाओं का होना
755. **डंग ढेढ़वा बात काहा** – बिना लाग लपट के कहना।
756. **डढ़ा-पोढ़ा होवा** – पढ़ने की मुश्किलें।
757. **डग डगाइल बाढ़ा** – बहुत जल्दी बढ़ना
758. **डांगा-डांगी करा** – लाठी से मार-पीट करना
759. **डाँड़ा सकत करा** – ताकत बढ़ाना।
760. **डीड़ा-पीड़ा पूछा** – वास स्थल पूछना
761. **डीड़ा-पीड़ा ऊँचा होवा** – घर गृहस्थी का सम्मान बढ़ना
762. **डुग डुगी पिटवाना** – सबको सूचित करना
763. **डूब दइ के देखा** – भीतरी बातों का पता करना
764. **डेरा-डाँडी होवा** – ठहरने की व्यवस्था होना
765. **डोंगा-बिछा करा** – घूम घूम कर चुनना
766. **डोंगरा-पोंछरा करा** – चुनना फटकना।

ढ

767. **ढकइर खावा** – पेट भर भोजन करना।
768. **ढढ़नच के ढाँक सुना** – फिजूल की बड़ाई सुनना।
769. **ढकरा-ढकरी होवा** – भर पेट खाना
770. **ढांगा-ओसार होवा** – लम्बा चौड़ा होना
771. **ढाँपा-तोपा करा** – छिपाने की युक्ति।
772. **ढुँइस देवा** – जानवर द्वारा सिर से मारना।

773. **ढिढ़ निपरा होवा**	-	रोग से जिसका पेट निकला हो
774. **ढिल-ढेकुल होवा**	-	काम में लापरवाही होना
775. **ढुनु- मुनु होवा**	-	लड़खड़ाना
776. **ढुसमा-बजरा**	-	तिल मिलाना
777. **ढेकी साँप रकम होवा**	-	सुस्त होना
778. **ढेबचू रकम मुँह होवा**	-	निराश होना
779. **ढोल-माँदइर करा**	-	मनोरंजन का उपाय करना
780. **ढाकेक आगु बाँसी**	-	दबंगों के समक्ष कमजोरों की कोई हस्ती नहीं
781. **ढाँक रकम ढिढ़ा होवा**	-	पेट का बड़ा होना
782. **ढिढ़ा ऊपर बइसा**	-	किसी के पेट में लात मारना।

त

783. **तन-तन रहा**	-	सावधान खड़ा रहना।
784. **तमक-झमक देखना**	-	रोब-दाब दिखाना।
785. **तइ-तपाटा करा**	-	निर्णय लेना
786. **तरींगन गना**	-	बेकार का परिश्रम
787. **तातल-मातल राहा**	-	रोष पूर्ण रहना
788. **ताला ताइड़ ढुका**	-	बल पूर्वक प्रवेश
789. **ताकेक बात करा**	-	अवसर की बात करना
790. **ताम-झाम, ताल-तुंबा देखवा**	-	अपना रुतबा दिखाना।
791. **तारा-ऊपरी लोक होवा**	-	जगह से ज्यादा आदमी।
792. **ताल ठोंका**	-	भिड़ने के लिए ललकारना।
793. **तियन के फोरन रकम**	-	मात्रा बहुत कम होना।
794. **तित-मिठ सहा**	-	दुख-सुख सब सहना।
795. **तिल राखेक जोघो नाञ होवा**	-	बहुत भीड़ होना।
796. **तीन-तेरो करा**	-	इधर-उधर करना।
797. **तितकी तरि तेज लागा**	-	आग की तरह तेज असरवाला
798. **तिन बेनवा करा**	-	बर्बाद करना

799. **तिक-तिकवा**	–	लक्ष्य साधना
800. **तीता-काँसा जाना**	–	सही-गलत को ठीक से समझना
801. **तुरता-तुरती करा**	–	जल्दी-जल्दी सम्पन्न करना।
802. **तेंतइर तरेक भूत**	–	अंधविश्वास है कि इमली-पेड़ के नीचे भूत रहता है।
803. **तोड़ा- मोहर करा**	–	सोना-चांदी की बात करना।
804. **तोञ्-मोञ् करा**	–	गाली-गलौज करना।

थ

805. **थरथरी चढा**	–	डर से काँपने की प्रक्रिया होना।
806. **थकल-मांदल होवा**	–	थका हुआ होना
807. **थसम-थासा करा**	–	परेशान करना
808. **थासा-गांजा करा**	–	दिक-दिकाना
809. **थाम-थुम करा**	–	रोकने की बात करना
810. **थाह-थलकुल होवा**	–	संतोष मिलना
811. **थापाइ-थुपुइ चला**	–	एक वर्ष के बच्चे का चलना
812. **थिर पानी पथल काटे**	–	शांति का काम सुचारु रूप से चलता है।
813. **थुम बइजका**	–	रुकने कहना
814. **थुम-थाम करा**	–	रुकने की क्रिया करना
815. **थू-थू थइया करा**	–	निंदा तिरस्कार करना।
816. **थुइक के चाटा**	–	अपनी प्रतिज्ञा से डिग जाना।
817. **थपथपी देवेक**	–	सांत्वना देना, प्रोत्साहित करना।
818. **थापाइ-थुपुइ चलेक**	–	साल भर के बच्चे का चलना।
819. **थुमड़ा गुचवा**	–	झारखंडी विवाह की रस्म
820. **थोथम थोथ राहा**	–	जिसे कुछ याद नहीं आता है
821. **थपाइ- थुपुइ चलेक**	–	नन्हें बच्चे का चलना
822. **थारिक बइगन होवेक**	–	सुलभ वस्तु होना, सस्ता होना
823. **थाह लगवेक**	–	असलियत का पता लगाना।

824. **थिर–थुम करेक**	–	रोकने का प्रयास करना, धीरे करना
825. **थूकें सतुआ साना**	–	बहुत कंजूसी करना
826. **थुपु–थुपु खेलेक**	–	झारखंडी बच्चों का खेल
827. **थोथम थोथ होवेक**	–	लिखना–पढ़ना कुछ नहीं जानना।

द

828. **दम देखा**	–	औकात देखना।
829. **दहनाइ देवा**	–	छोड़ देना।
830. **दहिने–बावें करा**	–	इधर–उधर कर देना।
831. **दम साइध के राहा**	–	साँस रोककर रहना
832. **दवाइ दारू करा**	–	औषधि देना
833. **दर देवा**	–	प्रारंभ्भ करना
834. **दहाई दीस चला**	–	बिना सोचे–समझे चलना
835. **दामड़ा बाछा होवा**	–	बिना खटे खानेवाला
836. **दादा भइया काहा**	–	खुशामदी में रिश्ता करना
837. **दिन धरना**	–	तिथि निश्चित करना
838. **दिन दुनियाँइ के जाना**	–	संसार की स्थिति समझना
839. **दीया बातिक बेरा होवा**	–	संध्या का समय होना।
840. **दिन घुरा**	–	अच्छे समय का लौटना।
841. **दीया के उसकुवा**	–	जागृति को तेज करें
842. **दुआइर लागा**	–	झारखंडी बिहा नेग
843. **दूध–दहिक बान बोहा**	–	दूध–दही की बहुलता।
844. **दूधेक दूध आर पानिक पानी**	–	सही न्याय होना।
845. **दुग्गी–तिग्गी मानुस होवा**	–	कम अस्तित्व का मनुष्य होना
846. **दुरमति आँटा**	–	विपत्ति आना
847. **दुआइर खुंदा**	–	झारखंडी विवाह नेग
848. **दुख ऊपर पाचर पोरा**	–	दुख के ऊपर दुख आना
849. **दूर देसें बेटी, आर नदी धाइर खेती होवा**	–	ये दोनों हालात मन को दुखानेवाले हैं।

850. **देखा–सीखा करा** – नकल से ज्ञान बढ़ाना
851. **देर–कुबेर होवा** – समय का इधर–उधर होना।
852. **दोतइन पानी देवा** – प्रातः कालीन प्रक्रिया करना।
853. **दोतइन बेंचा** – गरीबी का प्रतीक बिजनेस।

ध

854. **धने मातिइल रहेक** – धनवान होने की अकड़ होना।
855. **धरना देवा** – काम पूर्ति के लिए अड़ जाना
856. **धान खेत छिंड़ा होवा** – चराइ का रोक समाप्त होना
857. **धुकुर–पुकुर करा** – सहमना
858. **धुरा फँकाना** – हालात खराब कर देना
859. **धुरा फाँकेक** – व्यर्थ का घूमना

न

860. **नरनराइ के खावा** – जरुरत से ज्यादा खाना
861. **नजइर जुड़ुवा** – शांति महसूस करना।
862. **नजइर लागा** – कुदृष्टि पड़ना।
863. **नरटी धरा** – धर दबोचना,फाँसना
864. **नाके नकटी होवा** – खटका, संदेह
865. **नाना–थाना करा** – परेशान करना।
866. **नाँव जइजका होवा** – नामी आदमी होना।
867. **नाका–नाकी होवा** – बिलकुल नजदीक आना।
868. **निंगछा छोरी करा** – टोटका करना।
869. **नीम जुआन होवा** – तरुण उम्र होना
870. **निजेक लुगा माथ धरा** – अपनी प्रतिष्ठा बचाना
871. **निंगइछ देना** – समाप्त कर देना, उजाड़ देना
872. **नेंझरा–पेंझरा होवा** – टूटा हुआ, छितराया हुआ
873. **नाच नचावेक** – परेशान करना
874. **नो जाने, छव नाञ्** – अधिक लेने की मंशा।

875. **नून के गुन राखा**	-	कृतज्ञ होना
876. **नाम नासेक**	-	बदनाम करना
877. **नीर नारी नीचे जाय**	-	इस लोकोक्ति में पानी के विषय में तो ठीक कहा गया है किंतु नारी के संदर्भ में अब अर्थ बदल रहे हैं।
878. **नाके नकटी होवा**	-	कहीं पर त्रुटि होना
879. **नाके नून कसा**	-	परेशान करना
880. **नाना-थाना करा**	-	बर्बादी करना।
881. **नवा जनम होवा**	-	बड़ी आपदा से बच निकलना।
882. **नाइर-पाइर के करा**	-	लाचारी में करना
883. **नाँव बुचा करा**	-	बदनामी करना।
884. **नाठेक गुरू होवा**	-	बदमाशों का सरदार होना।
885. **निंगछा-निंगछी करा**	-	किसी तरह का टोटका करना
886. **निपट काना होवा**	-	बिलकुल अनपढ़ और बेवकूफ होना।
887. **नेंगा हाथेक खेल होवा**	-	बिलकुल सहज काम होना।
888. **नेठो नियर होवा**	-	बहुत पेचीदा होना
889. **नेवाइन करा**	-	किसी फल या अन्न का पहला स्वाद चखना।
890. **नेग सारा**	-	किसी काम को नाम मात्र के लिए कर देना।

प

891. **पइंचा-पानी करा**	-	उधार करना
892. **पथलें मुँड़ पटका**	-	बेकार जगह में निरर्थक प्रयास
893. **पहर टिंगा होवा**	-	दोपहर का समय होना
894. **पत-पोड़वा रोटी पकवा**	-	पत्तों में लपेट कर रोटी पकाना
895. **पइसा गाड़ी**	-	जहाँ बाली समेत धान की गाड़ी खड़ी होती है
896. **पतरी दोना करा**	-	खाने का इंतजाम करना

897. **परियाक-परिया सें**	-	पुस्त दर पुस्त से
898. **पसरल गाछ तरे झुर होवा**	-	दबंग के समक्ष कमजोर की स्थिति
899. **पइन खोकें मारा**	-	दुश्मनी का काम करना
900. **पइन रइसका रोटी पकवा**	-	पकवान जिसमें तेल का व्यवहार न हो।
901. **पइसा फुँइक देवा**	-	बेकार का खर्च कर देना।
902. **पइन-सोखा उगा**	-	इन्द्रधनुष का बनना
903. **पइन डुबकी**	-	एक पक्षी जो पानी में रहती है
904. **पइन सोर होवा**	-	स्वाद पानी की तरह हो जाना
905. **पानी-पिर्हा देवा**	-	सम्मान करना
906. **पादा-पादी होवा**	-	औकात से बाहर के काम में थकना
907. **पाकल-पान सौंपा**	-	विशेष सम्मान देना
908. **पार पावा**	-	रहस्य का पता लग जाना।
909. **पाग-पगरी बँचवा**	-	प्रतिष्ठा बचाना
910. **पानी पियाइ छोड़ा**	-	परेशान करना
911. **पाइल-पोइस मानुस करा**	-	बच्चे को पाल-पोस कर बड़ा करना
912. **पानी सहा**	-	झारखंडी वैवाहिक रस्म
913. **पिल्ही चमके**	-	डर व्याप्त होना।
914. **पीठ ठोंका**	-	शाबासी देना।
915. **पीठ-बोल पावा**	-	परोक्ष रुप से सहायता पाना
916. **पीठ-घोड़की चाँपा**	-	घोड़ा बनकर बच्चे को पीठ पर बैठाना।
917. **पुँइछ पकइर के चला**	-	किसी का अंधानुकरण करना।
918. **पेस गबती बात होवा**	-	गुप्त बात करना।
919. **पेटेक जाला**	-	भूख की समस्या।
920. **पेटेक आइग हदकल**	-	भूख का अतिरेक होना।
921. **पेट काटा**	-	पूरा भोजन नहीं करना।
922. **पेट समगम होवा**	-	पूरा-पूरा पेट भरना।
923. **पेटेक आइग निंझवा**	-	भूख मिटाना।

924. **पेट उर्राइ के खाना** – इच्छानुसार भरपेट खाना।
925. **पेटें बात नाऊ पोचा** – रहस्य छुपाकर नहीं रख सका।
926. **पेटेक भीतर रहेक** – गोपनीय रहना
927. **पोगली-पोटली राखा** – धन संचित करके रखना
928. **पोंगाइल पान्हाइल रहा** – काम के अनुकूल बना रहना
929. **पेट बहनी होवा** – बहुत अधिक आहार करनेवाला
930. **पकपकी लागेक** – ईर्ष्या से क्रोध उपजना
931. **पटका-पटकी करा** – लड़ाई-झगड़ा करना
932. **पकठाइल पोरब होवा** – मूल निवासियों के आदि वर्ष
933. **पतइर चटवा होवा** – निर्लज्ज होकर भोजन करना
934. **परक पतरी धुरा देवा** – दूसरे का नुकसान करना
935. **पानी पी के जाइत पूछा** – काम निकालने के बाद परिचय पूछना
936. **पानी पी-पी के जाइत पूछा** – जाति जानने पर विशेष जोर देना
937. **पोगली-पोटली राखा** – धन संचित करके रखना
938. **पोंगाइल-पाल्हाइल राहा** – काम के अनुकूल बना रहना।

फ

939. **फलना-तुसका करा** – बात बनाना
940. **फइल-फरीछ रहा** – ऋण धार से मुक्त रहना
941. **फटक फलाऊ करा** – दिखावटी करना
942. **फचका-फाँदा आड़ा** – फांसने की तरकीब करना
943. **फलना-ढेकना करा** – सही बात नहीं बताना
944. **फफर दलाली करा** – बेकार की बात करना।
945. **फाँदे फँसा** – छला जाना।
946. **फाँसा आड़ा** – फंदा लगाना
947. **फुरचुंदी आइग लागा** – क्रोध उपजना
948. **फुरछाइ के बुझा** – ठीक से समझना
949. **फूल पतइ चढ़ाना** – घूस देना।
950. **फेरें पइड़ जावा** – धोखा में फँस जाना।

951. **फूल सुन्दरिक बेरा**	-	गोधूलि का समय
952. **फेव-फेचांग करा**	-	पाखंड करना
953. **फोटा-फोटी करा**	-	दूर-दूर रखने की कोशिश करना
954. **फोरी-फंदी करा**	-	दांव-पेंच चलना
955. **फोरन रकम होवा**	-	अल्प मात्रा में होना

ब

956. **बजर बट्ट मानुस**	-	महामूर्ख मनुष्य
957. **बजर मुड़ी जनी**	-	औरत जिसका माथा बड़ा हो
958. **बजर गाँइठ**	-	जो गाँठ खुल नहीं सके
959. **बतर बेस होवा**	-	अनुकूल अवसर
960. **बतर बेंड़ाना**	-	अवसर बिगड़ना
961. **बतर मोताबिक**	-	अवसर के अनुसार
962. **बहिर बकाट होवा**	-	कुछ नहीं सुनना
963. **बकार नाञ फूटा**	-	बोलने में असमर्थ होना
964. **बसाहा बरद**	-	पाखंड का नमूना
965. **बसियाम बेरा**	-	दस बजे दिन का समय
966. **बड़की भिनसर होवा**	-	चार बजे भोर का समय
967. **बपउती घर-डीड़ा होवा**	-	आदि निवासी का चिन्ह
968. **बदरी गुड़-गुड़ा हे**	-	बारिश का लक्षण
969. **बनल रहा**	-	जीवित रहना
970. **बइतरनी पार करेक**	-	बैतरनी नदी एक ब्राह्मणवादी पाखंड है।
971. **बंदर घुड़की देखवा**	-	फोकस दिखाना।
972. **बइस-बुलवा काम करा**	-	वह काम जिसमें शारीरिक परिश्रम न हो
973. **बाँदरेक हाथे नरियल होवा**	-	अनजान के हाथ में अच्छी वस्तु का होना।
974. **बाबा- बाछा करा**	-	खुशामद करना

975. **बाना बिछना** - चिढ़ाने का नाम लेना
976. **बाइढ–बढ़इत होवा** - तरक्की होना
977. **बाघा–चिता होवा** - चितकबरा होना
978. **बावें–दहिने करा** - इधर–उधर करना
979. **बापेक नाँव बिसइर जावा** - अपने पुरखों को भूल जाना
980. **बिना भएँ पिरित नाञ होवा** - डर से सब काम होता है।

व

981. **विहिन गाड़ी** - वह जमीन जिसमें बीहन डालते हैं
982. **बिस–पिपरी रकम लोक** - अनेक लोगों की जमात
983. **बिटा–पोटोम करा** - अनाज सुरक्षित रखना
984. **बिसेक बिहिन बुना** - अत्याचार फैलाना
985. **बिटा–गुडा माइर होवा** - यथा शक्ति मार
986. **बिछ्वा–बिनवा देवा** - बचा हुआ रद्दी माल देना।
987. **बीस होवा** - थोड़ा अधिक होना।
988. **बुइध भोरोसा देवा** - मदद करना
989. **बेड़ाइल–बोड़ाइल लोक** - गुमनाम व्यक्ति
990. **बेरेन्डो तरि बलगर मानुस** - तूफानी बलवान
991. **बेरा उठल नींद भगवा** - सूर्योदय हुआ नींद तोड़ें
992. **बेरा ठाढ़ होवा** - दोपहर का समय
993. **बेरा नोवल** - दोपहर के बाद का समय
994. **बेरा घुरल** - दोपहर के बाद का समय
995. **बेरा अगरल** - धूप खतम हुआ
996. **बेरा चाके बइसल** - जब लाल सूरज किरणें समेट लेता है।
997. **बेरा लिहि–चिहि होवा** - जब सूरज डूब रहा हो
998. **बेर डुबिया समय** - जब सूरज छिप गया हो
999. **बेंचल बरद के दाँत गना** - बेकार के काम करना।

भ

1000.	**भदरिया दुख**	–	अनाज समाप्ति का समय
1001.	**भरखर दुपहर होवा**	–	दिन के बारह बजे का समय
1002.	**भाखा कुंदा**	–	बेकार की बातें करना
1003.	**भाइभ के गुडुम**	–	हक्का-बक्का होना
1004.	**भाकर भुकुर होवा**	–	कहीं-कहीं बत्ती दिखना
1005.	**भाटर-भटुर करा**	–	बुदबुदाना
1006.	**भाइगेक भोला**	–	भाग्य पर भरोसा करनेवाला पोंगापंथी
1007.	**भिना-छिनगा होवा**	–	अलग-अलग होना
1008.	**भितर-गुना होवा**	–	स्पष्टवादी नहीं होना
1009.	**भुइल-भटइक जावा**	–	परेशान होना।
1010.	**भूताइल टाका पावा**	–	बिना परिश्रम का धन पाना।
1011.	**भुचुंग काना होवा**	–	बिल्कुल अनपढ़ होना
1012.	**भुइल-बिसइर जावा**	–	विस्मृत हो जाना
1013.	**भेड़िया-धसान**	–	बिना सोचे-समझे किसी काम में कूद पड़ना
1014.	**भेंठ अँकवाइर होवा**	–	मिलन होना
1015.	**भेजा विहरी करा**	–	चंदा करना
1016.	**भेंठ-बेगारी लेवा**	–	अपनी धाक के बदौलत गरीबों को मुफ्त खटाना
1017.	**भेंका मुहाँ लोक**	–	बेढंगा आदमी
1018.	**भोटी भँसइक जावा**	–	मोटा आदमी का बेदम होना
1019.	**भोभोर फाँक होवा**	–	बेकार वस्तु
1020.	**भोंकरा-भचरा**	–	बिना मतलब का भाषण
1021.	**भोर-भाँज मेटना**	–	अस्तित्व समाप्त होना
1022.	**भोरल पूरल गुनगर लोक**	–	सम्पन्न और ज्ञानी व्यक्ति होना।
1023.	**भितर गड़िया भेव**	–	गूढ़ रहस्य
1024.	**भुसुरभुँड़ होवा**	–	धूल-गर्द से सराबोर होना

1025.	**भुजी भांग नाञ देवा**	-	कुछ भी नहीं देना
1026.	**भेड़ा बनेक**	-	बेवकूफ बनना
1027.	**भोज घरी कोहड़ा रोपा**	-	तुरत में हर चीज संभव नहीं होना, तैयारी के बिना काम सफल नहीं होता
1028.	**भोरल-पूरल घर होवा**	-	सुखी-सपन्न परिवार का होना।

म

1029.	**मलक मारा**	-	आनंद मनाना
1030.	**महुआ-मोढ़ा होवा**	-	अनपढ़ व्यक्ति होना
1031.	**मत कि सत?**	-	हमेशा बहुमत सच नही
1032.	**मने मन गुर चिरा खावा**	-	कल्पना की दुनिया में उड़ना
1033.	**मने खुट-खुटी होवा**	-	मन में संदेह पैदा होना
1034.	**मिन-मेख करा**	-	झूठ का अड़चन खड़ा करना
1035.	**मुड़ेक चुइल नोचा**	-	अपने आप गुस्सा प्रकट करना
1036.	**मुरगें बांग देवा**	-	सबेरा होने का आगाज
1037.	**मुँहगर होवा**	-	बोलने में तेज-तर्रार होना
1038.	**मुँड़ गइड़ बइस राहा**	-	अफसोस जाहिर करने के लिए माथा नीचे करके बैठना
1039.	**माएक थन काइट लेवा**	-	दुनिया का सबसे बड़ा अन्याय करना
1040.	**मामाक छगरी होवा**	-	लेना आसान होना
1041.	**मामा-भइगना होवा**	-	बहुत प्रिय सम्बंध
1042.	**मुँहजुठी होवा**	-	बच्चे को पहला अनाज खिलाना
1043.	**मघ-डुंडरू होवा**	-	माघ में बारिश के बाद भीषण जाड़ा होना।
1044.	**मटिया मिलान होवा**	-	मर जाना
1045.	**मइछ अंधार होवा**	-	जब मक्खियाँ न दीखें।
1046.	**माटी होइ जावा**	-	बरबाद हो जाना।
1047.	**मगज मारी करा**	-	दिमागी कसरत

1048.	**मलक मारना**	-	मौज करना
1049.	**मउजें मधुवाइ जावा**	-	खुशी से मतवाला होना
1050.	**मन उधियाइ जावा**	-	मन विरक्त होना
1051.	**मन गड़ाई**	-	ध्यान देकर
1052.	**मन काठ करा**	-	मन को मजबूत करना
1053.	**महुआ-सीझा मुँह होवा**	-	चेहरा सिकुड़ जाना
1054.	**माड़-सुटका भात**	-	वह भात जिसका माड़ सूख गया हो
1055.	**माञ-कोरवा भासा**	-	मातृ भाषा
1056.	**मास-मुरगा होवा**	-	मांसाहारी भोजन
1057.	**मान-मरजाद होवा**	-	स्वागत करना
1058.	**मानुस-मारा चाइल होवा**	-	घातक नीति
1059.	**मीन-मेख निकाला**	-	ऐब ढूढ़ना
1060.	**मुँड़ गड़ी दाँत होवा**	-	गुप्त ठगबाजी
1061.	**मुँड़ मोरन होवा**	-	तकलीफ होना
1062.	**मुँड़ धुनना**	-	काम अस्वीकार करना
1063.	**मुँड़ छप-छप पानी होवा**	-	सिर के बराबर पानी होना
1064.	**मुँड़ फोरा**	-	मार-पीट करना
1065.	**मुँड़ मुँड़ाइ चुनेक टीका**	-	सामाजिक दंड देना
1066.	**मुँडे खुर बुलुवा**	-	पूरा-पूरा ठग लेना।
1067.	**मुँड फुचका देवा**	-	चुपचाप भाग जाना।
1068.	**मुँहें पानी आवा**	-	लालच होना।
1069.	**मुँड़े बजर गिरा**	-	बड़ी विपत्ति आना
1070.	**मुँड़ेक लुगा भुएँ धरा**	-	अपनी प्रतिष्ठा हीन करना
1071.	**मुँड़ेक चुइल पाका**	-	अनुभवी होना
1072.	**मुँड़ी मुरछा**	-	काट देना
1073.	**मुँड़ा गोड़ा**	-	एक छोर से दूसरे छोर तक
1074.	**मुँह चिमराइ के जावा**	-	नाखुश होकर जाना
1075.	**मुँह चोंथवल करा**	-	बेकार बहस करना
1076.	**मुँह आंधार होवा**	-	इतना अंधेरा कि मुँह पहचान में न

			आवे
1077.	**मुँहगर होवा**	-	बात करने की पूरी क्षमता रखना
1078.	**मुँहे ठेना ठेकना**	-	रोजी-रोटी पर प्रतिबंध लगाना
1079.	**मुँहे मिसी भिना**	-	तरूणायी आना
1080.	**मुँह फेफरी फुटा**	-	मुँह सुख जाना
1081.	**मुँहे मिठाइ देवा**	-	खूब खुश होना
1082.	**मुँहा- मुँही होवा**	-	आमने-सामने होना
1083.	**मुँहा- मुँही जबाब**	-	तुरंत जवाब देना
1084.	**मुका-धका करा**	-	मार-पीट करना
1085.	**मुराइ-गाजर बुझा**	-	मामूली समझना
1086.	**मुलुक जोरा**	-	संसार से संबंध जोड़ना
1087.	**मोहड़ा-मोहड़ी होवा**	-	आमने-सामने होना
1088.	**मोका ताक पावा**	-	अवसर मिलना
1089.	**मोहरी खूँटा होवा**	-	पूरा-पूरा भार लेना
1090.	**मोइर-जोइर के**	-	मुश्किल से जमा करके
1091.	**मोछ ऊपर होवा**	-	मान ऊँचा होना
1092.	**मोट भुँइस होवा**	-	बड़ा चोर होना
1093.	**मोट निकास लेवा**	-	गहरी सोच में पड़ना
1094.	**मोहलम पट्टी करा**	-	प्राथमिक उपचार करना।

र

1095.	**रंगिया सियार होवा**	-	धोखेबाज होना
1096.	**रंग चंगिया होवा**	-	खुशहाल होना
1097.	**रकता-रहइन होवा**	-	खून से लथपथ होना
1098.	**रगदा जोरा**	-	खदेड़ना
1099.	**रसल-बसल गाँव**	-	पुराना जमा हुआ गाँव
1100.	**राइत आंधार**	-	मुश्किल के समय में।
1101.	**राइत दिन एक करा**	-	निरंतर परिश्रम करना।
1102.	**रागे हागा-मूता करा**	-	गुस्सा में अच्छे काम का नहीं होना

1103.	**रीठा–राँझा करा**	–	ठाट-बाट बढ़ाना
1104.	**रीझें राँगाइल रहा**	–	खुशी में रहना
1105.	**रूसा–रागा**	–	गुस्सा दिखाना
1106.	**रूखा–सुखा मजोरी**	–	सिर्फ मजूरी
1107.	**रूसनी बुढ़ि होवा**	–	हर बात में रुठ जाना
1108.	**रोका मजोरी**	–	खुदरा काम
1109.	**रोपा डाड़ाइ गेल**	–	रोपनी के काम में रुकावट
1110.	**रोजे कुइट खावा**	–	रोज कमाना, रोज खाना।

ल

1111.	**लटकल रहा**	–	काम में लगा रहना।
1112.	**लसकल रहा**	–	फँसा रहना।
1113.	**लधकल रहा**	–	दूसरे पर आश्रित रहना।
1114.	**लरकल रहा**	–	उदास रहना।
1115.	**लंगी मारेक काम**	–	धोखा देना
1116.	**लंगट उधर**	–	लज्जाहीन व्यक्ति
1117.	**लपट–झपट करा**	–	पाखंड से कमाई
1118.	**लपटउवाँ बात कहा**	–	दाँव-पेंच की बात
1119.	**लगन बांधा**	–	झारखंडी विवाह रस्म
1120.	**लहुआ–लोखर**	–	खून से लथपथ।
1121.	**लहू चुसा**	–	शोषण करना।
1122.	**लागान–बाझान करा**	–	सूदखोरी करना
1123.	**लाइड़–चाइड़ के**	–	ठोंक-बजा कर
1124.	**लादा–पेंदा देखा**	–	आर्थिक अवस्था देखना
1125.	**लावा फटका**	–	झारखंडी विवाह रस्म
1126.	**लिपा–पोता करा**	–	झगड़ा खत्म करना
1127.	**लिहि–चिहि बेरा**	–	जब सूरज ने किरणें समेट ली हो
1128.	**लिलि–छिछि करा**	–	घृणा करना
1129.	**लीला–खेला करा**	–	करतूत देखना

1130.	**लिलि–लोहा करा**	–	मकई खेत से कौवा उड़ाना
1131.	**लिलका–लिलकी करा**	–	प्रलोभन देकर बुलाना
1132.	**लुड़–फुड़का होवा**	–	किसी हस्ती के इर्द–गिर्द मंडराना
1133.	**लुती से हाथी होवा**	–	अदना से धनवान बनना।
1134.	**लुटिया गोल होवा**	–	काम बिगड़ जाना।
1135.	**लुटे कुटेक फेरा**	–	ठगने के दाव पेंच
1136.	**लेसा–मुंदा करा**	–	अवगुणों को छिपाना
1137.	**लोर्हा–बिछा करा**	–	उजड़े बाजार में जीविका की खोज
1138.	**लउवा–लाठी करा**	–	लड़ाई–झगड़ा करना
1139.	**लंगी मारना**	–	अन्याय से मारकर चित करना
1140.	**लादा–पेंदा देखा**	–	औकात देखना
1141.	**लाख से लिख होवा**	–	अमीर से गरीब हो जाना
1142.	**लिख से लाख होवा**	–	गरीब से अमीर होना
1143.	**लेभरा–लुरगा लोक होवा**	–	बेढंगा आदमी जिसे शिष्टाचार नहीं आता हो।
1144.	**लोलो गोब्दो करा**	–	परेशान करना।

स

1145.	**सरगेक चाँद हाथे धरा**	–	दुर्लभ कोशिश करना
1146.	**सइर–सोझवाइर डहर**	–	सीधा सही रास्ता
1147.	**सकत–सवांग होवा**	–	बलशाली होना
1148.	**सगुन बाँधा**	–	झारखंडी विवाह नेग।
1149.	**सठियाइ जावा**	–	निष्क्रिय हो जाना।
1150.	**सरगें छेद होवा**	–	अधिक वर्षा होना।
1151.	**सरगेक चाँद**	–	अलभ्य वस्तु।
1152.	**सरग से बात करा**	–	बहुत ऊपर होना।
1153.	**सतुर–बतुर लाना**	–	अनाप–सनाप लाना
1154.	**सइर–समतल होवा**	–	बाधा रहित होना
1155.	**सइर–सरजुइत होवा**	–	सुविधा जनक होना

1156.	**साँइझ–बातिक बेरा होवा**	-	बत्ती जलाने का समय
1157.	**सात–पाँच भाभा गुना**	-	दुविधा होना।
1158.	**सात–पाँच करा**	-	छल–कपट करना।
1159.	**साइठ–गाँइठ करा**	-	षडयंत्र रचना
1160.	**सादा–माठा रहा**	-	आडम्बरहीन रहना
1161.	**सिनइ फेरा**	-	झारखंडी विवाह रस्म
1162.	**सींघन चटवा गीदर**	-	गरीब भूखें बच्चे
1163.	**सुखल सोंइठ होवा**	-	नीरस हो जाना
1164.	**सेरा–सेंसरा**	-	तेल मालिश करना
1165.	**सेंप ढोंइक दिन काटा**	-	बिना खाए दिन बिताना
1166.	**सोरहिया लियान**	-	झारखंडी विवाह रस्म
1167.	**सोलोअनिया सभा**	-	पूरे गाँव की सभा
1168.	**सोन चुड़पा खेला**	-	झारखंडी खेल
1169.	**सोना थुपु खेला**	-	झारखंडी खेल
1170.	**सोबले बीस होवा**	-	सर्वोत्तम होना
1171.	**सोब गुड़ गोबर होवा**	-	किया कराया काम बिगड़ जाना।
1172.	**सरग जावा**	-	यह पाखंड है मनुष्य मरने पर स्वर्ग या नरक जाते हैं।
1173.	**सुखेक ढेलुवा झुका**	-	सुख चैन की जिन्दगी होना
1174.	**सूप–बढ़निक झगरा होवा**	-	मामूली झगड़ा
1175.	**सेठ छाप बेवस्था होवा**	-	सामंती व्यवस्था का होना।

ह

1176.	**हरदी बोलवेक**	-	हार मानने के लिए विवश कर देना
1177.	**हर धइर,बुइध करेक**	-	किसानों को शिक्षित होना जरूरी है।
1178.	**हजम कइर देवा**	-	ठग लेना।
1179.	**हँसुवे चिन्हे मेरेन्डा**	-	स्वभाव के अनुकूल हीं हर काम होता है।
1180.	**हाथी से लुती होवा**	-	दबंग से कमजोर होना

1181.	**हाथेक गुने मोछ टेढ़ होवा-**	कारीगर के मुताबिक निर्माण होना।
1182.	**हाथेक कंगना अरसी की ? -**	प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या?
1183.	**हाबु-हाबु करा -**	बच्चों की बोली में नहाना
1184.	**हाठु गोड़ा देवा -**	घुटने टेक देना।
1185.	**हार खोइल, बेराक आसरा देखा -**	काम के बाद भोजन की प्रतीक्षा क्यों?
1186.	**हाड़-भांगा जाड़ होवा -**	हड्डी तक को छूनेवाला भीषण जाड़ा।
1187.	**हाइल-हुकुम मानना -**	संवैधानिक नियम से चलना
1188.	**हाथे जट होवा -**	हाथ में सारा दारोमदार होना
1189.	**हाथ से लोटा फसका -**	प्रचलित विचार में मेहमान के आने की सूचना
1190.	**हाड़े हरदी देवा -**	अर्थी की रस्म पूरा करना
1191.	**हिया खलास होवा -**	उदार प्रकृति का होना।
1192.	**हिटिंग-हिटिंग करा -**	दुख झेलना
1193.	**हित कइर भीत फोरा -**	मित्रता कर के नुकसान करना
1194.	**हुलइक देखे चुनइक चाट -**	लोभियों में खाद्य सामग्री देखते ही उसे पाने की इच्छा प्रबल होती है।
1195.	**हुडगुम होइ बइस रहा -**	निष्क्रिय होकर चुपचाप बैठ जाना।
1196.	**हुरे लबार करे छइठ एतबार -**	पाखंडी अधिक ढोंग रचाते हैं।
1197.	**हुबेक हदहदी होवा -**	आनंद से सराबोर होना।
1198.	**हुंसियार के गुह तीन ठिन-**	होशियारी तथा-कथित होशियार फँसते हैं।
1199.	**हेंडर हेटेंग होवा -**	गरीबी के कारण शरीर में वस्त्र न होना।
1200.	**हेठे बोहाइ ऊपरे खोजा -**	झूठी सहायता का नाटक करना
1201.	**होही उड़वा -**	अफवाह फैलाने का काम करना
1202.	**हबचा-हबची होवा -**	आपा-धापी करना
1203.	**हलुवा हारान होवा -**	बहुत परेशान होना
1204.	**हड़ हिलवा जाड़ -**	जाड़े की पराकाष्ठा

1205.	**हलदिल होवा**	–	हिम्मत हारना
1206.	**हँसता बोटरा**	–	ताबड़-तोड़ समेटना
1207.	**हाड़ भांगा काम करा**	–	कठिन परिश्रम का काम करना।
1208.	**हाड़े माँसे मानुस एक**	–	सभी मनुष्य एक समान है।
1209.	**हातु गोड़ा देवा**	–	ठेहुने के बल झुक जाना
1210.	**हारित परान होवा**	–	निराश होना
1211.	**हाथें-पाथे लगना**	–	जी जान से काम में लग जाना
1212.	**हाथें सरगेक चाँद होवा**	–	असंभव उपलब्धि
1213.	**हाथिक लाद होवा**	–	बेकार वस्तु
1214.	**हाड़े हरदी लगवा**	–	परेशान करना
1215.	**हाला-हुजरा होवा**	–	झंझट होना
1216.	**हाही दाँदी होवा**	–	परेशान होना
1217.	**हिया खलास होवा**	–	उदार होना
1218.	**हिंका तक खावा**	–	खुराक से ज्यादा खाना
1219.	**हुका-पानी बंद करा**	–	समाज से बहिष्कृत करना
1220.	**हुका पानी देवा**	–	सम्मान देना
1221.	**हुबु-डुबु होवा**	–	डूबने-डूबने की स्थिति होना
1222.	**हुबेक देव उठा**	–	हृदय आनंदित होना
1223.	**हुइल-मलिया लोक**	–	दंगा-फसाद फैलानेवाला
1224.	**हेंठ-ऊपर सोंचा**	–	आगे-पीछे सोचना
1225.	**हेंसइर-हदइर हलुवा हारान होवा**	–	थक कर परेशान होना
1226.	**हेरे फेरेक घुरपाक**	–	फाँसने का जाल
1227.	**हेंठ-ऊपर टाइप लेवा**	–	सभी जगह धाक जमा देना
1228.	**हेराइल मन**	–	खोया-खोया दिमाग
1229.	**हेंठेक सांस हेंठ आर ऊपरेक सांस ऊपरे रहा**	–	हक्का-बक्का हो जाना
1230.	**होच-पोच होवा**	–	गड़-बड़ होना।

खोरठा बुझवइल, हियाँली, हारा-बदिया, फाँकी

"बुझवइल, हियाँली, फाँकी जाना, सीखा हारा-बदिया।
बाप-दादाक, साड़ा सुना, चिन्हा भाइ-गोतिया।"

"चिकन-चिकन, बरन-बरन, अड़गुढ़ किसिम-किसिम।
चेंगा-चुटियाक बुइध बढ़ावा, ओदाबादिक इलिम।
बझवल बात, बजर-गाँइठ, सबद टेढ़ घुमचल।
एक सें एकइस, छाका-पाँजा, पाँच सो पइभे बुझवल।"

बुझवइल लागो दिमाइग दहँजेक दइल। बुझवइल हे बात के बझवल बजर-गाँइठ। बुइध-बिबेक बिड़ेक जुआँइठ। जबाब के पहिले बात के बुझे हतो, ओर-पुथान खोजे हतो। एकर में कोनो सबद नखो सहज। बड़ी गजगज। जबाबें धइर लेतो माथा-मगज। एकर में हे, सबद के साना-गाँजा, छाका, पाँजा आर अरगुझाइल माजा। सोब पइभे खोपड़िक खतें, हुएँ जबाब जोहा-खोजा। जबाब पइलें काने गोंजा। कोनो बुझवइल हे आबगा अड़गुढ़। खोंखरे हतो माथा-मुँड़। तभुँ जबाब नाञ् खोजें पारलें, पूछा आजा-आजी के, दादा-भोजी के, नाञ् तो कोनो खोरठाक खोजी के। बुझवइल बड़ी माजा के चीज हे, कहे सुने बुझे-समझे में बहुत रंग-रीझ हे। बुड़बक नेंधा खातिर गिजगिज हे, बड़का गोज हे। मगुर तेज-तेंताल खातिर माजा-मोज हे। ई, मन खुस करेक कइदा हे। पुरखाक कलम के चिन्हा-मुंदा हे। पुरना परियाक जइर-बुदा हे। एकर सें पाता चलतो कि ककर में कते बुइध के कुइध हे। के बुइधें जादा हे? आर के भोदा हे? ककर बुइध बेयाध हे? आर ककर बुइध अगाध हे? एकर में गियान के गुदगुदी हे। कहे-सुने में खुसिक खदखदी हे। घर-घर गिदर हे, जाना, के कते तेजगर, के कते गुनगर हे? के कते लुइरगर, कते बुरबक, कते बुइधगर हे? ई अकल के आगु चलवेक चक्कर हे। बुइधें-बुइधें टक्कर हे। बुझवइल रंग-चंगिया रतन हे। सभेक मनेक-मतन हे। बरन-बरन हे, रकम-रकम हे। एकर में जीव-जुड़वेक जोरन हे। सियानेक संधान हे। एकर सोकिन, गिदर, जुआन, बुढ़-पुरान हे। ई चाइरो कोन हे। सगरो बोहोन हे। ई साहितेक सोना हे। उरखल गहना हे। एकर में चुमक के गुन हे।

तियन में नून हे। एकर बिनु साहित के सोवाद सून हे। सोवादें ई चटनी-चखना हे। गपसप के गहना हे। निमन नमूना हे, एकर बिनु सिछा सूना हे, अकिल अध-मोरना हे। ई आलस भगवेक पइना हे। अकल देखेक अइना हे। ई सोब महीने हे, बावें-दहिने हे, जने-तने हे। पाता नाञ् के रचल हे? के सँचल हे? मगुर अछल-गदल हे। एकर रकम-रकम के छाँट हे, कुछ बोड़, कुछ छोट-खाँट हे, कुछ बड़ी सहज, कुछ बड़ी आँट हे, कुछ तो हिया-फाट हे। कुछ एते खरनठ, कि जबाबें हइ जिभे हरनठ। ई, पोहना के पसिंद हे, भगवे नींद हे। परबें परसिध हे, सोहराइ चाहें ईद हे। सगरे एकर माजा महजूद हे। एकर काहाँ टाइम हे, सोब जुगें कायम हे। मानुस के खुस करा एकर सोभाभ हे। सोब जोघो परभाभ हे। ई सलँसत समइ के सिंगार हे। एकरे में पुरखाक बनार हे। एकर मान महत हे, बड़ी सकत हे। एकर काइब सें बेसी कूबत हे। मगज हिलवेक ताकत हे। ई तनाव के तोड़े हे, सँकार के बोढ़े हे। पुरखाक रिन सोधे हे। परेम के बिहिन रोपे हे, सोब के सुख सोपें हे। बुझवइल खुँट दर खुँट हे, कचरकूट हे। हियाँली, फाँकी, हाराबदिया मिलाइ के एकर गुट हे, बहुत में टूट हे, बहुत निफुट हे। बहुत बिसमिरतिक भेंट हे, बहुत मटियामेट हे। बुझवइल लागइ पुरखाक देल धरोहर, बिरासइत, पुरखाक पुरान पूंजी-पाटा, करते राहा आरो खोजेक आटा-पाटा, अइसने खोजते-खाजते करे पारभे पुरखाक पहिचान के तइ-तपाटा। एकरे सें भाँजे पारभे बुजरूक पुरखा गुलाक बुझ-सुझ आर समझ।

बुझवल – बुझवइल के खोरठा में जान कहनी भी कहल जाहे। एकर में सबदेक छाका-पाँजा लगाइ, सोंइच सजाइ के रकम-रकम सवाल बने हे। ओइसने एकर जबाब भी साँथाइ-साँथाइ सोंइच के देल जा हे।

जइसें – करिया बोने रेहे हे, लाल पानी पिए हे। जबाब हे – ढीला।

बुझवल में गनित सामिल नाञ् हे।

हियाँली – जखन बुझवल काइब, गीत चाहें छंद रूपे हवे हे, ओकराँ हियाँली कहल जा हे। ई गीतें गावल भी जा हे।

जइसें – खेदनिक मोहड़ा, लुसरिक डाँड़ा, आरो लेलों कुसमी के अगड़ा।
तीनो लइ रचलों हाम, कहा कोन गाँवेक नाम।

जबाब हे – खेसमी।

फाँकी – फाँकी में बहुते गड़बड़ गनित हे। छकवेक रीत हे। ई ककरो बुइध

अजमावेक नुसखा निसचित हे। ई साधारन गनित के हिसाबें चले ओला नाञ् हे। एकर रचना आर जबाब खातिर बिसेस रकम सोइच-समइझ के दरकार हइ।

जइसें -

जलदि बतावा काका-काकी, बारो में तीस गेल, कतना रहल बाकि।
जबाब - गारो

पाँच कोरी सो हवे, ई तो सीधा खेल।
तीन कोरी सात बामनेक कते हाथ भेल। जबाब - बीस

हारा-बदिया - बुझा-बुझोवल में दु बेकति, चाहें दु दल में हार-जीत खातिर ओदाबादी भी हवे हे, जकराँ 'हारा-बदिया' कहल जाहे। जइसें -

सराती - सुनलों हामनी बराती भाइ, तोहनिक गाँवें बहुते गाइ।
दामुदर के दूधे भोरे पारभे, तभी हियाँ नाता जोरे पारभे।

बराती - तोहनिक सरत सोब सिकार, दामुदरें बोहइबो दूधेक धार।
मगुर देखा नदी में जाइ, बोहो-हो पानी गजगजाइ।
तोहनी पानी दे सुखाइ, खाँटी दूध देबो बोहाइ।
करबो हामनी नाञ् बेजाञ, पानी में दूध मिलइबो नाञ्।

सराती - हारलों हामनी करा सगाइ, खुसीं खिअइबो मुँहे मिठाइ।

अ

1. अइलो अजगइबी भूत, खाहे कम चले बुहत, - ड़ी
   राइत-दिन सगर घरी, सभिन देखे एकर करतूत? - घ

2. अता देखल, पत्ता देखल, आर देखल कलकत्ता। - फी
   बीच-बजारें दादा देखल, फोर के ऊपर पत्ता? - रधु

3. अजगइबी देखलों एगो हाँस, बिना पाखीं उड़े अकास - ग
   बसें करल घेंचाक डोरें, दादा नभवल धरतिक कोरें? - तंप

4. अचरज देखा सभिन संगे, नाञ् पुइंछ रोआँ अंगे, - ग
   बइठे जानवर ऊँट अइसन, खूब उँचके हरिन जइसन? - बें

5. अइसन मानुस कइसें जानल, बिना खाइल, बिना चाखल - द
   मानुस मिठी कहे लागल? - र्नी

6. अलबेला एगो कारीगर, काटे करिया घास - म
   राजा-रंक सीस नवावे, आइके एकर पास? - जाह

7. आग काटलें आग रेहे, डाड़ा काटले आरा ओहे - रा
   मानुस पाइल खटाइ मगज, एकर घारें एगो अचरज। - गआ

8. आँधार घारें नचनिक नाच (झिंगफुलिया) - वाला

9. आइल घोघो, गेल घोघो पनिए डेराइल घोघो - ताजू

10. आंगराक झार फुटल कइसें? (खोरठा लो.सा.) - क
    सरगे ई फुलल कइसें - ल

राजाक भांडारो नाञ्, - म
पइसा देल्हू मिले नाञ।

11. आठ पंजरा, पीठ झेंझरा, एकर संगी लेप-नेदंरा, - या
बिना सियाही लिख देतो, जोदी सुतभे राइख हेंडरा? - टिख

12. अंक अछर के करे काम, कहा गीदर हामर नाम? - छ

13. अइली चमकी चम-चम, चम, तबे फूटल बड़का बम - लिजबि
जलदी चमकी गेली नुकाइ, पूछे 'श्याम' नाम बुझाइ? - नजरग

14. आपने सें आइल डाकतर, सुइ दइ रफु चक्कर? - रीखम

15. आँख नदीं, फॉक नाञ्, पानी हे, माछ नाञ्? - लयरिना

16. आर-पार बिन चोका के चार, हाम रहो सोभे घार? - ननू

17. आवे हे, जा हे, खाली काठ काहे? - गइआ

18. आन के काठ, आन के बकला, तहाँ नाचे बुढ़ लकड़ा? - गाटां

19. आपन मुँह सें आइग निकाले, आपन हाड़ पोड़वे? - तीबा

20. आप रूपी बनल घार, घारे नाञ एको दुआइर, - डाअं
घारेक भीतर बनल बाँध, बाँधेक भीतर सोना हे,
घार धँसे, चोर भागे?

21. अथल ने पथल, बनाइ देहे महल? - राकम

22. असना ऊपर धसना, भीतर नाचे नंदलाल? - **खइआँ**

23. अजर कोठी, बजर केंवाइर, तहाँ नाचे लपलपिया यार। - **तदाँ रआ भजी**

24. अंडाक भीतर, साँढ़ेक बोली? - **रूघघुं**
25. अंइठाइल जनी, कादो खाइ? - **घीघों**

26. अचरज हतो सोभेक सुइन, मुड़ी काटलों नखइ खुइन? - **नखुना, खनो**

ऊ

27. ऊपर से हामकटहर छउवा, भितरें रस गुल गुलवा,
सोवादें मुँह भोरेक काम, बुझा गीदर हामर नाम? - **चीली**

28. ऊपरें आइग, हेंठे अधन? - **काहुँ**

29. उजर धरती, बीज करिया, सिखल एकर सें, परियाक परिया
सोब घारें हामर काम, कहा गीदर हामर नाम? - **पताकि**

30. इति बिती, तीन तियन? - **गानमु**

31. ई गाछेक विह्नि नाञ्, - **ड़ी**
खाइ मगुर रोपे नाञ? - **खखु**

32. उटा के? जे पीठ ऊपर, लादल आपन घार? - **मछिका**

33. ऊपरें खोंधा, हेठें अंडा? - **आहुम**

34. ऊपरें खोंधा, भुँइ भीतरें अंडा? - **लूआ**

35. ऊपरें फूलें, हेठें फोरे? - यॉँनिचि मदाब

36. ऊपर से गिरल चोंचा, ओकर दाढ़ी नोचा? - लयरिना

37. उइड़ के पक्षी फरकट जाइ, सोरहो अंग गिरत जाइ? - लमसे लफ

38. ऊपरें टाटी, हेठें टाटी, माँझे नाचे लाल-लाटी? - भजी

39. ऊपरें आइग, हेठें अदहन ? - काहुं

ए

40. एगो ढेकें, सात गो फोंक? - खआँ, कना, नका, हमुँ

41. एगो चरँइ, आगु से चढ़े, पाछु सें उतरें? - रीककँ

42. एगो छगरिक, पेटे दाँत? - आसुहँ

43. एगो बोने, बिन गाँइठ के बाँस? - लइचु

44. एगो पहारें, दुगो अइना? - खइआँ

45. एगो घोड़ाक, दुगो लगाम? - इसू, तासु

46. एगो बाँधे, चमके तारा, एकर संगी, गने नाञ् पारा? - दचाँ

47. एगो घारें, दु गो जलना? - कना

48. एक बकसा में, बारो खाना, हर खाना में तीस-तीस दाना। - सरब, नाहीम, नदि

49. एगो बटुआ में, हजार रूपया? - **इचारमे**

50. एगो गाछें आँका-बाँका, टाँगल बुझाइ फुटल साँखा? - **रइततें**

51. एगो गाछें, हँसुआ भोरल? - **रइततें**

52. एगो बुढ़ी बिहाने उइठ कुएँ झाँप देही? - **टीलबा**

53. एगो बुढिक घार हइ, दुआइर नाञ? - **कापो रसतो**

54. एगो मानुस कतनो काटलें नाञ मोरे? - **राइहँछ**

55. एगो गाछें, बारो डाइर, सात पतइ। - **रछब**

56. एगो घारें, बावन चोर? - **इलास**

57. एगो घारें, हजार भुरकी? - **लजा**

58. एगो पुइछें, पइसा गादा? - **रजुमें**

59. एगो सुंदरिक, एके गोड़? - **ड़ीखखु**

60. एगो गाछ, काटले नाञ कटाइ? - **राइहंछ**

61. एके छोंड़ी, कार आर गोर? - **ड़ीग**

62. एगो चलवइया, बत्तीस बुलवइया? - **भजी, तदाँ**

63. एगो पिर्हे, सो गो सइतिन? - **नसुर**

64. एगो बुढ़ी गाँव-गाँव, कहे चीची-खाँव, चीची-खाँव - **कीढें**

65. एगो बुढी के, पीठें दाँत? - **इटाच**

66. एगो कमवे हे, चाइर गो देखऽ हथ, पाँच गो आसें हथ? - **नीइख**

67. एगों छौंड़ी के पेट आर मुँह हइ, मगुर अँतरी नखइ? - **रीगग**

68. एगो गाछें, ढेइर ढेंका? - **लबे**

69. एगो गाछें, ढेइर माँदइर? - **रहठक**

70. एगो गाछें, ढेइर खजारी? - **जरंक लफू**

71. एगो गाछें, बारो चोंग? - **रछब**

72. एगो कोहीं, भूत डेगे? - **ढ़ीमु**

73. एक बिता के बितना, एक घंटा हिले? - **नइतदो**

74. एक बिताक गाछ, छाता नियर पतइ? - **रम्हाकु-कचा**

75. एगो बुढ़ी, उठते काँदे? - **कीढें**

76. एगो बुढ़ी चललें गावे? - **ताजाँ**

77. एगो बुढ़ी, ढेचू-ढेंचू काँदे? - **कीढें**

78. एगो बुढ़ा, डुइब-डुइब नहाइ? - **टीलबा**

79. एगो जीव से भेल भेंट, गोटे देहिं पेट
जोंखा पइले, पानिएं भीतर सोढ़-मोढ़ पेट। - **कजों**

80. एगो टाँगाइल ही? - **इचारमे**

81. एगो गाड़ाइल ही? - **दाकं**

82. एगो के पेटें पोटा नखइ? - **रइदमाँ**

83. एगो हाथी, सौ गो बइसनिहार? - **कठबे नाखा**

84. एगो हाथिक पेटे, ढेइर मइना चेरे? - **रघा रदगी**
85. ए रानी! तोर देसें नाञ पानी - **टीगजों**
अरे छउवा, तोर देसे नाञ् नउवा - **घबा**

86. एगो नेताक चाइर डाइबर - **र**
भीड़ जुटवल दोबर-तेबर - **दा**
'श्याम' संगे सोभिन बोले, - **र**
मगुर नेता चुप बराबइर - **मु**

87. एगो फूल, एगो फोर, - **नमु**
दुइओक एक संग जोर। - **जा**
बइन जितो बेस मिठाइ, - **बला**
'श्याम' रसें झोरोबोर? - **गु**

88. एक डिब्बा में मोती जादा, - **त**
रोज ओकर मान-मरजादा, - **दाँ**
कोनो राजा राखे नाँञ पारल,
बत्तीस मोती सें केव जादा।

बड़ी सरधा सें सँचें 'श्याम'
काहा चाँड़ें एकर नाम?

89. एके होइके, दुगो तरवाइर, - ची
कतेक खोंधा देला सुधाइर - इँ
दाम लइके 'श्याम' चरक, - क
कतेक बोन देल उजाइर?

90. एगो घार के, कधुँ दुआइर नाञ? (दिवाकर महतो) - मडी

91. एगो बुढ़ी रोज घिंसरे? (दिवाकर महतो) - नतपो

92. एक थारी बरी, - नग
गने नाञ पारी? - रींत

93. एक गोड़वा रे एक गोड़वा, (खिरोधर महतो) - नाइप, नसाकि,
दू गोड़वा काहाँ गेलो, - गबें, राखखं
चाइर गोड़वा माइर के,
बारो गोड़वा खोजे गेलो?

94. एक गढ़ में, दू रंग पानी' (चितरंजन महतो) - मडी

95. एक बुढ़ी, रोज बिहाने नहाइ-धोइ के - ड़ी
टिल्हें बइसे? (गोविंद महतो) - हाँ

96. एगो छोट बाँदर, उछले पानिक भीतर? (गजाधर महतो) - गबें

97. एगो गाछ हीरा, फोर गुर, घी, जीरा? - आहुम

98. एक सो रुखना, एक सौ बइसला, - **राइं**
तावो नाञ कटाइ आसन के बकला? - **हछ**

99. एक बुढ़िक, नाक फेचका? - **टबु**

100. एगो बुढ़िक, गोटे गातें फुसरी (पुरन महुदा)? - **रहटक**

101. एक कोरी, नौ बाभन, (बहादूर पाण्डेय, झिंगफुलिया)
दस रोटी गोटा-गोटा? - **रीइको**

102. एगो बुढ़ी के भोटिया घिंसइर बुले (खिरोधर महतो) - **नतपो**

103. एगो गीदर के, पेटवे फाटल? (धीरेन) - **गोहम**

104. एगो वीर, दुइओ टेंग चीर, रस खातिर करे ततबिर - **आँकु**
जाइ छुछे, झोलंग झोपोर, आवे रसे झोरोबोर? - **नीपा**

105. एगो बाँचहइ पाँच गो में देख हइ (श्याम) - **खैनी**
आर चाइर गो नुकाइल हइ?

106. एको परी दुबर-पातर, - **ठी**
करिया टोपी देही उजर - **का**
इंजोर करे गाँव-बजारें, - **इला**
मगुर रहे नुकाइ अँधारें? - **स**

107. एगो घारें साइठ जुआन, - **ठी**
'श्याम' पगरी एक समान। - **का**
सभेक मुँड़े भोरल आइग, - **इला**
रगइद देलें जितो जाइग? - **स**

108. एक जानवर अइसन देखलों, - री
दुइयो हार्थें खाइ। - ह
देइख 'श्याम' के गाछे चढ़ल, - ल
पीठें पुइछ हिलाइ। - गि

109.ओकर गार्ते देखे पइलों, तीन चाइर गो डहर, - रीहलगि
जाहाँ गाछ हुएं पइभे कि गाँव कि शहर?

110. एक संग में दू तरवाइर, कोनो जिनिस धरे अंकवाइर, - चीकैं
पइसा पइले 'श्याम'-चरक, घास काइट करे पाथाइर?

क

111. करिया-करिया गाय, करिया घास खाय? - चीकैं-रखु

112. करिया घोड़ा, दु गो गोड़ - लकिइसा
चढ़े सोब छोट-बोड़?

113. करिया हामर रंग-रूप, करिया हामर पहिचान, - राइहँछ
हाथ गोड़-मुँड़ हे, आरो नाक कान।
रोज दिन पुरूब पछिम, उत्तर-दखिन पयान,
'श्याम' कहे सइत बात, देहिं नखे जान?

114. करिया घोड़िक तीन गो थान, - हाल्चु
सबके घारें एकर सनमान?

115. करिया काठ, सिन्दूर उगले? - गइआ

116. ककर से मुँह चाक चिकन, ककर से हवे लाल? - लते, नपा

117. करिया कुकुर सुतल रहे, – की
लाइत धरलें कुइद उठे? – ढें

118. करिया बोने, करिया सियार – लाढी

119. करिया हों पर काजर नाञ्, – लूभा
गाछ चढ़ो पर बाँदर नाञ?

120. करजी भीतर देखलो पाँइख, – रम
जहर नाञ् हे, देखलो चाइख? – डु

121. कीने घरी हल 'श्याम' – ला
कामेक घरीं लाल। – य
फेंकेक घरीं चरक हल, – को
कहल घर पताल।

122. के आइन टंइगला बइसला, – ल
फोइर देल हामर घइला। – य
हामर रंग 'श्याम' मगुर, – री
खुसी-खुसी सोभीन खइला? – ना

123. कभुँ एक, कभुँ दुइ, कभुँ चाइर चिरा, – टि
गात गोटे गाँथाइल मगुर, नाञ् गिरगिरा। – चु
'श्याम' रंग हामर मगुर, नाञ् लागो कउवा,
नागिन रकम कहइ-कहइ, उड़ल हइ हउवा?
कभुँ लम्बा कभुँ गोल, नुनु चाँड़े नाम बोल?

124. काठ खाहे सिंदूर हागे? – ठीका-गइआ

125. के कहल पढ़ आर लड़, हक खातिर आगु बढ़? - **दनोवि**

126. काँधें हमरों बइसवे गोलें, कखनु कोरें कखनु झोलें - **कीलढो**
'श्याम' जाँइच कहल, ई तो, बिना ढेढ़वल नाञ् बोले?

127. करिया बोने रेहे हे, लाल पानी पिए हे? - **लाढि**
(बहादूर पाण्डेय, झिंगफुलिया)

128. कटोरा पर कटोरा (बहादूर पाण्डेय, झिंगफुलिया) - **लय**
बेटा, बाप से भी गोरा? - **रिना**

129. कार चुका धुँध नुका? - **नगबैं**

130. काइट देलों जकरा, खड़ा रहे बकरा? - **राना**

131. काटल बकरा, घारें-घारें बुले? - **लाइप**

132. काठ के घोड़ा, लोहा के सिंग, चइलतें बाजे धातिंग-तिंग?- **कीढें**

133. काठ के चरँइ, लोहा के ठोर, हामर काम सोबले जोबोर?- **रहा**

134. करिया गाय, बरियार बाछा, हकइंद उठे गाय-बाछा? - **कदूबं**

135. काटलें कँदइबो? - **जयाप**

136. कुबरी छोंड़िक पेटें दाँत? - **आसुहँ**

137. के एक गोड़े, जिनगी भोइर डाँड़ाइल रहे? - **छगा**

138. करिया राजा बइसल रहे, चरक राजा देसें बुले? - **रमसी**

139. काँचें थिर, पाकलें वीर (झिंगफुलिया)? - **ड़ीहाँ** (माटिक)

140. कार चरइयाँ, मुँड़ी मास? - **वालभे**

141. कोन सहरें आइग लागल, कोन सहरे पानी (गजाधर महतो)
कोन सहरें धुआँ उठे, बोल तबे जानी? - **ड़गड़ग**

142. कोनो असुक-बेसुक नाञ्, तावो खाहों गोली (गजाधर महतो)- **कदू**
डेराइ बुढ़ा गीदर जुवान, सुइन हामर बोली? - **बं**

143. कारे-कारे भँवरा, पेटार साजल जाइ - **झिंगफुलिया**
लाख टाका दाम भेलें, विकलो न जाइ?

144. कुरथिक अछत, सुरगुंजाक फूल, बोर कनिआँइ भेल समतुल?
- **झिंगफुलिया**

145. कोइ लोक नाञ पतियाइ, पानी में रूआ डूबे - (**झिंगफुलिया**)
लोहा छपुलाइ? **जहाज कनीपा**

146. कोन महीने काहा भाइ मानुस कम थूके। - **लप्रैअ**
आरो काहा कोन महीने कुकुर कम भूके?

147. कोन अछर के आँटा हवे? - **'ज'**

148. कार ढेबचुर लाल पुँइछ, नाञ् जाने तो जनी से पूछ? - **टुचा**

149. काठेक बरद, लोहाक सिंघ, नाचे बरद हिटिंग-हिटिंग? - **कीढें**

150. केकरो घर पोड़े, आर गुइल करे केव? - हुंका

151. करिया बुढी रोज नहाइ धोइ के कोठा ऊपर बइसऽ ही - कतेभा ड़ीहाँ

152. करिया लागों कउआ नाञ्, 'श्याम' कहे हवुआ नाञ् - थीहा
नाकेक बोलें करे काम, बुझ दादा हामर नाम?

153. कार घोड़ा, भीत तोड़ा (गोबिन्द)? - सामू

154. कार ढेबचु, लम्बा पुइंछ, घारें-घारें हामर पुछ? - टुचा

ख

155. खाइतें हरिहर, थुकइते लाल? - नपा

156. खोराहा खसिक, मास सोवाद? - रहठक

157. खेती उपजुवल बुरबक किसान, पानी भीतर करल खरिहान? - मरूदकु

158. खेदनी के मोहड़ा, लुसरी के डाँड़ा, आरो लेलों कुसमी के अगड़ा, तीनो लइ रचल 'श्याम' कहा कोन गाँवेक नाम? - मीसखे

159. देइख 'श्याम' के भेल हइरानी, देखइते मोती, छुलें पानी? - तसि

160. खेत हइ, माटी नाञ्, नदी हइ पानी नाञ्? - साकन

161. खिवइ, मुदा खाइ नाञ्? (खो.लो.सा.) - छगा

ग

162. गरमाइ गेलें, पानी सोवाइ? - रपाक, नासीप

163. गाछ ढांगा, फूल रांगा, फरे केरा, फूटे कपास? - **लमसे**

164. गोटें हला एके रंग, उड़ला तखन बारों रंग? - **गीरमु-डाअं**

165. गोड़ नाञ, हाथ नाञ्, चले गाडर-गुड्डर - **टीपा-ताजाँ**
दाँत मुँह कुछ नाञ, खाइ कटर-कटर?

166. गाछ खसखस, पात बेहरा, फुले फूल कदम। - **लमसे**
हरियर काँचा फोर गुला, जाना कँइरा रकम?

167. गाय ढेनुवाइ हाड़, हाड़ ढेनवाइ बछरू? - **डाअं गीरमु**

168. गोटे गाछें, लाल पगरी? - **लमसे लफू**

169. गरमें गनगन, जाड़े कनकन 'श्याम' कहे एकर बिगडलें - **वाहा**
बिगइड़ जाहे परियावरण?

170. गड़के गोल, गड़गड़ी नाञ्, हार्थें बाँधाइल, हथकडी नाञ् - **ड़ीघ**
राइत दिन चले मगुर, 'श्याम' देखल हड़बड़ी नाञ्?

171. गड़इली गे गड़इली, कि कहे हे टंगइली, - **लूआ नगबै**
तोके डर कि मोके डर? (दिवाकर महतो)

172. गोल ढेवचूर, लम्बा पुइंछ, नाञ् जाने तो भोजी से पूछ? - **लछुरक**
(खिरोधर महतो)

173. गोटे बोन पोइड़ गेल, बुढुवाक भगवा रहइ गेल? - **रहड**
(खिरोधर महतो)

174. गोड़ नाञ्, दोड़ल जाइ, रगवे गेलें काइट खाइ? (खो.लो.सा.) - पसाँ

175. गोल घारेक, दुआइर नाञ् (खो.लो.सा.) - रसत

176. गोटे पतइ पोइड़ गेल, खुढ़ा-बुढ़ा खइस गेल? - ड़ापोतपा टीरो

177. गोला गरू, ओला खाइ, पानी पीलें मोइर जाइ? (खो.लो.सा.) - गइआ

178. गीदर घरी हरिहर हलों, बुढ़ाइ भेलों लाल।
खूब बेसी हमराँ खइलें, देखइबो अकास-पताल? - इचारमे

179. गीदर गुला 'श्याम' हामर, हामर देही गोर।
गीदर गुला खाइ जो, हामरा तोञ् छोड़? - चीइलाइ

180. गीदर घरी पँइट पिंधऽ हलइ, बोड़ भेलें नंगटे रहऽ हइ? (खिरोधर) - सबाँ

घ

181. घन घन घाँटी, सोनाक पेटी, उघाइर देखा मड़ुवाक रोटी? (झिंगफुलिया) - ---

182. घर गुसटिक गाँइठ, एके ठिन? (चितरंजन) - नसुहल

183. घार हे, दुआइर ना नाञ्? (झिंगफुलिया) - रसत

184. घारे के भीतर गाँदर-गुँदुर, घारेक दुआइरें नाञ्? (अनंत लाल महतो) - मडी

185. घेंचे थोली, मुड़े मोर, रोज विहाने करे अंदोर? - गारमु

186. घार हइ दुआइर नाञ्, आदमी हइ बोले नाञ्? - **ब्रक आर रदारमु**

च

187. चरका आवे, करिया भागे? - **नदि, तइरा**

188. चरका कूटे, ललका उसकावे? - **भजी, तदाँ**

189. चरक बइगन, भेंखुआ नाञ्? - **डाअं**

190. चउदह गोड़, दस हाथ दस आँइख, - **याटिख, दारमु**
पाँच मुँड, चाहर जीव, एक संगे जाइ रहल हथ? - **याइवढो**

191. चाइर गो, आवे-जा हे, चाइर गो कामे लागल हे। - **यगा, रइचा ड़गो, दु खइआँ**
दु गो काठ रकम डाडाइल हे एगो उड़ान मारे हे? - **नका दु घसिं, छइपुं**

192. चाइर गो गरम, चाइर गो नरम चाइर गो झर झर झरे - **तुरि रछब**
एगो मुरगी के वारो टेंग, फरके-फरके चरे? **नाहीम**

193. चाइर गोड़, खुर नाञ्, आर दुगो पाँइख, एगो सिंघ। - **रीखम**
लड़े-भिड़े नाञ्, खाली मारे डींग?

194. चाइर चरितर, चउदह गोड़, बुझा सँइया, तव जाइब - **डीघो तीवभरग**
ससुराइर, आर नाञ् तो घुरब नइहर? **नीज-दरम**

195. चालीस किलोक चाइर ओजोन, बताव बाबू कौन-कोन? - 1, 3, 9, 27
चालीस मइधें देख बोइल, जतना कहबें देबो तोइल?

196. चिनगी पइलें, आपन बुतें घुरे उड़े आइग मूते। - काटाप
उछले-कूदे करे अंदोर, 'श्याम' रंगें जाइ सुते?

197. चलते-चलते गोड़ खियाइ, पिंधना काइट देहे घटाइ। - लसिनपे
निखरे हामर करिया गोड़, फइर चलों सर सरसराइ?

198. चरक पाँठा, मुँह अँइठा? (झिंगफुलिया) - खशं

199. चरक वोदा, झाँटी डेगे? (झिंगफुलिया) - टाने

200. चरक मुरगा, हरिहर पुँइछ? (दिवाकर महतो) - इरामु

201. चरक देहिया, चाकर पतइया, फोर लदबद, लड़डू मिठइया? (दिवाकर महतो) - रइमडु

202. चाँद पुरे चोरी भेल, नोख पुरे माराइ गेल? (गोबिन्द) - लाढि

203. चाँद के बेटा, सुरूज के नाती, एक सो लुगा बाँधे गाती? (दिवाकर महतो) - जयापि

204. चाइर डाइबर, एक सवारी, ओकर पाछु ढेइर जवारी? (दिवाकर महतो) - रदारमु

205. चिटा माटी, इटा की? गुरू बामन गोड़ लागे सेटा की? (दिवाकर महतो) - तरूमु

206. चरक बोदा, मुँड़ मोचरा? (राम चन्द्र महतो) - खशं

207. चक-चक लम्बा, सुन्दर रानी, ओकर पासें मीठा पानी? (श्याम) - रीताक

208. चाँड़े वताव, कर नात्र लेट, अइसन अचरज कोन गेट। - **टगेलको**
नात्र् प्राणी ढुके-बहराइ, कोह 'श्याम' नाम फुरछाइ?

209. चिक चेरइयाँ, मुड़ी मास? (खिरोधर) - **वालभे**
210. चाहें कतो टाका दिहीं, ओकराँ लाइत खाइ हतइ? (गोबिन्द) - **ताजू**

211. छोटे मोटे डोभा, फूल फूटे शोभा? (राय जी कुड़ामो) - **रीबढि**

212. छोटे मोटे गाछ टी, थारा अइसन पात टी (अब्दुल वाकी) - **कचा-रहाम्कु**
जे जाने कल टी, से तोरे फल टी?

213. छोटे मुटुक चुइयाँ, निर्मल पनियाँ। (राजकुमार) - **ड़ीकोप**
ओकरे से निकले, भुटकी जेनिया?

214. छोटो-मोटो बाँदर टी, लम्बा देखक पुइँछ। (गजाधर) - **इसु-गाधा**
चाइल-चलन एकर भाइ, रेहे ऊँच-नीच?

215. छोटे जुबान, टेढ़ कमान, मारे चोट, तो गिरे जुआन? - **छाबि**
(चितरंजन)

216. छोट-मोट पंड़की, डुमइर तरि पेट? (खो. लो. सा.) - **रीपासु**

217. छोटे-मोटे बाँधें हल, हावाक सनसनी। - **वस्टो**
बाँधेक पानी, चढ़ल आकासे छिटकल चिनगिनी?

218. छोटे में चाइर गोड़, बोड़ भेले दु गोड़, - **नपचब नीवाजु**
बुढ़ाइ गेले तीन गोड़? **पाढ़ाबु**

219. छोट घरीं चोंथा-चोंथी, बाढ़ल तखन घुंघुरू रूनु-झुनु - **टबु**

बुढ़ाइल तखन डांगेक माइर?

220. छोट मुँह, बोड़ बात? - **कदूबं**

221. छोट-मोटे पइड़की, जाइ देस-विदेस? - **ठीचि**

222. छोटे-मोटे डोभा, बेंग हड़बड़ाइ? - **ढ़ीमु**

223. छोट डोभा, बड़का सोभा? - **यादी-तीबा**

224. छोटे-मोटे गोलु दास, लुगा पीधें, सो पचास? - **जयाप**

225. छोट बेरे धरती तरें, बुढ़ाइल बेरे तरवाइर धरे? - **थीरकु**

ज

226. जइसें-जइसें बुढ़ाइ, वइसे-वइसे छोट होवे? - **रहा**

227. जनम सें हामर दाहीं, जखन दाँत हवे मजगुत, दाहीं जाहे गिर? - **इकम**

228. जनी-मरद के एक पहिचान, दुइयो बेगइत के बाइस कान? - **णवरा रीददोमं**

229. जाइ देखलों अइसन बोन, जहाँ गाछें डायर नाञ्, गाँइठ नाञ्? - **सके**

230. जाहें तो जो, मगुर, हमराँ छोइड़ राख? - **जभाँ**

231. जाहे तो जो, मगुर हामर कान अँइठ राख? - **लाता**

232. जाइ पारे हें, मगुर घुरे नाञ् पारे हें? - रती

233. जनम से हामर एके गोड़, मानुस संगे हामर दोड़। - ताछा
मानुस देखल लोतन जुगें, हामर गातेक तीन तोड?

234. जखन हलो काँच कुँवार, तखन सहलो मुँगरी, (टुक चंद - ड़ीहाँ
महतो) आब पिंधलो लाल घंघरी, आब नाञ् सहबो मुँगरी?

235. जानबें-जानबें धोक्कड़ जानबें, जो कहइ देलों तो - वज
नाञ् जानबें? - इसु-तासु

236. जनमते तिरिया पुरूस संग सोवे, साते दिने चिलका - रसत
रोवे? (गजाधर)

237. जते जोरे, ओते घटे? (गजाधर) - इसु-तासु

238. जते काटे, ओते बाढ़े? (गजाधर) - ढ़ागा

239. जायतें तड़बड़, आवइतें थीर, काहाँ राखलें माहाबीर? - चशौ

240. जान कहनी जान, पुइछ धइर टान?(खो. लो. सा.) - इसु-तासु

241. जे लुगा कीनल, से पींधल नाञ्, जे पींधल से देखल नाञ्?- रदारमु

242. जियंत में एक नाम, मोरल पर रकम रकम? - सबाँ

243. जानवर खाइले सटे नाञ्, मानुस खइले घटे नाञ्। - यारिकि
श्याम संगे सभिन खइला, केव सोवाद नाञ् पइला?

244. नामी हामर करिया कुल, मुड़ेक ऊपर फुटवों फूल। - **ताछा**
जुड़ा पइलें जाहों कुम्लाइ, पानी-रउदे खिलखिलाइ?

245. जग में अइसन कोन वीर, गीत गाइ के चलवे तीर? (श्याम) -**रीखम**

246 जते देलें तते खाइ, नाञ् देलें नाञ् खाइ, - **गइआ**
पानी देलें मोइर जाइ? (भिखारी)

247. जे हँथियारें आर्य लड़ला, तकर तरकारी हामर - **लरीक**
घारें? (गोबिन्द)

248. टुटल घारें, नटुआ नाच? (दिवाकर) - **वाला**

249. टिक चरइयाँ, मुँड़ी मास? (राम चन्द्र ठाकुर) - **वालभे**

250. टंगइला रे टंगइला, कि कहे हें रे गड़इला (खिरोधर) - **नगबै**
तोर बाटे सुना हो चोर-चोर, अभी थाम ने,
तोर घरवा, घर-कुड़की हतो तब जानभीं?

251. ठाकर-ठाकुर करलें गोरियो, कुल के करलें हाइन (सरजू - **डपाँ-रीकासि**
महतो) आपने हलें जालें फँइस, की हमराँ लेलें टाइन?

252. ठेप चेरइयाँ, मुड़ी मांस? - **वालभे**

253. टुँगरी ऊपर कुबर गाछ, बिन बतासें हिले गाछ? - **छइपुं रकुकु**

254. ढोलो बाबु हाट जाइ, बिना दोसें माइर खाइ? - **ड़ीहाँ**

255. डीम भीतर साँढ़ बोले? - **रूघघुं**

256. डुंड़का ऊपर भुटका नाचे? - **लागइंट**

257. डाइर ने पात, मगुर घुइर-घुइर फुनगे फेड़? - **लइचु**

258. डाँडा एकर टुटल मुदा, श्याम बुझे नरम नाञ्।
खोलें नुकाइ मुँह राखे, काछिम कहेक भरम नाञ्? - **रीछु**

259. डुभिक डुभी भीतर, बेटा बापेक ऊपर?(खो. लो. सा.) - **लयरिना**

260. तार गाछे, लाल गमछा? - **चारमि**

261. तोञ् जिबें तो, हामरो संगे लेग? - **रहुँछा**

262. तोञ् दु बाप बेटा, हाम्हु दु बाप बेटा, तीन गो रोटी गोटा-गोटा? - **पबा टाबे तीना**

263. तोञ् चलबें, तो हामें अइबों? - **रीवाकें**

264. तेली के तेल, कुम्हार के हंडा, हाथी के सूँढ़,
नबाब के झंडा? - **यादी तीबा**

265. तीन कोना हामर अंगे, पेटे सोवाद कइ रंगे।
हाम नहाइ जखन निकलो, 'श्याम' मांगे संगे-संगे? - **ड़ागासिं**

266. ताँबा के तमड़ी, पितर के ढपना, ढपना खोलले
मिठाइ के दाना? (तेजपाल) - **दकें**

267. तर गुदा, ऊपर बीया? - **झिंगफुलिया**

268. ताव गेल हलइ, तावो पकाइ के खाइल हलइ (खिरोधर) - **नीतीदी**

269. तीन कनियाँइ तेरो बोर, से कनियाइ टी ककर घर? - **नीजअं, तीनकु, दीपद्रो**

270. थारा भोइर बारा, गने नाञ् पारा? (दिवाकर) - **राता**

271. देखल 'श्याम' अजगइबी जमीं। गाँव-सहरेक नाञ् कमी। - **साकन**
मगुर एको लोक नाञ। पाँड़ पेरवा वोक नाञ।
नदी हल पानी नाञ। कोनो राजा-रानी नाञ?

272. देखल 'श्याम' दाँत बोड़, दाँतें देही हाथ-गोड़। - **वाककँ**
दाँत रहलें पावे पियार, दाँत बिना भेल बेकार?

273. देखल 'श्याम' नावा रंग, दूगो भाइ संग-संग। - **लाबतगीडु**
बइसल हला चुप-चाप, दुइयो खूब बोले लागला,
जखन मुँहें पोरल झाप?

274. तीन मुँड़ दस गोड़, धस-धस माटी कोड़? - **लबै हावारह**

275. तीन अछर के हामर नाम, मोहड़ा कटलें हिया हाम। - **याहिस**
अगड़ा काइट सही करलों, नाम हामर पूछे 'श्याम'?

276. देहीं जइसन सोना-पीतर, हामर पेटें करिया गीदर। - **चीयलाइ**
खाइल 'श्याम' छोइल चाम, कोह दादा हामर नाम?

277. देस देखलो, दुनियाइ देखलों, हाथे मारलो हाथी। - **घबा-मीदआ**
जे साला टीका फोका, से साला बाकि?

278. देखलों बाँसेक बोन जाइ, गाँइठ नाञ एगो भाइ? - **लइचु**

279. देखइते चरक, गमके सुवास, अइसन चीज दे बनिया माँगल हथ साइस? - **रपुक**

280. दिन भोइर दुगो आदमी, लोहा के लूटपाट कर हथ? - **राआ सें ठका राफा**

281. देखे ओला के मुँड़ नखे, बोहे ओला के गोड़ नखे? - **राखखं पसाँ**

282. दुइयो भाइ एके बोने मगुर कधियो भेंठ नाञ? - **नका**

283. देवाल हरिहर पियर घार, पेटे बेटा कारे कार।
'श्याम' देखल जाइ बजारें, बारो महिना मिले देदार? - **तापिपलकपा**

284. दुगो रतन तरतरिया, आधा लील, आधा करिया।
हेठें ऊपरें सरंजाम, 'श्याम' पूछे हामर नाम? - **खइआँ**

585. दुगो आँइख, एगो दिन देखे हे, एगो राइते देखे हे? (निमाइ) - **जरूसु-दचाँ**

286. देलियो तो भाले हें कि? - **सठे**

287. देहो तो आनिहें नाञ, नाञ देहो तो आनिहें। - **साकर**

288. दर्दें देल हार्थे-हाथ, हामें राखलो पाते-पात।
रे भाइ भेलइ कि?, दर्दें माँगले देबइ कि? - **लाओ**

289. देइख के हतो हइरानी, एक घइलें दू रंग पानी।
'श्याम' संगे आवा दोइर, पिए हतो घइला फोइर? - **मडी**

290. धनरस के भाइ मड़रस, कठोतिया घाटें उतरल हथुन - **(झिंगफुलिया)**
चलभे तो चला, नाञ् तो, चइल जिब थुन सितल पुर? - **जारा-ड़मा**

291. धंसल घारें, भूत नाचे? - रीजाख-जाभू

292. नीच कुलेक सिछा नाञ्, कोन जुगेक विधान। - कम्बूशं
पढ़ेक दोसें मारल गेल, कोन बिद्मान?
ककर राइजें भेल हइ, अइसन घिन-घात। - जेंरामरा
जानल जाइ के हटवल, अइसन पछपात? - नधाविस

293. दुआइरें हामर थान, नाञ् हाम दरबान। - टीघं
'श्याम' सँतइलें बोले पारो, खभर ककरो पठवे पारों?

294. नाञ गोड़ नाञ चाका, ताओ दउड़े गोटे इलाका। - काउन
ठावें जाइ पुछल श्याम, गाड़ी रकम ओकर काम?

295. नारइत बरदा एगो, खोलइते दू गो? (दिवाकर) - नइतदो

296. नोतनाही के निहइर के, पुरनाही के खड़े-खड़े? - ताजु
(राम शरण विश्वकर्मा)

297. नाथल छगरी, अँगने बुलइ? (खो. लो. सा.) - नीढ़ब

298. नगीना देखलों एक जोड़ा, लम्बा बेसी कम चौड़ा। - खइआँ
आधा उजर आधा कार, काहा गीदर हामर घार?

299. नानी कहली एगो कहनी, सुनला धीया पुता। (श्याम)
घेंचा बाँइध उड़ली चँरइ, हाथें रहल सुता? - गतंप

300. पन्द्रह दिनेक चरक छउवा, पानी वरीसले भाइग जाइ
बदरी हटलें हाँइस उठे? - दचाँ

301. पात-पतइ पोइड़ गेल, खुलु बुढ़ा खुस भेल? - वाड़पोतप टीरो

302. पेटें अंगरी, मुँड़ें पथल? - ठीगअं

303. पहिले पगरी हटइबें, तबे खाइ पइबे ? - इकम

304. पान अइसन पात हे, टांगाइल हे, गाड़ाइल हे? - रूआ

305. पावर लइ करल पइठ, गुरू गेल घारें बइठ। - योडिऐ
सोब गीदर के पढ़बे खातिर, देल 'श्याम' कान अँइठ?

306. पानी हे मगुर बोहे नाञ, आँइख हे मगुर सुझे नाञ? (जमुलर)-लयरिना

307. पात चिरा फोर गेड़ा, जे नाञ् जाने सइ भेड़ा? (चितरंजन) - ड़ता

308. पेटें कुट-कुट मथें फूल, देख रसिक हामर रूप? (खिरोधर) -रइनाछि

309. पाँच भाएक एक अँगना (खो. लो. सा.)? - थीहलत

310. पोड़ल पीठ, पेट छेंदा। (खो. लो. सा.) - रपैख-ड़ोपो
पीठ करिया, छाती उजर ?

311. दु खँड़ें नाम हामर, दु जिले हाथ।
पहिला खँड़ें जादू पथल, दोसरा खंड नाथ? - थनासरपा
पहिला जिला आपन डीह, दोसरा धनेक साथ?

312. पुँइछ लम्बा, मुँह कार, इंजोर फइलबे घारें-घार? - यलास ठीका
313. पारस नाथ से नाँभल बाघिन, पेट खलाखल - टाखो
पुइँछ गाभिन? (श्याम)

314.फुटलें कि भेलइ? आर टुटल कि भेलइ? - **मनज के तासी हाबि (सीता के जनम बिहा)**

315. फोरे ने फूले, रोज एक सूप बहराइ? - **रकासाँ**

316. फुले कदम, फोरे कँइरा, डाइर कसकस पात घनेरा? - **लमसे**

317. फुले हे, ने फोर हे, मानुस बारो महीना खा हे? - **ननू**

318. फुल फुलल, मगुर तो खइया केव नाञ? - **नगरींत**

319. बड़का-बड़काक डहर देखवे, कान पकइर के पोथी पढ़बे?- **मासच**

320. नाकें दाइब चाइल चलवे, हेला करलें मचा चखवे - **मासच**
हेरवे ओलाक घेंचा फँसवे, तावो पसिंद करें 'श्याम'
बुझ दादा चाँड़े नाम?

321. बिना जीभें टन-टन बोले, बिना गोड़े दन-दन चले, - **यापरू**
गरीब-अमीर भल बासे, 'श्याम' सदाइ एकरें आसें?

322. बिना डिटोल बिना रूइ, बिना दामें लगवे सूइ - **रीखम**
'श्याम' देखल गरीब-अमीर एकरे डरें पुइ-पुइ?

323. बरदा बाँधले हइ, आर पघवा चेरे गेलइ? (चितरंजन) - **ड़ाहकों गड**

324. बप्पा हो लेहड़-गोहड़, मइया हो थारी। - **झिंगफुलिया**
फूला फूले लाले लाल, ओंठा हो कारी? - **सराप**

325. बापें करल एक दिन काम, मइयाक कधियो नाञ - **रदूसिं**
विसराम? (दिवाकर)

326. बाप भेल धुमुक-धुका, माञ् भेली थारी। (गजाधर) - **सराप**
ओकर बेटी फूल सुन्दरी, ओंठें लागल कारी?

327. बाप गो बाप, ऊपर सें गिरल चाप, घार भागल दुआइर - **रीछम लजा**
दइ के, हाम कइसें भागब रे बाप?

328. बापेक नाँव सें बेटाक नाँव, नातिक नाँव कुछ ओर। - **आहुम**
एहे कहनियाँ बुझबें पाँड़े, तभी उठइ हें कोर?

329. बाप बेटाक एके नाम, टुकरा बेटाक भिनुनाम? - **आहुम**

330. सिधु-कान्हुक रहल धारीं, हामर घारें तकरे तरकारी? (गाबिन्द)- **लरीक**

331. बिना पाँव परबत चढ़े, बिना मुँह खर खाइ। - -----
दर्दें पूछे भोजी सें, कोन जानवर जाइ?

332. बेटा सें मइले भारी? - ----

333. बरावइर धाइर, बीचें दराइर, जकर में लागे लाल लेताइर? - **गमां आर रदूसिं**

334. बत्तीस माझें, एक पतइ? - **हमुँ आर तदाँ**

335. बइसल रोह रे ढिढरा, हाम जाहों गाँव बुले? - **ड़ाहकों आर तल**

336. बारो पहार डोरा से बाँधाइल, डोरा टानले मेंजुर काँदे? - **खारच**

337. बाँध बाटे सें हाथी आवे, सूप लखें कान। - **राके**
मुँह बाटे से छउवा बियाइ, देखे भगवान?

338. बाप बेटाक एके नाँव, नातिक नाँव दोसर? - **आहुम रीडो**

339. बाँधल छगरी, गोटे घार बुले? - **नीढ़ब**

340. बोन से आइल बंदरी, खाइ घरी ढेइर संगी, सुते घरी एकाइ? - **रीतप**

341. बावें-दहिने सामने चले, मगुर आपन जोघो नाञ छोडे? - **खइआँ**

342. बियाइ मगुर पियाइ नाञ् ? - **पसाँ**

343. बाँधे बइसल पूंछी, पुँइछ से पानी पिए? - **यादी तीबा**

344. बिना डाइरें हवें पात, पातें खाइ पारे भात? - **राइकँ**

345. बोनेक कुकुर घारें बइसल, लाइत मारलें काञ्-काञ् करे - **कीढें**

346. बिना जइर के बुदा, जकर देही खाली गुदा? - **डीखखु**

377. बोन से बहराइल हाँस, हाँसे कहे हामर सुधे मास?(खिरोधर)-**ड़ीखखु**

348. बोन जिहें नाञ्, मगुर काठी आनि हें? - **लयरिना**

349. बाँध कुआँ नदी जिहें नाञ्, मगुर पानी आनि हे? - **लयरिना**

350. जान मारि-हें नाञ्, मगुर माँस आनि-हें - **रवाँए**

351. बेसी जाहाँ लोक सियान, हुए हामर घार महान। - **मलयालम्**
हामर भासा के अजब पहिचान, उलटा सीधा एक समान?

352. बिना गोड़ के सराइ चले, बिना जीभ के टन-टन बोले - **रूपया**
'श्याम' संगे सोब मनुस, जहाँ पावे तहीं खुश?

353. बिना ससुर के सास? (गोबिन्द) - **रइज ससा**

354. बिन मारे बइरी मरे, खड़े रूख विकाइ, बिन - **नमसदु ड़ीकल**
वियाए तिरिया मरे तीनो लोक से जाय? (गोबिन्द) **रीवाकुँ**

355. बापे देलइ एक बेर, माएँ लेही बेर-बेर? - **रदूसिं**
(खोरठा लोक साहित्य)

356. बोन चरंया चेरक खास, खाइ गेले सुधे मास? - **डीखखु**
(खोरठा लोक साहित्य)

357. बोन सें बहराइल टिया, टियाक माथें सिंदूर किया? - **नबो गारमु**
(खोरठा लोक साहित्य)

358. बोन सें बहराइल हाथी, सूप रकम कान (खोरठा लोक - **लाके**
साहित्य) सूँढ़ से गीदर भेल, लोक भेला अनजान?

359. बाँइध डाँड़ा डाड़ाइल कोने, ओकर घार झार-बोने? - **नीढ़ब**

360. बिना खटल के भाइ, रोज खाइ, पेट उर्राइ?(श्याम) - **नभबा**

361. बाँइध हामर पाछुँ पाघा, आगु-आगु टान। - **गाता, इसु**
हामर बसें सोब घारें चले पिंधान ओढ़ान।

362. भेंटे हामर पहिल मोहड़ा, डहर के मोहड़ें डाँडा। - **राडभें**
राइज के मोहड़ें देखे पइभे, हामर नावेक अगड़ा।

बँउड़ी देखे जाइ 'श्याम' बुझा गीदर हामर नाम?

363. भाँगल घारें, फोकिन नाचे? (चितरंजन) - **रीपख ढ़ीमु**

364. भोरल बाँधें, महिसेक चोता? (बैजनाथ) - **मछिका**

365. भोरल बाँधें, चाँद गुरगुराइ? (दिवाकर) - **राटघ**

366. भोरल बाँधे, सइरसाक बिटा? (दिवाकर) - **कलुसा ठभें**

367. भोरल बाँध ऊपरें झूले, सुधे चरक फूल फूटे? (दिवाकर) - **सकाआ नगरींत**

368. भाइ-गोतिया मिल-मेइस, जखन चलो डाँड़ा कइस। - **नीढ़ब**
भीतर-बाहइर हाम चमकाइ, सेसें जाहों कोने बइस।
खुल्लम-खुल्ला कहे 'श्याम' गोटे दुनियाएं एकर काम?

369. भाइ के देइख, भाइ मथराइ? - **दचाँ-जरूसु**

370. भितरे मांस, बाहरें हाड़? - **राखखं**

371. भेड़ेक-भेड़ेक रोटी, बडा रे सोवाद? - **धुम ताछा**

372. मुँड़ें टोपी चाइर गो कान, केरल हामर ठाँव ठेकान। - **गलौं**
हामर रंग 'श्याम' मगुर, करों हाम सोभेक सनमान।
हामर गात छोट मुदा, लम्बा हामर नाम महान?

373. मानुस हियाँ भिन-भिन, सोभिन आवे हामर ठिन। - **रहड**
पठओं देस-विदेश घार, जहाँ चाहे ओहे ठिन।
जाइ देखल 'श्याम' आइज, गोटे देसे एकर राइज?

374. मइया धचरी, बेटिया सुन्दरी? (दिवाकर) - **इचारमे**

375. मइया बेटियाक एके नाम, भिनु मगुर बेटवाक नाम? - **आहुम राचको**

376. माँझ अहरें, छन गर-गर? (झिंगफुलिया) - **राटघ**

377. मात्र हलइ माएक पेटे, बेटिक तो बिहे नाञ् - **धदू हीद रघो**
आर नतनी के लेग निहार आइ गेलथिन? (सरजू)

378. माञ् चेडरी, बेटी सुंदरी? - **रइको**

379. माञ् लर-लर बेटी, दिढ़गर? - **वाउल**

380. माञ् झुपरी, बेटी सुंदरी? - **चारमि**

381. मोरल भेड़ी, डुबकी खेले? - **डीकुँ**

382. मोरल जीव, सांस लेहे? - **थीभाँ**

383. मामुक पगरिया, नापे नात्र पारे? (अब्दुल रजाक) - **रहड**

384. मामुक छगरिया, छुलइ भेभाइ? (दिवाकर) - **रदमाँ**

385. मुना चुका, धुँध नुका? (श्याम) - **नगबै**

386. मारलें हाँसे, नात्र मारलें मोरे? (खो. लो. सा.) - **रइद़माँ**

387. मुरूख गियानी पढ़ल लिखल, खा-हथ सोभिन बिना धोवल। -**यारिकि**
'श्याम' नात्र देखल उपज-आबाद, केव नात्र कहल

एकर सोवाद?

388. मुड़ डुइब-डुइब जाहे, पुँइछ चारा खाहे? - गाता इसु

389. रकम-रकम साना-फाना, कते कल कइर खाना। - राडभें
हामर नावें जोन्डरा जोइर, कते लोक बिछे बाना।
हिएं बँउड़ी-क सरंजाम, पुछे 'श्याम' हामर नाम?

390. रंग-रूपें कउवाक भयाद, 'श्याम' पावल सड़ें सोवाद। - लयको
रितुक राजा आवे तखन, देही रितुक मान-मरजाद?

391. राइतें गरू गोंठाइल हला, दिने गरू कोइ। (दिवाकर) - नगरींत
कोन सहरे गरू गेला, गोठें गोबर कोइ? (दिवाकर)

392. राइत के रानी, आँइख में पानी? (दिवाकर) - ममो

393. रातीं सुतेक पहिले दिएक चाही? (दिवाकर) - काड़हु

394. राजा-रानी एक जानी, एक घारें दू रंग पानी? - मडी

395. रीम रीम रीम, मुँहे पारे डिम? (दीन दयाल कुड़ामो) - घाघों

396. रोज-रोज फुलेक जोर, फोरे मगुर बारो फोर (दिवाकर) - नदि नाहीम
पाके तखन एके लोर? रछब

397. रउद देखलें आवों हाम, जुड़ें हामर कमे काम। - नासीप
हमरा काबू करे खातिर, चाही हावाक सरंजाम?

398 रट तकर, पट तकर, खलरी उदार तकर, मास मजेदार? - राढजो

399. रोज मानुस सुते खातिर विछोनाक पास काहे जा हे? - **लेच, ञ्ना**

400. रउद लागले सुखे नाञ्, छाँह लागलें मुरझाइ - **नासीप**
कोन अइसन चीज भाइ, हवा लागले मोइर जाइ?

401. रथ ऊपर जनम हामर, भट्ठी में बिहा? - **कचा सें लहरग**
बिहाक बाद गेली ससुराइर, कधियो नइहर नाञ घुरली? **टीमा के नतरब**

402. रन-रन बोले रानिक बेटी, फोइर देइख मडुवाक रोटी? - **ताछ धुम**

403. राइत भोरल, दिने के खाली? - **शकाआ**

404. राइत देखलों अइसन पोखरा, जकर में फूलें-फूल भोरल?-**शकाआ नगरींत**

405. रोज उइठ के बुढ़िया, एक बोझा दोतइन खाइ? - **हालचु**

406. रट चरइयाँ, पट डेना, खलरी उतार, मांस मजेदार? - **इकम**

407. लक-लक डाड़ी, चक-चक पात, खाइते मधु रस, - **रीताक**
उलगइतें कपास? (दिवाकर)

408. लटल बुढ़ा, सटल पेट, खाइ खोजे भइर पेट? - ----

409. लड़ बड़, लड़ बड़, लड़ाइ किया। थूक देके खड़ा - **इसू में तासु**
किया। (दिवाकर) कमर पकड़ के घुसा दिया?

410. लट-पट, सट-पट चुगली कमाइ, सब के जुठा खाइ - **नभबा**
(गोबिन्द) पर तिरिया पर नजइर चलावे, जीते बइकुंठ जाइ?

411. लाली गइएं ललकार देही, कारी गइएं ढुँसे ले दउड़े? -**रइको आर टाँका**

412. लाल मियाँ, डाइर तर? (निमाइ) - **इचारमे**

413. लाल दइख के लालच लागे, आधा ढुलले ऊ-सी (निमाइ)- **ड़ीचु**
लागे पूरा ढुकले खुसी बाढ़े?

414. लाल गुल-गुल, हा हा हा संगे-संगे पोरसन दा? (गजाधर)- **इचारम**

415. लक लक चरइंयाँ खलरी उदार, मार्से पइभे खूब सोवाद?- **रीताक**

416. लेगे घरी टेढ़-टेपर, आने घरीं सोझ? - **रीगग**

417. लम्बा चरँइ पाँइख नाञ, चले मगुर गोड़ नाञ? - **टीगजों**

418. लोहा के गाय, काठ के बाछुर, दूध देहे छुर्र-छर? - **नीघा पाची लते**

419. लाल बाबु हाट जाय, बिना दोर्से माइर खाइ - **ड़ीहाँ**

420. लाल चरँइ, नहाइ भेली करिया? - **गइआ**

421. लील नगर में अइसन राजा, जकर नाञ छहँइरा? - **जरूसु**

422. लाली गइएं छाली खाइ, पानी पीलें मोइर जाइ (दिवाकर)- **गइआ**

423. लाल लाल ढुमकु बाबु, लुगा पींधे सो-पचास - **जयापि**

424. लिख अइसन जंतु टी, सूप अइसन कान - ----

नाञ् जाने हें तो आन, तीन पइला धान?

425. लेलों तो बड़ी सोखे, मगुर टांगलो फरकवा धारी? (खिरोधर)-**सीनोक**

426. लंगट गुरू, लंगट चेला, लगटें-लंगटें भेंट भेला? - **कामता प्रसाद पलानी**

427. लाल-लाल डिब्बा भीतर, पियर-पियर खाना - **नादाबे**
'श्याम' देखल खाना भीतर, जड़ल मोती-दाना?

428. सुइत के घचाघच, डाड़ाइ के पोंछे? - **लसी ढ़ालो**

429. सुंदर हली अरइन बोने, खातिर कइर आनल कोने? - **रीतप**
लागल नाञ दाया-माया, कुकुर चाटे निरमल काया?

430. देखलो तखन लाले लाल, पानी पाइके करिया। - **गइआ लायको नीबा**
पानी सुखले छुइ देखलो, एकदम हल धुरिया?

431. सोब घारें हामर डर, सगरे हामर धर-पकर - **रीखम**
रहे 'श्याम' हामर डरें, घारेक भीतर बनाइ घर?

432. सोब देसें हामर धाक। खजाना भोरल थाकेक थाक। - **पताकि**
जे गने-गुने पारल, 'श्याम' ओहे चलाँक?

433. सो-सो जोधो रोज मिले, हामराँ दाना-पानी। - **ड़ीगालरे**
सरगखिन दोड़इत-दोड़इत हवे जान-पानी।
हामराँ खोजे गरीब-गुरबा, आरो धनी-मानी।
'श्याम' देखल थके सोभिन, एकर नाञ् थकानी?

434. सोभेक संग चले पारों, उठे बइठे खेलें पारों। - **राइंहछ**
झुला चइढ़ डोले पारों, मगुर नाञ् बोले पारों।
रंग हामर सदाइ 'श्याम', बुझा दादा हामर नाम?

435. 'श्याम' देखल रंग-बिरंगा, धजा उड़े आकासें। - **ड़ीगु**
धजा धापि धरल हे, एकदम धरतिक पासें।
धरती जंदे-जदे कहे, धजा हुदे जाइ।
धरती छुइट गेले धजा, धड़ाम गिर जाय?

436. साँथाइ-साँथाइ देखा कमाल, करिया आटा पराठा लाल? - **दीहमें**

437. हामें करलों बहुत गोर, बुझलों नाञ् मरम तोर। - **जयाप**
काटाइल-छाँटाइल माटिक बेटा, तोर आँखी काहे लोर?

438. हामर संगे देखला सोभिन, ढेइर बाँदर पानी ठिन। - **गबें**
जखन पइला गोडेक चाप, देला बाँदर पानी झाँप?

439. हामें देखलों गात छोट, नाँव मगुर बोड़ - **ड़ाबहीद**
दही एकर संगे रेहे, धोवे मुँड-गोड

440. देखलो एक अजगइबी घोड़ा, नाञ् खाहे कधियो कोड़ा - **लकिंइसा**
तीन हाथ ऊँचा मगुर, तीन अँगरी भुएँ चौउड़ा

441. हामें आनलों केमरा निस्टो, बिना रीले के खींचे फोटो? - **सीरअ**

442. हामें देखलों आँइख फाइर, बइर-बइर दुइए धाइर - **दीन**
हुआँ हला लोक हजार, देखला नाञ् केव चाइर?

443. हामें देखलो अइसन घइला, हल नाञ ढेइर फइला। - **टपे**

रोज भोरे लोग मगुर, केव नाञ् भोरे पइला?

444. हामें देखलों अइसन गाइ, दोड़ते-दोलते उइड़ जाइ। - जहाज
खोजे अइला लोग मगुर, छने कने गेल नुकाइ?

445. हामें देखलों गोल-गोल, मुलुक जोइर एकर मोल। - काचा
चले गाड़ी कइर खाना, पाइके एकरे पिठ बोल?

446. हामें रोपलों एक कमाल, रंग हरिहर गुने लाल? - दीहमें
जनिक हाथें हास-हुलास, चघते रेहे चिरोक्काल?

447. हामर करिया रंग बपौती, सदाइ, पिधों करिया धोती। - रीतछ
गोड़-मुँड़ समइट जाड़े, सुतो लगाइ घेचें जोती?

448. श्याम बरन हामर रूप, मुँह रहइते रहों चुप, - राइंहछ
हामे गोटे भटके पारों, गाछ चइढ़ लटके पारों,
राजाक कुरसी बइठे पारों, आपन मोछ अँइठे पारों,
हामर कद घटे बढ़े, कखनु मोटाइ कखनु लटे,
हामें रहों गोटे जहान, हामर देही नखे जान?

449. श्याम कहें सुना सियान, बड़ी अचरज हे बरदान। - लसिनपे
घेचें छुरी चलाइ देलें, मिल जाहइ नावा जान?

450. श्याम जानल अइसन फूल, रूप गंध नाञ् हे बिलकुल? - लप्रैअ लफू
451. कार घोड़ा गोर सवार, एक के बाद एक तइयार ? - ----

452. 'श्याम'-लाल हामर पहिचान, रकम-रकम हियाँ बेइमान।- सता
हामराँ एखनी पीस काइट, लेहथ सोब संगी बाँइट।
मगुर हामर नाञ नोकसान, हामर राइज गोटे जहान?

453. समुदर चेरे मगुर, पाँखा नाञ भिंजे ? - बासुदेव महतो

454. ससइया से पुतहिया जबर, बेटवा से बप्पा दुबर - ----
ससुर गेलो सोझ काठ के कुबर करे। (खिरोधर) - रहा लइदाराखखं
सास गेलो एगो के दूगो करे।
सरवा गेलो बारह गोड़वा मारे?

455. सुखल बाँधे बोक हड़बड़ाइ?(श्याम) - वाला

456. सोनाक तितिर रूपाक ठोर, उड़ल तितिर देसेक ओर? (चितरंजन) - जरूसु

457. सोभेक खातिर बेस लागइ देखा भाइब-गुइन (गजाधर) - कजों
ककरो देहीं सटलें मगुर खुइन लेहे चुइस?

स

458. सिंदुरेक टह-टह, काजर के फोटा। (खो. लो. सा.) - नीधरक
जे नाञ जाने, से बाँदर के बेटा?

459. सात सो महिस के एके गो चोता? - ताछ मधु

460. सात गो रूखना सात गो-बइसला। - रइह छाँ
तावो ने कटाइ, आसन के बकला?

461. संगे-संगे रेहे, केव धरे नाञ पारे? (खो. लो. सा.) - राइंहछ

462. सरऽ सटऽ का, उठाइ पटऽ का? (पुरन) - नाठे

463. हामर गाछ ढेइर मोटा, हामर फोरें नाञ् गोटा। - राइँक

बने नाञ सांगा कँइड़ी, नाञ घोरना डांग-सोंटा।
'श्याम' चिकन देखल चाम, कहा गीदर हामर नाम?

464. हाम रहों मुलुक माँइड़, कोइ नाञ् रेहे हमराँ छाइड़। - यातिबि
'श्याम' कहे जादुक हरका, जते खरच ओते बाइढ़?

465. हामनी करिया बोनेक बासी, सगर घरी चले बदमासी - लाढि
धराइ गेले जेल नाञ्, मानुस देहे संगइ फाँसी?

466. हामर जातिक सत सुन, मुँड़ काइट घेंट नुन - राखी
तभी तोञ् पइबें नुनु, हामर सोवादेक महत् गुन

467. हामर गीदर करिया मुदा, गोर बरन हाम। - चीइलाइ
गीदर गुलाक खाइ खातिर छोल देहिक चाम?

468. हमरा सोभिन चाहे मगुर, पिंजड़े भीतर बेसी पसिंद करे?- नटेलला

469. हाम लंदन बासी मगुर, गोटे दुनियाएं धार? - लकिइसा

470. हामर करल सोभिन देखे, मगुर हमराँ नाञ देखे? - वाह

471. हामर मुँड़े लकड़ी, लकड़ी ऊपर खोता - क्काहु, मलचि
खोता ऊपर अंडा, अंडा ऊपर पंछी?

472. हाम आपन भाइ के देख-तलों, मगुर हामर डहर छेंकल के?-खइआँ आर कना

473. हाथें हरिहर मुँहे लाल, जे बतवे ओहे तेंताल? - नपा
'श्याम' कहे मान खातिर, हामर नाम चिरोक्काल।

474. हामर गात गोल-गोल, रंग लाले लाल। - जरूसु
जहाँ रहों हाम करों, इंजोर भभक्काल।
लोकें कहे हामर बिना, बेसी गोल माल?

475. हामर पेटें भोरल पानी, पेटेक भीतर लाखों परानी। - रदमुंस
हामर मरम जाने खातिर, लागल हथ कते बिगियानी?

476. हाम बोनइला रंग कार, करिया रंगे गात लाचार। - लूभा
नाके नोथ पिंधल बार्दे, हाम करों नाचेक काम?

477. हाम सगरे बावें-दहिनें मगुर सोभिन नाञ् चिन्हे - यमस
'श्याम' कहल जे चिन्हल, सोब ओकर ठिने?

478. हामर खातिर मानुस मोरे, पारल नाञ् केव जोरे। - ननूका
कागज कोचें नुकाइ रहों, तावो सगरे सोभिन तोरे।
मकरा जाल कहल 'श्याम', बुझ दादा हामर नाम?

479. हामर पिंधना सुखल काठ, सिखित घारें हामर ठाठ। - लसिनपे
हामर गात घँइस-घँइस, मानुस लिखे आपन पाठ?

480. हथिया घोड़वा चलल जाइ, सरगेक मटिया मिलल जाइ?(श्याम) - रदारमु

481. हामें पुरूस के, हाल नाञ जानी? (श्याम) - रजूमें

482. हामें परसोती के, हाल नाञ जानी? (श्याम) - लइको

483. हामे भुइएं, गोड़ नाञ धरी? (श्याम) - गलअ इपु

484. हिन-हिना तो मती छिना, एहे ठिना हलइ तो (श्याम) - **लाबुलबु**
भेलइ किना, मांगतइ तो देबइ किना?

485. हेठें अधन, ऊपरें आइग? - **याबिडि**

486. हियाँ रोपल कोहड़ा, लत गेल कलकता। - **कड़स**
सो मोनेक हाथी दोड़वे, लत एते पोखता?

487. हकड़दामा कोड़े माटी, दस टेंग दू भोटी (खो. लो. सा.) -**हावारह लबैदु**

488. हाथ हइ, गोड़ नाञ, नाञ तकर माथा (खो. लो. सा.) - **तारकु**
गोटे-गोटे मानुस खाइ, असंभवेक कथा?

489. हेठें पानी ऊपर आइग, गुड़गुड़ पानी उड़े आइग? (खो. लो. सा.)-**काहुं**

490. हेले घारें जगाइ-हंकाइ, देहे सभेक जान कंपाइ। - **रीखम**
खुइन खातिर करे मसकिल, जबरजस्ती जाहे लील।
देस विदेस के देल गजाइ, 'श्याम' पूछे कोन उपाइ?

491. हिधों टाटी, हुधों टाटी, माझे नाचे गोल बाछी? - **झिंगफुलिया**

492.हामर महल चाइर कोनियाँ, माँझे हली रानी। - **मरकै डबो**
चाइर कोने चाइर कुआँ, नाञ् कोनो में पानी।
करिया-सादा चोर अठारो, घेरला पाँता जोइर।
आइ दरोगा माइर-माइर के, कुएँ देलक भोइर?

493. हिलाइ के तुब, आर कुकुवाइ के सुत? (खिरोधर) - **सीरभो**

494. जइसें-सुनलों हामनी बराती भाइ, तोहनिक गाँवें बहुते गाइ।
दामुदर के दूधें भोरे पारभें, तभीं हियाँ नाता जोरे पारभें।

495. बराती :- तोहनिक सरत, सोब सिकार, दामुदरें बोहइबो दूधेक धार।
मगुर देखा नदी में जाइ, बोहो-हो पानी गजगजाइ।
तोहनी पानी दे सुखाइ, खाँटी दूध देबो बोहाइ।
करबो हामनी नाञ बेजाञ्, पानी में दूध मिलइबो नाञ्।
सराती :- हारलों हामनी करा सगाइ, खुसीं खिअइबो मुँहें मिठाइ।

496. हमराँ गोटे जग जाने, भेंट करे कते झाने, - **ठीची**
हामें कोनो देखल नखों, ककरो कुछ बोलल नखों,
'श्याम' संगे मोहल हों, कतेक भेद खोलल हों।

497. हल दुनियाएँ सोबले बोड़, कोन धनुक धारी, - **ब्यलकए**
कोने बुइझ मने मन, एकरा सोबले भारी, - **नजुरअ**
के रचल परपँच, ई तो नीच मूलवासी, - **र्यचाणाद्रो**
के काटल अंगठा, के छिनल मुँहेक हाँसी? - **कोरव-पांडव**

498. हरदी दग-दग पितर के लोटा - **लबे**
जे नाञ् जाने से बंदर के बेटा।

499. हामर पेटे पानी भोरल, पानी बड़ी झाल। - **प्पागलगो**
हामरों खाइ खातिर चेंगा, फुलवे हतो गोल?

500. हाम खेलो नुकनुकानी, पानी भीतर दानापानी, - **छमा**
'श्याम' जाने पानी बिनु, हाम हवों जान-पानी?

501. हार जोते पाँच लोके, दस लोकें कार्हा - भीजी नवतद

503\. हामर पेट भोरल रहे, जखन करों काम। - ताजू
'श्याम' देखल पेट भूखें, जखन करो आराम?

504\. हामर साड़ा टप-टप, करलों भुँइ छप-छप, - सारइब
गोटे धरती राखों हरिहर, पूछे 'श्याम' नाम हामर?

505\. हामर रूप गोल हे, भीतर हामर खोल हे - टीरो
'श्याम' से भी रिस्ता हे, सोब मानुस मीता हे?

506\. हाड़े-गोड़े आठ हाम, एक खँइचला अँतरी? - टीखा

507\. हामर डरें गोटे दुनियाँइ एखन थर-थर, - पकंभू
बिना पुछल धाँइस देहों हाम गाँव-सहर,
'श्याम' देखल गिराइ देलों, हाम कतेक घर?

508\. हामर आवेक खभइर सें, जग जाहे डइर, - तइरा
हियाँ-हुआँ खोजे लागे सोभिन आपन खइर,
हामर गुन गावल हे बहुत जोघों 'श्याम'
हामर पासे सोभिन पावे सुखेक सरंजाम?

509\. हाम सदाइ सच कहों, बिना मिन-मेख, - सीरअ
हामर भीतर तोञ् हें, आव हियाँ देख,
'श्याम' सदाह सदरी कहे, नाञ् गुप-चुप,
हामर बिनु निखरे नाञ्, कहुँ ककरो रूप?

510\. हाट-बजारें जाहों मगुर, विके नाञ फोर। - नपा
हामरों मानुस बाँइध देहथ, नाञ् लागो चोर।
बहुत झन खाहथ मगुर, कहथ नाञ् कोर।
श्याम संगे समधी खइला, आरो सहिया-सोर?

511. हाम एगो डांग मगुर पावाइ नाञ् बोने। - रीताक
खोजे गेलें पाइ जिभे, गाँव डिहेक कोने।
छेंइछ–कुइट देलों हाम, कभू नाञ् सीठा।
'श्याम' चाइख देखल सोवाद मधु नियर मीठा?

512. हामें एगो डांग मगुर सोवाद नाञ् सीठा। - रीताक
जीवें सटाइ जानल 'श्याम', हाम कते मीठा?

513. हामें फोरों माटिक भीतर, करा पर–ताल। - मदाब यानिचि
नामें हामर दाम नाञ्, बुझाइ मुफुत माल।
'श्याम' आपन खपरीं भुँइज, पावल सोवाद कमाल?

◈ ◈ ◈

खोरठा जगतें एगो जानल चिन्हल नाम श्याम सुन्दर महतो 'श्याम'

श्याम सुन्दर महतो 'श्याम' जाव जिनगी लिखेक काम। ई मन गड़ाइ, माथा खटाइ, साँथाइ-साँथाइ, सोंइच-समइझ, रकम-रकम, बरन-बरन, निमन-चिकन, कहनी, काइब, लेख, नाटक रिपोताज लिखल हथ, लिख रहल हथ। नान्हे उमइर सें सुतल के हाँक देते-देते, एखन मुड़ेक चुइल पाइक गेल हे, जखन ई मार्टी बिसाहा नेति आर मानुस मारा चाइल लइ, हतियारा ढुकला आर लुटे-कुटेक फेरें बिनोद बाबुक दहिना हाथ शक्ति नाथ महतो जइसन जुआन के हतिया कइर देला तो इनखर कलम 'मुक्तिक डहर' रूपें हकइंद उठल। फइर जखन माटिक बेटा के लटवा-लाहइर कइर लिलज लुटवइया आर अइग टंगवा गुलें पँच-तरवा गढ़-गुढ़ा गढ़े लागला तो इनखर कलम गुरगुराइ उठल आर ई 'तोंञ् आर हाम' के रचना कइर देला। अइसने भाइगेक भोला गुला के परखउका गुलाक फचका फाँदे फँसल देइख के पोंगापंथिक खिलापे 'चेडराक मुँड़े बेल' लिखला। खोरठा लोकगीत आर आदिवासी वनवासी क्यों? (हिंदी) छपइला आर 40 गो झारखण्डी सहीदेक गाथा, 70 हजार सबद के सबद भाँडार प्रेसे हे। ई दैनिक अखवार, हिन्दुस्तानें चाइर बछर तइक पइत हपता 'हाँकाय रहल हियो भाय, सिरसकें 600 सबदेक 200 हाँक देल हथ। हियाँक सोब अखबारें इनखर रचना आवे हे आर 'आकाशवाणी' सें भी परसार हवे हे। अखिल भारतीय सुरक्षा प्रतियोगिता में इनखर रचना **परथम** आइल हे। परियाबरन के ओदाबादी में इनखाँ राष्ट्रीय पुरूसकार मिलल हे। सुरक्षा, परियाबरन, परिवार नियोजन, राजभासा, कउमी एकता, गुणवत्ता, सुझाव, उत्पादकता के नारा, लेख, कविता में सउ से बेसी पुरूसकार पाइल हथ। देसेक दु गो प्रधानमंत्री, परियावरण मंत्री, तीन डी.सी., तीन एस.पी., एस.डी.ओ., डी.एफ.ओ. सराहल हथ। ई 1991 से 1997 तइक बोकारो खोरठा कमिटिक निदेसक, 2004 से 2010 तइक **'अखड़ा'** के उपाधइछ आर 2010 से **'अखड़ा'** के अध्यक्ष रहल हथ। ई **'अखिल झारखण्ड खोरठा परिषद'** बाटे ले **'श्रीनिवास पानुरी पुरस्कार'** आर **'अखड़ा'** बाटे ले **'अखड़ा सम्मान'** पाइल हथ। एखनो इनखर लेखन दरदराइ के चइल रहल हे।

दिनेश कुमार 'दिनमणि'
प्राध्यापक (खोरठा)
रामटहल चौधरी कॉलेज, ओरमांझी

परिचय



डॉ. कुमुद कला मेहता

जन्म : 3 सितम्बर, 1968

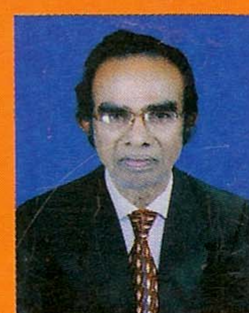
शिक्षा : पीएच.डी. 2007 विनोबाभावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग (झारखण्ड)।

कार्य : सहायक प्राध्यापक (स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग) राँची कॉलेज, राँची।

कृत्तियाँ : अलका सरावगी का कथा-साहित्य : भारतीय सामाजिक परिवर्त्तन के परिप्रेक्ष्य में (2007), देश के विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं, समाचार पत्रों में आलेख प्रकाशित।

शोध कार्य : - 'हिन्दी पट्टी के लोक साहित्य में दलित जीवन का चित्रण'-यू.जी.सी. द्वारा प्रदत्त लघु शोध परियोजना (2010–2012)।

- 'स्त्री आत्मकथा में समाज : विमर्श के विविध आयाम' - यू.जी.सी. द्वारा प्रदत्त वृहत् शोध परियोजना पर शोध।



श्याम सुन्दर महतो 'श्याम'

बाप - केदार नाथ महतो

जनम - 03 सितम्बर, 1939, गाँव-खेसमी, पो.-गोमो, धनबाद

सिछा - स्नातक

कार्य - बोकारो स्टील प्लांट, वरीय निरीक्षक 1972–97 (सेवानिवृत)

रचनाएँ - मुक्तिक डहर (खण्ड काइब), तोंञ् आर हाम (सउसनेक खिलाप), चेडराक मुँड़े बेल (पोंगा पंथिक खिलाप), खोरठा लोकगीत, आदिवासी वनवासी क्यों? (हिन्दी), मित्रता की मिठास (हिन्दी), विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित।

सम्मान - राज भासा पुरस्कार, श्रीनिवास पानुरी, अखरा पुरस्कार से सम्मानित, प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्री द्वारा सम्मान एवं प्रशंसा पत्र प्राप्त।

PUBLISHER :-

Jharkhand Jharokha

Shop No. D.G. 03, New building, New Market
Ratu Road, Ranchi (Jharkhand),Pin-834001
Mob. - 09973112040, 09471160792
E-mail : jharkhandjharokha@yahoo.com

ISBN : 978-93-85595-12-7

978-93-85595-12-7

मूल्य : 495.00 रु.